देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
August 2023
Vol.-18, Issue-2(2)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

In Collaboration with

CH.S.D.ST. THERESA'S COLLEGE FOR WOMEN (A),
ELURU, A.P.

सेमिनार विशेषांक

प्रवासी साहित्य : विविध आयाम

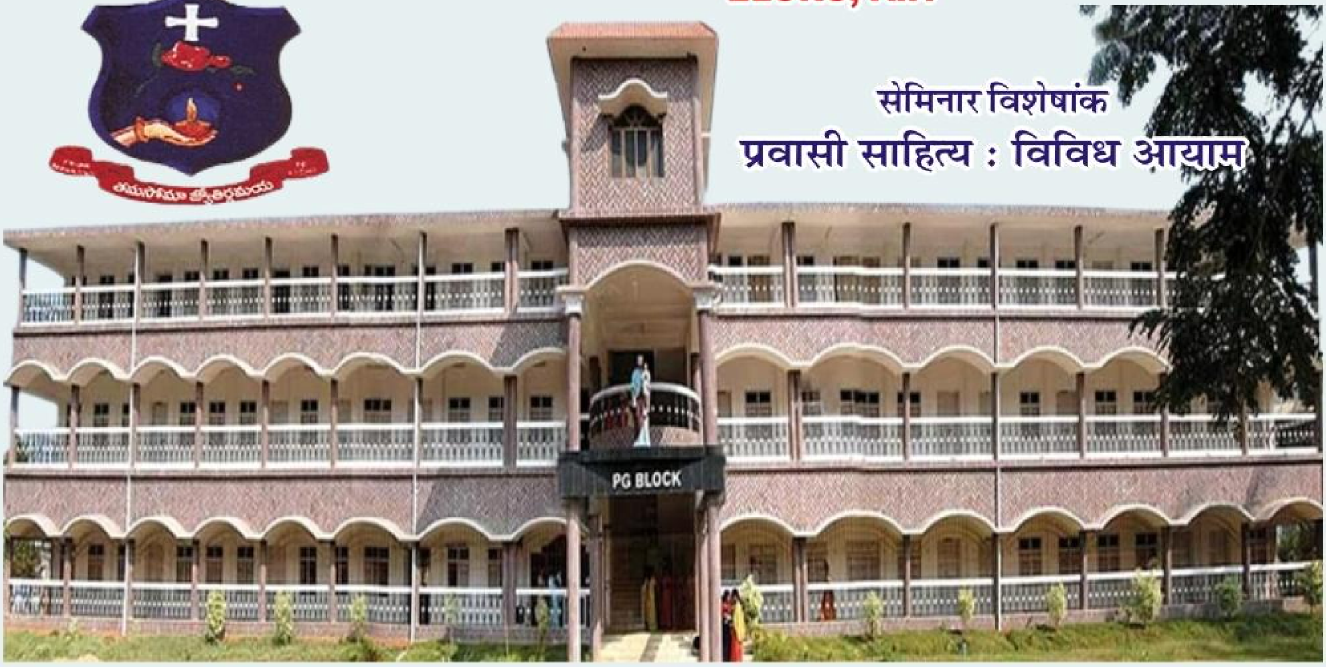

प्रधान सम्पादक :
डॉ. सिस्टर मर्सी पी.

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. पायल लिल्हारे

विशेषांक सह-सम्पादक :
डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 ISSUE-2(2) (अगस्त 2023) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. पायल लिल्हारे

विशेषांक सह-सम्पादक :

डॉ. सीहेच.वी.मालक्ष्मी

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com

मो. 09466532152

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टाँटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

अगस्त 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	पायल लिल्हारे	10–10
	सम्पादकीय	डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी	11–11
2.	Message from Correspondent...	Mother Ernestine Fernandes	12-12
3.	Message from the Principal......	Dr. Sr. Mercy. P	13-13
4.	*Message from the Vice - Principal......*	Sr.MariaChristia.L	14-15
5.	*Message*	Dr. R. Madhavi	16-16
6.	Monarch Butterflies – Conservation icons of Culture, Tradition, Food…	Dr. Sr. Mercy. P, Dr. Padmaja M	17-22
7.	प्रवासी कहानी साहित्य : एक अनुशीलन	डॉ. सीहेच.वी.मालक्ष्मी	23–26
8.	प्रवासी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप एवं उसमें निहित मानवीय संवेदना	डॉ. पायल लिल्हारे	27–32
9.	प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप	डॉ. सुशील बिलुँग	33–38
10.	तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में बिखरते पारिवारिक संबंध	प्रवीन कुमारी	39–41
11.	प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास	नीलम पाटीदार	42–45
12.	प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री संवेदना	मेहर बानो, डॉ. रूमा साह	46–49
13.	मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य	स्मिता शंकर	50–55
14.	सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के विविध आयाम	डॉ. अमित कुमार सिंह	56–62
15.	प्रवासी हिंदी साहित्य : वर्तमान और भविष्य	डॉ. रमेश यादव	63–66
16.	स्त्री संवेदना और प्रवासी साहित्य	डॉ. श्याम मोहन पटेल	67–70
17.	प्रवासी साहित्य और संस्कृति	डॉ. प्रसेनजीत सागर	91–75
18.	पुष्पा सक्सेना की कहानियों में स्त्री प्रतिरोध के स्वर	नीलम सागर	76–80
19.	प्रवासी हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना	डॉ. सुनील पाटिल	81–84
20.	प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा	डॉ भावना	85–87
21.	प्रवासी साहित्य में समाज	डॉ. जैस्मीन	88–89
22.	प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य और सांस्कृतिक परिवेश	बीरम देव	90–94
23.	प्रवासी साहित्य के विविध आयाम-एक संक्षिप्त परिचय	डॉ. राजू सी.पी.	95–98
24.	प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना	डॉ. पूजा चौहान	99–101

25.	गाँधीवाद और प्रवासी हिन्दी साहित्य	अंजलि शर्मा	102-105
26.	प्रवासी साहित्य में बिखरते जीवन मूल्यों का दर्द	दीक्षा गुप्ता	106-110
27.	**Diasporic Literature : A Historical Perspective**	Dr. M. Esther Kalyani Asirvadam	**111-115**
28.	आदर्श मानव संबंधों के पुनर्गठन में प्रवासी हिन्दी कहानी साहित्य की भूमिका	डॉ. एस. कृष्णबाबु	116-122
29.	हिन्दी भाषा में प्रवासी जनजीवन	डॉ. सुरेश कड़वासरा	123-130
30.	प्रवासी हिंदी महिला साहित्यकारों की रचनाओं में अभिव्यक्त स्त्री संघर्ष	डॉ. सुमित्रा कोतपल्ली, डॉ. के.वि.एस.पि.बी., बि विनायकुडु	131-134
31.	मनुष्य जीवन का यथार्थ भावांकन : देह की कीमत	डॉ. संगीता चौहान	135-139
32.	'मोरचे' उपन्यास : सुषम बेदी की कलम से	डॉ. देव्यानी महिड़ा	140-144
33.	**Tennessee William'sa street Card Named Desire as an Expressionaist Play**	**Sonia Priyadarshini R, Ch. Sudha Rani, K.Durga Jhansi Rani**	**145 - 150**
34.	प्रवासी भारतीय युवाओं पर सिनेमा साहित्य का प्रभाव	कर्रा पृथ्वी	151-154
35.	प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री संवेदना (नदी उपन्यास)	जानकी, के. रेणुका, श्रीनिवास	155-158
36.	**Man vs Nature--Ecological Concerns in Amitav Ghosh's The Hungry Tide**	**Dr. R. Madhavi**	**159-166**
37.	प्रवासी हिंदी कहानियों में विषय वैविध्य	डॉ. मद्दाला जयलक्ष्मी	167-169
38.	प्रवासी हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ	प्रो. सविता गेडाम	170-175
39.	उषा प्रियंवदा की कहानियों में चित्रित नारी संवेदना	सुजाता. नुन्ना	176-179
40.	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन	डॉ.ए. रामकृष्ण	180-184
41.	प्रवासी साहित्य और महानुभाव साहित्य का विवेचन	साहिल महाजन	185-192
42.	तेजेन्द्र शर्मा	श्रीमति यू वारिजा	193-198
43.	**Re-Examning the Traditional Existing Social Sistation and Identity of Women in Indian Literature – An Overview**	**Dr. D. Fathima Rani**	**199-202**
44.	**Geographical Diasporas : An overview of the Research Areas of Migration**	**Kajal**	**203-205**
45.	अर्चना पैन्यूली की कहानियों का विश्लेषण	प्रो. जे विजया भारती	206-209
46.	प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियों का विश्लेषण	काकर मूत्यालराव	210-213
47.	विस्थापन का खट्टा-मीठा पारितोष : 'वाकिंग पार्टनर'	डॉ. अनु पाण्डेय	214-219

48.	Indian Diasporic Women Writers – A Study	Dr. D. Rajani Deivasahayam	220-230
49.	Portrayal of Women Characters by Dsaspora Writers with Special Reference to Chitra Banerjee Divakaruni	Ms. D. Mani Bhagyasri, Dr. A.Vijayanand	231-236
50.	Feminist Implication of Women by Diasporic Writers	G. Durga Vyshnavi, Dr. A.Vijayanand,	237-242
51.	Faith in a Modern Secular World : Papal Encyclicals on the Path of Spiritual Renewal	L. Maria Christia. Dr. A.Vijayanand,	246-250
52.	हिन्दी कविता में प्रवासी कवियों का योगदान	A. Devika	251-259
53.	प्रवासी हिंदी कविता में राष्ट्र	कमला नरवरिया	260-266
54.	प्रवासी साहित्य में व्यक्तित्व विघटन की समस्या	डॉ. काकानि श्रीकृष्ण, जे. कृष्णवेणी	267-268
55.	Exploring the Unique Features of "Pravasi Hindi Sahitya Ki Visheshataem : Ek Parisilan"	Dr. T. Sai Sankar	269-272
56.	सुषम बेदी के कथा-साहित्य में प्रवासी जीवन-संघर्ष	डॉ. पी.के. जयलक्ष्मी	273-276
57.	प्रवासी देशों में हिंदी की दशा एवं दिशा और अभिमन्यु अनत का योगदान	डॉ. भाग्यवति	277-279
58.	प्रवासी हिंदी कहानी में भारतीय लेखिकाओं की देन ब्रिटेन के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. के. श्याम सुन्दर	280-283
59.	Resuragence of Cultural Retention Among The Indian Diasporic Communities	Major Dr.P.Mary Celine Rose	284-289
60.	Globalization, Struggle, and Empowerment in the African Diaspora And Indian Diaspora	S. Hima Bindu, G. Divya Teja Aswini	290-294
61.	The Sociological and Humam Rights Implications of Ostracism : The Case of OSU Caste in the IGBO Ethnic of Africa	S. Hima Bindu, Dr. Vijay Anand	295-300
62.	उषा प्रियवंदा का उपन्यास : 'रूकोगी नाही राधिका' – नारी मुक्ति की आकांक्षा का स्वर	डॉ. आर. बी. वाणिश्री	301-305
63.	प्रवासी जीवन : विशेष सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के उपन्यास	राजू. रमादेवि	306-311
64.	"शेष यात्रा" : एक स्त्री के पूर्ण होने की यात्रा	डॉ. जीतेंद्र कुमार	312-315
65.	प्रवासी भारतीय समुदाय और सरकार की भूमिका	डॉ. सविता यादव	316-319
66.	विभिन्न देशों में हिंदी	सुहासिनी उंकिली	320-322

विशेषांक सम्पादक की कलम से......

वर्तमान समय में प्रवासी साहित्य ने एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में हिंदी साहित्य की मुख्य धारा में अपना स्थान बनाया है। प्रवासी साहित्य प्रवासी भारतीयों की अस्मिता व अस्तित्व को जीवित रखते हुए नया सृजनात्मक वितान खड़ा करती है। आज संपूर्ण विश्व में प्रवासी साहित्य के विकास व संवर्धन से हिंदी भाषा का निरंतर विस्तार हुआ है जिससे हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है। आज विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का सर्वत्र बोलबाला है। विश्व के अनेक देशों में विश्व भाषा हिंदी का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य ने पूरे विश्व में हिंदी का परचम लहराया है। हिंदी अब सिर्फ गिरमिटिया देशों व खाड़ी देशों तक सीमित न रहकर वैश्विक स्वरूप धारण कर चुकी है। विश्व के अनेक देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहे हैं। प्रवासी हिंदी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा है। प्रवासी साहित्य पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाने लगा है। प्रवासी भारतीयों की कृतियों का प्रकाशन भारत में होने लगा है और उनके सृजनात्मक लेखन पर विमर्श भी होने लगा है। जहां ब्रिटिश राज में भारतीय किसानों व मजदूरों को जबरन आर्थिक गतिविधियों में संलग्न करने के उद्देश्य से विवश करके ब्रिटिश उपनिवेशों में श्रम करने हेतु जबरन भेजा गया था वहीं अब शिक्षा, रोजगार तथा अन्य कारणों से प्रवास किया जा रहा है। गिरमिटिया मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत भेजा जाता था अतः यही एग्रीमेंट शब्द कालांतर में गिरमिट हो गया और बाद में गिरमिटिया रूप धारण कर गया। भारतवंशियों ने हिंदी साहित्य को मॉरीशस, फ़िजी, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क, चीन जापान आदि देशों में पहचान दिलाई है।

प्रवासी साहित्य : विविध आयाम विशेषांक गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी भिवानी, हरियाणा द्वारा प्रकाशित बोहल शोध मंजूषा के माध्यम से प्रवासी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप, दशा एवं दिशा को समझने का प्रयास किया गया है। इस विशेषांक को अपने शोध पत्रों से समृद्ध करने वाले शोधार्थियों, प्राध्यापकों, समीक्षकों का मैं दिल से शुक्रगुजार हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक प्रवासी साहित्य पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों व प्रवासी साहित्य को जानने समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होगा तथा इस विशेषांक को पढ़कर सुधी हिंदी प्रेमी पाठक प्रवासी साहित्य पर चिंतन मनन करने हेतु प्रेरित होंगे। इस विशेषांक में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों की में आभारी हूँ।

–डॉ. पायल लिल्हारे

विशेषांक सह-सम्पादक की कलम से.

सीहेच.एस.डी. सेट थेरेसा महिला महाविद्यालय महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान है। 1953 में इटली के सेंट एन आफ प्रविडेंस की मठ कन्याओं की अग्रणी संघ द्वारा मुटठीभर छात्राओं के साथ स्थापित संस्था है। जिस समय महिलाओं की शिक्षा को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था, उस समय औरतों की शिक्षा हेतु स्थापित संस्था है सेंट थेरेसा कालेज। आज यह कलाशाला शिक्षा के क्षेत्र में एक ट्रेंड... सेंटर के रूप में विकसित हुआ है, और उन छात्राओं के लिए एक प्रतिष्ठित गंतव्य बन गया है जो सफलता की सीढी चढने की इच्छा रखती है। 1987 में यूजीसी के द्वारा स्वयत्तता प्रदान किए जाने के बाद इस संस्था ने ईमानदारी से खुद को शिक्षार्थियों की गतिशील आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। 1998 से लगातार चार बार नाक द्वारा ए ग्रेड प्रदान किया जाना और 2006 में यूजीसी द्वारा सीपीई अनुदान आदि शिक्षा के प्रति संस्था के दूरदर्शी नेतृत्व और प्रतिबद्धता के मजबूत संकेत हैं। इस प्रकार सेंट थेरेसा कॉलेज का बीज 70 साल पहले इटली से भारत तक, यानी भारत के सुदूर हिस्से, एलूरू शहर में सिस्टर्स आफसेंट एन के संगठन के संस्थापकों द्वारा बोया गया था। इस प्रकार हमारे कॉलेज के संस्थापक प्रवासी थे जो 70 वर्ष पहले एक महान उद्देश्य को लिए इटली से भारत आए थे।

70 साल बाद ऐसे प्रवासों से स्थापित हमारी इस कलाशाला में आज प्रवासी साहित्य पर चर्चा की गयी। इसी संदर्भ में हमें यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि इस वर्ष हम प्लाटिन मजूबिली मना रहे है। इसी प्लाटिन मजूबिली वर्ष में हमने पहला कार्यक्रम प्रवासी साहित्य पर सेमिनार किया। प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता है। प्रवासी साहित्यकारों की वजह से आज हिंदी अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली है।

प्रवासी साहित्य ने गत दो दशकों से अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। जिस तरह कोई भी साहित्य समाज की तस्वीर पेश करता है, उसी प्रकार प्रवासी साहित्य भी भारतीयों की मुश्किलों के अलावा उनके जीवन संघर्ष की गाथा प्रस्तुत करता है। नयी पीढी के लोग प्रवासी साहित्य के बारे में ज्यादा नही जानते हैं। संगोष्टी मे आए विविध पत्रों के द्वारा प्रवासी साहित्य का विस्तृत रूप प्रस्तुत हुई। मेरे उद्देश्य से प्रवासी साहित्य के विचार...विश्लेषण से यह कमी सफलता पूर्वक दूर हो गयी।

इस संदर्भ में मैं पहले अपने प्रधानाचार्या डॉ. सिस्टर मर्सी को अपना धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास रख कर मुझे इस सेमिनार का कार्यभार सौंपा। मैं अपने उप प्रधानाचार्या सिस्टर मरिया क्रिस्टिया के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे नैतिक बल देकर संगोष्ठी की व्यवस्था करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है। साथ ही गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसाइटी और गीना देवी शोध संस्थान के सचिव डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट जी और समस्त कार्यकारिणी का भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनके सहयोग ने मुझे इस कार्य में धीरज संभाला। प्रवासी साहित्यकार श्री तेजेद्र शर्मा जी, श्री राकेश शंकर भारती, श्री दीपक पांडेय ने इस सेमिनार में भाग लेकर इसकी शोभा बढायी। उनके प्रति मैं आभारी हूँ जो विद्वज्जन, हमारे इस संगोष्ठी में भाग लेकर प्रपत्र समर्पण किया है, उसके फलस्वरूप यह पुस्तक निकली है।

धन्यवाद।

-डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी,

विभागाध्यक्ष, हिंदी और तेलुगुं विभाग, सीहेच. एस.डी. सेट थेरेसा कालेज।

From :

Sr. Ernestine Fernandes

Superior and Correspondent

St. Ann’s Convent,

Gauravaram

Eluru

Dear Mrs. Dr. Ch. V Mahalakshmi.

I wish to thank you for communicating to me the good news of the proposed International Conference and for the accompanying request for a message from me for the Souvenir to be released in this connection. I was truly overjoyed to learn that the Departments of Hindi and Telugu are jointly launching on this initiative of the International Conference in collaboration with Gina Devi Research Institute, Bhiwani, on the theme **Diasporic Literarture: Different Approaches.**

In this Platinum Jubilee Year of the existence of the College, this Conference will certainly mark another great milestone on the College’s journey to continued progress and success.The proposed International Conference being prepared for, with great eagerness, enthusiasm and expectation will undoubtedly remain a red-letter day in the annals of the history of this prestigious Institution of learning.

With a very relevant and significant theme, this Conference will undoubtedly have a far reaching and lasting impact in the years to come and be a very rewarding and enriching experience both for the participants and the organizers.

I take this opportunity to congratulate the Convenor, the Co-ordinator, the Speakers and all the Members of the Department of Hindi and Telugu for launching out on this endeavour with the challenging theme.I implore the blessings of the Almighty on all those connected with this programme and pray for the success of this historical event.

With prayerful best wishes.

Sr. Ernestine Fernandes

Message from the Principal......

I am extremely delighted that the Department of Languages under the leadership of Dr. Ch.V. Mahalakshmi has collaborated with the Gina Devi Research Institute, Bhiwani, Haryana to conduct the International Conference "Diasporic Literature: Different Approaches" on 2nd August, 2023. Such collaborative efforts, I am sure leads to a greater dissemination of knowledge and learning about current issues and trends to academia around the world.

The issues which are to be deliberated upon in this conference, I hope will bring about greater peace and understanding amidst our brethren settled in distant climes.

Our diaspora are the wealth of our nation and it is our duty to remember their resilience, fortitude and excellence they have been displaying. I am happy that diasporic Literature belonging to English, Hindi, Telugu, and Sanskrit will be examined, re-read and re-interpreted in the light of various approaches and theories.

I wish the organizers Dr. Rekha Soni, Dr. Naresh Sihag Advocate and Dr. Ch.V. Mahalakshmi all the very best in the conduct of this innovative conference that will, I am sure, open new vistas of learning.

Dr. Sr. Mercy. P
Principal
Ch.S.D.St.Theresa's College for Women (A)

Message from the Vice - Principal......

It brings me great pleasure to pen down these words in response to the request of Dr.Ch.V. Maha Lakhshmi, the esteemed Coordinator of the International Conference. This Conference served as a remarkable anthology of intellectual exploration, nuanced analysis, and diverse perspectives, all stemming from the enlightening discussions held during the event themed "Diasporic Literature: Different Approaches." This significant gathering, operating in a hybrid format, went beyond geographical boundaries to foster a unified platform for scholars, researchers, and literature enthusiasts from across the globe. Together, they delved into the intricate tapestry of diasporic narratives, unraveling the layers of their multifaceted interpretations. This Conference acted as an intellectual crossroads where participants engaged in spirited dialogues, shedding light on the various lenses through which diasporic literature can be approached, interpreted, and appreciated.

The articles presented here are not merely academic contributions; they are bridges connecting diverse cultural backgrounds, critical methodologies, and analytical frameworks. Each piece offers a unique vantage point into the intricate interplay of Diaspora, memory, identity, and representation, fostering a deeper understanding of the human experience across borders.

The success of this International Conference and the ensuing journal is a testament to the collective dedication and intellectual exchange of numerous individuals. I extend my sincere gratitude to the organizing committee, whose meticulous efforts orchestrated an event that transcended physical boundaries, allowing for a rich discourse to unfold in the virtual realm. I also extend my

appreciation to the esteemed keynote speakers and presenters, whose insights enriched the discussions and inspired novel ways of approaching diasporic literature. A special thanks to the CoordinatorDr.MahaLakhshmi, whose meticulous planning and tireless efforts ensured the seamless execution of the seminar, transcending the challenges posed by distance.

This journal serves not only as a chronicle of the seminar but also as a catalyst for future dialogues and collaborations. The ideas shared here have the power to transcend borders, inspire cross-cultural understanding, and pave the way for innovative solutions to global challenges.

I invite our readers to immerse themselves in the thought-provoking articles that follow, to engage with the myriad perspectives and methodologies that illuminate the realm of diasporic literature.

May the insights shared within these pages inspire further exploration, encourage cross-cultural understanding, and celebrate the rich mosaic of human narratives that transcend borders.

Sr.MariaChristia.L
The Vice Principal
St.Theresa's College for Women (A).

Message

Diasporic literature has almost always held a certain aura of alienation, loss and expatriation as central themes in the bulk of writings. The quest for identity, uprooting, insider and outsider syndrome, nostalgia are some of the characteristic features ofdiasporic writings. The literature produced by Indian diaspora functions as a substitute for the homeland, India, on a global platform and traverses across historical periods and geographicalboundaries. This physical detachment on the one hand and psychological attachment towards homeland, indeed makes compelling reading. The International Conference "Diasporic Literature: Different Approach” 2ndAugust 2023 is a stepforward towards bringing together of different ideologies of diasporic writers from Hindi, English, Telugu and Sanskrit literature.

I congratulate the Gina Devi Research Institute Bhiwani, Haryana, which has collaborated with Ch.S.D.St.Theresa's College for Women(A), Eluru for conducting this International Conference. My Kudos to Dr. Mahalakshmi & Dept of Telugu for organising the Conference with meticulous detailing of the blended modalities of participation & presentation of papers.

Dr. R. Madhavi,
Dean, Languages,
H.O.D English,
Ch.S.D.St.Theresa's College for Women, Eluru.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 17-22

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Monarch Butterflies – Conservation icons of Culture, Tradition, Food…

Dr. Sr. Mercy. P, Principal,
Dr. Padmaja M, Head, Department of Home Science
Ch.S.D.St.Theresa's College for Women (A), Eluru

Abstract :-

The Indian diaspora is currently more affluent than in the past, and their engagement in India's progress is increasing. They contribute to remittances, investments, lobbying efforts for India, promoting Indian culture internationally, and building a positive reputation for India through their intelligence and hard work. The Indian diaspora consists of a diverse range of individuals who possess different perspectives and experiences shaped by their cultural, artistic, and social backgrounds. These unique aspects contribute to the varied tones found within the diaspora. The Indian diaspora's contributions, whether in their host countries or in India, have made a significant and lasting impact on a global scale. Over time, the Indian diaspora has evolved by preserving its rich cultural heritage while also embracing the societies and opportunities present in their adopted homes. This ongoing process of evolution has allowed the Indian diaspora to draw strength from its roots as well as adapt and integrate into new environments.

Key Words :- diaspora, remittances, contributions, cultural background, Challenges

According to Global Migration Report 2020, India continues to be the largest country of origin of transnational settlers with a17.5 million-strong diaspora across the world, and it entered the loftiest remittance of $78.6 billion of Indians living abroad. Diaspora Indians are more prosperous than in the future, and their involvement in India's development has helped. It subsidizes the transmittals, venture, lobbying for India, promoting Indian culture abroad, and instituting a good image of India through intelligence and assiduity. The term "Diaspora" is derived from the Greek word diacerein, which means "dissipation". Over time, the term evolved, and now approximately refers to any person/ s belonging to a particular country with a common origin or culture, but abiding outside their motherland for colorful reasons. In India, diaspora is generally understood to include Non-Resident

Indians(NRIs), Persons of Indian Origin(PIOs), and Overseas Citizens of India(OCI), of which PIO and OCI card holders were intermingled under one order — OCI — in 2015. The Indian migration began in large figures during British rule as indentured laborers to former colonies like Fiji, Kenya, and Malaysia. Persistent development is visible even in the post-independence era with Indians from different societal strata moving to countries like the United Kingdom, the United States, and Gulf countries.

Consequence of Indian Diaspora :-

Profitable Front Indian diaspora is one of the richest nonagenarians in numerous advanced countries, this helped them to lobby for favorable terms regarding India's interests. For illustration, at 2.8 million, Indians may number just 1 of the U.S. population, but they're the most educated and richest nonagenarian, according to a 2013 Pew check. The migration of lower-professed labor (especially to West Asia) has also helped in bringing down disguised severance in India. In general, settlers' remittances have positive systemic goods on the balance of payments. Remittances of $70-80 billion help to bridge a wider trade deficiency. By weaving a web of cross-national networks, the migratory workers eased the inflow of wordless information, marketable and business ideas, and technologies into India.

Political Front Numerous people of Indian origin hold top political positions in numerous countries, in the US itself they're now a significant part of Republicans and Egalitarians, as well as the government. The Indian diaspora's political influence can be measured by the role it has played in getting distrustful legislators to vote for India-US dialogue. Foreign Policy

Front Indian diaspora isn't just a part of India’s soft power, but a completely transmittable political vote bank as well. Prime Minister Narendra Modi’s event at Madison Square Garden is a way of thanking the Indian- American community members who played a big part in his electronic crusade and election backing. The institutionalization of “diaspora tactfulness” is a distinct suggestion for the fact that a country’s diaspora community has come vastly more important as a subject of interest for foreign policy and associated government conditioning.

Challenges Faced by Indian Diaspora :-

Miscellaneous diaspora Indian Diaspora has different demands from the Indian Government. The diaspora from the Gulf, for illustration, looks to India for support on weal issues. While those from fat nations similar to the US look to India for investment openings. The Indian communities in countries similar to Fiji and Mauritius, meanwhile, desire to reconnect with the country on artistic grounds. Anti-Globalization with the rising Anti-globalization surge, there has been an increase in the incidents of suspected hate crimes against the Indian community. West Asian Crisis The volatility in West Asia, together with the fall in oil painting prices, has caused fears of a massive return of Indian

citizens, abridging remittances, and making demands on the job request. Diasporas returning to India must also recognize that the West Asian diaspora are semi-technical and heavily involved in the structural sector. After the structure smash will get over India should be ready for the eventuality of Indian workers returning.

Regulatory Cholesterol There are numerous crunches of the Indian system for the diaspora to unite with India or to invest in the country. For illustration, grievances like a red tape recording, multiple concurrences, and mistrust of government are acting as hindrances in fulfilling openings presented by Indian Diaspora. Negative Fallout It must be flashed back that having a strong diaspora doesn't always restate benefits for the home country. India has problems with foreign support for separatist movements such as the Negative Campaign and the Kalistan movement.

The Indian diaspora could provide the necessary strategic impetus, making it all the more important to seize India's opportunities. India should formulate a new NRI policy, the government must incontinently work with developed countries to ask that they protest back a portion of the income duty earnings they collect from the Indian diaspora. This is fair because these countries didn't invest anything in creating this gift but benefit incontinently when the emigrant pays levies abroad. There's a need for a strategic diaspora evacuation policy from conflict zones in a world where heads materialize without warnings and give veritably little response time for governments. India's foreign policy aims to restate hook-ups to benefits for crucial systems like Swachh Bharat, Clean Ganga, Make in India, Digital India, and Skill India, the diaspora has the plenitude of reaches to contribute. VAJRA (Visiting Advanced Joint Research Faculty) scheme which seeks to formalize a gyration program wherein top NRI scientists, masterminds, croakers, directors, and professionals serve Indian public sector associations for a brief period, advancing their moxie is a step in the right direction. The ease of doing business will go a long way in facilitating investment from diaspora Indians.

Diaspora Diplomacy :-

A collaborative action that's driven by a country's diaspora, that influences the host country's culture, politics, and economics in a manner that's mutually salutary for the motherland and the new home base. India's Diaspora Policy India was originally sensitive to the view that backing the cause of overseas Indians might offend the host countries, who should be completely responsible for their weal and security.

J L Nehru's perspectives had been that the diaspora could not count on India to combat for his or her rights and hence India's overseas coverage within side the Nineteen Fifties changed into therefore dependent as a version of non-interference on every occasion the migrant Indians were given into problem in Sri Lanka, Myanmar, etc. still, Rajiv Gandhi changed into the primary Prime Minister who modified the diaspora coverage within side the Nineteen Eighties via way of means of inviting Indians

abroad, anyways in their nation, to proportion in nation- structure, similar to the distant places Chinese communities. Additionally, under, Atal Bihari Vajpayee Government after 2000, there got here a bunch of superb measures comparable as a separate Ministry of Overseas Indian Affairs, the Person of Indian Origin (PIO) Card, PravasiBharatiya Queens, PravasiBharatiyaSamman Award, Overseas Citizen of India Card, NRI budget and balloting rights for Indian residents abroad.

Likewise, in 2015, the Ministry of External Affairs launched a thee-migrate system that requires all foreign employers to register in the database. In 2016, the current government launched a program called 'Know India Program' (KIP) for Diaspora participation, to familiarize young Indians (ages 18-30) with their Indian roots and modern India.

Indian Diaspora at Work in Different Countries :-

One of the largest migrant populations in the world, the Indian diaspora has an estimated 18 million members. It has a large presence in several nations, including the US, Canada, the UK, the Gulf states, and Australia. While many members of the Indian diaspora work in highly specialized fields like computer technology, finance, and medicine, a sizable portion of them are employed in physical labor and lower-skilled occupations. Members of the Indian diaspora's safety at work is a serious concern. Numerous incidences of violence, discrimination, and exploitation of Indian employees in several nations have occurred in recent years. The safety of members of the Indian diaspora at work in various nations will be examined in this article, along with the measures taken to solve the problem.

Members of the Indian diaspora's safety at work is a serious concern. While individuals of the Indian diaspora have made substantial economic contributions to several nations, they have also encountered instances of bigotry, discrimination, and exploitation. Work has been done by several organizations and advocacy groups to address these problems and advance diversity and inclusion in the workplace. To guarantee the well-being and safety of people of the Indian diaspora at work, more must be done. To make workplaces that respect the rights and dignity of all employees, regardless of their ethnicity or nationality, governments and employers must collaborate.

Health Crisis in Indian Diasporics :-

Refined carbohydrates, similar to white rice and white flour, are dependent on the ultramodern Asian Indian diet and may contribute to the rising prevalence of type 2 diabetes and cardiovascular complaint in this population. Before the 1950s, whole grains similar to amaranth, barley, brown rice, millet, and sludge were more generally used in Asian Indian cuisine. These grains and other on-Indian grains similar to couscous, quinoa, and spelled are nutritionally profitable and may be culturally respectable carbohydrate backups for Asian Indians. This review focuses on practical recommendations for culturally sensitive carbohydrate revision in an ultramodern Asian Indian diet, in trouble to reduce

type 2 diabetes and cardiovascular complaint in this population. Global Organization of People of Indian Origin's health council. Pointing out that the Indian Diaspora is a major threat from diabetes, heart complaint, and other habitual problems, Ahuja, a registered dietician, says lesser attention is demanded adding mindfulness, promoting forestalment, and managing habitual conditions.

"It is a huge crisis not just in terms of ailments like diabetes, for which Indians account for the highest number of victims, but also in terms of the huge medical care costs that such diseases entail,"

Ahuja, is a long-time Stamford, Connecticut resident.

The COVID-19 pandemic's horrific images of fatalities and destruction have given diaspora diplomacy increased attention worldwide, but especially in India. A new generation of professionals from the diaspora who are modeled after social entrepreneurs build links with their counterparts to facilitate medical services and research through cooperative and non-profit structures. Diaspora members and their counterparts can communicate more easily thanks to teleradiology and telepsychiatry. To standardize the advice provided by the Indian diaspora in the Global North as protocols change quickly in acute pandemics, we suggest a shared telehealth platform. The well-known digital gap in India and other low- and middle-income nations should be taken into account. To promote transparency and accountability in the collecting of funds as well as a requirement for outcome measurement by impartial monitors rather than through social media, we urge diaspora members to become trained in the art of global health diplomacy. Indian Americans concentrated on the long-term infrastructural requirements for India to boost the public health sector, which has historically been underappreciated in that nation. As a best practice for upcoming pandemics and humanitarian disasters, the lessons learned from diverse diaspora initiatives should be independently assessed and recorded.

Indian Diaspora's response to Indian literature in English :-

It is widely acknowledged that the fundamental focus of all literature is the human being, including his or her deeds, thoughts, feelings, and religious beliefs. Literature deals with a variety of sociological topics and aesthetically pleasing arrangements. Literature from the diaspora explores emigrant sensitivity. It focuses on immigrants' life and the internal and external struggles they face in a strange country. Diasporic literature holds a significant position in the literary world by focusing on topics like cultural predicament, the search for identity, multiculturalism, and universal characteristics of human existence.

In "Exploring the Role of Testimonio Method in Shaping Collective Memory of Indenture History: from Empathy to Empowerment," the author looks at how the Testimonio method of study, a potent literary genre with roots in oral history, can be used to study indenture history from the

Bhojpuri-speaking regions of North India and fill in the gaps and silences of this history using folktales, oral histories, poems, diaries, autobiographies, etc. Through folk tales and songs told to young children, it also emphasizes the role of Bhojpuri as a community language, its influence on cultural preservation, and literary expression. It also emphasizes the role of Khelauni (babysitter) and Ajie (grandmother) culture in the formation of a distinct community in the former sugar colonies such as Fiji, Mauritius, etc. By examining a variety of testimonial narratives and literary works, this essay aims to demonstrate the effectiveness of the Testimonio method in revealing the untold stories of indentured people. It does so by highlighting the complex aspects of indenture history, gender dynamics, and the preservation of cultural identity. It also emphasizes how the distinctive approach of the Testimonio method, which is concentrated on individual narratives and collective memory, enables a nuanced comprehension of the real hardships and victories of the Girmitiyas.

Conclusion :-

The modern application of science and technology has reduced the size of the world to a manageable global village. People quickly take advantage of the option to go anywhere in the globe to sustain themselves in this age of fierce competition, which has an impact on global cultural, political, social, economic, and literary trends and challenges. Diasporic literature and its application to the increasingly interconnected world is one scholarly topic worth exploring. This essay was inspired by the need to comprehend the significance of Diaspora literature in a globalized society. This paper attempt to comprehend the value of Diaspora writing in a globalized society to discuss various aspects of diasporic literature, including its in-depth analysis, literary trends and practices that have been noticed, diversity in ethnicities, languages, and religious traditions, etymological growth, issues with migration, the emotions, difficulties, consolation, and acculturation of the migrant community, and hybridity and its effects on the second generation in the wake of globalization. Additionally, I want to muse about the ephemeral idea of excellence and how it relates to and influences the modern world.

References :-

1. https://news.rediff.com/report/2010/feb/05/indian-diaspora-faces-health-crisis.htm
2. https://www.drishtiias.com/daily-news-editorials/india-s-diaspora
3. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3146027/
4. https://academic.oup.com/inthealth/article/15/1/93/6572846
5. https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/Diplomacy-and-thediaspora/article14583813.ece
6. https://www.drishtiias.com/mains-practice-question/question-810
7. https://www.orfonline.org/research/the-diaspora-and-indias-growth-story
8. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-editorials/india-sdiaspora/print_manually

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 23-26
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी कहानी साहित्य : एक अनुशीलन

डॉ. सीहेच.वी.मालक्ष्मी

सह आचार्या, सीहच.एस.डी. सेंट थेरेसा महिला महाविद्यालय (स्वायस्थ), एलूरू, 534003

प्रवास का आशय एक स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर बसने से है। मानव जीवन के प्रारंभ से ही प्रवास करता रहा है। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ख़ाद्यान्न संकलन, शिकार करने ओर पानी की तलाश में आदि मानव घूमता रहा। आदि मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और सुरक्षा हेतु एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर प्रवास करता रहा। लेकिन उसे प्रवास के साधनों के अभाव थी। परंतु आज की औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप यातायात के साधनों की वृद्धि ने मानव की गतिशीलता को आसान कर दिया। प्रवास जनसंख्य परिवर्तन के महत्वपूर्ण आधारों मे एक है। प्रवास के परिणाम यह हुआ कि सामाजिक परिवर्तन घटित होता है। सच मे जनसंख्या के घटित होने के कारण होते है....जन्म, मृत्यु और प्रवास। जन्म और मृत्यु तो जैविक कारक है। लेकिन प्रवास ऐसा कारक है जो सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक आधारों पर प्रभावित होता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार प्रवास का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना और अपने देश या घर से दूर रहना प्रवास है। डॉ. सुधा ओम ढींगरा के शब्दों में विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है कि : प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।

भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे है। प्रवासी भारतीय जो संवेदनशील थे, उन्होंने विदेश मे ंअपने प्रवास के दौरान आने वाली समस्याओं को, और अपने चारों ओर घटित घटनाओं के आधार पर साहित्य सृजन किया। वे अपनी विचारों अपनी सोच, अपने–अपने जीवन विधान आदि को भारतीयता से तुलना करते हुए अपने बदली हुई परिवेश की चर्चा की। वही रहते हुए वे लोग हिंदी को हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने प्रयास कर रहे है। इस तरह प्रवासी साहित्य की शुरूआत हुई। संसार भर के विभिन्न देशों में रहने वाले भारतीय साहित्यकार भारत के बाहर की दुनियां की चर्चा अपने साहित्य में की।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार विदेशों में भारतीय और भारत में विदेशी जीवन शैली को अपनाकर वहाँ के मूल्यों के साथ जीवन बिताते है। वहाँ के जीवन विधान, रहन...सहन और पहनावे के साथ...साथ खान...पान में भी बड़ा अंतर दिखाई पड़ता है। इसी परिवेशगत अंतर को उन्होनें अपना साहित्य का आधार बनाया।

हिंदी प्रवासी साहित्यकारों में तेजेन्द्र शर्मा बहुत प्रसिद्ध नाम है। विदेशों मे रहते हुए भी वे भारतीय संस्कृति के विरासत बने रहे। भारतीय संस्कृति मे स्त्री का अपना एक पवित्र स्थान है। लेकिन नारी की उस स्थान को

कलंकित करने वाले पुरूष और कहीं–कहीं जीवन यापन के लिए सामाजिक रुढियों को ठुकराने वाली स्त्रियाँ भी इस समाज में दिखाई देते है। हिंदी के साहित्यकार चाहे प्रवासी ही क्यों न हो, अपने साहित्य में उसके जीवन की समस्याओं को, उसकी सामाजिक दशा, उसकी दर्द भरी कहानियों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। यहाँ तक की कुछ–कुछ रचनाएँ नारी जीवन की यथार्थ स्थिति को उजागर कर उसमें बदलाव लाने की कोशिश भी की। ऐसी कहानियों में तेजेन्द्र जी की भी बहुत सारी कहानियाँ है।

तेजेंद्र जी की बहुचर्चित कहानी संग्रह है 'देह की कीमत' जो मानव जीवन की दुःख...दर्द को व्यक्त करती है। इसमें विशेष रूप से नारी जीवन की विडंबनाओं का चित्रण किया। इसमें स्त्री जीवन के सुख...दुःख, पीड़ा, सामाजिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होने वाले मानसिक दबाव और द्वंद्व का मार्मिक चित्रण किया गया है।

देह की कीमत कहानी पंम्पी नामक एक स्त्री की है जो घर–परिवार के साथ होते हुए भी अकेलेपन को महसूस करती है। वह एक पढी–लिखी औरत थी। उसे अपनी जीवन के बारे में कुछ आशाएँ थी, कल्पनाएँ थी। लेकिन उसके पतिदेव इसके विपरीत सोच विचार के है। उनकी दृष्टि में स्त्री केवल घर की वस्तु है, उसे बाहरी दुनिया से कोई संबंध है ही नहीं। पम्पी अपने पति के हर कार्य में भाग लेना चाहती थी। लेकिन नहीं कर पाती थी। पति की मृत्यु के बाद एकदम उदास बनती है। उसे जीने की कोई आशा न थी और न ही कोई कारण। लेखक उसकी दयनीय स्थिति का वर्णन यों करते है।

''एक ही घटना आपके समूचे जीवन को कैसे तहस–नहस कर देती है। जिजीविषा बहुत ही निर्दयी वस्तु होती है। इन्सान को जीवित रहने के लिए मजबूर करती है। वरना क्या आज पंपी के पास जीने का कोई बहाना है?''

पति की मृत्यु के बाद वह अकेली बनती है। ससुराल में रहते हुए भी पूरे परिवार के साथ होने पर भी वह असहाय और अकेलापन का महसूस करती है।

अमेरिका की प्रमुख कहानीकार उषा देवी विजय कोल हटर ने अपनी कहानियों में अमेरिका के जीवन विधान और संस्कारों के साथ....साथ भारतीय जीवन पद्धति को भी हमारे सामने रखने की कोशिश करती है। ''सरोगट मदर'' कहानी में अमेरिका के नयी पीढ़ी जिस तरह के नयी–नयी विकारों का जन्म देती है, उन सबको पाठकों के सामने रखती हैं। कहानी के केंद्र में स्त्री को रखकर लेखिका ने हॉस्टल में रहने वाली छात्राओं की समस्याओं पर प्रकाश डाला। कहानी का केंद्र शिंडी नामक वेश्या है, वह धन के लालच में तरह–तरह के काम करती है। इनकी विकारों की आलोचना करते हुए वीरेद्र मोहन कहते है कि अमेरिका में मातृत्व को बाजार बना दिया गया है। अमेरिका में व्यक्तिगत स्वतंत्रता नरक का द्वार बन गया है।

उषा राजे सक्सेना की कहानी ''डैडी'' आजकल विदेशों में जो संबंध विच्छेद की प्रक्रिया चल रही है, उसका चित्रण करती है। कहानी में माता–पिता का अलगाव बेटी में अविश्वास पैदा करती है। सौतेला पिता उसे कितनी ही प्यार दे, तो भी वह सोचती है आखिर उसके पिता ने उससे संबंध क्यों तोड़ देता है। उसी प्रकार उषा राजे सक्सेना की कहानी 'प्रवास में' यू. के. में रहने वाले एक महत्वाकांक्षी युवक की कहानी है जिसमें उस युवक का जीवन और उसकी आकांक्षा की चर्चा की गयी है।

प्रवासी कहानीकार अनिता शर्मा ने अपनी कहानी 'शुवे' में अपने चीन से लंबे जुड़ाव के कारण भारत और

चीन की सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेशों को चित्रित किया है। कहानी की नायिका शुवे एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करने वाली अच्छी खासी लड़की है। उसे जीवन साथी की तलाश है। माँ... बाप की इच्छा और पश्चिमी संस्कृति की दबाव के कारण वह साथी की तलाश में अमेरिकन फिटनेस कोच क्रिस के मोह में पड़ती है। लेकिन क्रिस एक विलासी पुरूष होने की विषय जानकर वह उससे दूर हो जाती है और जीवन के नए रास्ते ढूंढने की कोशिश करती है।

उसी प्रकार अर्चना पेन्युली की ''वह उसे क्यों पसंद करती है'' में कामकाजी पत्नी की विवशता और कमजोरी का चित्रण किया गया है। कहानी की नायिका अतिथि प्रेम विवाह करती है। वह अपने पति से ज्यादा पढ़ी...लिखी और कमाऊ है। एम. बी. ए. करके तीस हजार कमाती हैं। खुद का घर खरीद लेती है। उसकी तनख्वास से घर भार संभालती है लेकिन जब वह नौकरी से इस्तीफा दे देती है तो पति का सकारात्मक भरोसा उसे बल देती है।

अमेरिका की प्रसिद्ध लेखिका सुदर्शन प्रिय दर्शिनी की कहानी 'धूप' मे आधुनिक नारी की मानसिकता का वर्णन मिलता है। कहानी की नायिका रेखा विदेश में यानी अमेरिका में कदम रखते ही बहुत खुश हो जाती है। समय बीतते ही उसे मालूम होता है कि उसका पति देव पक्का विदेशी बन चुका है।

भारतीय संस्कृति और संप्रदायों के प्रति प्रवासी साहित्यकारों इतना लगाव है कि वे अपनी कहानियों में कहीं न कही इसका उल्लेख तो किये बिना नहीं लिखते। भारतीय जीवन मूल्य इतने गहराई से उनके मन में स्थिर है कि वे विदेश जाने के बाद भी उन्हें भूल नहीं पाते। जब नयी पीढ़ी इन मूल्यों को ठुकरा देती है, उनके मन बाधा से भर जाती है। सुषमा वेदी की कहानी ''चिड़िया और चिल'' मे इसका चित्रण किया गया है। कहानी की नायिका चिड़िया को माँ....बाप अच्छे संस्कार और संस्कृति मे पालते है। लेकिन जैसे चिड़िया बड़ी होती जाती है, वह पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित होती है। माँ...बाप ने जो संस्कार दिया है, उसे भूलकर खुलेपन से जीना चाहती है। स्वच्छंद होके रहना चाहती है, केवल पैसों की वजह से वह माता–पिता के साथ रहती हैं। जब माँ उसे पैसे देने के लिए इनकार करती है तो वह माँ से इस प्रकार कहती है.....''ठीक है रख लो संभालकर चिता पर रख कर साथ ले जाना.....मैं भी तुम दोनों के मरने के इंतजार कर लूँगी...माँ....बाप पता नही किस बात का बदला लेते है....ट्रस्ट का पैसे देंगे अपने औलाद को नहीं।..'' इस प्रकार हमारे भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्स संस्कृति का प्रभाव दिखाने का प्रयास किया गया है।

प्रवासी साहित्य की प्रमुख लेखिका डॉ. सुदर्शना प्रियदर्शिनी की कहानी ''अखबार वाला'' में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलता है। कहानी की नायिका जया, भारतीय संस्कार और संस्कृति को लेकर विदेश में रहने आती है। वहाँ की संस्कृति एवं परिवेश से वह परेशान हो जाती है। जया आसपास के लोगों से मिलना चाहती है। उसका एक पड़ोसी हर दिन अखबार उठाने आता है, लेकिन अचानक एक दिन उनका मृत्यु हो जाती है तो कहीं कोई तैयारी नहीं। लाश के पास एक गाड़ी और दो आदमी खड़े हुए थे। लेखिका उससे कुछ पूछना चाहती है तो उसे कुछ पता नहीं। वह बहुत संवेदना के साथ लिखती है.... चारों ओर सन्नाटा था। एक भी व्यक्ति नहीं था। आस–पास आने जाने वाले भी इस फ्यूनर लवेन को देखकर रास्ता बदल रहे थे। कही किसी खिड़की से कोई चेहरा नहीं झाँका। किसी आँगन बाँधा कुत्ता तक नहीं भौका ''वहीं मृत्यु भारत में होती है तो मौत की खबर, सबको पता चलता है, घर...गाँव के बूढे...बच्चे सब इकट्ठा होते है, घरवालों की मातम फुंरसी

होती है। प्रवासी हिन्दी कहानियों का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि विदेशी संस्कृति के टकराव से भारतीय संस्कृति में भी विकार उत्पन्न हुआ है। आज के व्यक्ति के लिए प्राचीन मान्यताएं बदल चुकी हैं वह अपने जीवन में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करता। बहुत से व्यक्ति ऐसे भी हैं जिनके लिए विवाह संस्था से जुड़ी भारतीय कल्पना का कोई मूल्य नहीं रह जाता। भारतीय समाज की अपेक्षा विदेशी समाज में लिव...इन. .रिलेशनिप, प्रेम–प्रसंग, विवाह–विच्छेद व पुनर्विवाह आदि आसानी से स्वीकार किए जाते हैं। इन्हीं सब परिस्थितियों से प्रवासी भारतीय द्वंद्व की स्थिति में पहुंच जाते हैं। यही प्रवासी साहित्य की कहानियां की मूल संवेदना है।

इस प्रकार देखने से हिंदी प्रवासी लेखक प्रायः वे है जो रोजगार या शिक्षा की वजह से विदेश गए हुए थे। वे विदेश गए तो विदेशी संस्कृति को न अपना सकें और न शुद्ध रूप से भारतीय रह सकें। इन भारतवंशी परिवारों की नयी पीढ़ी तो भारतीय के अलावा विदेशी बनने की और विदेशी संस्कृति को अपनाने की लालच में पड़ी रही। इस प्रकार इन दोनों पीढ़ियों के अंतर ही प्रवासी साहित्य की मूल वस्तु है। इसी साहित्य लेखन के कारण जो भी हो, उसमें चित्रित परिस्थितियाँ जैसी भी हो, प्रवासी साहित्य भारतीय साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है। प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की यह परम्परा दीर्घकाल तक यथावत बनी रहें। ताकि आने वाले समय की नई भारतीय पीढ़ी भारतीय संस्कृति और परंपराओं को विरासत के रूप मे स्वीकारने के इच्छुक बने रहे।

सहायक ग्रंथ सूची :–

1. हिंदी का प्रवासी साहित्य ...डॉ. कमल किशोर गोयंका : प्रकाशन अमित संस्करण, गाजियाबाद– 2011
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी, सुरेन्द्र गभीर : प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण– 2017
3. देशांतर प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ...सं : तेजेद्र शर्मा, हिंदी अकादमी प्रकाशन।
4. प्रवासी साहित्य–एक विकास यात्रा सुषम बेद।
5. विदेशी धरती पर भारतीय स्त्री–डॉ. कविता वाचवनवी सृजनात्मक लेखन।
6. इस सफर साथ–साथ, दिव्या माथुर।

फोन नं. 9490970021

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 27-32

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप एवं उसमें निहित मानवीय संवेदना

डॉ. पायल लिल्हारे

सहायक, प्राध्यापक हिंदी, अ.श.च.आ. शास. स्नात. महाविद्यालय, निवाड़ी।

संसार में लोग अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर हमेशा से प्रवास करते रहे हैं और प्रवास एक सहज और सामान्य प्रक्रिया रही है जिसके फलस्वरुप मानव जीवन में कई नवीन संकल्पनाओं व प्रवृत्तियों के सृजन का मार्ग प्रशस्त होता रहा है, कारण चाहे जो भी हो। आवागमन के साधनों के अभाव में प्रवासी साहित्य सृजन मूर्तिमान न हो पाता था किंतु आवागमन के साधनों ने प्रवासी साहित्य को और भी बढ़ावा दिया है। प्रवास के लिए दो शर्त होती है जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभूमि से दूर किसी अन्य स्थान पर जाकर दीर्घकाल तक निवास करने लगता है। इस प्रकार अपनी मातृभूमि से विलगाव और वहां से दूर जाकर किसी अन्य स्थान पर निवास करना प्रवासी होने की पहली शर्त मानी जाती है। साहित्य के विशाल वृक्ष की अनेक शाखाओं के समान ही वर्तमान में प्रवासी साहित्य भी एक शाखा है जो दिन–प्रतिदिन हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाकर उसे विश्व के अनेक भागों में पहुंचा रही है। प्रवास से मिलते जुलते शब्द वास, अप्रवास, बसने वाला, विदेशी, अनिवासी आदि है। प्रवासी अर्थात् विदेश में निवास करने वाला, जो अपना देश छोड़कर जाता है, विदेश यात्रा पर हो इत्यादि।

प्रवासी शब्द 'वस' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से निर्मित होता है जिसका अर्थ है– 'विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करने वाला व्यक्ति ही प्रवासी है।'[1] प्रवास से संबंधित अन्य शब्द भी प्रचलित है 'वासी' अर्थात् पीढ़ियों से संबंधित जन्मभूमि में वास करने वाला, जिसकी जन्मभूमि ही इनका निवास स्थान हो। 'अप्रवासी वह व्यक्ति है जो निश्चित समय के लिए अपना देश छोड़कर बेगाने देश में रहता है और समय बीत जाने के पश्चात् अपने देश में लौट आता है।'[2] प्रवासी को ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इस प्रकार की परिभाषित किया गया है– "A person who lives his country to live in another."[3] अर्थात् 'प्रवासी वे लोग हैं जो अपना देश छोड़कर बेगाने देश में अनिश्चित समय के लिए जाते हैं और दूसरे देश में बस जाने का फैसला कर लेते हैं।'[4] प्रवासी विमर्श में यह शब्द बार–बार प्रयोग होता है– एनआरआई अर्थात् नॉन रेजिडेंट्स इंडियन अर्थात् अनिवासी भारतीय। एनआरआई वे भारतीय है जो विदेश जाकर वास कर रहे हैं। जो धन कमाने के लिए विदेश गए हैं उन्हें ओवरसीज इंडियन कहते हैं। इसके अतिरिक्त 'सेटलर्स' वह होते हैं जो प्रवासी वापस न आने का फैसला कर लेते हैं तो वह प्रवासी नहीं होते अपितु बसने वाला होता है। विदेश में स्थाई रूप से बसने वाले प्रवासी को 'सेटलर्स' कहते हैं। विदेशी वह व्यक्ति है जो नागरिक अधिकारों से वंचित है।

मॉरीशस के प्रवासी उपन्यासकार रामदेव धुरंधर इस बात पर जोर देते हैं कि उन जैसे लेखकों को प्रवासी भारतीय साहित्यकार न कहा जाए क्योंकि वह न हीं प्रवासी है और न हीं भारतीय है। वे कहते हैं कि हिंदी के ऐसे लेखक जो संसार के विभिन्न देशों के जन्मजात नागरिक होने के साथ–साथ अपनी मातृभाषा हिंदी में साहित्य की रचना कर रहे हैं उन्हें प्रवासी के स्थान पर 'भारतवंशी' कहना चाहिए क्योंकि उनके पूर्वज वर्षों पहले भारत की पावन माटी से दूर उस देश में जाकर बस गए थे। ऐसे अनेक रचनाकार हैं जिन्हें किसी भी आधार पर प्रवासी भारतीय की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रवासी लेखक की जगह भारतेतर लेखक या भारतेतर साहित्य कहना अधिक समीचिन रहेगा। प्रसिद्ध प्रवासी कथाकार तेजेंद्र शर्मा जी का कहना है कि विदेशों में बैठकर लिखने वाले लेखकों को प्रवासी न कहा जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि उषा प्रियंवदा भारत में रहकर लेखन करते हुए ही प्रसिद्ध कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गई थी। उनकी पचपन खंबे लाल दीवारें व वापसी जैसी प्रसिद्ध कहानी भारत में रहने के दौरान ही लिखी गई थी, बावजूद इसके उन्हें प्रवासी साहित्यकारों की श्रेणी में रखा जाता है। उन्होंने प्रवासी साहित्य को भारतेतर साहित्य कहा जाना श्रेयस्कर समझा तथा विदेश में लेखन कार्य को ब्रिटेन का हिंदी साहित्य, अमेरिका का हिंदी साहित्य आदि कहते हुए अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि देशों में लिखे जाने वाले साहित्य को मुख्य धारा का साहित्य ही कहा। तेजेंद्र शर्मा जी ने आलोचकों से आह्वान किया है कि वह पुराने हथियारों से उनके साहित्य का आकलन न करें।

इस संदर्भ में सुधीश पचौरी जी लिखते हैं, 'प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है, वह एक ही वक्त में दो दुनियाओं को पुकारता है। एक वह जिसमें डॉलर कमाने, विदेश पलट होने, अमीर होने के लिए विदेश में नाना कष्ट सहते अपने देश की याद करता रहता है। दूसरा वह जो याद आने वाले देश के यथार्थ को भी जानता है जिससे उबकर वह परदेस भागा था। परदेश में उसका देश प्रेम जोर मारता है और देश में परदेस प्रेम।' पूंजीवादी स्पर्धापरक सभ्यता में वह विदेशी चाहकर भी अपनी मूल संस्कृति, मूल परंपरा और अपनी प्रकृति से जुड़ा हुआ होता है। मृदुला गर्ग ने भी प्रवासी साहित्य को अलग देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्य धारा में स्थान देने का परामर्श दिया।

भारत के संदर्भ में प्रवासी का प्रारंभ 1834 ई. में तब हुआ जब पानी के जहाज में भरकर सैंकड़ों की संख्या में पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के भोजपुरी बोलने वाले गरीब मासूम लोगों को हिंद महासागर स्थित मॉरीशस, फिजी, गुयाना आदि देश ले जाया गया। साहित्य में यदि हम देखें तो प्रेमचंद ने 'चांद' के प्रवासी अंक के लिए 'शूद्रा' नामक कहानी लिखी जो मॉरीशस गए भारतीय मजदूरों की यातना, व्यथा एवं चरित्र की दृढ़ता पर लिखी गई है। स्वतंत्रता के पश्चात् डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने प्रवासी भारतीयों के लिए 'भारतवंशी' शब्द का प्रयोग कर उन्हें भारत का अंग घोषित किया। इंग्लैंड में हिंदी साहित्य के विकास में डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त रहते हुए भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेई का एकल कवि सम्मेलन कराया था। मॉरीशस के हिंदी लेखक अभिमन्यु अनत में 'बसंत' त्रैमासिक पत्रिका में 'प्रवासी विशेषांक' निकला था। डॉ. लक्ष्मील्ल सिंघवी जब इंग्लैंड के भारतीय उच्चायुक्त थे तब हिंदी की स्थिति में बढ़ोतरी हुई थी। उन्होंने हिंदी भाषा के विकास के लिए लंदन में कई हिंदी संस्थाओं की स्थापना की थी। उनके निर्देशन में कई सम्मेलन व कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई है। प्रवासी भारतीयों की समस्या की जांच व उन्हें हल करने के लिए डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने 'डायस्पोरा रिपोर्ट' के नाम से छः सौ पृष्ठों की रिपोर्ट प्रधानमंत्री को सौंपी थी।

9 से 11 जनवरी 2013 को पहला प्रवासी भारतीय दिवस नई दिल्ली में आयोजित किया गया था जिसमें विश्व के लगभग 110 देशों में रहने वाले लगभग दो करोड़ भारतवंशी प्रवासियों ने पहली बार अनुभव किया की उनकी मातृभूमि उन्हें भूली नहीं है। भारतीय प्रवासियों के अधिकार की लड़ाई महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से प्रारंभ की थी। 9 जनवरी 1915 ई. को महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने के उपलक्ष्य में भारतीय प्रवासी दिवस प्रतिवर्ष 9 जनवरी को मनाया जाता है। हिंदी साहित्य में मॉरीशस में रचित हिंदी साहित्य की एक विशिष्ट पहचान है। प्रवासी साहित्यकार के रूप में मॉरीशस के अभिमन्यु अनत का नाम सर्वोपरि है।

प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डॉ. विदुषी शर्मा लिखती हैं कि 'प्रवासी का अर्थ भारत के अतिरिक्त कहीं और निवास करने वाले भारतीय जो मूल रूप से भारतीय है परंतु उन्होंने अपनी कर्मभूमि विदेश में बनाई है या इन्हें बनानी पड़ी है, इन भारतीयों के द्वारा जिस साहित्य की रचना की जाती है वह प्रवासी हिंदी साहित्य है।'[5] डॉ. यूसुफजई ने प्रवासी साहित्य के संदर्भ में लिखा है– 'प्रवासी साहित्य से हमारे मन मस्तिष्क में कई तरह के अर्थ और धारणाएं उभरने लगती हैं। प्रवास में लिखा साहित्य, प्रवासी लेखक द्वारा लिखा साहित्य या ऐसा साहित्य जिसमें प्रवास के कारण उत्पन्न भावनाओं का उदात्त चित्रण है। प्रवास से उत्पन्न विस्थापन की त्रासदी, जीवन–संघर्ष, जय–पराजय का ऐसा चित्रांकन जो प्रवास के दर्द को अभिव्यक्त करता है।'[6] राजकोट के. ए. डी. चावला ने कहा है कि 'प्रवासी साहित्य उन भारतवंशी जन समुदाय की आवाज है, जो किसी भी विदेशों की धरती पर गए, वहां जूझते हुए अपने आत्मबोध के साथ–साथ अस्तित्व बोध को रचनात्मक रूप प्रदान करते रहे।'[7] श्रीमती भूरिया सुशील ने अपने संपादित ग्रंथ 'हिंदी प्रवासी साहित्य' को इस प्रकार परिभाषित किया है– 'प्रवासी साहित्य यानी कि 'भारतीय मूल के विदेशों में रहने वालों का सृजनात्मक लेखन' और जिन लोगों ने हिंदी भाषा को अपने लेखन का माध्यम बनाया या हिंदी भाषा को केंद्र में रखकर हिंदी में लिखा वे लोग प्रवासी साहित्यकार कहलाए हैं तथा उनके द्वारा लिखा गया साहित्य हिंदी का समृद्ध प्रवासी साहित्य है।'[8] इस प्रकार विदेश में रह रहे भारतीय जो अपने देश को छोड़कर केवल अपनी भाषा व संस्कृति लेकर दूसरे देश गए थे वे सृजनात्मक लेखन द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखते हैं।

हिंदी का रचना संसार आज भारतवर्ष की सीमाओं को लांघकर विश्व के अनेक देशों तक पहुंच चुका है। मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैको, जमैका, फिजी, अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, कनाडा, फ्रांस, चीन, जापान, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश, दक्षिण अफ्रीका आदि अनेक देशों में हिंदी साहित्य में सृजनात्मक लेखन हो रहा है। प्रवासी साहित्यकार अपनी मातृभूमि से विस्थापित होकर विश्व के दूसरे हिस्सों में प्रवास कर रहे हैं किंतु उनकी मातृभाषा इनकी अस्मिता की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई है। प्रवासी साहित्यकार जहां एक ओर अपनी मातृभूमि, अपनी संस्कृति व भारतीय जीवन की विशेषताओं का स्मरण करता है वहीं दूसरी ओर वह वर्तमान में जिस देश के निवासी हैं उस समाज की संस्कृति, जीवन मूल्यों को, उनकी छवि को भी प्रस्तुत कर रहा है।

प्रवासी साहित्य के मुख्य रूप से दो वर्ग है– प्रथम, गिरमिटिया मजदूर के रूप में। ब्रिटिश राज्य की विस्तारवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत जब अंग्रेजों ने विश्व के अनेक देशों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर आर्थिक गतिविधियों को प्रारंभ करने के लिए काफी संख्या में पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के भोजपुरी बोलने वाले बंधुआ श्रमिक को फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम आदि द्वीपों पर बसा दिया था। यह लोग गिरमिटिया कहलाए। यह लोग अंग्रेजों की दमनकारी नीति के कारण अपनी माटी से उजड़कर दूर क्षेत्र में चले गए थे परंतु वे अपने साथ बोली,

भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य पुरखों की स्मृतियां तथा विरासत के साथ–साथ अपनी अनूठी जीवन शैली भी अपने साथ ले आए थे। अपनी अनूठी जीवन शैली से उन्होंने पराए देश में अपने जीवन को थोड़ा व्यवस्थित, आनंदित व जीने योग्य बना लिया था। दूसरा स्वतंत्रता के पश्चात् वह प्रवासी जो बेहतर जीवन और शिक्षा के लिए विदेश गए तथा अपने हिंदी प्रेम के कारण हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति की भाषा बनाया। पंजाब और इसके आसपास के क्षेत्र अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान आदि देश गए, इस प्रकार दो भिन्न धाराओं ने प्रवासी साहित्य की संवेदना में चेतना को प्रस्तुत किया। प्रवासी साहित्य के माध्यम से ज्ञात होता है कि भारतेतर देश में भारतीय कैसे जीवन यापन करते हैं और उनका जीवन संघर्ष क्या है? प्रवासी साहित्य के माध्यम से दो भिन्न नस्लों के व्यक्ति एक साथ मिलते हैं तथा इस मिलन से एक नई नस्ल का जन्म होता है।

प्रवासी साहित्यकार का अनुभव क्षेत्र तीन स्तरों पर काम करता है– पहली स्थिति वह होती है जब प्रवासी साहित्यकार अपने अपनाए हुए देश में अपनी जन्मभूमि को याद करता है यानी की नास्टेल्जिया से ग्रस्त साहित्य की रचना करता है दूसरी स्थिति वह होती है जब प्रवासी साहित्यकार अपने अपनाए हुए देश को एक बाहरी व्यक्ति की तरह देखता है जैसा कि निर्मल वर्मा और महेंद्र भल्ला ने किया है। इस स्थिति के दौरान लेखक अपने अपनाए हुए देश को एक बाहरी व्यक्ति के रूप में देखता है और तीसरी स्टेज सबसे महत्वपूर्ण है जब प्रवासी अपने अपना आए हुए देश के समाज का हिस्सा बन जाता है और फिर उसे समाज के बारे में ठीक वैसे ही लिखता है जैसे कि वहां का कोई भी स्थानीय लेखक लिखेगा। अधिकांश प्रवासी लेखक दूसरी स्टेज में ही अपना पूरा लेखकीय जीवन गुजार देते हैं। आपने अक्सर सुना होगा कि विदेशों में सफाई वाले भी कार में बैठकर आते हैं, इस तरीके से लेखन दूसरी स्टेज का है। प्रवासी साहित्य का स्वर्ण काल लगभग 20 से 25 वर्ष पूर्व का है।

वर्तमान में प्रवासी भारतीयों की तीसरी या चौथी पीढ़ी पुष्पित पल्लवित हो रही है किंतु फिर भी इतने लंबे कालखंड के बाद भी प्रवासियों ने अपनी भाषायी अस्मिता को खंडित नहीं होने दिया है। कुछ ऐसे साहित्यकार भी है जो प्रवासी बनने से पहले ही भारत में स्थापित लेखक बन चुके थे– उषा प्रियंवदा, कीर्ति चौधरी, अचला शर्मा, गौतम सचदेव आदि इस श्रेणी में आते हैं। 1998 ई. में तेजेंद्र शर्मा ब्रिटेन बसने आए तो 1999 ई. के पहले तक किसी भी प्रवासी कथाकार का कोई अपना स्वतंत्र संग्रह या उपन्यास प्रकाशित नहीं हो पाया था किंतु धीरे–धीरे इस स्वर्ण काल के दौरान अनेक प्रवासी साहित्यकारों ने हिंदी को विश्व मंच में समृद्ध किया। हिंदी का प्रवासी साहित्य हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को प्रदर्शित करता है। वागर्थ, भाषा, वर्तमान साहित्य ने प्रवासी विशेषांक प्रकाशित कर इन साहित्यकारों को भारतीय साहित्य की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया है। आज हिंदी साहित्य की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी शुमार है तो इसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को ही जाता है जो भारत से दूर जाकर विदेश में बसने के बावजूद भी हिंदी को अपनाए हुए हैं। डॉ. कमल किशोर गोयनका ने हिंदी प्रवासी साहित्य खंड एक, खंड दो, खंड़ तीन लिखकर प्रवासी साहित्य की विषयवस्तु को समृद्ध किया है। 'जोहान्सबर्ग से आगे' भी उनकी महत्वपूर्ण प्रवासी रचना है।

कमलेश कामता ने 'सागर पार भारतीय संस्कृति और हिंदी' किताब लिखी है। इस किताब का मूल मंतव्य है कि जब भी कोई भारतीय अपनी जन्मभूमि को छोड़कर विश्व के किसी अन्य देश में जाता है और फिर उसे ही अपनी कर्मभूमि बना लेता है तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि उसने अपनी संस्कृति और मातृभूमि से भी मुख मोड़ लिया है जबकि इसके विपरीत वह वहां रहकर भी अपनी भाषा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सकता

है। जगदीश प्रसाद बरनवाल ने 'विदेशी विद्वानों का हिंदी प्रेम' नाम से किताब लिखी है। स्वतंत्रता पश्चात् भारत सरकार द्वारा संसार के अनेक देशों में स्वतंत्र रूप से अथवा वहां की किसी संस्कृति के साथ भागीदारी में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन अध्यापन के लिए विशेष अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है। भूमंडलीकरण के इस दौर में विदेशी कंपनियों के माध्यम से भी व्यवसाय के प्रचार–प्रसार हेतु हिंदी पढ़ना–पढ़ाना व लेखन की मनोवृत्ति का तीव्र गति से विकास हुआ है। अरविंद मोहन की 'प्रवासी मजदूरों की पीड़ा' नामक किताब में अपनी मातृभूमि से अलग होने के पश्चात् प्रवासियों के जीवन में आने वाली अनेक प्रकार की कठिनाइयों का चित्रण है।

राम प्रसाद ने 'विदेशी साहित्यकार और उनका साहित्य', नासिरा शर्मा ने 'विरासत से दूर' रचना लिखी है। 'विरासत से दूर' पुस्तक में प्रवासी भारतीयों को दो मुख्य रूपों में निरूपित किया गया है। लेखिका कहती है कि अपनी मातृभूमि से दूर जाने वाला हर व्यक्ति ऐसे उहापोह की स्थिति में रहता है जहां उसे पता नहीं लगता कि वह अपना देश छोड़कर विदेश जाकर अच्छा कर रहा है या नहीं। द्वितीय जब कोई व्यक्ति विदेश जाता है तो वह अपनी बोली–भाषा, आचार–विचार, संस्कृति–सभ्यता विरासत का वाहक भी बन जाता है। कैलाश कुमारी सहाय ने 'प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा' नामक ग्रंथ में प्रवासी साहित्यकारों का वर्णन किया है।

उषा राजे सक्सेना ने 'प्रवास में' एवं 'ब्रिटेन में हिंदी' नामक किताब लिखकर इस दिशा में कार्य किया है। अंजना संधीर ने 'प्रवासी आवाज', पुष्पपाल सिंह ने 'भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास', डॉ. प्रमोद पांडेय ने 'प्रवासी पक्षी', 'कैलिप्सो' नाम से क्रमशः काव्य व कहानी संकलित की है तथा उनकी 'प्रवासी साहित्य : संवेदना और शिल्प' किताब भी है। मॉरीशस से निकलने वाली बसंत, रिमझिम, पंकज, आक्रोश, इंद्रधनुष, जनवाणी, आर्योदय आदि प्रमुख हिंदी पत्रिका है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना भी हिंदी के महत्व को दर्शाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रवासी साहित्य मनुष्य के जीवन चिंतन, दृष्टिकोण, विचारधारा को प्रस्तुत करती है। 'प्रवासी कथा साहित्यकारों ने अपने प्रवास के परिवेश, संघर्ष, संवेदनाओं और नीति मूल्य को अपने लेखन के द्वारा भारतीय समाज से परिचय कराया है। भारत से दूर रहकर भारतीय संस्कारों, मर्यादाओं को स्थायित्व प्रदान करने के लिए संघर्ष किया है।'[9] इस प्रकार प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य की मुख्य धारा में शामिल होकर मातृभाषा हिंदी को विश्व में स्थान दिला रही है।

संदर्भ :–

1. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 14
2. कुंवर पाल सिंह और नमिता सिंह, प्रवासी साहित्य, वर्तमान साहित्य, जनवरी–फरवरी 2006, पृष्ठ 45
3. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, 2005, पृष्ठ 495, उध्दृत डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 14
4. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 14
5. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 15
6. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम

संस्करण 2020, पृष्ठ 16
7. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 16
8. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 16
9. डॉ. बाबूराव देसाई, प्रवासी साहित्य का इतिहास : सिद्धांत एवं विवेचन, पराग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ 34

मोबाइल – 8103536987
ईमेल – payalgurukul@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 33-38
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप

डॉ. सुशील बिलुँग
एसोसिएट प्रोफेसर, संत जेवियर कॉलेज ऑफ मैनेंजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, पटना–11

परिचय :–

आमतौर पर प्रदेश में रहने वाले व्यक्ति को हम प्रवासी कहते हैं। 'प्रवास' का अर्थ' परदेश में जाकर रहना' है। अतएव प्रवासी हिन्दी साहित्य का अभिप्राय वह हिन्दी साहित्य जो भारतीय प्रवासियों द्वारा रचा गया हो। वर्तमान में इसकी बाढ़–सी आने लगी है क्योंकि विश्व के कई देशों में रह रहे भारतीय साहित्य का सृजन कर स्वयं की अभिव्यक्ति दे रहे हैं।

हमें ज्ञात है कि आबादी को लेकर भारत विश्व में पहला है। अधिक जनसंख्या की वजह से हमारे देश में गरीबी और बेरोजगारी की समस्या लगभग पूर्ववत् बनी हुई है। पिछले एक दशक में तो बेरोजगारी का विकराल रूप सामने आ गया है। एक गरिमापूर्ण जीवनयापन हेतु हर मनुष्य अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करना चाहता है और इसी वजह से वह विदेश जाने का आकांक्षी होता है। पेट की भूख के लिए व्यक्ति क्या नहीं करता है! जहाँ भी सम्मानित जीवन जीने व जाने की संभावना है वहाँ वह प्रवास करने की कोशिश करता है।

आधुनिक पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक जॉस्पेन्जा (Joe Spenza), वंब्रुस लिप्टन (Bruce Lipton) का कहना और मानना है कि मानव अपने समाज की ही उपज होता है। जिस सामाजिक परिवेश में उसका जन्म और पालन–पोषण सात से आठ साल तक होता है उसका प्रभाव उस पर बहुत जबरदस्त होता है। वही उसके भावी व्यक्तित्व के निर्माण में निर्धारक तत्व या कारक बनता है। यही कारण है कि प्रवासी भारतीय का अपनी मातृभूमि के समाज व संस्कृति से बहुत ज्यादा लगाव होता है। वह आसानी से अपने समाज की मान्यताओं, धारणाओं, रीति–रिवाजों, संस्कारों, पूजा–पाठ, आचार–विचार, ज्ञान–विज्ञान, आदि को भूल नहीं पाता। वह प्रवासी जमीं की नई संस्कृति के बजाय अपनी संस्कृति को ही महत्व देता है। वह अपनी धार्मिक आस्था व विश्वास, अपनी परंपरा और विरासत को बनाये रखने का प्रयास करते हुए अपनों के बीच आत्मीयता एवं रागात्मकता का अहसास करता है और अपने अस्तित्व व पहचान के प्रति गौरवन्वित महसूस करते हुए जीवनयापन करता है।

प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य का उद्‌भव व विकास :–

प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग डेढ़ सौ सालों का या उससे अधिक का है। यह साहित्य विदेशों में प्रवासी भारतीयों के संघर्षों, जिजिविषा और विकास का ही दस्तावेज कहा जा सकता है। प्रवासी हिंदी साहित्य की सृजनात्मक भावभूमि या मूल संवेदना प्रवास की पीड़ा है जो साहित्य में आद्यन्त देखने को मिलती है। यद्यपि उसका स्वरूप विविध सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के कारण बदलता हुआ

दिखता है। प्रवास में जब व्यक्ति में एक नई जगह, नये परिवेश में जाने का उत्साह व उमंग होती है वहीं चुनौतियाँ, आशंकाएँ, भय, आदि भी होती हैं। एक ओर आशाएँ और कामनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर विछोह की पीढ़ा, विस्थापन का कष्ट और भविष्य की अनिश्चितताएँ भी हैं। अपनों का एवं अपनी मिट्टी का विछोह एक प्रवासी के मन में एक गहरी कसक उत्पन्न करता है।

अवश्य आज बड़े पैमाने पर विश्व के कई देशों में हिंदी पन पर ही है, चाहे इसका विस्तार शैक्षिक स्तर पर हो या भाषिक स्तर पर। इस भाषा में आज कौन सी शक्ति आ गई है जो विश्व को अपनी ओर खींच रही है? यह भी जानना आवश्यक है कि विदेशों में हिंदी का महत्व एक विदेशी भाषा के रूप में बढ़ रहा है या इसका महत्व इसके सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं के कारण हैं? इस प्रश्न के उतर हेतु यह जानना जरूरी है कि विदेशों में हिंदी की स्थिति और उसका प्रयोजन क्या हैं? उसके पढ़ने–बोलने वाले लोग कौन हैं तथा किस स्तर पर वे हिंदी का प्रयोजन करते हैं? हिंदी सीखने और उसके प्रयोग करने का प्रयोजन क्या है?

इस संदर्भ में प्रमुख रूप से विदेशों में हिंदी भाषा–भाषियों के दो वर्ग उभरकर सामने आते हैं : पहले वर्ग में वे देश आते हैं जहां भारतीय मूल के लोग वर्षों पहले गये थे और वहीं बस गये। ऐसे देश हैं, फीजी, त्रिनिदाद, गयाना, मॉरिशस, सूरीनाम आदि। 2–3 साल पूर्व भारतीय खेतिहर मजदूर के रूप में गये और अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा के प्रयोग को जीवित रखा। हिंद महासागर में स्थित मॉरिशस देश में दिसम्बर 1834 में सबसे पहले मजदूर पहुंचे। हिंदी भाषियों में मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार के लोग, मातृभाषा भोजपूरी। यही कारण कि वहां भोजपूरी के पुटवाली हिंदी का प्रयोग होता रहा। कालांतर में मानक हिंदी का विस्तार होने लगा। ज्ञात हो, वे मजदूर थे। उनके साथ बुरा बर्ताव हुआ करता था। दास और स्वामी के रिश्ते से हम वाकिफ हैं। ऐसे कठिन समय में जब दिन भर के काम से थकान महसूस तो अपनी भाषा में कुछ गाकर–बोलकर, अपने भगवान से बतिया कर ताजगी महसूस किया करते थे। उनके बच्चों की पढ़ाई पर सरकार का ध्यान नहीं तो फुर्सत के समय वे खुद अपने बच्चों को हिंदी में ही ज्ञान दिया करते थे और भाषा को जीवित रखा। इनकी आबादी देश की कुल जनसंख्या का 68.3 प्रतिशत् है।

प्रशांत महासागर में स्थित फीजी देश की भी लगभग यही कहानी है। वहां बसने वाले अधिकांश पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, मद्रास से रहे। बोलचाल के साथ औपचारिक अवसरों पर भी हिंदी का प्रयोग होता है। इनकी आबादी देश की कुल जनसंख्या का 40.1 प्रतिशत् है।

सूरीनाम द. अमेरिका का एक छोटा–सा देश जिसकी जनसंख्या लगभग 5 लाख है। डेढ़ लाख से अधिक भारतीय मूल के हैं। उत्तर प्रदेश, पश्चिम बिहार से खेती करने हेतु, बस गये। उसमें से एक वर्ग सिर्फ भोजपूरी, दूसरा वर्ग खड़ी बोली हिंदी और तीसरा वर्ग भोजपूरी मिश्रित हिंदी बोलता है। वे देश की कुल जनसंख्या का 27.4 प्रतिशत् हैं। गुयाना में 43.5, त्रिनिदाद में 40.2 प्रतिशत् हिन्दी बोलने और समझने वाले लोग हैं।

दूसरा वर्ग उन लोगों का, जो आधुनिक युग में नौकरी के लिए भारत से बाहर गये और किन्हीं देशों में किसी क्षेत्र का अल्पसंख्यक वर्ग बन गए। इस वर्ग में हिंदी भाषी ही नहीं लेकिन वे अन्य भारतीय भाषाएँ भी बोलते हैं। ऐसे कुछ प्रमुख देश हैं–इंग्लैंड (हिंदी भाषियों की आबादी लगभग 8 लाख, 2.3 प्रतिशत), अमेरिका, (1. प्रतिशत) द. अफ्रीका, कनाडा (3.54 प्रतिशत), मलाया–सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया में 2.0 प्रतिशत, न्यूजीलैंड में 2.16 प्रतिशत, आदि। इन देशों के भारतीय मूल के लोगों को आमतौर पर प्रवासी भारतीय कहा जाता है। इनके अलावा

अन्य देशों में भी भारतीय मूल के लोग हैं, लेकिन वे इतनी कम संख्या में हैं कि एक वर्ग नहीं बन पाते जो हिंदी को संप्रेषण के लिए अपना सकें। उपरोक्त 5 देश उन्नत देश हैं और वहां पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो तथा दूरदर्शन के माध्यम से जन–संचार की सुविधाएँ हैं। इस कारण वहां के प्रवासी भारतीयों को सांस्कृतिक–सामाजिक अभिव्यक्ति के लिए इन माध्यमों के उपयोग की छूट मिलती है।

अन्य देशों में हिन्दी :–

ऐसे देश जहां पर हिंदी किसी जन समुदाय या वर्ग की अपनी भाषा नहीं लेकिन लोग किन्हीं स्थितियों में हिंदी के संपर्क में आते हैं। ऐसे देशों को भी दो वर्गों में बांट सकते हैं–

इस वर्ग में, वे देश हैं जो भारत के पड़ोसी देश हैं, जैसे, पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान, श्रीलंका, आदि। ये एक ही भाषा परिवार की भाषाएं बोलने वाले देश हैं। इस कारण हिंदी भाषा से परिचय अधिक स्वाभाविक है, जैसे पाकिस्तान की राज भाषा उर्दू है, और उन्हें हिंदी बोलने समझने में कोई परेशानी नहीं है। वे शौक से हिंदी गाने व फिल्में भी देखते हैं। नेपाल की भाषा नेपाली है जो हिंदी की उपभाषा पहाड़ी के अंतर्गत आती है और नेपाली और पूर्वी हिंदी काफी समान हैं। नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में भी लिखी जाती है। वहाँ संचार माध्यमों द्वारा भी इसका प्रयोग होता है। अफगानिस्तान की भाषा पश्तो जो भारत–ईरानी शाखा की भाषा इस कारण वहां के लोगों के लिए हिंदी सुगम्य लगती है। हिंदी फिल्मों व गानों में भी उनकी विशेष रूचि है। श्रीलंका की भाषा सिंहली है जो एक आर्य भांषा है। इसकी लिपि ब्राह्मी लिपि से निकली है। सिंहली की लिपि के कई चिह्न (अक्षर या वर्ण) भारतीय लिपि–चिह्नों से मिलते हैं। इस कारण से श्रीलंका के लोगों के लिए भी हिंदी अधिक कठिन भाषा नहीं है।

दूसरे वर्ग में, क्यूबा, कोरिया, मंगोलिया, चीन, जापान, पोलैंड आदि लगभग 50 देश जहाँ हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। हिंदी न कक्षा के बाहर बोली या सुनी जाती न ही सांस्कृतिक–सामाजिक विनिमय का साधन है। हिंदी सीखने वाले लोग विदेशी ही हैं जो एक विदेशी भाषा के रूप में ही सीखते पढ़ते हैं। इस वर्ग में पूर्वी–पश्चिम यूरोप, अमरीका, रूस आदि भी हैं। हिंदी के प्रति गहरी रूचि का कारण न नौकरी हेतु और न ही दैनिक व्यवहार में इसका प्रयोग है। इनका मुख्य मकसद हिंदी साहित्य का विपुल साहित्य पढ़कर भारतीय दर्शन और उसकी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता को समझना है। अतएव अनुवाद विपुल मात्रा में प्राप्त है।

आज अनेक देशों, दुबई, कनाडा, अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरिशस, न्यूजीलैंड, आदि में हिंदी की वसंत, पुरवाई, आदि पत्रिकाएँ लगातार निकल रही हैं और वे भी हिंदी के बढ़ते कदमों में अच्छा योगदान कर रही हैं। ई–पत्रिकाएँ भी काफी निकल रही हैं, जैसे, प्रयास, अभिव्यक्ति, अनुभूति, आदि।

विदेशों में हिन्दी के महत्व के प्रयोजन पक्ष :–

भारतीयों के लिए हिंदी अपनी अस्मिता की भाषा है। वे स्थानीय भाषा या राजभाषा का प्रयोग काम काज हेतु करते हैं जैसे, अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, फीजी, मॉरिशस व दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजी का प्रयोग और होलैंड में डच भाषा।

1. धार्मिक जीवन और संस्कार :–

प्रवासी भारतीयों के लिए शादी–विवाह, तीज–त्योहार आदि के संदर्भ में अपनी भाषा की आवश्यकता होती है, जैसे भारत में धार्मिक कार्यों के लिए संस्कृत प्रयोजन परक भाषा। धर्मजन समुदाय को जोड़ने का सबसे

उपयुक्त साधन है। धर्म की रक्षा हेतुलोग पूजा–पाठ, भजन–कीर्तन, कथावाचन आदि कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिसमें अपनी भाषा का ही प्रयोग होता है।

2. साहित्यिक सर्जना और पुस्तक प्रकाशन :-

साहित्यिक प्रतिभाओं में अभिव्यक्ति की छटपटाहट होती है। उनमें सर्जनात्मक क्षमताएँ होती हैं। मॉरिशस के कई लेखक उल्लेखनीय हैं। श्री अभिमन्यु अनन उपन्यासकार, 'लाल पसीना' जैसे कई सशक्त उपन्यास हैं जिसमें मॉरिशस के भारतीयों के जीवन का सजीव चित्रण है। उनकी कविताओं का संग्रह ''कैक्टस के दांत'' जिसमें मजदूरों की विपन्नता और दुर्गति तथा उनके शोषण और सामाजिक विषमताओं का मार्मिक चित्रण है–

बड़ी कृत हन मजदूर जाति,
जो चिल्ला–चिल्लाकर कह रही,
कि तुमसे उसे कुछ भी नहीं मिला,
लेकिन मैं तो तुम्हारा आभारी हूँ,
जानता हूँ कि मेरी फटे हाल झोली का यह खालीपन!
तुम्हारी ही देन है। –अभिमन्यु अनन।

अन्य उल्लेखनीय कवि श्री सोमदत बखौरी, श्री मुनिश्वर लाल चिंतामणि, श्री ठाकुरदत पांडेय आदि हैं। कवयित्री श्रीमती भागवती देवी ने 1912 में ही भोजपुरी गीतों का संकालन प्रकाशित किया। श्री रामदेव धुरंधर जाने–माने उपन्यासकार हैं और बच्चों के लिए कहानियाँ भी लिखते हैं। मॉरिशस के प्रसिद्ध कहानीकारों में दीपचंद बिहारी, बृजलाल रामदीन, प्रेमचंद मूली, भानूमति, नागदान आदि हैं जिन्होंने सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा भारतीय चिंतन पर आधारित जीवन मूल्यों का वर्णन किया है।

फीजी में भी हिंदी साहित्यिक सृजन का सफर लंबा है। प्रख्यात कवि पं. कमला प्रसाद मिश्र छायावाद युग से ही हैं जैसे, प्राकृतिक सौंदर्य का नमूना–

यहां पहले सबेरा होता है
यहां सूरज पहले निकलता है और दूर अंधेरा होता है
फीजी फिर दौस है पैसिफिक का यहां पहले सबेरा होता है
हर ओर गजब हरियाली है और छटा मतवाली है
यह फीजी वही जिसमें हर माह बहार का फेरा होता है। –कमला प्रसाद मिश्र

फीजी के प्रसिद्ध कथाकार श्री जोगिन्द्र सिंह कंवल, जिनके सवेरा, करवट, धरती मेरी माता, आदि प्रसिद्ध उपन्यास है। उनमें अत्याचार, शोषण व अपने जीवन के अनुभवों को ही उभारा है जो अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। सवेरा, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत है। सूरीनाम के कवि मुंशी रहमान खान के दो काव्य ग्रंथ–दोहा–शिक्षावली व इति ज्ञान–प्रकाश समद्रि उल्लेखनीय हैं। चेकोस्लोवाकिया के ओदोलेनस्मेकल व रूस के ई.पी. चैलिशेव भी प्रमुख हैं। दोनों सृजनात्मक, विचारक व वैयाकरणीक भी हैं।

पड़ोसी देशों में सबसे ज्यादा नेपाल में साहित्य सृजन होता है। माना जाता है जितना भारत में उतना नेपाल में हिंदी का इतिहास पुराना है। नाथ व सिद्ध साहित्य की रचना भी है। मध्यकाल में मल्लराजाओं के समय भी रचनाएँ हुई हैं जो 14वीं से 18वीं शताब्दी तक कालखंड है। जगत ज्योतिर्मल्ल, जयस्थिति मल्ल हिंदी भजन

और नाटक उल्लेखनीय हैं। मध्यकाल में कई नाटक भी लिखे गये। वर्तमान में हिंदी लेखकों में श्री बुन्नीलाल, केदार मानंधर आदि प्रमुख हैं।

3. विदेशों में हिंदी शिक्षण :-

एक शोध के अनुसार, आज 137 देशों में हिंदी भाषा समग्रता से विद्यमान है इन देशों में हिंदी एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है तथा विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन–पाठन और शोध की व्यवस्था है। एक अन्य सर्वेक्षण के अनुसार विदेशों में चालीस से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। फ्रांस, इटली, स्वीडन, ऑस्ट्रिया, नार्वे, डेनमार्क, तथा स्विटजरलैंड, जर्मनी, रोमानिया, बल्गारिया और हंगरी में एक मत के अनुसार भारत से बाहर जिन देशों में हिंदी का बोलने, लिखने–पढ़ने तथा अध्ययन और अध्यापक की दृष्टि से प्रयोग होता है, उन्हें हम इन वर्गों में बाँट सकते हैं– 1. जहाँ भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं, जैसे पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगला देश, मयाँमार, श्रीलंका, और मालदीव आदि। 2. भारतीय संस्कृति से प्रभावित दक्षिण–पूर्वी एशियाई देश, जैसे, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया तथा जापान आदि। 3. जहाँ हिंदी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, जैसे, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोप के देश। 4. अरब और अन्य इसलामी देश, जैसे, संयुक्त अरब अमीरात (दुबाई), अफगानिस्तान, कतर, मिस्र, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, आदि। कुछ और देश हैं, जहां भारतीयों को जबरन बसाया गया था, जैसे, मॉरीशस, फिजी, त्रिनीदाद और टुबैगो, आदि।

चीन में लगभग 7 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई, दो में शुरू होने, स्नातक की उपाधि 4 साल, स्नातकोतर 2 साल, पी.एच.डी. हेतु 4 साल। हर साल 100 विद्यार्थी। हिन्दी साहित्य के अलावा भारतीय इतिहास, धर्म, समाज व संस्कृति की पढ़ाई। हर विश्वविद्यालय में कम से कम एक भारतीय अध्यापक। रोजगार, मुख्यतः कंपनियों, सरकार में, संचार उद्योग में, हिंदी पढ़ने के मुख्य कारण 1. दोनों देशों के बीच वार्ता के लिए दुभाषिया के रूप में अनुवाद करने के काम हेतु 2. भारत की संस्कृति को समझने हेतु 3. भारत से संबंधित अध्ययन करने हेतु चूँकि भारत एक विकासशील देश है।

दक्षिण कोरिया में सोल स्थित हांगुक विश्वविद्यालय एवं बूसान स्थित पूसान विश्वविद्यालय भारत और हिंदी के पठन–पाठन के गढ़ हैं। यहां हिंदी विभाग सन् 1972 में ही खुल गया था। इस विभाग के अंतर्गत हिंदी भाषा के साथ–साथ व्याकरण, हिन्दी साहित्य, राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि का भी अध्ययन किया जाता है। विद्यार्थियों को छात्रवृति भी मिलती है। हांगुक विश्वविद्यालय के हिंदी प्रो. डा.ई. उंगगू ने 'मल्टीमीडिया हिंदी–1' नामक पुस्तक तैयार की है, जिसमें हिंदी फिल्मों और उनके गानों के संबंध में जानकारी दी गई है, साथ ही राष्ट्र गान के अतिरिक्त 37 पुराने–नये फिल्मी गानों का चयन विद्यार्थियों को सुनाते–सुनवाते हैं, गंवाते हैं, उनका विश्लेषण, उन पर बातचीत के आधार पर हिंदी में बोलने और लिखने का अभ्यास भी कराते हैं। वहां हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है, पहला, जो कोरिया में ही औपचारिक रूप से हिंदी सीखता और उपाधि हासिल करता है। दूसरा, जो अपने आप हिंदी सीखता और तीसरा, जो भारत जाकर हिंदी सीखता है। यह बात अन्य देशों में भी लागू होती है जहाँ हिंदी के पठन–पाठन की व्यवस्था है।

अमेरिकी तो हिंदी जानना अपना विकल्प नहीं बल्कि अपनी आवश्यकता मानते हैं। वे जानते हैं कि भारत

के भाषाई और सांस्कृतिक संसार तक पहुँच के लिए हिंदी का ज्ञान अनिवार्य है। भारतीय जीवन के गहरे एवं सम्पूर्ण ज्ञान हेतु हिंदी की जानकारी आवश्यक है। पहले अमेरिका में केवल 25 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती थी, लेकिन अब 100 से भी अधिकविश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। मनोरंजन की दुनिया में 'सलाम नमस्ते' नामक हिंदी रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है।

4. वैश्विक व्यापार पक्ष एवं जनसंचार :–

विश्व में भारत की आबादी सबसे बड़ी आबादी है अतएव विश्व के लिए भारत एक बहुत बड़ा बाजार है। अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभावशाली आगमन हो चुका है। परिणामतः हिन्दी का महत्व बढ़ा है, उसकी उपयोगिता बढ़ी है। विश्व के स्तर पर हिंदी के वेब जालों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। मीडिया और प्रोपेगेंडा साहित्य से लेकर व्यावहारिक हिंदी की दिशा में तो जैसे विस्फोट सा हुआ है। हिंदी चैनलों की पहुँच उन देशों तक भी हुई हैं, जहां पहले इस दृष्टि से भयंकर उजाड़ था, जैसे दक्षिण कोरिया। अब तो देश के बाहर न केवल अनुवाद के माध्यम से बल्कि रचनात्मक लेखन के द्वारा भी हिंदी अग्रसित हो रही है।

भाषा–भाषियों को एक साथ जोड़ने के लिए आधुनिक युग में जनसंचार एक प्रकार से जीवनदायी रक्त की नलिका है। इनमें मुख्य तीन माध्यम–सोश्यल मीडिया, रेडियो, दूरदर्शन व पत्र–पत्रिकाएँ। कनाडा, अमेरिका, इंग्लैंड में जनसंचार की अत्यंत उन्नत व्यवस्था है एवं अपने–अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने हेतु प्रसारण की समय–सारणी भी। मशहूर महाभारत व रामायण धारावाहिक का भी प्रसारण होता रहा है।

उपसंहार :–

7वीं शताब्दी में अपभ्रंश से उत्पन्न हिंदी भाषा ने अपनी यात्रा प्रारंभ कर 21वीं सदी तक कई सीमाओं को पार किया है। अनेकानेक भौगोलिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, व्यापारिक–बाजारिक, व्यावसायिक–व्यावहारिक, वैज्ञानिक–तकनीकी, वैचारिक आदि सीमाओं को लाँघकर कई देशों में अपने आपको स्थापित किया है। इनमें से कई देशों में तो प्राथमिक से लेकर उच्चत्तम स्तर तक अध्ययन, शिक्षण–प्रशिक्षण एवं शोध कार्य भी हो रहा है। अवश्य हिंदी वैश्विक हो गयी है और विश्व पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़ रही है। 21वीं सदी में विश्व पटल पर हिंदी का भविष्य जितना उज्ज्वल नजर आता है, उतना इससे पहले कभी नहीं था। 2014 में सत्ता–परिवर्तन से भारत के जनमानस में तथा भारत की संसद में हिंदी का प्रयोग अवश्य बढ़ा है। लेकिन वैश्विक मानस पटल पर भारतीय दर्शन, संस्कृति, योग, शास्त्रीय संगीत और नृत्य को बेहतर तरीके से समझने हेतु विश्व का एक बड़ा वर्ग हिंदी प्रेमी बन रहा है।

संदर्भ–ग्रंथ :–

1. साहित्य अमृत, 'वैश्विक हिंदी विशेषांक, अगस्त 2018, वर्ष 24, अंक–1, नई दिल्ली– 2
2. आजकल, 'हाईटेक युग एवं हिंदी का अंतर्जालीय परिदृश्य', भाउ साहेब नवनाथ नवले, सितंबर 2011, वर्ष 67, अंक 5, नई दिल्ली– 3
3. आजकल, 'प्रवासी भारतीय समाज : भाषा, साहित्य और संस्कृति', विमलेश कान्ति वर्मा, जनवरी 2016, वर्ष 71, अंक 9, नई दिल्ली– 3

ईमेल bilungsuhil@gmail.com, M. 9430955418.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 39-41

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में बिखरते पारिवारिक संबंध

प्रवीन कुमारी
प्राध्यापिका (अनुबंधित), के.एल.पी. कॉलेज, रेवाड़ी।

हिन्दी भाषा भारत तक ही सीमित नहीं है। भारत से बाहर अनेक विदेशों की जमीन पर हिन्दी भाषा के शब्द पुष्प और अंकुरित हो रहे है। और ये महत्वपूर्ण कार्य करने वालों में तेजेन्द्र शर्मा का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। जिन्होंने अपनी लेखनी की दाक विदेशों तक जमाई है। उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है– आधुनिक संबंधों का विश्लेषण करते हुए परिवेश की तटस्थता बनाए रखना। इसलिए तेजेन्द्र शर्मा के लेखन से एक ओर हिन्दी साहित्य प्रभावित और समृद्ध हुआ है तो दूसरी ओर भारतीय पाठकों को उस नए अनुभव से तैयार सामग्री साहित्य पढ़ने को मिली है जो अभी तक प्रवासी लेखकों के रोने–धोने से सामने नहीं आ पा रहा था। इस बात को लेखिका ममता कालिया ने बड़े साफ–सुथरे शब्दों में एक साक्षात्कार में कहा कि बाहर से आने वालों का रोना–धोना यहां नहीं है। शायद इसी कारण तेजेन्द्र शर्मा अपने आप को प्रवासी लेखक कहना पसंद नहीं करते। तेजेन्द्र शर्मा के लेखक कार्य में प्रारम्भ से अंत तक अंदर ही अंदर एक कटाक्ष चलता रहता है जो पाठकों के अनुभव को चोट पहुँचाते हुए साहित्यकता के नये परिवेश में ले जाता है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ विभिन्न प्रकार के परिवेश और मानसिकता के पात्रों को हिन्दी पाठकों तक लाती है। ऐसी ही उनकी एक कहानी है। 'पासपोर्ट का रंग' जिसका एक पात्र है पंडित गोपाल दास त्रिखा जो अपने बेटे–बहू के दबाव में आकर अपनी नागरिकता बदल लेता है लेकिन वह गुलामी के जंजीरों में बंद रहकर जीवन नहीं जीना चाहता और वह अपने बेटे को समझाता हुआ कहता ''कि मुझे अपनी नागरिकता वापिस चाहिए, मेरे लिए दूसरे देश की नागरिकता लेने से अच्छा तो मर जाना चाहिए। मैंने अपनी सारी जिन्दगी इन अंग्रेजों से लड़ने में बीता दी........ कारागार में रहा। मुझे तो फाँसी की सजा हो गई थी''[1] इस प्रकार लेखक कहानी बुजुर्ग गोपाल जी के माध्यम से भारत की श्रेष्ठता को नई और पुरानी पीढ़ी के बीच ढुंढते है।

कहानी का अंत भी गोपाल जी की मृत्यु के कारण पाठकों के सामने प्रश्न छोड़ दी जाता है– गोपाल दास जी लगातार बिना पलक झपकाएँ छत को देखे जा रहे थें उनके एक हाथ में लाल रंग का ब्रिटिश पासपोर्ट तो दूसरे हाथ में नीले रंग का भारतीय पासपोर्ट। उन्होंने ऐसे देश की नागरिकता ले ली थी, जहाँ इन दोनों पासपोर्ट की जरूरत नहीं थी।2 यहाँ विचार भले ही पुराने हो लेकिन परिवेश और पात्रों की बनावट आधुनिक है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां पहचान के संकट से बाहर हो चुके पात्रों की अपनी लेकिन पड़ोस की सच्चाई

से गठित कहानियाँ है। अज्ञेय ने आधुनिक साहित्यकार के लिए कहा था कि ''लेखन को वह स्थिति और वातावरण ढुढंना और गढ़ना है। जिसमें स्वाधीन व्यक्तित्व पनप सके। उन साधनों को पाना और बनाना है जिनके द्वारा वह व्यक्तित्व अभिव्यक्त हो सके।''[3]

तेजेन्द्र शर्मा इस महान प्रसिद्धी को आसानी से प्राप्त कर चुके है। तेजेन्द्र शर्मा की एक ओर कहानी है 'काला सागर' जिसका प्रमुख पात्र है– विमल महाजन जो उन यात्रियों को लंदन ले जाता है जिनके परिजन विमान हादसे में मर जाते है लेकिन लेखक की पीड़ा तब ओर बढ जाती है जब वे उन परिवारजनों को लंदन के बाजार का आनन्द लेते हुए तथा मुहावजे में मिले पैसों को अपने फायदे में देखते हुए बड़ी खुशी के साथ घुमते–फिरते है। यह देखकर लेखक बड़ा दुःखी होता है। इस प्रकार इस कहानी में यह दिखाया गया है कि कहानी दुर्घटना की पीड़ा में डूबे परिजनों के सामने अवसर से लाभ लेने वाले परिजनों को खड़ा करती है। ''एक यात्री विमल महाजन तक पहुँचा, ''मिस्तर महाजन, खाना–पीना तो ठीक है लेकिन आप हमें कुछ भत्ता वगैरहा भी दिलवाने का प्रबंध करवा दे तो अच्छा रहेगा क्योंकि हमस ब इतने जल्दी में आए कि पैसों का प्रबंध नहीं हो पाया। इतना खर्चा तो हमें रोज मिलना चाहिए ताकि हम लोगों को बाहर आने जाने में कोई परेशानी न हो'' ।[4]

कहानी के माध्यम से लेखक लालच के सामने खोखले संबंधों से युक्त मनुष्य की छवि को सामने वाला है। कहानी का अन्त भी गहरे अर्थ की ओर इशारा कर जाता है। ''मौसम में खराबी के कारण, यात्रियों को एक झटका सा महसूस हुआ। विमान 'ब्लैक सी' के पास उड़ान भर रहा था।[5] प्रो0 रामबक्ष ने 'आवेग रहित अभिव्यक्ति' कहा है जिसमें पीड़ा और शुद्रता का वर्णन है।

'रेत का धरौंदा' नामक कहानी में प्रेम विवाह करने के बाद भी पूर्ण प्रेम नहीं मिलता तथा तलाक हो जाता है। फिर पुर्नविवाह के बाद भी प्रेम न मिलने के कारण मानसिक संघर्ष की यात्रा की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी में बताया गया कि भारतीय मूल की दीपा का प्रेम विवाह ब्रिटिश मूल के नेल्सन से होता है, पर नेल्सन की माँ दीपा को अपने घर की बहु बनाने को रानी नहीं होती क्योंकि वह कहती है कि भारतीय सदा से हमारे गुलाम बनकर रहे है वह हमारे खानदान की बहु कैसे बन सकती है। दीपा थोड़े समय बाद नेल्सन से तलाब लेती है और किसी दूसरे व्यक्ति नरेन के प्रति आकर्षित होती है जो पहले से ही दो बच्चों का पिता है। नरेन की पहली पत्नी कैंसर से पीड़ित है। वह चाहती है कि नरेन और दीपा का विवाह हो जाये। पत्नी की मृत्यु हो जाती है ओर दीपा और नरेन का विवाह भी हो जाता है। लेकिन नरेन दीपा के प्रति किसी आकर्षण से नहीं बल्कि पत्नी की इच्छा और बच्चों के पालन–पोषण के लिए दीपा से विवाह करता है। दीपा चाहती है कि नरेन उसके साथ अपनी पत्नी की तरह ही प्रेम करें किंतु नरेन दीपा को वह प्रेम और अपनत्व नहीं दे पाता और दीपा सोचते रह जाती है– ''शिवांगी जब जीवित थी तो हमारे बीच कभी नहीं आ सकी..... मेरे दो–दो पति जीवित है, फिर भी मैं अकेली हूँ जबकि शिवांगी इस दुनिया में नहीं है, फिर भी उसका पति मेरे आसपास दिखाई देता है।''[6]

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लियो। इसमें कोई भी नहीं बच सका। वायरस के असर ने न केवल शारीरिक बल्कि मानव संबंध और सामाजिकता को गहरा धक्का दिया जिससे उबरन में ही कई दशक लग जाँएगे। इस प्रभाव के परिवेश में आधुनिक संबंधों के ताने–बाने को उधेड़ कर बुनी गई कहानी है 'शोक संदेश'। यह कहानी बेटे बेटी के द्वारा अपनी माँ के लिए लिखे गए शोक–संदेश पर आधारित है जो शोक संदेश कम छुटकारा अधिक है। माँ प्रेग्नेट होकर अपने देवर के साथ भाग गई है। इस कड़वें अनुभव के कारण

दोनों भाई बहन नाना नानी के साथ रहने लगते है। करोना में माँ की मृत्यू हो जाती है तो इस स्थिति में भाई बहन यानि उसके बेटा बेटी सोच रहे है कि धरती पर कुछ वनज कम हुआ। अब हम बाकि की जिंदगी कुछ आराम से बिता पाएँगे। यह मृत्यू है, शोक संदेश है, लेकिन दुःख नही बल्कि छुटकारा है। तेजेंद्र शर्मा जी के लेखन में एक तीखा व्यंग्य है। कहानी में संबंध शोक नही संदेश से बधे है। यही उनके अद्भुत संप्रेषण की कला आधुनिक जीवन–शैली में बिखर रहे संबंध की भाषा देखते ही बनती है–''तो लिखेगे क्या? वकील तो तुम ही हो भाषा तो तम्हें ही आती हैं मैं तो बस लूसी की लाश को कसरत करना सिख सकती हूँ।'' आगे शोक संदेश में वे लिखवाना चाहते है– अब उसे भगवान के पास जाकर अपनी करतूतों का जबाव देना होगा। बच्चे उसको याद नही करेगे। वास्तविकता तो यह है कि उसकी मौत के बाद यह धरती रहने लायक जगह बन जायेगी।[7]

रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते है–''प्रविधि या तकनीकी ने भौगोलिक दूरियाँ कम की है, पर संवेदनात्मक स्तर पर अनुभव को पकाने में अनुभव के अनुभव का अनुभव संभव करने में तरह–तरह की समस्याएँ खड़ी की है। तेजेंद्र शर्मा की यह कहानी इस समस्या को पार करती नजर आती है। कहानी गहराई से आधुनिक परिस्थितियों में उत्पन्न उन संबंधों को दिखाती है जिसके असर को भी पहचानना बाकी है।[8]

शायद इसलिए निर्मल वर्मा के विचार यहां सही जान पड़ते है कि ''साहित्य हमें पानी नही देता वह सिर्फ हमें अपनी प्यास का बोध कराता है।''[9]

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ देखने में तो छोटी–छोटी लगती है लेकिन जरूरी बातों के बीच नई राह बनाती हुई चलती है। ये सच है कि तेजेंद्र शर्मा कभी भी अपनी कहानियों के द्वारा समाज का सबड़े बड़ा पक्षधर कहलवाने या दर्शन शास्त्री होने का दंभ नही भरते क्योंकि रचनाकार की पहली सफलता अपने पाठकों से सरल भाषा में संप्रेषण करना है। तेजेंद्र शर्मा की कहानियों सीदे पाठक के मन में उत्तर जाती है और बतीयाती है। यही कारण है कि तेजेंद्र शर्मा की कहानियों से पाठक अपनेपन का भाव समझ कर सहज रहता है और कहानियों में ऐसे खो जाता है कि वह अपनी पढ़ नहीं, सुन रहा है और कहानी के किसी न किसी पात्र के साथ जीने लगता है। तेजेंद्र शर्मा ने अपनी कहानियों के द्वारा पाठक के अन्तःस्थ में अपनत्व का भाव जागृत किया है।

संदर्भ संकेत :–

1. तजेंद्र शर्मा, पासपोर्ट का रंग, https://www/hindisamay.com
2. तेजेंद्र शर्मा, पासपोर्ट का रंग, https://www/hindisamay.com
3. अज्ञेय : आत्मनेपद, भारतीय ज्ञानपीठ (दिल्ली) पृ0 86
4. तेजेंद्र शर्मा, काला सागर, https://www/hindisamay.com
5. तेजेंद्र शर्मा, काला सागर, https://www/hindisamay.com
6. तेजेंद्र शर्मा, रेत का धरौंदा, https://www/hindisamay.com
7. नई धारा (पत्रिका) दिसम्बर – जनवरी 2021
8. निर्मला जैन (सं:) सकंल्प समीक्षा–दशक सर्जक : दृष्टि और सप्रेषण : रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ0 214
9. निर्मल वर्मा, धुंध में उठती धुन, पृ0 14

पता– विकास नगर, गली नं0 6, मं0 नं0 158, बुढपुर रोड़, रेवाड़ी

मो0 नं0 9991904346, ई–मेल– praveenkumari.rwr@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 42-45

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास

नीलम पाटीदार

सहायक प्राध्यापक (इतिहास), शासकीय महाविद्यालय, सोंडवा, जिला –अलीराजपुर (म.प्र.)

शोध सार :-

भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे हैं और वही रहते हुए वे लोग हिंदी को, हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं। भाषा की प्रतिष्ठा उसके बोलने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। भारतीय भी विश्व के अनेक देशों में आजीविका की खोज में सुनहरे भविष्य का सपना लिए हुए यायावर के रूप में, तो कहीं मज़दूर के रूप में गए थे, किंतु अपने परिश्रम, लगन तथा ईमानदारी से वे हर देश में सुशिक्षित, सुप्रतिष्ठित तथा सम्मानित नागरिक बन गए। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के योगदान को हम नकार नहीं सकते बल्कि उनके द्वारा लिखे गए साहित्य में हमें एक अलग प्रकार की संवेदना प्रकट होती है। क्योंकि उनका मन तो भारतीय होता है पर प्रवास में निवास करने की वजह से उन्हें अलग–अलग चीजों को ग्रहण करना पड़ता है। भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास करते हुए हिंदी को, हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं।

प्रस्तावना :-

करीब 2.4 करोड़ भारतीय दूसरे देशों में रहते हैं। ये प्रवासी भारतीय अच्छे भविष्य की खोज में विदेश गए थे और फिर वहीँ बस गए। इन विदेश में बसे हुए भारतीयों कोदो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहले वर्ग में वे भारतीय हैं जो 19वीं से 20वीं सदी के बीच तक मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम तथा फीजी आदि देशों में गिरमिट के रूप में अंग्रेजों द्वारा गन्ने के खेतों में काम करने के लिए अच्छे भविष्य का सपना दिखाकर विदेश ले जाए गए थे और फिर वे विदेश में ही बस गए। इन देशों में भारतीयों की चौथी और पांचवीं पीढ़ी आज रह रही है। इनमें से बहुतों का भारत आना कभी नहीं हुआ पर वे भारत को अपने पूर्वजों की भूमि मानते हुए भारत से आत्मीय लगाव रखते हैं। अपने भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करते हैं और अपनी भाषा की सुरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। इन भारतीयों ने गिरमिट जीवन की कठोर यंत्रणाएं सहीं पर गिरमिट का समय समाप्त होने पर नए देश को अपना लिया और उसके पुनर्निर्माण में उनकी बड़ी भूमिका रही। कालांतर में ये उस देश के प्रतिष्ठित नागरिक बने, सत्ता में उनकी भागीदारी भी रही। उनकी अपनी भाषा और संस्कृति को उस नए देश में सम्मान मिला। इन देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या पर्याप्त थी और देश के निर्माण में उनकी प्रमुख भूमिका भी रही। दूसरे वर्गमें उन प्रवासी भारतीयों की गणना की जा सकती है जो बीसवीं सदी में भारत के स्वाधीन होने के बाद विकसित देशों में जैसे अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इंग्लैंड,

आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, फ्रांस और खाड़ी के देशों में गए। वे शिक्षा के लिए या कुशल/अकुशल श्रमिक कार्य के लिए गए थे और वहीं बस गए। इनका भारत आना जाना निरंतर बना रहता है और ये अपनी योग्यता के कारण व्यक्तिगत स्तर पर संपन्न नागरिक बने। प्रवासी भारतीय भारत से बहुत दूर निवास करते हैं, फिर भी वे इससे जुड़ाव महसूस करते हैं। भाषा, संस्कृति का मुख्य घटक है। खान–पान, वेश–भूषा, रीति–रिवाज़ में परिवर्तन दूसरी संस्कृति के प्रभाव से सहज ही हो जाता है पर भाषा, जो मानवीय अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है, व्यक्ति उसे जल्दी नहीं छोड़ पाता। यह तथ्य प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में भी सत्य है।

अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड आदि देशों में बसे हुए भारतीय तमिल, बांग्ला, गुजराती, पंजाबी भाषी होते हुए भी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी को राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक भाषा मानते है। यहाँ हिन्दी सभी प्रवासी भारतीयों को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में देखी जाती है। वे हिंदी को अपनी राष्ट्रीय और सामुदायिक पहचान के प्रतीक के रूप में देखते हैं। कुछ देशों जैसे मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी और दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों की भाषा विभिन्न बोलियों और भारतीय भाषाओं का मिश्रण है, जो रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा रूपहै। भाषा के माध्यम से वे भारत की संस्कृति और परम्पराओं से भी जुड़े हुए है। प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग डेढ़ सौ वर्षों का है और यह साहित्य प्रमुखतः भारतीयों के विदेश आगमन, उनके संघर्ष और विकास का दस्तावेज कहा जा सकता है। प्रवासी भारतीय साहित्य के सृजनात्मक हिंदी साहित्य की मूल संवेदना प्रवास की पीड़ा है जो साहित्य में देखने को मिलेगी यद्यपि उसका स्वरूप विविध सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण बदलता हुआ दिखता है। प्रवास में जहाँ व्यक्ति के मन में एक ओर नई जगह जाने का उत्साह है, चुनौती है, नई आशाएँ और कामनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर विछोह की पीड़ा है, विस्थापन का कष्ट है और भविष्य की आशंकाएं हैं। इन भावों में डूबता उतराता मानव प्रवास का निश्चय करता है। यदि नया वातावरण अधिक सुख सुविधा सम्पन्न है तो प्रवासी धीरे–धीरे नए वातावरण में रम जाता है और विछोह की पीड़ा धीरे–धीरे कम होती जाती है। वहीं दूसरी ओर यदि प्रवास वह वातावरण नहीं दे पाता जिस आशा से व्यक्ति अपना घर–बार छोड़कर विदेश गया है तो प्रवास बड़ा कठिन लगता है। न वह वापस अपने देश जा सकता है और न ही उसका मन यहां लगता है। अपनी भूमि को छोड़कर विदेश गया व्यक्ति पीढ़ी दर पीढी प्रवासी ही रहता है उसके मन में प्रवास की पीड़ा होती है। उसके मन में एक दुविधा निरंतर बनी रहती है कि यह नयी दुनिया उसके लिए अधिक अच्छी है कि नहीं। वह अपनी भाषा, संस्कृति, जीवन मूल्यों को बराबर पकडे रहना चाहता है क्योंकि यही दूसरे देश में उसकी अपनी पहचान है। नए देश के मूल निवासी कभी भी उसे पूर्ण रूप में स्वीकार नहीं कर पाते। रूप रंग भेद ही नहीं भाषा, खान–पान, आचार विचार, रीति नीति, जीवन मूल्य का अंतर विदेश में उसे अलग बनाए रखता है, यही प्रवास का दंश है। प्रवासी अपने को सामान्य से अलग महसूस करता है। पर उसकी विवशता है कि उसे रहना वहीं है। यह दुविधा और विवशता प्रवासी अभिव्यक्ति की मूल संवेदना के रूप में भी उभर कर आती है।

मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी और दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के प्रवासी भारतीयों की हिन्दी भारत की परिनिष्ठित खडी बोली हिंदी नहीं है। वहां की हिन्दी भोजपुरी मिश्रित अवधी है जिसमे स्थानीय भाषाओं के शब्द मिले हुए हैं और जो प्रवासी भारतीयों के मध्य जहाजी भाईयों की भाषा के रूप में विकसित हुई है, जिसका उन्होंने नामकरण भी अलग अलग रूपों में किया हुआ है। फीजी में वह फीजीबात, सूरीनाम में वह सरनामी और दक्षिण

अफ्रीका में वह नेताली के नाम से जानी जाती है। यहीं हिन्दी उनकी अपनी हिन्दी है,जिसका वह दैनिक बोलचाल में प्रयोग करते हैं। विदेश में बसे हुए प्रवासी भारतीयों को आपस में जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका तुलसीदास द्वारा अवधी में लिखित रामचरित मानस की रही है। 19वीं सदी में जितने भी भारतीय विदेश गए, वे चाहे किसी भी देश में गए हों, वे अधिकांशतः हिन्दी भाषी क्षेत्र से ही गए थे। वे भोजपुरी, अवधी, मारवाड़ी, मगही आदि भाषाएं बोलते थे पर वे सभी रात को साथ बैठकर मानस की चौपाईयां ही गाते थे और दिनभर की थकान और अपमान को भूलने की कोशिश करते थे। रामचरित मानस प्रवासी भारतीयों के मध्य एक संजीवनी थी, वह उनके बीच एक आचार संहिता का काम करती थी जिसने सभी प्रवासी भारतीयों को नए देश में संगठित तो रक्खा ही, अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुरक्षित रखने में सहायक बनी। सभी प्रवासी भारतीय इसीलिए तुलसी कृत रामचरित मानस को सम्मान देनेके लिए फीजी में मानस को "रामायण महारानी" कहते थे, तो सूरीनाम को उन्होंने "सिरीराम" देश तथा मारीशस को "मरीच देश" नाम देकर राम और रामायण के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया है। मानस की भाषा अवधी है इसलिए कितने ही हिंदीतर भाषियों ने तो रामायण पढ़ सकने के लिए हिंदी–अवधी सीखी थी। यही कारण है कि सूरीनाम और फीजी जैसे दो देशों की इतनी भौगोलिक दूरी होते हुए भी मानस की चौपाईयां गाते–गाते सभी भारतीयों की प्रतिदिन के प्रयोग की भाषा अवधीमयी हिंदी बन गयी। समय के साथ अलग–अलग देशों में हिंदी बोलने के अलग–अलग तरीके विकसित हुए। ये शैलियाँ अवधी और भोजपुरी का मिश्रण थीं जिसमें स्थानीय भाषाएँ जुड़ती गई।

अवधी और भोजपुरी भाषा क्षेत्र से आये प्रवासियों की भाषा में कहीं भोजपुरी की प्रमुखता थी तो कहीं अवधी की। इन मिश्रित रूपों में फिजी में काईबीती और अंग्रेज़ी भाषा तथा सूरीनाम में स्नागतोंगों और डच का तथा नेताली में भोजपुरी के साथ अफ़्रीकांस का मिश्रण हुआ और नए हिन्दी भाषा रूपों का उदय हुआ। हिन्दी के ये विदेशी शैली रूप सृजनात्मक अभिव्यक्ति में पूर्ण समर्थ हैं। फीजी बात में जिन फीजी के लेखकों ने, सरनामी में जिन सूरीनाम के लेखकों ने अपनी रचनाएँ लिखी उनको विश्वव्यापी ख्याति मिली और वे विश्व मंच पर हिन्दी लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। ये लेखक अपनी रचनाओं से भारतीय भाषा साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। विदेशों के कुछ प्रसिद्ध हिंदी लेखकों में फिजी के कमला प्रसाद मिश्र, सूरीनाम के मुंशी रहमान खान और त्रिनिदाद की ममता लक्ष्मण शामिल हैं। फीजी के सुब्रमणि ने फीजी बात में लिखकर तथा सूरीनाम के लेखक जीत नराईन, हरिदेव सहतू, अमर सिंह रमण, आसा राजकुमार, चित्रा गयादीन, श्रीनिवासी, रामनाथ सिवदीन आदि ने सरनामी में साहित्य सृजन कर वैश्विक साहित्यिक ख्याति तो अर्जित की है। विकसित और संपन्न देशों में रह रहे और हिंदी में साहित्यिक रचनाएँ लिखने वाले प्रवासी भारतीयों की लंबी सूची है। अमेरिका के गुलाब खंडेलवाल, अंजना संधीर, रामेश्वर अशांत, विजय कुमार मेहता, वेद प्रकाश बटुक, विनोद तिवारी, सत्यदेव गुप्ता, भूदेव शर्मा, रजनीकांत लहरी, सुषम बेदी, इंग्लैंड की अचला शर्मा, उषाराजे सक्सेना, ओंकार नाथ श्रीवास्तव, कीर्ति चौधरी, कृष्ण कुमार, सत्येंद्र श्रीवास्तव, तेजिंदर शर्मा; कनाडा के अश्विनी गोपी, राजेद्र सिंह, स्नेह ठाकुर, नॉर्वे के सुरेश शुक्ल, अमित जोशी इत्यादि हिंदी में निरंतर लिख रहे हैं और प्रवासी भारतीय साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान भी उन्होंने बनाया है।

इस प्रकार प्रवासी साहित्य ने न केवल अपना स्थान बना लिया है बल्कि इसकी अपनी एक पहचान बन गई है, जो वास्तव में हिन्दी साहित्य का ही एक अंश है। किंतु प्रवासी साहित्य के सामने एक चुनौती भी खड़ी

है कि इस साहित्य को हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्या हिन्दी विद्वान, आलोचक और साहित्यकार स्थान देना चाहेंगे। हिन्दी में दलित साहित्य के अतिरिक्त हिंदीतर–भाषी साहित्य, विदेशी–भाषी हिन्दी साहित्य की रचना काफी मात्रा में हो रही है, लेकिन हिन्दी साहित्य के अधिकतर इतिहासकार और विद्वान इस उलझन में हैं कि इन साहित्यों को हिन्दी साहित्य का अंग माना जाए या नहीं। प्रवासी भारतीय लेखन को हिंदी–जगत में मान्यता मिले, इसके लिए आवश्यक है कि इन लेखकों की अच्छी साहित्यिक रचनाएँ विधिवत् संपादित होकर भारत में अच्छे प्रकाशक द्वारा प्रकाशित हों, वे प्रबुद्ध पाठक तक पहुँचे, उनका समुचित मूल्यांकन हो तथा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में अन्य भारतीय लेखकों के साथ उन्हें स्थान मिल सके और उनका साहित्य पढ़ा जाए। हिन्दी साहित्य का इतिहास आज भी वही पढ़ाया जा रहा है और लिखा जा रहा है जो आचार्य राम चंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. राम कुमार वर्मा आदि विद्वान 60–70 वर्ष पहले लिख गए हैं। हिन्दी साहित्य का काफी विकास और संवर्धन हुआ है। हिन्दी अब विश्व भाषा के रूप में विकसित हो गई है। विश्व के अनेक देशों में भारतीय मूल के लेखक तथा विदेशी लेखक साहित्य की रचना कर रहे हैं। समय के साथ नई साहित्यिक विधाएँ और शाखाएँ भी पनप रही हैं। इसलिए इस विषय पर गंभीरता से चिंतन और मनन करने की आवश्यकता है। प्रवासी साहित्य को अब हिन्दी जगत में मान्यता भी मिलने लगी है।

मृदुला गर्ग प्रवासी साहित्य के बारे में कहती हैं कि "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए।"

डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है कि "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"

यह आवश्यक हो गया है कि विभिन्न देशों में रचित प्रवासी साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाए ताकि इस साहित्य को भी उपयुक्त स्थान प्राप्त हो सके और हिन्दी साहित्य सही अर्थों में अंतरराष्ट्रीय स्तर का रूप ले सके। विभिन्न देशों में रहने वाले प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों और लेखकों की साहित्यिक प्रतिभा को सम्मान मिलेगा तो हिन्दी साहित्य केवल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रहेगा अपितु अंतरराष्ट्रीय और वृहद रूप धारण कर लेगा।

संदर्भ :–

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण, 2011
2. मंजु कपूर, अप्रवासी, रैण्डम हाउस इंडिया, नोएडा, 2009
3. रामदेव धुरन्धर, पूछो इस माटी से, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012
4. https://www.garbhanal.com/the&challenges&of&overseas&hindi&literature&asmita
5. https://www.pustakbharaticanada.com/pbj&dwts/Articles%202019&dwts/VK%20Varma.dwt

patidar.neelam@gmail.com
Mob. 9644143281

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 46-49
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री संवेदना

मेहर बानो, शोधार्थी हिन्दी
डॉ. रूमा साह, असिस्टेंट प्रोफेसर
भ0सि0रा0स्नात्कोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, जनपद– ऊधम सिंह नगर।

प्रस्तावना :–

प्रवासी हिन्दी साहित्य, भारतीय हिन्दी साहित्य से कई अर्थों में भिन्न होते हुए भी समानता लिए हुए है। हिन्दी में इसका आरम्भ प्रेमचंद की 'यही मेरी मातृभूमि है (1908)' और शुद्रा (1926) की कहानियों से माना जाता है। इन कहानियों में भारतीय बंधुआ मजदूरों की कहानियां है जो अमेरिका से मॉरिशिस ले जाए जाते हैं। इन कहानियों से आरम्भ प्रवासी साहित्य आज हिन्दी साहित्य की एक शाखा के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुकी है। प्रवासी साहित्य की परम्परा बहुत पुरानी नहीं है। फिर भी यह अपनी संवेदात्मक लेखन तथा रचना धार्मिकता के कारण साहित्य के क्षेत्र में अपनी जड़े जमा चुका है। आज हिन्दी के प्रति अमेरिकी प्रवासी भारतीयों में एक विशेष प्रेम, दिखाई पड़ता है। जो 60 और 70 के दशक में नहीं था।''[1]

और प्रवासी साहित्य में समस्त विधाओं में लेखन उपस्थित है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय साहित्य की सभ्यता को सुरक्षित रखा है। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नया स्थान दिलाने में प्रवासी साहित्य के योगदान को नहीं नकारा जा सकता। जिससे विश्व बन्धुत्व की भावना विकसित हुयी तथा हिन्दी के प्रति रुचि बड़ी है। अतः हिन्दी साहित्य को विश्व स्तर पर एक नया मुकाम दिलाने में प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। जो सराहनीय है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य परिभाषा एवं स्वरूप :–

प्रवासी साहित्य क्या? इसे जानने के लिए सर्वप्रथम हम प्रवासीय शब्द को समझेंगे– प्रवास शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वास' का अर्थ है निवास करना रहना तथा 'प्र' उपसर्ग का प्रयोग करने से इसका अर्थ बदल जाता है। अतः प्रवास का अर्थ है अपने घर देश से बाहर रहना या बसना।

वास का अर्थ प्रदेश गमन या विदेश यात्रा है। तथा प्रवासी साहित्य का अर्थ प्रवासी लोगों द्वारा लिखा साहित्य। प्रवासी साहित्य को अलग–अलग धारा में देखने के बजाए उसे हिन्दी में सामान्य रूप से स्थान दिया जाना चाहिए। क्योंकि इन सभी का एक ही लक्ष्य है– हिन्दी का विकास। चाहे वह मौरिशस का हिन्दी साहित्य या इंग्लैण्ड या सूरी नाम का, परन्तु शारत से बाहर रहने वाले लेखक अपने साहित्य में अपने आस–पास की स्वाभाविक स्थितियों का चित्रण स्वाभाविक रूप से करते हैं। तथा जिस प्रकार हिन्दी साहित्य में जाति, जनजाति की समस्याओं को उठाया गया हैं तथा विभिन्न विमर्श जैसे– स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर,

विमर्श के साथ–साथ प्रवासी साहित्य में भी स्त्री विमर्श पर काफी कहानियों लिखी गयी है।

कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए लिखा था– रचना अपने मानदंड खुद तय करती है इसलिए उसके मानदंड बनाए नहीं जाएंगे। उन रचनाओं के मानदंड तय होंगे।''[2]

प्रवासी लोगों में कुछ ऐसे है जो मजदूर वर्ग है कुछ कर्मचारी वर्ग और तीसरे लेखक वर्ग जिससे हिन्दी को नहीं छोड़ा और उसी में साहित्य को आगे बढ़ाया जिसमें अभिमन्यु अनन्त ही ऐसे लेखक हैं जिनको उल्लेखनीय माना जाता है। प्रवासी साहित्य में कविता, कहानी उपन्यास गजल आदि विधाओं लिखा गया है। परन्तु कहानी इस विमर्श की प्रधान विधा बन गयी है। सुषमा बेदी, सुधा ओ ढींगसू, जकिया जुबेरी, नीना पील, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, जय वर्मा और उषा राजे सक्सेना ने प्रवासी लेखिकाओं के रूप में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है। सुषमा बेदी का मैने नाता तोड़ा उपन्यास काफी प्रचलित रहा जिसमें एक विधवा स्त्री के जीवन को दिखाया गया है। जकिया जुबेरी के कहानी संग्रह सांकल में स्त्री मन की कशमकश को चित्रित किया गया है। जकिया जी की कहानियों में नौस्टेल्जिया और वहां परिवार के बीच की स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। माँ और बेटी के अलावा माँ और पुत्र के बीच स्वाभिमान को बहुत ही संवेदनशील ढंग से उकेरा गया है। सांकल के अलावा मारिया और लौट आओ। तुम ऐसी ही कहानियां है। सुधा ओम ढींगरा की कहानियों की यही विशेषता है कि उसमें आदर्श का संसार भी है, परंतु वह मूल रूप से यथार्थ की जमीन पर खड़ा है। आदर्श जल्द ही यथार्थ से खंडित हो जाता है। उनके यहां कुछ कहानियां ऐसी भी हैं जो विदेश के ही चरित्रों और स्थितियों पर केन्द्रित है। ये कहानियां वास्तव में विदेशी नजर से भारतीय भूमि को देखना है। उनकी कहानियों की झलक में सहज ही प्रेमचंद की झलग विद्यमान है। एक भारतीय की नजर से ये कहानियां काफी सूक्ष्म घटनाओं और गतिविधियों पर आधारित है। जिसमें शराब खोरी की लत, वेश्या वृत्ति आदि को कहानियों में दिखाया गया है। इन कहानियों के अतिरिक्त भी प्रवासी साहित्य की कुछ विशेषताओं को हम यहां देखेंगे– प्रवासी जीवन में बेरोजगारी की समस्या से केवल पुरूष ही नहीं स्त्रियां भी जूझती दिखी परन्तु वह फिर भी अपना आत्मसम्मान नहीं खोना चाहती। ''मैं सम्मान से जीना चाहती हूँ भले ही मुझे झाडू लगाने का काम करना पड़े।''

बिना काम काज के कहीं कोई सम्मान प्राप्त नहीं होता। यही विडम्बना और जीवन के संघर्ष को लेखकों ने प्रवासी लोगो ंकी सूक्ष्म अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त किया है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण परंपरागत जीवन मूल्यों के आगे प्रश्न चिन्ह लगाए जा रहे हैं? एक ओर विघटन व्याप्त है तो एक ओर खाली थी। लेखक लिखता है कि प्रवास का अकेलापन व्रिदोह की स्थिति वाला अकेलापन नहीं है वरन व्यक्ति और घटनाओं के बीच असम्प्रेरणा से युक्त अद्भुत छटपटाहट का क्षण है'' प्रवासी साहित्य में संवेदना की भिन्नता पायी जाती है। परन्तु फिर भी भावनात्मक रूप से प्रभावी साहित्य और हिन्दी साहित्य में ज्यादा अन्तर नहीं है। जैसे– स्त्री विमर्श अपना नारी विमर्श भारतीय साहित्य में ही नहीं देखने को मिलता व्यक्ति प्रवासी साहित्यकारों ने भी नारी को या उसकी समरचनाओं को अपने लेखन का आधार बनाया है। इन साहित्यकारों ने स्त्री की पीड़ा तथा अन्र्तराष्ट्रीय स्तर पर उसका दमन भी इन साहित्यकारों के साहित्य में देखा जा सकता है। ब्रिटेन, अमेरिका, मॉरीशस, खाड़ी देश, कनाड़ा, अस्ट्रेलिया जैसे अनेक देशों में बसे भारतीय मूल के निवासी जिनकी महिलाओं बच्चो के जीवन को उजागर किया है तथा कृष्ण कुमार ने विदेशी प्रवासी साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है–

1. स्थानीय परिवेश एवं वातावरण का उल्लेख।

2. स्थानीय सामाजिक मूल्यों एवं रिश्तों के समीकरणों की प्रस्तुति।
3. देश–विदेश के जीवन मूल्यों का चिरण।
3. देश–विदेश परिवेश जनित भिन्नताओं का चित्रण।
4. परिवार, परिजन, प्रियजन, देश–विद्रोह की पीड़ा का चित्रण।
5. स्थानीय संस्कृति संस्कारों की झलक।

इस तरह हिन्दी को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में प्रवासी साहित्य ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्भर है। प्रवासी साहित्यकारों के हिन्दी भाषा के प्रति विचारों को व्यक्त करने का दृष्टिकोण थोड़ा अलग है शायद वो इसलिए भी है क्योंकि कहीं न कहीं प्रवासी होने की वजह से उन्होंने चीजों को नये ढंग से ग्रहण किया है। जो उनकी रचनाओं में महसूस किया जा सकता है। तथा कथा साहित्य में परिवेश अथवा पृष्ठभूमि कथानक एवं पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को चित्रित करने में अत्यंत कारगर भूमिका का निर्वाह करते है। उषा प्रियंवदा प्रवासी साहित्य की जानी मानी लेखिका हैं उनकी कहानी नदी में उन्होंने प्रवासी स्त्री जीवन के संघर्ष के विविध पक्षों को उजागर किया है। इसमें प्रवास में गए लोगों खासकर स्त्रियों के संघर्ष, मानसिकता का बिखराव, दाम्पत्य जीवन में विखण्डन, परिवार में अलगाव बोध घुटन अकेलापन आदि जीवन की विभिन्न विसंगतियों को लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

प्रवासी साहित्य में स्त्री विमर्श आजीविका की तलाश में विदेशों में बसने वाले भारतीय जो अशिक्षित (सभी श्रेणियों में) विदेशों में निवास कर रहे हैं। इन प्रवासियों के जीवन में जो परिवर्तन हुई। उसका सर्वाधिक प्रभाव यदि किसी पर बड़ा तो वह महिला। अतः स्त्री विमर्श की परिपाटी से प्रवासी साहित्य कैसे अछूता रह सकता था। प्रवासी साहित्य मूल रूप से स्त्री केन्द्रित ही है। पश्चिमी सामाजिक परिवेश में स्त्री पुरुष संबंधो तथा दाम्पत्य संबंधों की अनिश्चितता बहुचर्चित एवं बहुचित्रित विषय है। जो कि स्त्री की सार्वभौमिकता को केन्द्रित करता है। स्त्री संवेदना पर लिखने का मूल कारण यह भी रहा है कि इस साहित्य को अधिकतर स्त्री रचनाकारों ने ही लिखा है। तथा स्त्री संवेदना पर लिखने का मूल कारण यह भी कह सकते हैं कि स्त्री अनादिकाल से अनुस्दार का विषय रही है। स्त्री का जीवन विसंगतियों से गुजरता हुआ हमेशा संघर्षशील रहा है। अतः प्रवासी कथा साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा क्योंकि किसी भी परिवर्तन का प्रभाव सर्वप्रथम मानव के पारिवारिक जीवन पर पड़ता है जिसमें वह कभी परिवर्तन के नाम पर छली जाती है तो विविाहित स्त्रियों के संघर्षवृत्त समाहित रहते हैं साहित्य में भी माना है कि स्त्री के अधिकारों के दमन का कारण समाज है तसलीमा नसरीन लिखनी हैं– स्त्री को डरना एवं लज्जालु होना पुरुष प्रधान समाज ने सिखाया है क्योंकि भयभीत एवं लज्जालु होने पर पुरूष को उस पर अधिकार जताने में आसानी होती है।''[3]

इसके साथ ही समाज में उसका शोषण हर जगह होता है चाहे वह कोई धर्म स्थल ही क्यों न हो मेहरुन्निसा जी ने लिखा भी है– ''सन्यास के नाम पर बदमाशी होती थी। दुनियाभर लोगों से बड़ करके लोग सेक्सी थे हर नयी लड़की को पहले गुरू भोगता या फिर चेले।''[4]

स्त्री विमर्श पर लिखना और प्रवासी और प्रवासी स्त्रियों की दशा को जिसमें बेरोजगारी, अकेलापन, बिखराव दाम्पत्य जीवन का विघटन आदि पर काफी सूक्ष्मता से लियाा गया है। तथा प्रवासी भारतीय स्त्रियों दशा तथा मिट्‌टी के प्रति उनके प्रेम लगाव अवदेश में भी आत्मसम्मान प्राप्त करने की ललक को चित्रित किया गया

है। अगर स्त्री की दबे–कुचलते स्वरूप को दिखाया है तो उसके विदेश गमन पर जाने पर होने वाले परिवर्तन को भी दिखाया गया है। प्रवासी साहित्य में स्त्री चरित्र की नयी परते खोलता कथानक को स्त्री को नये दृष्टिकोण से देखने पर विवश करता है। और उसे एक आदर्श स्वरूप में परिणित करता नजर आता है। प्रवासी साहित्य में ही नहीं भारतीय साहित्य में भी स्त्री के भारतीय साहित्य के स्थान को माना गया है। ''तुम भूल गये पुरुषात्मव मोह में कुछ सत्ता है नारी की।''[5]

नारी की शक्ति का लोहा तो समाज मानता हैं परन्तु इस स्थान को प्राप्त करने के लिये उसे जीवन भर संघर्षशील रहना पड़ता है फिर कही जाकर उसे वह स्थान प्राप्त होता है। जिसकी वह हकदार है। अतः स्त्री का व्यक्तित्व उस नदी के समान है जो निरन्तर प्रवाह मान रही है चाहे उसके रास्ते में कितने भी पत्थर क्यों न आए कभी वह अपना रास्ता बदलती है तो कहीं अपने प्रवाह के तेज से उन पत्थरों को भी खण्डित करती अपना रास्ता बना लेती है। ऐसा ही स्त्री का जीवन भी है जो निरन्तर गतिरत है और इतने संघर्षों के बाद भी उसके विकास की राह को कोई रोक नहीं पाया है।

उपसंहार :–

हिन्दी को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में प्रवासी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिससे हिन्दी अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहरा रही है। इसलिए हिन्दी साहित्य आज अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर किसी का मोहताज नहीं है। प्रवासी रचनाओं में मजदूर वर्ग, शोषित वर्ग तथा स्त्री वर्ग की बेचैनी और पीड़ाओं को उजागर किया गया है। तथा स्त्री चेतना के विकसित स्वरूप को भी इन लेखकों ने उजागर किया है। रंग भेद को भी इस साहित्य को नारीवाद के दृष्टिकोण से देखा है। साथ ही इन महिलाओं की अनन्य खूबियों सहिष्णुता और अतिरिक्त क्षमता को भी चित्रित किया गया है। क्योंकि विदेश में यदि कोई पौधा लगा दिया जाए तो वह विदेशी नहीं हो जाता बल्कि उसमें अतिरिक्त खूबियां आ जाती हैं। इसके साथ ही इन लेखकों की कहानियों में स्त्री का प्रताड़ित स्वरूप भी दिखाया गया है औरतों के आंसुओं के सैलाब जिसमें छिपा उसका दर्द टीस को भी चित्रित किया गया है जो हृदय पटल पर एक छाप छोड़ जाती है। नारी को अपने अधिकार के प्रति लड़ाई भी बराबर चल रही है। जो उसे सबल बनाने का काम कर रही है। जो स्त्री–पुरुष सम्बंधो के प्रति भी नयी सोच का दायरा बड़ा रही है। इसके साथ ही माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार भी भारतीय संस्कृति की तरह है जो प्रवासी साहित्य का हिस्सा होने पर भी भारतीयता की छाप बनाए रखता है। अतः प्रवासी साहित्य स्त्री विमर्श की दृष्टि से ही नहीं जीवन के प्रत्येक रंग की दृष्टि से भी अपनी पहचान बनाने के साथ–साथ हिन्दी को नयी दिशा प्रदान कर रहा है। हिन्दी में रचित प्रवासी हिन्दी साहित्य वर्तमान समय में भारतीय मूल का अंग बन गया है। जिसका समन्वय निरन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रवासी भारतीय साहित्य में हिन्दी की कहानी–सुरेन्द्र गम्भीर, प्रकाशन–भारतीय ज्ञान पीठ संस्करण–2017, पृ. 58
2. कुछ गाँव–शहर कुछ शहर–शहर– नीना पॉल, यश प्रकाशन पब्लिकेशन, 1/11848, पंचशील गार्डन नवीन शहादरा, दिल्ली–100321
3. औरत–औरत के लिये, तसलीमा नसरी, पृष्ठ 153
4. अकेला पलाश– मेहरुन्निसा परवेज, पृष्ठ 1–18
5. स्मारक साहित्य एवं उसकी गद्य विधाएं (1939), पृष्ठ 289

Email : mb12021991@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 50-55
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य

स्मिता शंकर
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एच०के०बी०के डिग्री कॉलेज नागवारा, बंगलोर –560045

सारांश :–

मॉरिशस में हिंदी साहित्य की परंपरा बहुत समृद्ध और पुरानी है। यहां हिंदी कविता की एक सशक्त परंपरा है और इसे 'हिंदी महासागर का मोती' भी कहा जाता है। मॉरीशस दुनिया की सबसे खूबसूरत द्वीपों में से एक है। यहां के कवि मुनीश्वर लाल चिंतामणि द्वारा मॉरिशस की हिंदी कविता को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में प्राचीनिक काव्य, जैसे कि भारतीय पौराणिक कथाएं, रामायण, महाभारत, और प्रेम कविताएं, शामिल होती हैं। द्वितीय भाग में समकालीन काव्य, जैसे कि मॉरिशस की समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक मुद्दों पर आधारित कविताएं, प्रस्तुत की जाती हैं। मॉरिशस के हिंदी साहित्य में गहरी भावनाएं, धार्मिकता, प्रेम, स्वतंत्रता, और समकालीन विषयों पर विचारशीलता को अद्यतन और प्रदर्शित किया जाता है। वहाँ के लोगों को मॉरिशियाई कहा जाता है। यह प्रवासी साहित्य भारतीय दिवस प्रभावीता, विरह, संघर्ष, अपने भूमिका की पहचान, संस्कृति और भाषा की यात्रा, और विदेशी समाज में विदेशी समस्याओं के साथ संघर्ष के माध्यम से उभरे भारतीयों की प्रतिरूपणा करता है।

प्रस्तावना :–

प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषाऔर समाज से कटकर विदेशों में संघर्ष कर रहे भारतीयों की मनोदशा और आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करता है। यह उन लेखकों के लेखन पर आधारित है जो गिरमिटिया मजदूरों के वंशज हैं। ये मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों में बस गए हैं। यह साहित्य विदेशी समाजों में बसे हुए भारतीय प्रवासियों के अनुभवों, आंतरिक पीड़ा और संघर्षों को व्यक्त करने का माध्यम बनता है। इन लेखकों के द्वारा लिखित ग्रंथों में विदेश में उनके, जीवन के संघर्ष, मानसिकता, समाजिक परिवेश, विरह, भाषा और संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन किया जाता है। खूबसूरत मॉरीशस के बारे में मार्कटवेन ने कहा है कि– 'ईश्वर ने पहले मॉरीशस बनाया और उसमें से स्वर्ग की रचना की।'[1]

महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रिका में व्यतीत किए गए इक्कीस वर्षों के संघर्षमयी जीवन यात्रा ने भारत में प्रवासी भारतीयों की चर्चा और उनके संबंधों के गंभीर चिंतन मनन का शुभारंभ किया। जिसने स्वामित्व के भाव को जागृत करके उन्हें अपनी संस्कृति और भाषा को अक्षुण्ण रखने के भाव को स्थापित किया। मॉरीशस में हिंदी 100 साल पुरानी है। 36 भारतीय गिरमिटियायों ने रखी 'मज़बूत' मॉरिशस की नींव। मॉरिशस में भारतवंशियों की संख्या 68 प्रतिशत है और हिंदी साहित्य भी समृद्ध है। मॉरिशस, अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, सोमदत्त बखोरी,

ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर', वासुदेव विष्णुदयाल, मुनीश्वर लाल चिंतामणि जैसे विश्व प्रसिद्ध हिंदी लेखक की जन्मभूमि है। "मारिशस की प्रथम प्रकाशित हिन्दी रचना 'होली' पद्य में तथा 'सत्य होली' गद्य में 2 मार्च, 1913 ई. के दैनिक पत्र हिन्दुस्तानी में प्रकाशित हुई थी ।"[2] हिंदी प्रचारिणी सभा ने 1935 में हस्तलिखित पत्रिका दुर्गा निकाला था। इसके आवरण पृष्ठ बनाने वाले मधुकर भगत कवि के रूप में 1943 में दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए और 5 दशक के बाद 50 संग्रह निकाला। कहानी विद्या पर भी अधिक काम हुआ 1968 में ईश्वरचंद गंगाराम का 'एक सपना' कहानी संग्रह छपा। पहला मॉरीशस हिंदी उपन्यास 'पहला कदम' 1960 में छपा जिसके रचयिता कृष्ण लाल बिहारी हैं।

हिन्दी के प्रवासी साहित्य की स्थिति अंग्रेजी से थोड़ी भिन्न है। आलोचकों ने अपने नजरिए से देखने की शुरुआत कि लेकिन उस गरिमा तक पहुंच नहीं पाए जो उसे प्राप्त होनी चाहिए थी। डॉ. आर. के. दुबे, लिखते है कि– 'यहाँ की कार्य शैली और हिंदी के प्रचार–प्रसार का ढंग अद्वितीय और आश्चर्य चकित करने वाला है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय अत्यंत ही सराहनीय कार्य कर रहा है।'[3]

हिन्दी के प्रवासी साहित्य की अपनी विशेषता है जो उसकी संवेदना, परिपक्व जीवन दृष्टि और परिवेश में दिखाई पड़ता है। विभिन्न देशों जैसे मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम आदि में भारतवंशियों की दूसरी–तीसरी पीढ़ी के साहित्य में उनका देश बोलता है, जिस पर भारतीय संस्कृति, दर्शन और मूल्यों का गहरा प्रभाव है। अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों के लेखक पहली पीढ़ी के हैं और इसी कारण उनकी रचनाओं में स्वदेश–विदेश दोनों का प्रतिष्ठान है। उनकी रचनाओं में अमेरिका और यूरोप के देशों की सुख–समृद्धि, तनाव और संघर्ष का प्रतिष्ठान होता है, और साथ ही स्वदेश की मिट्टी की मधुर स्मृति भी गुँथी हुई है। इस तरह, दोनों प्रकार के प्रवासी साहित्य में भारत अवस्थित है, चाहे वह धर्म–संस्कृति के रूप में हो या नोस्टेल्जिया और अस्तित्व निर्मिति के सूत्र की तलाश के रूप में।

विदेशों में रचित हिंदी कथा साहित्य में स्थानीयता के तत्व प्रमुख होते हैं, लेकिन इसमें मानवीय संवेदनाएं देश–काल की सीमाओं को पार करती हैं। किसी भी भारतीय साहित्य की तरह प्रवासी साहित्य में भी प्रेम, राग, विराग और अन्य संवेदनाएं दिखाई देती हैं। विदेशी समाज में, भारतीय आचार–विचार, रीति–रिवाज और विदेशी जीवन–शैली और संस्कृति के बीच जीवन बिताने के बाद, विदेशी नियमों के साथ टकराव होता है। जीवन में सामंजस्य और संतुलन बनाए रखना, एक गंभीर चुनौती होती है। पश्चिमी सामाजिक परिवेश में स्त्री–पुरुष और दाम्पत्य संबंधों की अनिश्चितता एवं विभिन्न पहलुओं का परिचय किया जाता है। प्रवासी हिंदी कथा साहित्य भी मुख्य रूप से स्त्री–केंद्रित है और स्त्री की सार्वभौमिकता को दर्शाता है। प्रवासी कथा साहित्य की विशेषता है, महिला कथाकारों की बहुलता और प्रमुखता। महिला लेखकों ने तो हिंदी साहित्य के माध्यम से मॉरीशस की महिलाओं का मार्ग भी प्रशस्त किया है। भारत के बाहर आज सारी दुनिया में भारतवंशी फैले हुए हैं। यदि अन्य विधाओं को छोड़ भी दें और केवल प्रवासी रचनाकारों की हिंदी कविता पर ही ध्यान दें, तो पता चलता है कि ऐसे कवियों की संख्या सैकड़ों में है।

हिन्दी संवाद की भाषा है। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती हो। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसे ज्यादा से ज्यादा एक–दूसरे में प्रचारित करने की जरूरत है। अपने बोलचाल में हिन्दी के उपयोग की जरूरत है ताकि उसकी जीवंतता और उपयोगिता बनी

रहे। 1 जून, 1911 को 'आर्य पत्रिका' में प्रकाशित प्रथम हिंदी लेख में पत्रिका में छपा था – 'वैदिक धर्म और अच्छी विद्या को बराबर फैलाने के लिए प्रेमी भाइयों की मदद से यह आर्य पत्रिका का आरम्भ होता है, सज्जन इसको अपनी मदद और ताकत से आगे बढायेगा।"[4]

मॉरीशस में हिंदी और भोजपुरी भाषा दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। जो भारतीय मूल के लोगों के कारण प्रचलित है, पश्चिमी बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड आदिवासी और गिरमिटिया मजदूरों के माध्यम से आया है। 2011 में मॉरीशस की संसद ने भोजपुरी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया था और उसके बाद से भोजपुरी भाषा को मॉरीशस में मान्यता मिली है। मॉरीशस में भोजपुरी और हिंदी भाषी समुदाय को अपनी मूल भाषा की संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और इसके लिए भोजपुरी और हिंदी भाषा को मॉरीशस में पढ़ाई का माध्यम भी बनाया गया है। मॉरीशस की भाषा और संस्कृति के प्रभाव से भी हिंदी साहित्य की उपस्थिति है। वहाँ हिंदी साहित्य की शुरुआत के पीछे भारतीय मुकाबला, भारतीय विद्यालयों और हिंदी प्रशासनिक केंद्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके अलावा, मॉरीशस में भारतीय उपमहाद्वीप के साथ अवधारणाओं, संस्कृति और इतिहास के साथ संबंधित किताबें भी लोकप्रिय हैं। भारतीय मूल के लोगों के साथ–साथ मॉरीशस की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के प्रयासों में '20 अगस्त 2018 में सुषमा स्वराज ने मॉरीशस में पाणिनि भाषा प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।'[5]

मॉरीशस की धरती पर हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने में कुछ महत्वपूर्ण लेखकों में अरविन्द चौबे, जो कविता, कहानी और नाटक लिखते हैं, और जयदेव भारती, जो प्रमुखता से कविता और प्रोज़ा लिखते हैं, शामिल हैं। पंडित आत्माराम पंडित, विष्णुदयाल, जयनारायण राय, श्री रामलाल , मंगर भगत, पंडित सहदेव पांडे, पंडित हरीकृष्ण विशाल, डॉ० उदयनारायण गंगू, डॉ० उषा शर्मा आदि लेखकों का मॉरीशस में हिंदी साहित्य के लिए बहुत बड़ा योगदान देखते हैं। इन लेखकों की रचनाएं हिंदी भाषा को बढ़ावा के साथ मॉरीशस के हिंदी माह मॉरीशस हिंदी साहित्य को प्रोत्साहन और विकास देती हैं। प्राथमिकता पूर्वक, मॉरीशस में हिंदी भाषा को समर्थन और प्रचारित करने के लिए विभिन्न संगठन और सामाजिक गठबंधन मौजूद हैं। इन संगठनों के द्वारा हिंदी के प्रशिक्षण कार्यक्रम, साहित्यिक समारोह, कवि सम्मेलन और साहित्यिक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। ये मॉरीशस में हिंदी साहित्य के प्रचार और प्रसार को संभव बनाने में मदद करते हैं। लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी जी सरल सी कविता में लिखते है।

फिर भी
मेरा देश
एक द्वीप है समंदर ही समंदर
बालू–ही–बालू
यही कारण है कि
यहाँ नियति
मेरा देश एक द्वीप है
बहुत बनते हैं!
समंदर में बड़ी मछलियाँ।[6]

मॉरीशस में हिंदी साहित्य को समर्थन करने के लिए विदेशी संगठनों के साथ–साथ, भारत सरकार भी हिंदी साहित्य के प्रचार और प्रसार को समर्थन करती है। इसके माध्यम से लोगों को हिंदी साहित्य का पहला हाथ का अनुभव और हिंदी भाषा की समृद्धता से परिचित होने का मौका मिलता है। वे हिंदी साहित्य को समझने और उसे आपरिवर्तित करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। अनुवादन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ मॉरीशसी लोग हिंदी के सभी विधाएँ का रूपांतरण करते हैं और इन्हें अपनी भाषा में प्रकाशित करते हैं। इसके द्वारा न केवल हिंदी साहित्य की पहुंच मॉरीशस में बढ़ती है, बल्कि मॉरीशस की स्थानीय भाषा ने साहित्य को भी प्रभावित है, और इससे लोगोंको रोजगार के अवसर भी मिलते हैं।

इसके साथ ही, मॉरीशस में हिंदी साहित्य के आयोजन, साहित्यिक सम्मेलन और काव्यपाठ भी नियमित चल रहे हैं, जिससे साहित्यिक दृष्टि से एक सामरिक और विचारशील माहौल पैदा हो रहा है। वहाँ की साहित्यिक संस्थान और साहित्यिक संगठन अक्सर मॉरीशस और भारत के लेखकों के बीच आदान–प्रदान का माध्यम बन रहे हैं। इससे सहयोग, समझौता और अनुभवों का आदान–प्रदान हो रहा है और दोनों देशों के साहित्यिकों को एक–दूसरे के कार्यों से परिचित होने का अवसर मिलता है। मॉरीशस में हिंदी साहित्य को प्रचारित करने के लिए स्थानीय प्रकाशक, साहित्यिक संस्थान, संगठन और भारत सरकार का सहयोग हो रहा है। इसके माध्यम से लोगों को हिंदी साहित्य का अधिक ज्ञान हो रहा है, उन्हें हिंदी भाषा का संपर्क और समझ मिल रहा है और वे हिंदी साहित्य को समझने और आपरिवर्तित करने की क्षमता प्राप्त कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप, हिंदी साहित्य मॉरीशस के साहित्यिक और सांस्कृतिक माहौल को विस्तारित कर रहा है।

इस तरह, हिंदी साहित्य का मॉरीशस में प्रचार और प्रसार न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक आदतिशी में बढ़ा रहा है, बल्कि इससे मॉरीशस और भारत के बीच विद्यार्थी और साहित्यिक विश्लेषकों के बीच भी एक संवाद का माध्यम बन रहा है। हिंदी साहित्य के अध्ययन से, युवा साहित्यकार और साहित्य प्रेमियों को मौका मिल रहा है अपनी रचनाएँ मॉरीशस के लोकप्रिय पत्रिकाओं और साहित्यिक प्रकाशकों में प्रकाशित करने का। इससे उन्हें व्यापक पठन और लेखन का अवसर मिल रहा है, जो उनकी रचनाओं को एक विशाल और विविध दरबार में प्रदर्शित करने में मदद करता है।

मॉरीशस के हिंदी साहित्य प्रेमी अब अक्सर भारत के साहित्यिक संगठनों और साहित्यिक कार्यक्रमों का हिस्सा बन रहे हैं। वे भारतीय कवियों, लेखकों और साहित्यिकों के नवीनतम कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए साहित्यिक सम्मेलनों और वेबिनारों में भाग लेते हैं। इससे वे हिंदी साहित्य के प्रति अधिक उत्साहित हो रहे हैं और इसे मॉरीशस की साहित्यिक परिदृश्य में सम्मानित करने के लिए कई उपाय अपनाए जा सकते हैं। पहले, हिंदी को स्थानीय स्तर पर प्रमोट करने के लिए स्थानीय स्कूलों और कॉलेजों में हिंदी के पाठ प्रदान किए जा सकते हैं। हिंदी साहित्य, कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास के पाठयक्रम शामिल किए जा सकते हैं, ताकि छात्रों को हिंदी साहित्य के प्रति रुचि और अवधारणाओं का समझ प्राप्त हो सके।

दूसरे, हिंदी साहित्य को प्रचारित करने के लिए साहित्यिक सम्मेलन, काव्य गोष्ठी, कवि सम्मेलन और कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है। ये लोगों को मिलकर हिंदी साहित्य के बारे में बातचीत करने और रचनाकारों के साथ संवाद करने का मौका प्रदान करेंगे। इससे स्थानीय लेखकों को साहित्य की साझा सांस्कृतिक प्रोत्साहन मिलेगा।

तीसरे, हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के साहित्यिक पुरस्कारों की स्थापना की पूर्वांचल, पूर्वी इंडो–आर्यन और मॉरीशियन की मिश्रित संस्कृति में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। यहां के लोग हिंदी भाषा के बहुत करीब हैं और वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने के लिए हिंदी साहित्य का समर्थन करते हैं। मॉरिशस में हिंदी साहित्य के विकास को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं।

मॉरिशस में हिंदी साहित्य संगठनों और साहित्यिक मंचों की स्थापना कर, ये संगठन और मंच लेखकों को साथ लाने, साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन करने और हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार का कार्य कर सकते हैं। इससे हिंदी साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहन मिलेगा और वे अपने लेखों को साझा कर सकेंगे। हिंदी साहित्य सम्मेलनों का आयोजन कर स्थानीय लेखकों को बुलाया जा सकता है। विभिन्न विषयों पर वाद–विवाद, कविता पाठ, कथा पाठ, लेखकों के आभासी प्रदर्शन आदि का आयोजन किया जा सकता है। इससे स्थानीय लोगों को हिंदी साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने का अवसर मिलेगा और साथ ही हिंदी लेखकों को भी मंच मिलेगा। मॉरिशस में हिंदी साहित्य सभी विधाएँ का अनुवाद किया जा सकता है। स्थानीय जनता को अनुवाद के माध्यम से संस्कृति और अनुभवों का आपसी आदान–प्रदान होगा। मॉरिशस में हिंदी साहित्य की प्रकाशना के साथ ही ई–प्रकाशना और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है। रामदेव धुरंधर (मॉरीशस हिंदी कथाकार) ने कहा कि –'हिंदी के नाम पर मॉरीशस की हिंदी भारत की हिंदी का एक कन्धा है। सब मिल–मिलाकर प्रयास यही है कि हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन जाए।'

निष्कर्ष :–

इन सभी पहलुओं से स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य को मॉरीशस में व्यापक रूप से प्रचारित और प्रसारित किया जा रहा है। इससे हिंदी भाषा और साहित्य की प्रतिष्ठा बढ़ती है और वहां के लोगों को भारतीय संस्कृति और भाषा से अधिक अवगत होने का अवसर मिलता है। इससे द्विभाषी और द्विसंस्कृत सामरिक वातावरण का विकास होता है, जहां हिंदी और मॉरीशन काव्य, कहानियाँ और कविताएँ एक साथ विकसित होती हैं। इस प्रयास से मॉरीशस के लोगों के बीच साहित्यिक और सांस्कृतिक विनिमय की बढ़ती मांग को पूरा किया जा रहा है और सम्बन्ध मजबूत हो रहे हैं। इससे कला, साहित्य और विचार के क्षेत्र में एक समृद्ध और विविधता पूर्ण माहौल पैदा हो रहा है। इसके अलावा, हिंदी साहित्य का प्रचार और प्रसार मॉरीशस के युवाओं का मनोबल बढ़ा रहा है और उन्हें हिंदी के माध्यम से साहित्यिक दुनिया में रुचि पैदा हो रही है। युवाओं को हिंदी के माध्यम से उनकी भारतीय साहित्यिक धारणा मजबूत हो रही है। इससे वे हिंदी साहित्य के प्रति अधिक उत्साहित हो रहे हैं और इसका अध्ययन करने के लिए उनमें रुचि उत्पन्न हो रही है। और रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं।

सूची संदर्भ :–

1. हिन्दुस्तानी पत्र, 2 मार्च, 1913
2. मार्च, 1913 ई. के दैनिक पत्र हिन्दुस्तानी
3. डॉ. आर. के. दुबे, अध्यक्ष भोजपुरी अकादमी, बिहार।

4. मॉरीशस आर्य पत्रिका, १ जून, 1911, पृष्ठ 2
5. जोश 21 अगस्त 2018
6. https://www.google.com/url\q¾https://m.bha
7. मारीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य (लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी) 'रसपुंज' पेज नं. –38
8. अंतरजाल के सौजन्य से।

फोन. नं०–8867343688
ईमेल– kumsmita886@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 56-62
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के विविध आयाम

डॉ. अमित कुमार सिंह
अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, मुं. हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

प्रवासी साहित्य आज के नवयुग का सशक्त विमर्श है। चारों ओर विभिन्न कारणों से हो रहे प्रवसन ने इस विमर्श को नवीन आयाम दिये हैं। प्रवासी व्यक्ति की अपने देश से आने की परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न हो सकती हैं किंतु नए देश में प्रवास के दौरान व्यक्ति में अपने देश से अलग होने की पीड़ा, अनिश्चितता, अलगाव का दंश आदि संघर्ष जन्म लेते हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवसन और विस्थापन से जन्मीं इन परिस्थितियों का अंकन हुआ है।

प्रवासी हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में प्रवासी महिला रचनाकारों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रवासी लेखिकाओं का साहित्य इस रूप में भी महत्वपूर्ण है कि उनके साहित्य में जहाँ एक ओर विभिन्न देशों की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का अंकन तो हुआ ही है वहीं दूसरी ओर इनका साहित्य नारी जीवन की सूक्ष्म एवं गहन पड़ताल का साहित्य भी बन गया है। प्रवासी महिला लेखिकाओं में सुधा ओम ढींगरा का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सुधा ओम ढींगरा जी की कहानियों के विविध आयामों पर चर्चा होगी।

मूल शब्द :– प्रवसन, विस्थापन, नारी मन, प्रवासी विमर्श।

प्रस्तावना :–

अमेरिका में प्रवास कर रहीं वरिष्ठ रचनाकार सुधा ओम ढींगरा का जन्म 1959 ई. में जालंधर (पंजाब) में हुआ था। सुधा जी अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति अमेरिका के कवि सम्मेलनों की राष्ट्रीय संयोजक हैं। 'प्रथम शिक्षण' संस्था की कार्यकारिणी सदस्या एवं उत्पीड़ित नारियों की सहायक संस्था 'विभूति' की सह–संपादक हैं। सुधा जी के प्रकाशित कहानी संग्रह कमरा नंबर 103, कौन सी जमीन अपनी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ तथा टॉरनेडो (पंजाबी से अनुदित) प्रकाशित हैं।

सुधा जी की कहानियाँ भारतीय परिवेश से तो जुड़ी ही हैं। इनका दूसरा सिरा प्रवासी जीवन के सूक्ष्म संसार से भी जुड़ा है। पंकज सुबीर के अनुसार, "सुधा ओम ढींगरा की कहानियों का एक और मजबूत पक्ष यह है कि इन कहानियों में कई बार परिदृश्य भारत के बाहर होने के बाद भी पाठक कहीं भी असहज महसूस नहीं करता है। ऐसा इसीलिए क्योंकि लेखिका अपने पात्रों को मनोवैज्ञानिक स्तर पर लाकर गढ़ती हैं और इसी कारण पात्र किसी एक देश या समाज के दायरे में बँधा हुआ नहीं रहता है। इन कहानियों में जो परिदृश्य है, वह किसी भिन्न देश का परिदृश्य होने के बाद भी अपना सा ही लगता है।"[1]

उद्देश्य :–

– सुधा ओम ढींगरा की कहानियों का परिचय प्राप्त करना।
– सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के विविध पक्षों का विश्लेषण करना।
– सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के वैशिष्ट्य को परखना।

व्याप्ति एवं प्रासंगिकता :–

प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रो. प्रदीप श्रीधर द्वारा संपादित 'प्रवासी हिंदी साहित्य रू दशा एवं दिशा', डॉ. नवनीत कौर द्वारा रचित 'प्रवासी हिंदी साहित्य : वैश्विक परिदृश्य', डॉ. कमल किशोर गोयनका द्वारा संपादित 'प्रवासी साहित्य : जोहासवर्ग के आगे' आदि सैद्धान्तिक ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र हेतु सुधा ओम ढींगरा जी के कहानी संग्रहों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्रिकाओं, वेब पत्रिकाओं आदि का भी अनुशीलन किया गया है।

आज के युग में प्रवासी साहित्य विशेषकर प्रवासी महिला लेखन अपने इंद्र धनुषी आयामों के साथ हमारे समक्ष आया है। ऐसे में इस साहित्य का सूक्ष्म अंकन, उसके मर्म के विश्लेषण की अत्यंत आवश्यकता है। इस प्रकार का विश्लेषण हिंदी साहित्य के समृद्ध होते स्वरूप के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अनुसंधान पद्धति :–

प्रस्तुत शोध–पत्र में सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के विविध पक्षों का विश्लेषण करते हुए निष्कर्षों को प्राप्त किया गया है। इस हेतु आगमन एवं निगमन अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया है। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्षों तक पहुँचा गया है।

विश्लेषण :–

सुधा ओम ढींगरा अमेरिका में रहकर अपनी लेखनी के बल पर प्रवासी जीवन के संताप, संघर्ष, चेतना आदि अनुभवों को सार्थक रूप में प्रस्तुत कर रही हैं। उनकी कहानियों में रंग भेद की समस्या, पारिवारिक तनाव, पीढ़ीगत द्वन्द्व, नारी जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक द्वन्द्व आदि यथार्थ रूप में दिखाई देते हैं।

मानवीय चेतना सुधा जी के लेखन का महत्वपुर्ण आयाम है। उन्होंने अपनी कहानियों में चेतना के विविध रूप विकसित किए हैं। 'सुधा ओम ढींगरा' की कहानी 'क्षितिज से परे' में नायिका अपनी बेटियों द्वारा अमेरिकी पतियों के चयन का आधार उनके भारतीय पिता के दुर्व्यवहार को बताती है। उसकी चेतना सम्पन्न बेटियाँ दृढ़ता से अपने जीवन साथी चुनती हैं। "आपको यह जानकर दुरूख होगा कि मेरी बिटियों ने स्थानीय पति ढूँढे हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें अमरीकी कल्चर से प्यार है, अमरीकी लड़कों के साथ गृहस्थी निभाते हुए भी वो भारतीय हैं। वे अपने बाप के व्यवहार, स्वभाव और मानसिकता से इतनी आहत हुईं कि भारतीय मर्दों और उनके दोहरे मापदंडों से नफ़रत करने लगीं।"[2]

पार्टी कल्चर पश्चात्य समाज का अभिन्न भाग है। किंतु पार्टियों में पति बुरे व्यवहार से तंग आकर नायिका अपने पति सुलभ का विरोध करने का निर्णय लेती है – "मैं समझ नहीं पाई, यह सब क्या हुआ... हाथ 911 घुमाने के लिए टेलीफोन की तरफ बढ़े, पुलिस आ जाती और हमेशा के लिए किस्सा समाप्त हो जाता है ....पर संस्कारों ने रोक दिया, सुलभ का घटियापन दुनिया के सामने आ जाता....मेरी आत्मा को गवारा नहीं था। सुलभ सारी रात नहीं सोए, आलोचना के साथ शिकायतें ही शिकायतें करते रहे...पार्टी का सारा मजा किरकिरा

हो गया था....नए साल की शुरूआत से ही मैंने फैसला ले लिया था....पार्टियाँ बंद...सुलभ मुझे किसी पार्टी के लिए मजबूर नहीं कर पाए थे....उन्हें मेरे विरोध का आभास हो गया था।"[3]

सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' में जार्ज साथियों की अकर्मण्यता को स्वीकार नहीं करता। उसकी चेतना इसका विरोध करती है – "जार्ज को गुस्सा आ गया – इस घर में आप लोग काम क्यों नहीं करना चाहते, काम करने आप सब कतराते क्यों हैं? क्या तुम लोगों के मन में दूसरों को देखकर कोई उमंग नहीं उठती। उनकी तरह जीने की चाह नहीं होती। सफर से सारे बैठे रहते हैं, हरामी सब निकम्मे हो गये हैं, निठल्ले खाली बैठकर मुफ्त की खाने के आदी हो गए हैं। अब सालों मैं तुम दोनों की जिंदगी बदलना चाहता हूँ और तुम हो कि इस गंदगी में पड़े रहना चाहते हो ...।"[4]

सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'बेघर सच' की नायिका रंजना गैलरी में एक मूर्ति देखकर नारी पवित्रता के सम्बन्ध में विचार रखती है। ये विचार रंजना के जीवंत व्यक्तित्व को दर्शाते हैं– "दुनिया में सबसे पवित्र अगर कोई है तो वह नारी है। पुरुष बीज डालता है तो वह नौ महीने बाद उसे फल देकर साथ की सारी गंदगी बाहर निकाल देती है। हर माह प्रकृति उसका भीतरी आँगन स्वच्छ कर देती है। उसे तो कोई पुरुष मैला कर ही नहीं सकता। प्रकृति ही उसका साथ देती है वह तो गंगा की तरह पवित्र है। अगर वह बलात्कार और उसके बाद के डर को अपने भीतर से निकाल दे तो वह शक्ति है। अपनी इस ताक़त को नारी स्वयं भी पहचान नहीं पा रही। वह तो कभी मैली होती ही नहीं। कुदरत ही उसे साफ कर देती है।"[5]

सुधा जी की कहानी 'बिखरते रिश्ते' में आँटी रिमझिम को कालचक्र के परिवर्तन के माध्यम से मानवीय चेतना के उत्थान की बात बताती है– "रानी, क्यों अपना जीवन बर्बाद कर रही है तू ? बलबीर तो बदलने से रहा। तुझे जब तक अक्ल आएगी, बहुत देर हो चुकी होगी, जाने क्यों मैं इतनी सीधी सपाट बात करने की आधी हो चली हूँ। मेरे पास कहाँ समय था ये सब बेवकूफ़ियाँ बर्दाश्त करने का।

आंटी जी मैं की कराँ? वह मुझे टालते हुए बोली।

उसे छोड़ क्यें नहीं देते? शायद उसे मुझसे इस बात की अपेक्षा न थी

ओन्नु छड़के कित्थे जावांगी? उसका चेहरा देखने लायक था।

अरे, तू कमाती है, काउंसिल वाले तेरे रहने की व्यवस्था कर देंगे।"[6]

सुधा जी की कहानियों में नारी अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती है और उन्हें प्राप्त भी कर लेती है 'फंदा–क्यों.....?' कहानी की जसबीर मोहन के साथ अपनी गृहस्थी को बखूबी सँभाल लेती है– "खैर, यो तो एक बहाना था जो मेरा बेटा बन रहा था। इन बच्चों के लिए हम क्या नहीं करते और इनसे एक छोटा–सा काम भी नहीं होता। गोरे बच्चों को देखिए, घर का सारा काम करते हैं। छोटी उम्र से ही काम पर लग जाते हैं। हमरे बच्चे केवल पढ़ते हैं और इसकी एवज में हम उन्हें सारी सुविधाएँ मुहैया कराते हैं। फिर भी हमारे बच्चे इन गोरे और काले बच्चों से लाख दर्जा अच्छे हैं। चोरी–डकैती तो नहीं करते, ड्रग्स तो नहीं लेते।"[7]

सुधा जी मानवीय संघर्षों से परे जाकर मानवीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की बात करती हैं।

भारत से प्रवास पर जाने का कार्य सदैव होता रहा है। आवागमन के साधनों ने इस प्रक्रिया में और तेजी ला दी है। भारतीय प्रवासी दुनिया के कोने–कोने में बसे हुए हैं। अनेक भारतीय ऐसे हैं जो भारत से इतर देशों में हिंदी रचना व विकास के कार्य में लगे हुए हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालयों के

प्राध्यापक तो हैं ही अनेक सामान्यजन भी हैं जो नियमित लेखन व अध्यापन से विदेश में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे हैं। 'विदेश में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि उनकी रचनाओं में अलग–अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों का विकास मिलता है और इससे हिंदी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास होता है और समस्त विश्व हिंदी भाषा में विस्तार पाता है।"[8]

बीसवीं शती के मध्य से भारत छोड़कर विदेश जा बसने वाले लोगों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इसमें से अनेक लोग हिंदी के विद्वान थे और भारत छोड़ने से पहले ही लेखन में लगे हुए थे। ऐसे लेखक अपने देश में चुपचाप में लगे थे पर उनमें से कुछ भारत में धर्मयुग जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर लेखन काफी लोकप्रिय हुए, जिनका लोहा भारतीय साहित्य संसार में भी माना गया।

'बीसवीं सदी का अंत होते लगभग 100 प्रवासी भारतीय अलग–अलग देशों में अलग–अलग विधाओं में साहित्य रचना कर रहे थे। 21वीं सदी के प्रारम्भ होने तक पचास से भी अधिक साहित्यकार भारत में अपनी पुस्तकें प्रकाशित करा चुके थे वेब पत्रिकाओं का विकास हुआ तो ऐसे साहित्यकारों को एक खुला मंच मिल गया और विश्वव्यापी पाठकों तक पहुँचने का सीधा रास्ता भी। अभिव्यक्ति और अनुभूति पत्रिकाओं में ऐसे साहित्यकारों की।

सुधा जी की कहानियाँ दोनों देशों की संस्कृतियों को प्रतिबिम्बित करती हुई दिखाई देती हैं। इनकी कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' अमेरिका में बसे निम्न वर्ग के अश्वेत लोगों के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है। कहानी में इन अश्वेत लोगों के साथ अमेरिकी लोगों द्वारा किया गया रंगभेद भी यथार्थ रूप में प्रकट होता है। तेजेन्द्र शर्मा के अनुसार, "सूरज क्यों निकलता है में सुधा ओम ढींगरा अमरीका के निम्न वर्ग के अश्वेत लोगों के जीवन से हमारा परिचय करवाती हैं। साथ ही साथ वहाँ के बेघर लोगों का सरकार कैसे ख्याल रखती है, यह जानकारी भी सूक्ष्म तरीके से मिलता है।'[8] इस कहानी को देख प्रेमचंद की चर्चित कहानी कफन के कुछ प्रसंग याद आ जाते हैं। कहानी में पीटर और जेम्स खासे ढीठ किस्म के भिखारी हैं, जो देखने में 'घीसू' और श्माधवश के अमेरीकन अवतार हो सकते हैं। दोनों अपने हाथ में गत्ते का टुकड़ा हाथ में थामे रखते हैं, जिस पर लिखा होता है होम–लेस नीड यौर हैल्प'। जहाँ एक ओर तो हम यह सोचते हैं कि अमेरिका में बहुत अमीर लोग बसते हैं जिनके पास बड़े–बड़े घर हैं, गाड़ियाँ हैं और चारों ओर सुख–समृद्धि है। इसके विपरीत यह कहानी दो अश्वेत भिखारियों के माध्यम से अमेरिका में निम्न वर्ग की स्थिति का यथार्थ वर्णन करने में सक्षम हैं– 'कई दिनों से उनके गले सूखे हुए हैं, शराब की एक बूँद उन्हें नसीब नहीं हुई। पूरे बदन में बहुत तनाव है, उसे तनावरहित करने के साधन नहीं जुटा पाए वे। जेब में वेलफेयर में मिले भोजन के कूपनों के अतिरिक्त एक डॉलर भी उनके पास नहीं है।....."[9]

'सूरज क्यों निकलता है' कहानी में स्त्री एवं पुरुष भोगवादी संस्कृति की गिरफ्त में है इसका चित्रण इस कहानी में किया गया है– "माँ के स्वभाव' रहन–सहन और आदतों का परिणाम यह निकला कि बेटियाँ माँ के नक्शे–कदमों पर चलती हुई, रोज पुरुष बदलती हैं और तीन बच्चों की अविवाहित माँ बनकर सरकारी भत्ता ले रही है।'[10] विकसित देशों में 'लिव इन रिलेशनशिप' के अंतर्गत एक स्त्री–पुरुष का साथ केवल स्थायी सुखों तक ही सीमित है।

पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति में लिए त्याग के लिए कोई स्थान नहीं है। असामान्य है। सुधा ओम ढींगरा

कृत कहानी टॉरनेडो भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति की तुलना करती श्रेष्ठ कहानी है। कहानी में पाश्चात्य जीवन–शैली और भारतीय जीवन मूल्यों के बीच जूझती मिसेज शंकर नामक पात्र के संघर्ष को उद्घाटित किया गया है। कहानी में प्रमुख पात्र के साथ–साथ स्वयं लेखिका का जन्म भूमि और कर्मभूमि के प्रति अंतर्द्वंद्व भी कहानी को विशिष्ट बनाता है। कहानी में जैनेफर कहती है– 'मिसिज शंकर अब नार्मल है।' वंदना को यह बात बिल्कुल बुरी नहीं लगती है। वह मुस्कुरा जाती है। "अमेरिकी लोग, प्रीति की आंतरिक समाधि को कहाँ समझ सकते हैं? जहाँ शारीरिक इच्छा गौण हो जाती है, दैहिक सुख के आगे वे सोच ही नहीं पाते हैं?.....व्योम उससे अलग कब था? वह व्योम की तो हो चुकी थी। कभी–कभी वंदना सोचती, श्याम भी मीरा में ऐसे ही समाए होंगे। आंतरिक समन्वय प्रेम की ज्योति प्रज्वलित कर देता है, उसकी लौ पूरा बदन प्रेममय कर देती है, फिर बाहरी सुख की इच्छा नहीं रहती।"[11] कहानी में वंदना अपनी बेटी के साथ–साथ जैनेफर की बेटी क्रिस्टी को भी उसकी माँ की अनुपस्थिति में भारतीय संस्कार देती है। वंदना के संस्कारों के कारण क्रिस्टी को पाश्चात्य संस्कृति की तुलना में भारतीय संस्कृति अधिक आकर्षित करती है। इसलिए वह घर छोड़ने के उपरांत ईमेल में वंदना को यशोदा माँ कहकर संबोधित करती है।

प्रवासी आज तक अपनी मिट्टी के मोह से दूर नहीं हो पाया है और न ही जिस देश में प्रवास कर रहा है उससे उसका जुड़ाव हो सका है। कौन सी जमीन अपनी कहानी में मनजीत सिंह सोढ़ी के साथ यव वंदना दिखाई देती है प्रम जनमेजय इस कहानी के संबंध में कहते हैं कि, 'चाहे हम एक जमीन पर रहते हैं, पर हम अपनी–अपनी जमीन पर अपना–अपना जीवन जीते हैं। इस माटी की गंध से बिछोह हमें सब प्रकार की सुख–समृद्धि के बावजूद वंचित–सा अनुभव करवाता है। सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'कौन सी ज़मीन अपनी' उसी अनुभव की कहानी है।'[12]

इस कहानी का नायक मनजीत सिंह सोढ़ी अपनी कमाई का हिस्सा अमेरिका से भारत इसलिए भेजता है कि उस पैसे से भारत में जमीन लेकर बुढ़ापे में वह अपने देश रह सके। जब वह भारत वापस आता है तो उसके पैसों पर विलासी जीवन जीने वाले परिवारीजनों को यह अच्छा नहीं लगता कि वह सदैव के लिए वहाँ आ जाए। वह उसको मारने का षड़यंत्र करते हैं किंतु मनजीत को इसका पता चल जाता है और वह अपनी पत्नी के साथ वहाँ से दुःखी मन से चला जाता है – उसके होश ही उड़ गए कि जिस परिवार के लिए उसने जिंदगीभर इतना सब कुछ किया आज वह ऐसा भी कर सकता है– 'सौष्ठव देहयष्टि वाली मनविंदर ने मनजीत को बाँहों में भर कर उठने में मदद की। अपना पर्स उठाया और आधी रात में ही दोनों पिछले दरवाजे से निकल गए। उनके पाँव के नीचे वही जमीन थी, जिसके लिए मनजीत उम्रभर डॉलर भेजता रहा। चारों तरफ गहरा काला अँधेरा था।'[13]

सुधा ओम ढींगरा ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन के संघर्ष को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। वर्तमान युग में स्त्री एक पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है, लेकिन फिर भी उसकी स्थिति वैसी ही है जैसी पहले थी। कहानी बेघर सच की नायिका रंजना भी कुछ इसी स्थिति से संघर्षरत दिखाई देती है– "तिनका–तिनका चुन कर नर–मादा नीड़ बनाते हैं; फिर वह नीड़ सिर्फ नर का कैसे हो जाता है? मादा का अधिकार उस पर क्यों नहीं रहता? युगों से यही तो होता आया है.... नारी घर की रानी, अधिकार तेरे पानी। पुरुष के मूड पर है कब किस रूख बैठे, कई बार एक ही झोंके में नारी के सारे अधिकार पानी में बहा दिए जाते हैं और वे भी नाली

के पानी में।'[14] इस कहानी में लेखिका ने यह स्पष्ट रूप से दिखाया है कि बेशक कोई स्त्री अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर क्यों न चल ले लेकिन उसकी स्थिति घर में वही है जो पहले थी। यहाँ रंजना के माध्यम से सुधा ओम ढींगरा ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि एक स्त्री का भी अपना अस्तित्व है, लेकिन वह इस पितृसत्तात्मक समाज में कहीं खो कर रह जाता है। इसी प्रकार सुधा ओम ढींगरा ने अपनी 'क्षितिज से परे' कहानी में प्रताड़ित स्त्री के संघर्ष को दर्शाया है।

सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'काश ! ऐसा होता'........... में मिसेज हाइडी के बच्चों द्वारा उनकी उपेक्षा का उल्लेख किया गया है –"हैं दो बेटे। पर नाम के। मिस्टर हाइडी की डेथ पर आए थे। उसके बाद आज तक उन्होंने कभी मिसेज हाइडी से पूछा नहीं। माँ तुम कैसी हो? मिसेज़ हाइडी ही पोते–पितोयं, बेटे–बहुओं को उपहार भेजती हैं। उनकी तरफ से तो कभी यह भी उत्तर नहीं आया कि माँ उपहार मिल गए या माँ तुम इतना खर्च क्यों करती हो?"[15]

सुधा जी की कहानी नंबर 103 की कमलेश वर्म जी पीड़ा दरकते पारिवारिक संबंधों को दर्शाती है– "कमलेश वर्मा अपने आन्तरिक संसार में सोचों के कई पहाड़ छलाँगती गईं। कुछ ही दिनों में सच्चाई सामने आ गई। बहू का गर्भ गिर गया और मैं अपने पर बोझ बन गई। मैं बच्चे की देखरेख के लिए लाई गई थी, मेरा अब वहाँ क्या काम था.....पर मैं कहाँ जाती? और उस पैसे से बेटे ने अपने घर की किश्तें चुका दी थी। स्वाभिमान मारकर बैठी रही। अचानक एक दिन बेटे को नौकरी से जवाब मिल गया। अब मैं उस घर में दीवार लगा मकड़ी का जाला थी, जिसे उतारकर फेंकना चाहते थे। मैं भारत लौटना चाहती थी, पर बेटे की सूरत रोक लेती।"[16]

'बेघर सच' कहानी में सुध ओम ढींगरा जी ने रंजना और संजय के माध्यम से मृत प्राय दाम्पत्य संबंधों को उजागर किया है– "दोनों काम से घर आते। संजय टीवी देखता और उसके शरीर से खेलता हुआ सो जाता। वह मानसिक सामंजस्य के लिए सहारा तलाशती। उसे पता चल गया था कि संजय एक अति महत्त्वाकांक्षी और वर्कोहलिक व्यक्तित्व है। कंपनी में वह सबसे ऊँचे पद पर पहुँचना चाहता था। इसलिए सातों दिन काम करता। घर उसके लिए रात्रि–स्थली था और वह सिर्फ भोग्या। रजना इनसान है, उसका अपना व्यक्तित्व है, अस्तित्व है, सोच है, समझ है। वह भी कुछ चाहता है, इससे उसको कोई सरोकार नहीं था। बस वह पति है, इतना वह बखूबी जानता था।"[17]

प्रवासी जीवन में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ दिखाई देती हैं। सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'उसका आकाश धुंधला' में संबंधों की दरकन दिखाई देती है। यहाँ सम्बन्धों में विषमता विद्यमान है– "अलग ही कर दिया है। पापा जी ने हैसियत से ज्यादा दहेज़ दिया तो भाभियों के मुंह फूल गए। और जब पाप जी ने संपत्ति से भी मुझे हिस्सा दे दिया, सगे भाई परायों जैसा व्यवहार करने लगे हैं। ससुराल वाले खुश हैं कि उन्हें बहुत कुछ मिल गया। पर मुझे क्या मिला। तीन बेटियां और ससुराल के ताने, लानते और भाइयों की बेरुखी। सुहानी का गला भर आया।"[18]

पारिवारिक विघटन के दंश से जूझती सुहानी टूट चुकी है।

निष्कर्ष :–

सुधा जी कहानियों का विश्लेषण करने के उपरांत यह ज्ञात होता है कि सुधा जी की कहानियों में पारिवारिक विघटन नारी जीवन का संघर्ष, प्रवासी जीवन का अकेलापन एवं मूल्य संक्रमण जैसी दशाओं भी

सार्थक अभिव्यक्ति हुई है। सुधा जी ने अपनी कहानियों के बल पर प्रवासी जीवन का सूक्ष्म अंकन किया है।

संदर्भ :-

1. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, (भूमिका पकंज कबीर), सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–9–9
2. वही, पृष्ठ–82।
3. वही, पृष्ठ–82।
4. वही, पृष्ठ–67।
5. वही,पृष्ठ–48–49।
6. कौन सी जमीन अपनी, सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–76–77।
7. वही, पृष्ठ–70।
8. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, (फ्लैप पृष्ठ), सुधा ओम ढींगरा।
9. कौनी जमीन अपनी (कहानी : सूरज क्यों निकलता है), सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–40।
10. वही, पृष्ठ–44।
11. दस प्रतनिधि कहानियाँ, (कहानी : टॉरनेडो), सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–100।
12. कौन सी जमीन अपनी, सुधा ओम ढींगरा, फ्लैप पेज।
13. वही, पृष्ठ–19.
14. दस प्रतिनिधि कहानियाँ (कहानी : बेघर सच), सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–12।
15. वही, पृष्ठ–122।
16. वही, पृष्ठ–59।
17. वही, पृष्ठ–47।
18. कौन सी जमीन अपनी, सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ–110।

पता–35/403, नौबस्ता, लोहामण्डी, आगरा–282002

दूरभाष नं. 7351299754, E-mail : amit2k81@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 63-66
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य : वर्तमान और भविष्य

डॉ. रमेश यादव
Lecturer in Hindi, Govt. College for Men Kadapa, A.P.

हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का दायरा हिन्दी पट्टी से बाहर दक्षिण भारत में तो बहुत पहले से फैला हुआ था, आज यह भारत से बाहर, विश्व के तमाम छोटे–बड़े देशों में अपना विस्तार कर चुका है। भारत से बाहर रह कर हिन्दी में साहित्य सृजन ही 'प्रवासी हिंदी साहित्य' कहलाता है। व्यक्ति की अनुभूति को किसी जाति, संप्रदाय या क्षेत्र में बांटा नहीं जा सकता। व्यक्ति जिस समाज में रहता है वहां के सुख–दुःख को अनुभव करता है। फिर वही अनुभूति साहित्य के रूप में जन सामान्य तक पहुंचती है। आज के इलेक्ट्रॉनिक युग ने पूरे विश्व को एक सूत्र में बांध दिया है। आज के दौर में भौतिक दूरी चाहे जितनी हो, पर हर इंसान एक दूसरे के पहुंच के काफी करीब है। अब न तो मनुष्य–मनुष्य में दूरी बची है, न साहित्य में। हिन्दी साहित्य भी आज पूरे विश्व में रचा और पढ़ा जा रहा है। विश्व हिन्दी सचिवालय मारिशस की पत्रिका 'विश्व हिन्दी पत्रिका' की संपादक डॉ. माधुरी रामधारी, पत्रिका के 2021 अंक के संपादकीय 'पंच तत्वों पर निर्भर हिन्दी का अस्तित्व' में लिखती हैं कि 'हिन्दी भाषा यदि संपूर्ण भारत में संपर्क भाषा बन पाई है और विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना पाई है, तो इसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दी प्रेमियों ने अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में इस भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।'[1]

प्रवासी शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। वास का शाब्दिक अर्थ किसी स्थान विशेष पर रहने वाले से है। प्रवासी का अर्थ है अपने मूल स्थान से दूर किसी दूसरे स्थान या देश में निवास करने वाले से लिया जाता है। हिन्दी में प्रवासी साहित्य का तात्पर्य है, भारत से बाहर किसी दूसरे देश में रहकर हिन्दी में साहित्य का सृजन करना। विदेश में रह रहे भारतीयों द्वारा लिखा जाने वाला साहित्य ही प्रवासी साहित्य कहलाता है।

प्रवासी भारतीयों के अधिकारों की लड़ाई की शुरुआत महात्मा गांधी से शुरू होती है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मजदूरों पर हो रहे अत्याचार के विरोध में और उनके अधिकारों के लिए महात्मा गांधी ने बहुत लंबा संघर्ष किया। प्रवासी साहित्य की शुरुआत यहीं से देखा जाना चाहिए, क्योंकि इन मजदूरों ने अपने साथ एक भाषा लेकर गए थे। जिसमे वे साहित्य सृजन कर रहे थे।

प्रवासी साहित्य अपने मूल, अपने जड़ से विस्थापित हुए लोगों की आंतरिक अभिव्यक्ति है। 'प्रवासी जगत' पत्रिका के जुलाई–सितंबर 2020 अंक की संपादकीय में प्रो बिना शर्मा लिखती हैं, 'प्रवासी साहित्य लेखन प्रवासियों की अपनी ज़मीन से जुड़ी आदतों का स्मरण और विस्तार है।'[2] प्रवासी साहित्य उस साहित्य को कहा

जाता है जो भारतीय विदेश में बसे हुए हैं और अपने देश या विस्थापित देश में भोगे हुए यथार्थ को हिन्दी में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक या किसी दूसरी अन्य विधा में उसे अभिव्यक्त कर रहे हैं। विस्थापन की अपनी एक अलग पीड़ा होती है, वह एक देश से दूसरे देश का विस्थापन हो, शहर से गांव का विस्थापन हो या गांव से शहर का विस्थापन हो। हर तरह के विस्थापन के पीछे एक दर्द होता है, एक पीड़ा होती है। विस्थापन का अर्थ है अपनी संस्कृति से विस्थापन, अपनी परंपरा से विस्थापन, अपनी लोक संस्कृति से विस्थापन, अपने लोग, घर, परिवार, गांव, समाज से विस्थापन। और इस विस्थापन के बाद नई जगह, नये लोग, नये समाज का उनके प्रति व्यवहार का हिन्दी में अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य कहलाता है। यह अभिव्यक्ति जिसमें विस्थापित हुआ व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों को साहित्य के माध्यम से सब तक पहुंचाता है। प्रवासी साहित्य भारतीयों के विदेश पलायन और उस पलायन से उपजी पीड़ा की अभिव्यक्ति है।

भारत से बाहर दुनिया के अलग–अलग कई हिस्सों में हिन्दी साहित्य लेखन हो रहा है। प्रवासी साहित्य अपने प्रारंभिक दौर में तो फीजी, मांरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद तक सीमित था। लेकिन आज हिन्दी का प्रवासी साहित्य पूरे विश्व में रचा जा रहा है। सूरीनाम में हिन्दी की व्यापकता और हिन्दी साहित्य पर विमलेश कांति वर्मा अपने एक लेख में लिखते हैं कि, 'त्रिनिनाद के पड़ोसी देश सूरीनाम ने अपनी हिन्दी जिसे वे सरनामी, सरनामी हिन्दुस्तानी और सरनामी हिन्दी के नाम से अभिव्यक्त करते हैं, उसकी सुरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए सूरीनाम के नागरिक प्रतिबद्ध हैं और वह भारतीयों के बीच बोलचाल और अभिव्यक्ति का माध्यम बनी रहे इसके लिए वे उसमें साहित्य सृजन कर रहे हैं।'[3]

प्रवासी साहित्य का गहराई से अध्ययन किया जाए तो हम पाते हैं कि यह साहित्य मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर लिखा जा रहा है :–

1. विदेशियों द्वारा प्रवासियोंके साथ किया जा रहा व्यवहार।
2. विदेशीयों की भारतीयों के प्रति सोच।
3. विस्थापित लेखक का नया वातावरण, परिवेश एवं वहां की विशेषताएं।
4. स्वदेशी और विदेशी संस्कृति एवं सभ्यताओं में भिन्नता, समानता एवं उसका उनके जीवन पर प्रभाव।
5. स्थानीय सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों एवं उन मूल्यों एवं रिश्तों का उनके जीवन और परिवार पर प्रभाव।
6. अपने परिवार, गांव, समाज, लोक संस्कृति एवं सभ्यता से कटे लोगों की आंतरिक पीड़ा।
7. स्थानीय संस्कृति और सभ्यता से पहचान और उसका साहित्य में प्रकटीकरण।
8. नई संस्कृति और समाज में प्रवासियों की स्थिति।
9. स्थानीय लोक पर्व एवं उसका उस समाज में महत्व।

यही कुछ बिंदु हैं जिसको लेकर प्रवासी साहित्य रचा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त भी तमाम छोटे–बड़े विषय हैं जिन पर हिन्दी में प्रवासी साहित्यकारों द्वारा साहित्य लिखा जा रहा है।

अब हम बात करते हैं कुछ चर्चित प्रवासी साहित्यकारों के बारे में। हिंदी के प्रवासी साहित्यकारों में रामदेव धुरंधर (मांरिशस) बड़ा नाम है। इन्हें श्रीलाल शुक्ल सम्मान से सम्मानित किया गया है। सुषमा वेदी (हवन, लौटना, कतरा दर कतरा, इतर) सुधा ओम ढींगरा (तलाश पहचान की, नक्काशीदार कैबिनेट, 'विभोर स्वर' पत्रिका का

संपादन), इला प्रसाद, (ई मेल, कुंठा, सेल, दर्द दिखता क्यों नहीं) ज़ाकिया ज़ुबैरी (सांकल, मेरे हिस्से की धूप) ये विदेश से निकलने वाली पुरवाई पत्रिका की संरक्षक हैं। नीना पाल (रिहाई, तलाश, कुछ गांव गांव कुछ शहर शहर) उषा वर्मा (फायदे का सौदा, रिश्ते, मंजूर अली, सलमा), उषा राजे सक्सेना (प्रवास में, क्या फिर वही होगा)। मॉरिशस के बड़े और हिन्दी साहित्य के लिए समर्पित साहित्यकार अभिमन्यु अनत (कैक्टस के दांत, नागफनी में उलझी सांसें, गूंगा इतिहास, देख कबीरा हांसी) ने जब हिन्दी साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित 'वसंत' नामक पत्रिका के संपादक बने तो नए–नए लेखकों को खूब प्रोत्साहन दिया। अभिमन्यु अनत के साहित्य के बारे में कमल किशोर गोयनका अपने एक लेख में लिखते हैं, 'श्री अभिमन्यु अनत में बहुमुखी प्रतिभा है–वे कथाकार, कवि नाटककार, जीवनीकार, आत्मकथाकार, संस्मरण लेखक, अनुवादक के साथ साथ नाट्य निर्देशक, अभिनेता, चित्रकार, फोटोग्राफर, संपादक आदि के रूप में उनका कई प्रकार का योगदान है।'[4] इसके अतिरिक्त भी बहुत सी पत्रिकाएं हैं जैसेकि, भारत दर्शन–न्यूजीलैंड, सरस्वती पत्र–कनाडा, अभिव्यक्ति–संयुक्त अरब अमीरात, अन्यथा–अमेरिका, कर्मभूमि–यूएसए एवं प्रवासी टुडे जो विदेशी धरती से हिन्दी साहित्य और प्रवासी हिंदी साहित्य का निरंतर प्रचार प्रसार कर रही हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से प्रवासी साहित्य विश्व के कोने–कोने में पहुँच रहा है।

भारत से बाहर दूसरे कई देश ऐसे हैं जहां रहते हुए भारतीय लोग हिन्दी में साहित्य रच रहे हैं। प्रवासी साहित्य की शुरुआत सबसे पहले मॉरिशस, सूरीनाम और फ़िजी से हुई। इन्हीं देशों में भारतीय गिरमिटिया मजदूर बनकर गए, और वहीं के होकर रह गए। फिर उन लोगों ने जो साहित्य सृजन शुरू किया वहीं से प्रवासी हिंदी साहित्य की शुरुआत होती है। वर्तमान में यह अमेरिका, डेनमार्क, अर्जेंटीना, नार्वे, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस, कैनेडा देशों से भी लिखा जा रहा है। आज स्थिति यह है कि प्रवासी हिंदी साहित्य दुनिया के हर कोने में लिखा और पढ़ा जा रहा है। यही कारण है कि वरिष्ठ कथाकार सुषमा वेदी मानती हैं कि प्रवासी हिंदी साहित्य ने विश्व को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया है।

हिन्दी के प्रवासी साहित्य के भविष्य पर बात करें तो यह बात साफ है कि भविष्य में प्रवासी साहित्य और मजबूती से लिखा जाएगा। लगातार नये रचनाकार नई संवेदना और नए अनुभव लेकर साहित्य सृजन कर रहे हैं और विदेश में हुए अपने अनुभव को लिख रहे हैं। इस संदर्भ में कमल किशोर गोयनका लिखते हैं कि 'भारत के बाहर भारतेतर देशों में हिन्दी भाषा–साहित्य का बहुत बृहत्तर संसार है।'[5] लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि इस साहित्य को हम प्रवासी साहित्य क्यों कहें? साहित्य तो साहित्य होता है। हिन्दी साहित्य में प्रवासी लेखकों द्वारा लिखे जा रहे साहित्य को 'प्रवासी साहित्य' नाम देकर उसे मुख्य धारा से अलग रखने पर कुछ साहित्यकारों ने प्रश्न भी उठाया है। तेजेन्द्र शर्मा 'पुरवाई' पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित एक कार्यक्रम में जिसका विषय था 'प्रवासी साहित्य : दशा और दिशा' में कहते हैं कि लेखक तो प्रवासी हो सकता है लेकिन हम साहित्य को प्रवासी क्यों कहते हैं? इसी तरह अमेरिकी प्रवासी लेखिका इला प्रसाद 'लहक' को दिए इंटरव्यू में विदेशी धरती से लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहने पर आपत्ति करती हैं। इनका मानना है कि लेखक तो प्रवासी हो सकता है, लेकिन साहित्य को प्रवासी कैसे कहा जा सकता है? हिन्दी साहित्य में ही अनेक विमर्श हैं। अलग–अलग समुदाय या वर्ग को लेकर लिखे जा रहे साहित्य को यदि अलग–अलग विमर्श का नाम दे सकते हैं तो, विदेशी धरती पर रहते हुए, विदेशी अनुभूति, उनके अपने सुख–दुःख के साथ लिखे जा रहे

साहित्य को प्रवासी साहित्य कहने में क्या हर्ज है? दलित साहित्य या स्त्री विमर्श को मुख्य धारा से अलग इसी लिए माना गया क्योंकि इन साहित्य में चित्रित अनुभूति सामान्य साहित्य से अलग है। इसी इंटरव्यू में तेजेन्द्र शर्मा एक सवाल और उठाते हैं कि विदेशी धरती से लिखे जा रहे साहित्य को हम प्रवासी साहित्य कहते हैं लेकिन उनका क्या जो लेखक भारत में ही एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रवास किए हैं। वे भी तो अपने मूल से कटे हुए हैं। तेजेन्द्र शर्मा का यह सवाल जायज है। इस पर हिन्दी समाज को सोचने की जरूरत है। लेकिन यदि इस तरह साहित्य को विभाजित किया गया तो हर वर्ग का, हर भाग का एक अलग साहित्य होगा, लेकिन किसी साहित्य के लिए यह उचित नहीं है।

जैसाकि हम जानते हैं कि हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श प्रचलित हैं जैसे – दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि। ठीक उसी प्रकार प्रवासी साहित्य विमर्श भी हिन्दी साहित्य में प्रचलित है। जिस तरह से दलित विमर्श, स्त्री विमर्श या अल्पसंख्यक विमर्श सभी को हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा में गिना जाता है उसी तरह से प्रवासी साहित्य को भी हिन्दी की मुख्य धारा से जोड़कर देखते की जरूरत है। प्रसिद्ध साहित्यकार मृदुला गर्ग प्रवासी साहित्य को अलग कर के देखने के पक्ष में नहीं हैं। वे मानती हैं कि प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा है।

भारतीय हिन्दी साहित्य और प्रवासी हिंदी साहित्य में अंतर क्या है? क्यों हम किसी को प्रवासी साहित्य नाम दें? क्या सिर्फ इसलिए कि वह विदेशी धरती से लिखा जा रहा है इसलिए? या इन दोनों साहित्य में विषय वस्तु, वैचारिक या संवेदनात्मक आधार पर भिन्नता भी है? निश्चित रूप से यहां और वहां के लेखकों की अनुभूति में अंतर है। यहाँ और वहाँ के लेखकों की अनुभूति में अंतर है, और यह अंतर साहित्य की विषयवस्तु में भी दिखता है। इसके बाद भी साहित्य सिर्फ साहित्य है उसे किसी भी भौगोलिक सीमा में बांध नहीं सकते, इसे संपूर्णता एवं वैश्विक दृष्टि से देखने की जरूरत है। आने वाले समय में नई–नई टेक्नोलॉजी पूरे विश्व को एक मंच पर रख देगी। हर व्यक्ति एक दूसरे की पहुंच के काफी करीब होगा। हर साहित्य एक दूसरे के पहुँच के करीब होगा, हर लेखक हर पाठक की पहुँच में होगा। भौगोलिक सीमाओं के अतिरिक्त सभी सीमाएं टूट जाएंगी। तब शायद प्रवासी शब्द अर्थहीन हो जाए। तब साहित्य सिर्फ साहित्य रह जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. विश्व हिन्दी पत्रिका 2021–संपादकीय– डॉ माधुरी रामधारी।
2. प्रवासी जगत – जुलाई–सितंबर 2020, संपादकीय –प्रो बिना शर्मा।
3. त्रिनिदाद हिन्दी इतिहास स्वरूप और चुनौतियाँ, विमलेश कांति वर्मा : गवेषणा, पृष्ठ संख्या 22 जनवरी–मार्च 2022
4. अभिमन्यु अनत को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता–कमल किशोर गोयनका, प्रवासी जगत, जनवरी–मार्च 2019 पृष्ठ संख्या–19
5. अभिमन्यु अनत को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता–कमल किशोर गोयनका, प्रवासी जगत, जनवरी–मार्च 2019 पृष्ठ संख्या– 17

Phone No. 8520027825, Email- ramesh7121983@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 67-70
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

स्त्री संवेदना और प्रवासी साहित्य

डॉ. श्याम मोहन पटेल
सहायक प्राध्यापक, हिंदी, बुंदेलखंड स्नातकोत्तर महाविद्यालय झाँसी, उत्तर प्रदेश।

किसी भी समाज व संस्कृति का ज्ञान वहां के साहित्य से होता है। साहित्यकार ही भाषा, संस्कृति और समाज को सुसंस्कृत कर उसे आगे बढ़ाते हैं। इसी तारतम्य में यदि हम देखें तो प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। प्रवासी भारतीयों ने विदेश में जाकर अपनी लगन और निष्ठा तथा जीवट व्यक्तित्व से वहां के समाज में अपनी पहचान बनाई है। भारतीय मूल के विदेश में रहने वाले लोगों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी साहित्यकारों ने स्त्री विमर्श को केंद्र में लेकर अनेक रचनाओं रचनाएं लिखी है। प्रोफ़ेसर रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में 'स्त्री को केंद्र में रखकर समाज, संस्कृति एवं परंपरा इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया स्त्री विमर्श है।' हमारे देश का साहित्य मॉरीशस, फ़िजी, ब्रिटेन, अमेरिका, डेनमार्क, फ्रांस चीन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा त्रिनिडाड, नार्वे, यूक्रेन, रूस, संयुक्त राज्य अमीरात आदि अनेक देशों में विस्तृत है। यहां सुषम बेदी, उषा प्रियंवदा, पुष्पिता अवस्थी, सुधा ओम ढींगरा, दिव्या माथुर, अचला शर्मा, उषा राजे सक्सेना, उषा प्रियंवदा, पूर्णिमा बर्मन, रेखा राजवंशी, स्नेहा ठाकुर, कमला दत्त, अर्चना पैन्यूली, सुचिता भट्ट, शैलजा सक्सेना, अंजना संधीर, कादंबरी मेहरा आदि अनेक महिला प्रवासी रचनाकार हिंदी साहित्य की लेखन परंपरा को विदेश में समृध्द बना रहे हैं।

ब्रिटेन में राजनीतिक रूप से सक्रिय एवं साहित्य प्रेमी बहुभाषाविद जकिया जुबेरी जी का प्रवासी हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। उत्तर प्रदेश के लखनऊ के छोटे कस्बेनुमा शहर आजमगढ़ में पली—बढ़ी जकिया जुबेरी का कथा—संग्रह श्सांकलश बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस संग्रह में ग्यारह कहानियां संग्रहित है। जिसमें बाबुल मेरा, मेरे हिस्से की धूप, डीढ़ मुस्कुराहटें, मारिया लौट आओ तुम भी, कच्चा गोश्त, सीप में बंद घुटन, बेचारी इडियट, सपने नहीं मरते आदि इनकी महत्वपूर्ण कहानियां है। संग्रह की पहली कहानी 'बाबुल मेरा' पाश्चात्य जीवन शैली की पृष्ठभूमि पर लिखित कहानी है जो पाश्चात्य जीवन शैली में व्याप्त नैतिक पतन को दर्शाती है। 'मेरे हिस्से की धूप' कहानी भारतीय परिवेश की पृष्ठभूमि पर आधारित निम्न वर्गीय परिवार में रहने वाली दो युवा लड़कियों की मानसिकता की कहानी है। जकिया जुबेरी जी की 'सांकल' कहानी अत्यंत लोकप्रिय है जिसमें पाश्चात्य जीवन शैली में व्याप्त भोगवादी संस्कृति के परिणामस्वरुप प्रवासी भारतीयों की प्रवास करके आई पुरानी और प्रवास के दौरान जन्मी नई पीढ़ी के मध्य का अंतर चित्रित है। इस कहानी में मां व पुत्र के बदलते संबंधों की विषय वस्तु वर्णित है। माँ सीमा अपने पाश्चात्य जीवन शैली में पले—बड़े पुत्र समीर के डर से अपने बैडरूम की सांकल बंद करती है क्योंकि पुत्र समीर एक लड़की के लिए अपनी माँ की पिटाई कर देता

है। 'कच्चा गोश्त' कहानी में भारत के ग्रामीण समाज में व्याप्त शोषण की अभिव्यक्ति हुई है। 'सीप में बंद घुटन' कहानी संबंधों की जटिलता पर आधारित है। 'बेचारी' कहानी के केंद्र में राजनीति है।

उषा राजे सक्सेना की कहानी 'प्रवास में' कहानी संग्रह की 'प्रवास में' कहानी आधुनिक समय की कहानी है। वह वर्ग जो विदेशी सरजमीं पर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है। वह विदेशी व्यवस्था का हिस्सा बनने के लिए नाना प्रयास करता है परंतु व्यवस्था उसे अंत तक बाहर का ही बनाए रखती है। कहानी का पात्र शशांक लंदन नौकरी की खोज में आता है। यह कहानी प्रवास में लोगों के बीच व्याप्त संस्थागत भेदभाव न ईर्ष्या को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त चुनौती, यात्रा में, शुकराना, अभिशाप, वह कौन थी, सफर, वर्ली, सिंपसन शुतुरमुर्ग आदि महत्वपूर्ण कहानी है।

ब्रिटेन में रह रही कादंबरी मेहरा की कहानी 'चिर पराई' व 'पथ के साथी' महत्वपूर्ण रही। 'चिर पराई' कहानी के माध्यम से कादंबरी जी ने पुत्र शोक में डूबे पति–पत्नी के बदलते संबंधों को दर्शाया है। इनकी कहानियों में स्त्री विमर्श के साथ–साथ सामाजिक सरोकार भी देखने को मिलता है। भारतीय मूल के लोग जिनका जन्म अमेरिका में हुआ किन्तु वे न तो अमेरिकन माने जाते हैं और न ही भारतीय कहलाते हैं। उनकी व्यथा को सुषम बेदी ने प्रमुखता से उठाया है। 'विभक्त' कहानी डॉक्टर माँ और बाप की अमेरिका में जन्मी बेटी अनन्या की कहानी है। 'सरस्वती की धार' कहानी में रंगभेद की समस्याओं को चित्रित किया गया है। 'जमी बर्फ का कवच' कहानी विदेश में एकाकीपन की शिकार अनीषा की कहानी है। 'सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन' तो निश्चय ही अपनी समस्त अस्मिता को गंवाकर अगली पीढ़ी के लिए होम करती हुई पूरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है।'[1]

'लौटना' सुषम बेदी द्वारा लिखित दूसरा उपन्यास है जिसमें एक औरत की अस्मिता की कहानी है। कतरा दरकतरा, इतर, गाथा अमर बेल की, नवाभूम की रस कथा, मोरचे आदि महत्वपूर्ण उपन्यास है तथा 'चिड़िया और चील', लौटना, तलाश अपनी, जमी बर्फ का कवच, बीच की भटकन, तीसरी दुनिया का मसीहा, पतझड़ का रोमांस कहानियां आदि महत्वपूर्ण है।

प्रवासी साहित्यकार दिव्या माथुर की कहानी आक्रोश, पंगा तथा अन्य कहानियां, 2050 तथा अन्य कहानियां, मेड इन इंडिया, प्रतीक्षा, हिंदी स्वर्ग. इन, नीली डायरी आदि। नीली डायरी कहानी में रमन रिजवान की यौनलिप्सा को प्रदर्शित किया गया है। भारतीय युवक विदेशों में जाकर अपने मूल्यों को भुलाकर यौनलिप्सा और भोग विलास में लग जाते हैं। उनके लिए औरत मनोरंजन या खिलवाड़ का साधन मात्र बनकर रह जाती है। लेखिका इस कहानी के माध्यम से विदेशी संस्कृति को अपना रहे भारतीय युवकों की भर्त्सना कर भारतीय संस्कृति व विवाह संस्था का महत्व स्वीकार करती है। 'आक्रोश' भारतीय समाज की उन हजारों स्त्रियों की कहानी है जिन्हें प्रसव के दौरान उसके पति की संवेदनहीनता गैर जिम्मेदारी ही देखनी पड़ती है। 'आक्रोश' कहानी कफन कहानी की याद दिलाती है। इस कहानी में विवेका की प्रसव पीड़ा के दौरान अशोक की माँ अपने बेटे को अस्पताल जाने से रोक देती है। अशोक छुट्टी लेकर घर पर बैठकर क्रिकेट देखता है और जिस वक्त विवेका को अपने पति के प्रेम और सौहार्द्र की आवश्यकता होती है वह वहां नहीं होता है। 'संजीवन' कहानी में निठल्ले समीर की नजर सीमा की सेविंग पर होती है। गर्भवती होने पर भी उसके साथ अत्याचार करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार का चित्रण कहानी में किया गया

है। 'आत्महत्या से पहले' कहानी में स्त्री आत्महत्या करने के पहले आत्महत्या की सार्थकता पर विचार कर आत्महत्या का इरादा त्याग देती है। 'मेड इन इंडिया' कहानी की में पत्नी जसबीर पति सतनाम को बहुत परेशान करती है। 'अंतिम तीन दिन' मृत्यु के उत्सव की कहानी है जिसमें माया मृत्यु के पहले सजने–संवरने, मेकअप करने, संपत्ति बंटवारे, अपनी तेरहवी का इंतजाम करने, शरीर डॉक्टरों के अनुसंधान के लिए देने सभी का बंदोबस्त अपनी मृत्यु से पूर्व करती है। माया की नौकरानी ममता के बेटे नारायण का एक्सीडेंट होने पर वह अपनी मृत्यु की सारी आडंबरयुक्त तैयारी छोड़कर पटना भारत उसकी मदद के लिए आती है। 'कथा सत्यनारायण की' में सुशीला पति की मृत्यु के बाद सत्यनारायण का पाठ कराती है जिसमें किसी का मन नहीं लगता है।

सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'कमरा नंबर 103', पासवर्ड, पतंग महत्वपूर्ण है। उन्होंने अमेरिका में बसे बेटे बहु किस प्रकार मां–बाप को केवल नौकर बनने के लिए अमेरिका बुलाते हैं या उन्हें कैसे वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं इसका चित्रण किया है। 'कौन–सी जमीन अपनी' ऐसे व्यक्तियों की कहानी है जो जी तोड़ मेहनत करके रुपया भारत के पंजाब में अपने भाईयों के लिए भेजता है लेकिन जब वह भारत आता है तो उसके भाईयों ने उसके पैसों से खरीदी जमीन को छल से अपने नाम करवा ली और उसके पास कुछ नहीं बचाया है जब उसे पता चलता है कि उसके सगे भाई उसकी हत्या करने की योजना बना रहे हैं तो वह दुखी मन से रातों–रात गांव से चला जाता है।

कानपुर में जन्मी नीदरलैंड की सशक्त लेखिका पुष्पिता अवस्थी की कहानियों में भारतीय जीवन व संस्कृति की झलक दिखाई देती है। उन्होंने गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा को प्रमुखता से अभिव्यंजित किया है। प्रवासियों की पीड़ा है कि जो देश में अपना घर बार छोड़कर अपनी मातृभूमि से बिछोह का दंश झेल रहे हैं उनका पराया देश भी अपना नहीं है। माकपा छूट गया, विक्टोरिया प्लांटेशन व कंत्राकी बागान आदि उनकी महत्वपूर्ण कहानी है।

'तुम इतना क्यों रोई रूपाली', वीजा, तूफान की डायरी, आकाश आदि कहानियों में इला प्रसाद ने प्रेम की समस्या, अकेलेपन की समस्या, बुजुर्गों की समस्या, विवाह संस्था की समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

डेनमार्क की अर्चना पैन्यूली ने हाईवे ई–47, मीरा बनाम सिलविया, गॉड मदर, व्हेयर डू आई बिलॉन्ग आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। हाईवे ई–47 में लेखिका ने हिमालय पर्वत से लेकर दिल्ली तक की पृष्ठभूमि में 1955 से 2017 के दौरान भारत और विदेश प्रवास के अनुभव को 12 कहानियों के रूप में चित्रित किया है। 'मीरा बनाम सिलविया' में डेनमार्क के इस्कान मंदिर का चित्रण मिलता है। सिलविया पैसे लेकर कागजी शादी कर पैसे कमाती है। गरीब मुल्कों से रोजगार की तलाश में भटकते युवकों को कागजों में अपना पति बनाकर विदेशी भूमि पर व्यवस्थित करने में सहायता करती है और बदले में उनसे पैसा लेती है। नायक सद्भाव जो इस्कॉन मंदिर के माध्यम से डेनमार्क में धर्म प्रचार करने आया है। 'गॉड मदर' कहानी में मुंबई रेड लाइट एरिया कमाठीपुरा की वेश्याओं के साथ होने वाले यौन शोषण का चित्रण मिलता है। स्नेहा ठाकुर की कहानी 'भटकन का अंत' में कनाडा की पृष्ठभूमि पर आधारित एक भारतीय मूल की लड़की अनीता की कहानी है।

पुष्पा सक्सेना की कहानी 'विकल्प कोई और नहीं' में मां बेटे के चले जाने के बाद दर्द छुपाकर अपनी बहू के भविष्य के बारे में सोचती है और उसका कन्यादान करती है। कमला दत्त की कहानी 'मछली सलीब पर

टंगी' और 'अच्छी औरतें' प्रसिद्ध है। 'अच्छी औरतें' कहानी में लेखिका समाज के 'अच्छे' शब्द पर कटाक्ष करती है।

नई कहानी में प्रवासी महिला कथाकार के रूप में बहुचर्चित उषा प्रियंवदा आज हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है उनकी कहानियां गहरे आधुनिक बोध से संपृक्त है। उनका प्रमुख कहानी संग्रह बसंत आया, जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानियों में प्रेम के विभिन्न पक्षों को उभारने के साथ–साथ पुरुष और स्त्री के पारस्परिक संबंधों की रोमानियत को भी चित्रित किया गया है।

'वापसी' कहानी मध्यवर्गीय शहरी परिवार की कहानी है जो सेवानिवृत्त गजाधर बाबू की व्यथा कथा कहती है।

प्रवासी महिला साहित्यकारों ने प्रवासी साहित्य को समृद्ध किया है। पूर्णिमा बर्मन प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा है 'प्रवासी साहित्य हमें नई संवेदना, ने परिवेश तथा नए–नए सरोकारों से अवगत कराता है तथा एक ऐसे संसार से परिचित है जो भारत में रहने वाला लेखक नहीं दे सकता।'[2] 'प्रवासी साहित्यकार चाहे विदेश में बसे हो किंतु उनका मन, आत्मा देश की माटी में निवास करती हैं। भारतीय प्रवासी आत्मिक स्तर पर स्वयं को अपने देश से अलग नहीं कर पाया, यही कारण है कि इन साहित्यकारों की रचनाओं में परदेश जाने से पहले की स्थिति और परदेश आने के बाद विदेश की स्मृति को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।'[3]

इस प्रकार हम देखते हैं कि विदेशी जमीन पर भारतीय प्रवासी लेखिकाओं द्वारा नया आयाम लिखा जा रहा है। उनकी कहानियों में भारतीय और विदेशी संस्कार समाहित है। उन्होंने अपने साहित्य में आधुनिक जीवन की विभिन्न विसंगतियों को चित्रित किया गया है और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता अंत तक दिखाई देती है।

संदर्भ :

1. वर्तमान साहित्य पत्रिका, संपादक कुंवर पाल सिंह, नमिता सिंह, फरवरी 2006, पृष्ठ 67
2. सं. डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान, भारतीय मन और प्रवासी महिला कहानीकार, विकास प्रकाशन कानपुर, सं. 2020, पृष्ठ 6
3. वहीं, पृष्ठ 6

मोबाइल –6261068002

ईमेल –mohanshyamp86@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 71-75
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य और संस्कृति

डॉ. प्रसेनजीत सागर
असि0 प्रो0 हिन्दी, डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय ढिंढुई, प्रतापगढ़ उ0प्र0 पिन–230138

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श के साथ–साथ प्रवासी विमर्श का मुद्दा उठना भी स्वाभाविक है जो इस समय आवश्यक हो गया है। भूमंडलीकरण के प्रभाव से हिन्दी साहित्य का विस्तार हुआ है। शिक्षा साहित्य, प्रशासन, समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं में हिन्दी साहित्य का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ा है। विश्व के अनेक देशों, विश्वविद्यालयों एवं संस्थागत संगठनों एवं प्रवासी भारतीयों के सहयोग से हिन्दी विदेशों में बहुत तेजी से आगे बढ़ी है। वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है। वर्तमान में हिन्दी साहित्य की वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता और बढ़ी है। हिन्दी संचार माध्यमों, उद्यम, व्यापार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, विश्व हिंदी सम्मेलन हिन्दी में उपलब्ध विश्वकोश, ई–कोश आदि का सराहनीय योगदान है। इसी के चलते आज न केवल भारतीय भाषाओं में बल्कि विश्व की अनेक भाषाओं में हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। हिन्दी कंप्यूटरीकरण से सूचना प्रौद्योगीकरण में उपयोग से इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। आज अंग्रेजी के बाद इंटरनेट पर हिन्दी की सफल पहचान जगजाहिर है।

'प्रवास' शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वास' का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ विदेश गमन, विदेशों में बसना तथा अपने देश अथवा घर से बाहर रहना। डॉ0 सुधा ओम ढ़ींगरा के शब्दों में विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। हर देश के साहित्य की भिन्नता परिवेश, जीवन मूल्य, मानसिक और सामाजिक सरोकारों से होता है।

प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी द्वारा लिखा गया साहित्य 'प्रवास' शब्द का अर्थ है, विदेश गमन या विदेश यात्रा जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है, प्रवासी ऐसे लोगों का बड़ा समूह है जिसकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गये है।

प्रवासी साहित्य हिन्दी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की दृष्टि भी विकसित करता है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आन्तरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। अपने परिवार और समाज से दूर इन भारतीयों के लिए लेखन और एकान्त को समाप्त करने का सबसे सशक्त जरिया है।

सूरज पालीवाल ने 'हिन्दी का वैश्विक भविष्य' के लेख में प्रवासी साहित्य की स्थिति को स्पष्ट किया है। ''विदेशों में हिन्दी 19वीं शताब्दी में गिरमिटिया लोगों द्वारा पहुँची थी, जिनके वंशज आज बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारे पूर्वज एक रामचरितमानस की प्रति और दूसरा तुलसी का पौधा लेकर यहाँ आये थे लेकिन अपनी

मातृभाषा और अपनी संस्कृति को उन्होंने परदेश में भी जीवित रखा। उनका गर्व करना सही है फिजी, गुयाना, मारीशस तथा सूरीनाम में आज जो भारतीयता दिखाई देती है वह उन्हीं गिरमिटिया लोगों और उनके वंशजों के कारण है। हिन्दी बोलने तथा हिन्दी शिक्षण की जो भी सुविधाएँ वहाँ हैं, वे सब उन्हीं लोगों के कारण है।''[1]

विदेशों में गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों का लेखन है जो अपने समाज से कटकर मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि स्थानों पर वसा दिये गये। उन गिरमिटिया मजदूरों के दूसरी पीढ़ी जो वहीं पैदा हुई लेकिन अपने पूर्वजों की पीड़ा नहीं भुला पायी और इस दर्द को कहानी, उपन्यास, कविता आदि माध्यमों से व्यक्त किया।

आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर प्रयुक्त हो रही है। वैश्विक स्तर पर प्रवासी साहित्य पर परिसंवाद आयोजित किये जा रहे हैं। अनेक विद्वान हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन अनुसंधान में पूरी तन्मयता से लगे हुए हैं और हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। हिन्दी अपने विविध रूपों में आज विश्व के अनेक देशों में बोली जाती है। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों के प्रयास से हिन्दी की स्थिति आज सुदृढ़ हुई है और उसे नया आयाम मिला है। महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के सहयोग से कथा यू0के0 लन्दन एवं एस0आई0ई0एस0 कालेज मुम्बई के हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में 'प्रवासी हिन्दी साहित्यः उपलब्धियाँ और अपेक्षाएं' विषय पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया जो प्रवासी साहित्य पर महत्वपूर्ण परिसंवाद है। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ0 दामोदर खडसे ने प्रवासी साहित्य के विषय में अपना विचार व्यक्त किया। ''प्रवासी साहित्यकरों ने विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।''[2] इसी अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में प्रवासी साहित्यकार असगर वजाहत ने मुख्य अतिथि के रूप अपने बीज वक्तव्य में कहा कि ''प्रवासी लेखन ने विगत दो दशकों में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है, उनका आग्रह था कि प्रवासी साहित्य के दायरे में पाकिस्तान और बांग्लादेश को भी शामिल किया जाना चाहिए।''[3]

अपनी भूमि को छोड़कर विदेश गया व्यक्ति पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवासी ही रहता है। उसके मन में प्रवास की पीड़ा होती है। उसके मन में एक दुविधा निरन्तर बनी रहती है कि यह नई दुनिया उसके लिए अधिक अच्छी है कि नहीं वह अपनी भाषा, अपनी संस्कृति अपने जीवन मूल्यों को बराबर पकड़े रहना चाहता है क्योंकि दूसरे देश में उसकी अपनी अलग पहचान है। नये देश के मूल निवासी कभी भी उसे पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं कर पाते। रूप रंग, भेद ही नहीं भाषा, खान–पान, आचार–विचार, रीति–रिवाज, जीवन मूल्य का अन्तर विदेश में उसे अलग बनाये रखता है। यही प्रवासी का दंश हैं। प्रवासी भारतीय सारी दुनिया में फैले है। लगभग तीन करोड़ प्रवासी और भारतवंशी आज विश्व के लगभग 40 देशों में रहते हैं। 21वीं सदी के प्रारम्भ में आधुनिक साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी हिन्दी साहित्य के नाम से एक युग का प्रारम्भ हुआ। हिन्दी को विश्व पटल पर लाने का श्रेय प्रवासी साहित्य को भी है। हिन्दी के विकास में भारत का मध्यवर्ग और बाजार की भूमिका बड़ी है।

मीडिया भाषा को नया तेवर दे रहा है और हिन्दी को बाजार की ताकत आगे लिये जा रही हैं यही कारण है कि आज हिन्दी पढ़ने के लिए अधिकतर चीनी छात्र भारत आ रहे है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिन्दी ने बाजार के सहारे विस्तार पाया है आज विश्व स्तर पर पांच सौ हिन्दी चेयर कार्यरत है। हिन्दी के विकास में बाजार की भूमिका बड़ी है। सूरज पालीवाल ने भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी के प्रति उनकी धारणा के विषय में बड़ा स्पष्ट लिखा है। ''मध्यवर्गीय युवक जो स्वाधीन भारत में पैदा हुए थे, उनके सामने केवल आगे बढ़ना,

कुछ नया करना और कुछ ऐसा करना जिससे बड़े आदमी माने जाएँ यही लक्ष्य था वे भाषा सीखने या उसमें संस्कारित होने नहीं आये थे, ऐसी कोई चुनौती भी नहीं थी। लेकिन भूमण्डलीकरण के बाद जो पीढ़ी आई है, वह और आगे है। उसके पास न तो अच्छी अँग्रेंजी है और न अच्छी हिन्दी। वह जो भाषा बोल और सुन रही है वह केवल बाजार की भाषा है। बाजार में जो चलेगा, उसके लिए भाषा भी वैसी ही चलेगी। आज बाजार तय कर रहा है कि किस भाषा में बोलना है। अमेरिका, चीन, रूस, हंगरी, जर्मनी या जापान आदि देशों में हिन्दी इसलिए नहीं पढ़ाई जा रही है कि हिन्दी के प्रति उनका प्रेम उमड़ रहा है बल्कि इसलिए पढ़ाई जा रही है कि उन्हें भारत में बाजार के लिए हिन्दी जानने वाले युवक–युवतियों की आवश्यकता है। ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अपनी भाषा से हिन्दी में अनुवाद कर उनके देश के माल की प्रशंसा कर सकें।''[4]

प्रवासी साहित्य की तीन श्रेणिया है, 1. गिरमिटिया मजदूर, 2. 80 के दशक में खाड़ी देशों में गये अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, कुशल व अर्द्धकुशल मजदूर आते हैं। 3. 80–90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया।

हिन्दी वैश्विक भाषा बनने के मार्ग पर अग्रसर है इसमें कोई सन्देह नहीं है। विश्व हिन्दी सम्मेलन में अनेक भारतीय एवं प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का उद्घोष किया है। आज हिन्दी को वैश्विक पहचान मिली है। विश्व भर में भारत एक ऐसा देश है जहाँ से बहुत बड़ी संख्या में हर वर्ग के लोग दूसरे देशों में प्रवास करते हैं। आज दुनिया के कई देशों में भारतवासी बसे हैं। भारतवासियों ने जिन देशों में प्रवास किया वहाँ अपनी भारतीय संस्कृति, रीति–रिवाजों व धार्मिक प्रथाओं को सहेजने–समेटने की भरसक कोशिश की है विश्व के सभी देशो में हिन्दी समितियाँ, हिन्दी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व धार्मिक संस्थाएं है, जो भारतीय तीज–त्योहारों, राष्ट्रीय दिवसों व अन्य अवसरों पर सांस्कृतिक–धार्मिक कार्यक्रम आयोजित कर विदेशों में बसे भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखती है भारतीय कार्यक्रमों में अभिव्यक्त का माध्यम हिन्दी ही है। भारतीय प्रवासी लेखक भावनात्मक रूप से भारत से जुड़े हुए हैं। उनके साहित्य में प्रवासी भूमि के साथ–साथ अपने देश के प्रति प्रेम की भावना देखने को मिलती है। विश्व के कई देशों में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुए है। भारत के हिन्दी लेखकों और प्रवासी हिन्दी लेखकों का सम्मान बढ़ गया है।

अनेक भारतीय ऐसे हैं जो भारत से इतर देशों में हिन्दी साहित्य के विकास में लगे हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तो हैं ही अनेक जन सामान्य भी है जो नियमित लेखन व अध्यापन से हिन्दी को लोकप्रिय बना रहे है और हिन्दी का वैश्विक स्तर पर विकास कर रहें है। 10 जनवरी 2023 को प्रवासी दिवस मनाये जाने से प्रवासी साहित्य को प्रोत्साहन मिला है। ब्रिटेन में हिन्दी के पहले कहानीकार धनीराम 'प्रेम' थे। उनकी कहानियां और एकांकी–नाटक उस दौरान 'हंस', 'माधुरी', 'मर्यादा', 'चांद', 'सरस्वती', 'जागरण', आदि में छपती रही। 'प्राणेश्वरी', 'वीरांगना पन्ना' , 'वल्लरी', 'देवी', 'जान', 'चलता पुर्जा', 'बहन', 'लाल जूता', 'हृदय की आंखे' आदि उनकी चर्चित कहानियां है। 1931 से 1936 तक उनका पत्र व्यवहार मुंशी प्रेमचन्द्र के साथ भी रहा। दिसंबर 1931 के एक पत्र में मुंशी प्रेमचन्द्र उन्हें लिखते हैः 'अरे मैं नहीं जानता था कि अपना धनीराम ही डॉ0 धनीराम 'प्रेम' लन्दन है। तुम्हारी कहानियां पढ़ कर कुछ खिंचाव होता था, लेकिन यह नहीं समझता था कि इसका कारण यह है।''[5] कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ रेमंड आर्चिन ने तुलसी की कवितावली और गीतावली का हिन्दी में अनुवाद किया। 1958 में ब्रिटेन आये कवि सत्येन्द्र श्रीवास्तव और

1965 में आए 'सुराही' के रचनाकार प्राण शर्मा की कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। 1951 में ब्रिटेन में अध्ययन के लिए आए हरिवंशराय बच्चन की प्रेरणा से 'हिन्दी परिषद लंदन' की स्थापना की गई, हिन्दी प्रचार संस्था का गठन भी हुआ। इसके साथ कुछ पत्रिकाएं भी निकली। अन्य लेखकों में वेदमित्र मोहला, विजया मायर, सुरेन्द्र नाथ लाल, गौतम सचदेव, बी0एन0 पाण्डेय, देव मुरारका, सतीश भटनागर, नारायण स्वरूप शर्मा, ओंकार सिंह 'निर्भय', धर्मेन्द्र गौतम, महेन्द्र वर्मा, तेजेन्द्र शर्मा आदि ने मौलिक साहित्यिक सृजन किया है। ब्रिटेन में स्त्रिंया काफी बड़ी संख्या में साहित्य रच रही हैं।

दिव्या माधुर, उषा राजे सक्सेना, शैल अग्रवाल, उषा वर्मा, अचला शर्मा, कादम्बरी मेहरा, ज़किया जुबैरी आदि साहित्यकार कहानी एवं कविता दोनों विधाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहीं है। 1997–98 में लेखिका कहानीकारों का एक नेटवर्क बना और सन् 1999 में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर 17 लेखकों की कहानियों का संकलन 'मिट्टी की सुगंध' के माध्यम से मुख्यधारा में जोड़ने का काम किया। ब्रिटिश हिन्दी कहानियों के विषय में रामदरश मिश्र लिखते है–'किसी स्थान विशेष के लेखकों की रचनाएं होने मात्र से उन्हें वैशिष्ट्य इसलिए प्राप्त नहीं होता। उन्हें वैशिष्ट्य इसलिए प्राप्त होता है कि वे स्थान विशेष (क्षेत्र, प्रदेश, देश) के जीवन के अपने रंग को उभारती हैं और इस तरह वे उस भाषा में लिखे जा रहे साहित्य के अनुभव को नए आयाम प्रदान करती हैं। विदेश में रह रहे भारतीय मूल के लोगों में देश की यादें बची रहती हैं, रह–रह कर उभरती हैं और परेशान करती हैं। अपना देश बुलाता है किन्तु देश की जिन असुविधाओं से घबराकर वे विदेश गए वे सामने आ जाती है और विदेश की सुविधाएं भी उन्हें कहां छोड़ती जिनसे खिंचकर वे विदेश गए। इसी द्वंद्व की मानसिकता में उनकी रचनाएं फूटती रहती हैं।''[6]

ब्रिटेन की पहली हिन्दी साहित्यक पत्रिका 'पुरवाई' का प्रकाशन यू0के0 हिन्दी समिति द्वारा पांडुलिपि चयन, कथा यू0के0 द्वारा कहानी गोष्ठियों का आयोजन, अंतर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान, पद्मानंद साहित्य सम्मान आदि ने ब्रिटेन में लिखे जा रहे साहित्य को देश–विदेश में पहचान दिलाने में सहयोग दिया।

अब तक ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों की लगभग 708 पुस्तकों की कैटलागिंग हो चुकी है। जिनमें 24 उपन्यास, 70 कहानी संग्रह, 212 काव्य संग्रह, 12 एकांकी–नाटक एवं अन्य विधाओं में लिखी पुस्तकें शामिल है। ब्रिटेन के लेखन का इतिहास आठ–नौ दशकों का है। ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य समृद्ध हो रहा है तथा मुख्यधारा की तरफ अग्रसर है। ब्रिटेन का हिन्दी साहित्य तेजी से उभर रहा है।

स्वर्णलता ठन्ना अमेरिका का प्रवासी हिन्दी साहित्य विविधताओं से भरा है। यहाँ प्रवासी भारतीयों ने अपनी अलग दुनिया बना ली है। घर, परिवार, उद्योग आदि के साथ कला, संस्कृति एवं साहित्य के आयाम की अपनी सीमाएं है। यहाँ का साहित्य अपनी जड़ों को अपनी अस्मिता तथा अपनी पहचान को व्यक्त करता है। अमेरिका में बसने वाले प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी भाषा, धर्म, संस्कृति के साथ साहित्य का प्रारम्भ किया है। अमेरिका के प्रमुख साहित्यकारों में कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, रामेश्वर अशांत, गुलाब खंडेलवाल, डॉ0 भूदेव शर्मा, वेद प्रकाश बटुक, राम चौधरी, हरिशंकर आदेश, विजय मेहता, सुषम वेदी, अंजना सन्धीर, सुधा ओम ढींगरा, रेणु गुप्ता आदि का उल्लेखनीय योगदान है। अमेरिका के प्रमुख रचनाकारों के अलावा कुछ अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार भी हुए जिन्होंने साहित्य को समृद्ध किया है। भारत के हिन्दी प्रदेशों से जाने वाले हजारों–लाखों इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, वित्तप्रबन्धक आदि अपनी मातृभाषा, संस्कृति एवं रीतिरिवाजों से जुड़े रहे, प्रवासी होते हुए भी भारतीय

बने रहे। कमल किशोर गोयनका ने अमेरिका में भारतीय के आगमन के विषय में इस प्रकार लिखा है। ''अमेरिका में भारतीय के आगमन का पहला लिखित प्रकरण सन 1670 का मिलता है, फिर 1788 में व्यापार का और 1898 में कुछ भारतीय कृषक आप्रवासी के रूप में पहुँचे। विवेकानन्द की सन् 1893 की अमेरिका यात्रा तथा हिन्दू धर्म, संस्कृति पर उनके आख्यानों में अमेरिका–भारत के सम्बन्धों का नया युग शुरू हुआ। सन् 1997 में अमेरिका में भारतीयों की संख्या करीब 13 लाख थी।[7]

अमेरिका में दलित साहित्य भी काफी चर्चित और लोकप्रिय है। कुछ कालेजों में मराठी से अनुवाद करके पढ़ाया जा रहा है। अमेरिका में दलित साहित्य अपनी कसौटी पर खरा उतरेगा। ऐसी सम्भावना हैं।

निष्कर्षः प्रवासी साहित्य भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय है, कविता, कहानी, उपन्यास के अलावा अन्य साहित्यिक विधाओं में भी रचनाएं लिखी जा रही है। भारत के बाहर आज सारी दुनिया में भारतवंशी फैले हुए हैं। इनके हिन्दी रचनाकर्म को आज प्रवासी हिन्दी साहित्य के रूप में जाना जाता है। प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य मूलरूप से स्त्री केन्द्रित है जो स्त्री की सार्वभौमिकता को रेखांकित करता है। अमेरिका, ब्रिटेन और कैनेडा आदि का हिन्दी कथा साहित्य सृजन भारत की भाँति महिला लेखन महत्वपूर्ण है। हिन्दी का प्रवासी साहित्य का संसार व्यापक है। प्रवासी साहित्य ऐसे मुकाम पर पहुँच चुका है जहाँ वह हिन्दी साहित्य के मानचित्र में उचित और सम्मानपूर्ण स्थान का दावेदार बन बैठा है। हिन्दी के आलोचकों ने प्रवासी साहित्य को गम्भीरता से लिया है। प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषा और समाज से कटकर जीविका के लिए विदेशों में संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा और आन्तरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन गया है। संवेदनशील प्रवासी भारतीय विदेश में प्रवास के दौरान आने वाली समस्याओं, आस–पास की घटित घटनाओं को अपनी कलम के माध्यम से उजागर किया है। अपने विचारों अपनी सोच, दृष्टिकोण, चिंतन मान्यताओं द्वारा लेखन प्रारम्भ किया है। प्रवासी विमर्श के अन्तर्गत रचनात्मक साहित्य लिखा गया। प्रवासी साहित्य से हिन्दी साहित्य समृद्ध हुआ है।

सन्दर्भ :–

1. सूरज पालीवाल : हिन्दी का वैश्विक भविष्य, नया ज्ञानोदय भारतीय ज्ञानपीठ की मासिक साहित्यिक पत्रिका, सम्पादक लीलाधर मंडलोई, अंक 151, सितम्बर 2015 पृ0, 37
2. राजेन्द्र यादव, हंस मार्च 2012 अंक 26 अक्षर प्रकाशन प्रा0लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पृ0 88
3. वही, पृ0 88
4. सूरज पालीवाल : हिन्दी का वैश्विक भविष्य, नया ज्ञानोदय भारतीय ज्ञानपीठ की मासिक साहित्यिक पत्रिका, सम्पादक लीलाधर मंडलोई, अंक 151, सितम्बर 2015 पृ0, 38
5. उषा राजे सक्सेना, ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य, सम्पादक राजेन्द्र यादव हंस मार्च 2012 अंक 26 अक्षर प्रकाशन प्रा0लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पृ0 39
6. वही, पृ0 41, 42
7. डॉ0 कमल किशोर गोयनका, हिन्दी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण 2011, अमित प्रकाशन गाजियाबाद, पृ0 31

मो0–9450021157, ईमेल पता–prasenjeetsagarhindi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 76-80
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पुष्पा सक्सेना की कहानियों में स्त्री प्रतिरोध के स्वर

नीलम सागर
शोधार्थी, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़।

पुष्पा सक्सेना प्रवासी हिन्दी कहानिकारों में एक अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। पुष्पा सक्सेना की कहानियों में भारतीयों और अमेरिकी जीवन का आधार बना कर अपना साहित्य सृजन किया है। अमेरिका का परिवेश उनकी कहानियों और उपन्यासों में आत्मीयता के साथ आते हैं। पुष्पा जी के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है उसके कथ्य की प्रमाणिकता। उनके कथ्य में सहजता के साथ सच्चाई भी है। विदेशों में उच्च–शिक्षा, नौकरी के लिए संघर्ष करते भारतीयों की मनोदशा का चित्रण उनके साहित्य को पठनीय बनाता है। भारतीय और अमेरिकी जीवन शैली और मानसिकता की टकराहट उनकी कहानियों का मूलभाव है। साथ ही दो संस्कृतियों के मूल्यों की टकराहट, भारतीयों का अपनी जड़ो में लौटने की कोशिश आदि भाव उनके साहित्य से भारतीय पाठकों को भी जोड़ने में अहम् भूमिका निभाते हैं। पुष्पा सक्सेना का साहित्य मूलतः भारतीय जीवन की विविध परिस्थितियों से उपजा हुआ साहित्य है। युवा पीढ़ी में विदेश के प्रति आकर्षण, अच्छी नौकरी, अच्छा वेतन पाने के लिए अपने परिवार से दूर रहकर जीवन जीने का अभ्यास उन्हें बहुत दिन तक खुश नहीं रख पाता। कुछ दिन, वर्ष तक तो यह सब ठीक लगता है लेकिन धीरे–धीरे अपनों की कमी उन्हें खलने लगती है। पुष्पा जी इस मानसिकता को बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से अपने साहित्य में अभिव्यक्त करती हैं। स्त्री होने के कारण स्त्री जीवन के तमाम संघर्ष, चुनौतियाँ और उन पर विजय प्राप्त करती महिलाओं की मुस्कान भी उनके साहित्य में देखने को मिलता है। इनकी कहानियों में स्त्री पात्र स्वतंत्र व आत्मनिर्भर दिखाई देती है। जहां वह एक और अपने कर्तव्यों को पूरा करती नजर आती है वहीं दूसरी और अपने अधिकारों के प्रति सजग भी दिखाई देती है।

पुष्पा सक्सेना ने अपनी कहानियों में स्त्री–हृदय की अछूती, गहराइयो में छिपी संवेदनाओं को खुल कर पाठकों समक्ष प्रस्तुत करती है। 'फांस' कहानी में अतुल अपनी पत्नी नीलम को भारत छोड़कर इंग्लैंड आ जाता है। तब वह अकेले घर की सभी जिम्मेदरियों को भली–भांति निभाती है लेकिन जब नीलम इंग्लैंड आती है तो उसके सामने अतुल का सारा रहस्य खुल जाता है। जब उसे अतुल के साथ किसी अन्य युवती (रोजलीना) से विवाह–संबंध के बारे में पता चलता है तो उसके पैर तले की जमीन खिसक जाती है और वह इस धोखे का बदला लेने के लिए अतुल के पुरुषत्व पर चोट करने की निमित्त से दूसरे पुरुष का वरण करने की झूठी कहानी कहती है। वह काजल से कहती है, 'पुरुष के अहं को जानती है ना काजल पत्नी उसे परमेश्वर मान पूजती रहे यह उसका प्राप्य हैपर अगर पत्नी उसे छोड़ दे अन्य का वरण कर ले तोनहीं सह पाएगा उसका अहं वही मैंने चाहा था। अतुल अपनी इस पराजय को कभी नहीं भुला सकेंगे हमेशा फांस गड़ती रहेगी उनके मन में।'[1]

वह अतुल के सामने अपने प्रतिरोध को इस तरह जाहिर करती है कि वह अतुल को टेम्स नदी के पास ले जाती है और बिछुए, मंगलसूत्र, चूड़ियों आदि सभी सुहागिन प्रतीकों को टाइम्स नदी में बहा देती है और स्वयं को इस रिश्ते से स्वतंत्र कर लेती है, 'अतुल को जबरन टेम्स तक ले गई थी। उसके सामने बिछूवे, सिंदूर चूड़ियां एक साथ टेम्स में प्रवाहित कर कहा था। इन झूठे बंधनों को यही बहाकर हम अपना जीवन जीने को स्वतंत्र है, अतुल मेरी ओर से तुम पर कोई बंधन नहीं, तुम बंधन–मुक्त हो।'[2]

लेखिका ने अपने कहानियों के माध्यम से वैवाहिक जीवन में आई समस्या, असफल प्रेम, वेदना, पीड़ा काचित्रण ही नहीं किया है बल्कि साथ ही उनकी कहानियों में स्त्रियाँ विरोध करती हुई दिखती है। एक अन्य कहानी 'ताले' की नायिका इंदु को अपने पति सुरेश के साथ लिलियन के विवाह के बारे में पता चलता है तो वह भारत वापिस लौट कर नहीं जाती है और न ही सुरेश घर के में किसी से कुछ नहीं बताती है, किसी को भनक तक नहीं लगने देती है लेकिन सुरेश से अलग होकर अपना जीवन–यापन अमेरिका में स्वयं करती है। सुरेश की मृत्यु के बाद वह भारत वापस आ जाती हैद्य संजीव इंदु की बीमारी के बारे मे जानकर भारत आता है तब उसकी देवरानी नीरजा को सच का पता चलता है "ठीक कहती हैपति के साथ घर बसाने के खंडित सपनों के साथ वह अमेरिका गई जरूर पर पति से कोई सहायता स्वीकार नहीं की। लड़कियों को गाना सिखाती, डिपार्टमेंटल स्टोर में काम करती पर सुरेश की दया अस्वीकार कर दी।'[3]

इंदू अपने विरोध को एक अलग तरीके व्यक्त करती है वह पति के मरने के बाद उसकी संपत्ति पर अधिकार लेने से साफ मना कर देती है। इंदु ने दृढ़ स्वर में कह दिया "नहीं जीते जी जिसने कोई अधिकार नहीं दिया, उसे मृत्यु के बाद धोखा नहीं दे सकतीद्य झूठा दावा करने की इच्छा नहीं, उनकी किसी भी चीज पर मेरा अधिकार नहीं। उनका सब कुछ लिलीयन और उसकी बेटी का है।'[4]

संजीव इंदु को पसंद करता है और उसके साथ आगे का जीवन जीना चाहता है लेकिन इस बात से उसके दोनों देवर केशव और राकेश बहुत नाराज हो जाते हैं और राकेश कह देता हैं, 'उसके के बारे में क्या सोचना। उसका प्रेमी आ गया हैले जाए अपने घर। अब हमारा उनसे कोई लेना देना नहीं है अम्मा "राकेश की बात ने नीरजा को तिलमिला दिया।'' ठीक है कहते होराकेश भैया। पुरुष के हजार खून माफसारे बंधन औरतों के लिए ही है। एक बार भाभी के बारे में भी सोच देखते। किस तरह इतना बड़ा दुःख उन्होंने अकेले सहा, 'वाह! पति के रहते पराए पुरुष के साथ प्रेम नाटक रचाना क्या भली औरत का काम है "मैं कह देता हूं अम्मा अब वह इस घर में नहीं आएगी।' केशव दहाड़े तभी अम्मा इन बातों का विरोध करती हुई 'खबरदार जो आगे एक शब्द भी कहा। अरे काहे का पति मेरी देवी जैसी बहू पर सोत ले आया उसका जीवन बर्बाद कर दिया। एक बात और सुन लो यह घर इंदु का है जिसे यहां रहना है जहां इंतजाम कर ले।' "नहीं मुझे कुछ समझाने की जरूरत नहीं है। मैं सब समझती हूं। इंदु हाड–मांस की बनी औरत है अगर संजीव के साथ उसके संबंध बने तो इसके लिए जिम्मेवार कौन है। मैं खुद दोनों की शादी कराके इंदु को उस घर में विदा करूंगी। मैं पूछती हूं औरत की पवित्रता को परिभाषित किसने किया है, केशव? औरतों के लिए सारी सीमाएं सारे बंधन लगाने वाले पुरुष ही तो है। भैया जी आदर्श बने रहे और ....भाभी।'[5] लेखिका अम्मा के मुख से पूरे पुरुष समाज को करारा जवाब देती है की पुरुष गलत करके भी सर्वश्रेष्ठ है।

'सच' कहानी में संजीव के जाने के बाद उसकी पत्नी (शारदा) और और पुत्री विन्नी को घर में बहुत

कुछ सहना पड़ता है। शारदा को सास और उसके देवर–देवरानी बहुत ताने सुनने पड़ते है। "शारदा को घर में जगह जरूर मिल गई, पर उसकी स्थिति घर की नौकरानी से भी गई–गुजरी थी। देवर संजीव की पत्नी और बच्चे तक उस पर हुकुम चलाते। बचपन से विन्नी ने मां को सबका अपमान–तिरस्कार झेलते देखा बचपन में वह समझ नहीं पाती, दादी और बच्चों को दूध–मिठाई देती पर उसे क्यों रूखी रोटी थमा दी जाती है। एक बार गुस्से से उसने दादी को दांत काट लिया तब उस नन्ही सी बच्ची के जिस बेरहमी से पिटाई की गई कि मोहल्ले वाले भी हाय–हाय कर उठे।'[6] लेकिन शारदा ने जीवन में इतने दंश सहन करते हुए भी कभी हर नहीं मानी। वह घर के काम, विन्नी की परवरिश के साथ–साथ अपनी पढ़ाई पूरी करती है। वह सुमति दीदी के कहने पर पत्राचार से बी.एड की डिग्री हासिल कर लेती है, उसे एक नौकरी मिल जाती है लेकिन संजीव को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आती है वह कहता है, 'हमारे खानदान की औरतें बाहर जाकर पैसा कमाएयह तो हमारे लिए मर–मिटने वाली बात हुई। भाभी ने घर से बाहर पाव निकाला तो इस घर में उनके लिए जगह नहीं है।' तब विन्नी अपने चाचा के प्रति प्रतिरोधी भाव प्रकट होते हैं वह कहती है, 'मम्मी के लिए इस घर में जगह थी ही कब चाचाबारहवी में पढ़ रही विन्नी के जवाब पर संजीव का खून खौल उठा था। विन्नी को चांटा मारने के लिए उठा हाथ स्वयं विन्नी ने पकड़ कर रोक दिया था। सारा घर स्तब्ध हो वह दृश्य देखता रह गया था।'[7]

इसी भाव के कारण विन्नी कुछ कर दिखाना चाहती थी। वह आईआईटी पूरा कर इंजीनियरिंग के लिए अमेरिका जाना चाहती है और तीन वर्ष के पश्चात वह अपनी मां को भी वही बुला लेती है। वहां विन्नी की फ्रेडरिक के साथ दोस्ती को देखते हुए पूछ बैठती है तुम दोनों के बीच में क्या संबंध है। तब मां को बताती है कि जब मैं दस साल की थी तो विनोद जो उसका चचेरा भाई था उसके साथ उसने जबरदस्ती की और मुझे दादी ने धमकाया कि वह शारदा को कुछ नहीं बताएगी 'साफ–साफ सुनना चाहोगी तो जान लो दस साल की उम्र में विनोद ने मुझसे जबरदस्ती की थी। मेरे चिल्लाने पर दादी ने मुझे ही धमकाया था। तुम्हें कुछ न बताने की कसम दी थी। डराया था अगर तुम्हें कुछ बताया तो तुम मार दी जाओगी। मैं तुम्हें खो नहीं सकती थी मम्मी!' आक्रोश–अपमान से विन्नी का गला रुंध आया था।[8] शारदा को यह सुनकर बहुत दुख होता है कि वह अपनी बेटी की रक्षा नहीं कर पाई।

विन्नी अपनी माँ से कहती है, 'हां मम्मी! मुझे पुरुष जाति से नफरत हो गई। हम कहते हैं, हमारे देश की संस्कृति पूज्य है पर लड़कियों के लिए वहां क्या समानता मिल सकी है? बलात्कार के बाद कोई लड़की मुंह खोलने का साहस कर सकती है दूसरों की तो बात ही छोड़ो खुद उसके अपने ही उसे दोषी की नजर से देख, उसका जीना हराम कर देते हैं।' वही जब विन्नी अपनी माँ शारदा से दूसरी शादी करने को कहती है तो शारदा कहती है पति परमेश्वर होता है वही विन्नी कहती है, 'फिर शादी की ही जरूरत क्या है? किसी को भी भगवान मान लो और जीवन भर उसका स्मरण–पूजन करते रहो। 'सब स्त्रियां मीरा नहीं बन सकती......' "हां अब हुई ना यह बात। हर स्त्री के मन में स्वाभाविक आकांक्षाएं होती है, पर पति की मृत्यु के बाद उसे पहले जबरन सती बना दिया जाता था, आज भी पति परमेश्वर के नाम पर उसे तपस्विनी बना देते हैं हिपोक्रेसी।'[9]

इनकी कहानी वर्जिन मीरा में वर्जीनिया को भारतीय युवा रवि से प्रेम हो जाता है। जो अमेरिका में पी. एच.डी. के लिए आया है। रवि के व्यक्तित्व से वर्जिनिया बहुत अधिक प्रभावित होती है और वह रवि से भारतीय धर्म और दर्शन को नजदीक से जानने की जिद करती है। रवि वर्जिनियां को भारतीय धर्म की जानकारी देता

है, उसे मंदिर ले जाता है, उसे राधा–कृष्ण के बारे में बताता है और रामायण की चौपाइयों को सुनाता है, उसका अर्थ समझाता है वर्जीनिया इन सब को देख कर बहुत ज्यादा प्रभावित होती है। वह रवि को पसंद करने लगती है। उसके लिए वह शराब छोड़ देती है और विशुद्ध शाकाहारी भोजन करती है और भारतीय परिधान को अपना लेती है। वर्जीनिया रवि को पवित्र प्रेम करने लगती है लेकिन एक दिन रवि ने वर्जीनिया से शारीरिक संबंध बनाने की कोशिश करता है लेकिन वर्जिनियां इसका विरोध करती है। '...छि : ऐसा व्यवहार तुम्हें शोभा नहीं देता रवि! तुमने ही तो बताया है कि शरीर का मिलन विवाह के बाद ही संभव है।'[10] इतने में ही रवि के पिता की नाजुक हालत की खबर उसको प्राप्त होती है और वह भारत चला जाता है।

वर्जीनिया से यह वादा कर की वह जल्दी ही घर में बात कर लेगा। लेकिन ऐसा नहीं होता है वह पुरोहित की लड़की से विवाह कर लेता है। लेकिन जब यह बात वर्जीनिया को पता चलती है तो शांत रूप से ही अपना विरोध कुछ इस तरह व्यक्त करती है 'उसने शायद पूरा एक्सलरेटर दबा दिया था। इसी बार में आकर पूरी बोतल गले के नीचे उतार ली थी। रवि के साथ उसने मदिरा पूरी तरह से त्याग दी थी किसी ने रोकना चाहा तो ऐसे दृष्टि में वर्जना की कि वह सहम गया। तब से रोज शाम यहाँ आती है। ऐसे ही अकेली बैठ वापस चली जाती है। कई युवाओं ने मित्रता का हाथ बढ़ाया, पर वह तो बस चलती–फिरती अहिल्या बन कर रह गई। काश! कोई राम उसका उद्धार कर पाता!' प्रतीक की आवाज भारी हो गई थी...........'पुअर वर्जीनिया.... नहीं वर्जिन मीरा! अनजाने में ही बुदबूदा उठी थी।'[11]

'दूरियों का साथ' कहानी एक ऐसी स्त्री (सुमिता) की कहानी है जो विवाह के पश्चात कई सपनों को लेकर के अमेरिका की जमीन पर पाँव रखती है लेकिन उसे पता चलता है की अर्पित की पहले से ही एक बीवी और बच्चा है। उसने अपनी पत्नी और पुत्र का सच छुपा कर उससे विवाह किया था। सुमिता अपनी दीदी प्रतिभा के पूछने पर उसको सारी सच्चाई बता देती है। जब सुमिता को अर्पित की पहली शादी और उसके बच्चे के विषय में पता चलता है, वह पूरी तरह से टूट जाने के बाद भी भारत वापस नहीं जाती बल्कि अर्पित को छोड़ एड्रिना में रहने का निर्णय लेती है। यही उसका विरोध का स्वरूप है की सुमिता न तो अर्पित के पास वापस जाती है और न ही भारत। वह यहीं रह करके अपने लिए नई जिंदगी का चयन करती है। वह अपनी बहन से कहती है, 'इसी भारतीय मनोवृति के कारण तो मैं वापस नहीं गई, दीदी! सबकी सहानुभूति पाकर कितनी असहाय रह जाती मैं! यहां मैं मेधावी छात्रा..... सुमिता वर्मा भर हूं मेरे अतीत को न कोई जानता है न जाना चाहता है।"[12]

सुमिता इतना होने के बावजूद भी अर्पित के पुत्र को उसका अधिकार दिलाने का प्रयास करती है और वह कहती है 'अर्पित के मन में वह लड़की आज भी है कहीं ऐसा सोच कर ही तूने उसे.... प्रतिभा का वाक्य काट सुमिता ने तीखे स्वर में कहा था।' अर्पित के मन में उसका क्या स्थान है। नहीं जानती पर उसके बेटे के प्रति मैंने अन्याय नहीं होने दिया दीदी, उसके अधिकार दिलाए हैं मैंने।'[13]

कुल मिलकर कह सकते है कि पुष्पा सक्सेना की कहानियों में लगभग सभी स्त्री पात्र अनचाहे बंधनों को तोड़ने के संघर्ष करती दिखाई देती है ऐसे संघर्ष का लक्ष्य पुरुष वर्चस्व से मुक्ति पाना है। इनकी कहानियों में स्त्री स्वतंत्र, सशक्त व जागरूक है जो किसी भी प्रकार के अन्याय के खिलाफ आवाज उठती दृष्टिगत होती है।

संदर्भ सूची :-

1. पुष्पा सक्सेना की संकलित कहानियाँ, पुष्पा सक्सेना, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 163
2. वहीं, पृष्ठ संख्या 163
3. वहीं, पृष्ठ संख्या 56
4. वहीं, पृष्ठ संख्या 57
5. वहीं, पृष्ठ संख्या 58—59
6. वहीं, पृष्ठ संख्या 33
7. वहीं, पृष्ठ संख्या 34
8. वहीं, पृष्ठ संख्या 39
9. वहीं, पृष्ठ संख्या 40
10. वहीं, पृष्ठ संख्या 19
11. वहीं, पृष्ठ संख्या 21
12. वहीं, पृष्ठ संख्या 10
13. वहीं, पृष्ठ संख्या 11

घर का पता : मकान नंबर —1 अंबेडकर कैम्प हैदरपुर दिल्ली 110088

फोन नंबर 9311737832, 9311456710

ईमेल :— neelsagar028gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 81-84

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना

डॉ. सुनील पाटिल
प्रवक्ता, हिंदी विभाग, द्वारकादास गोर्वधनदास वैष्णव महाविद्यालय, आरूबाक्कोम, चैन्नाई—600 106

हिंदी प्रवासी साहित्य का इतिहास एवं वर्तमान काफी संपन्न है। भारतीय संस्कृति, समाज, भाईचारा, परंपरा के चलते ही यह सफलता प्राप्त की है। हिंदी प्रवासी साहित्य अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत है। हम जब इन साहित्यकारों की रचनाओं को पढते हैं तब हमें यह बात स्पष्ट दिखलाई पड़ती है कि मानवीय संवेदनाओं को देश काल की मर्यादाएं नहीं खो सकती। प्रवासी साहित्यकार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनके लेखन में अपनी देश की मिट्टी से गहरा और आत्मीय जुड़ाव देखने को मिलता है। वे भले ही देश दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में रहते बसते हों, पर इनकी लेखनी में अपनी देश की गंध, सम्मान और उसके साथ आत्मीय जुड़ाव की तीव्र लालसा दिखलाई देती है।

प्रवासी कथा साहित्य पर हरजेन्द्र चौधरी का विचार है— ''प्रवासी भारतीय द्वारा लिखे जा रहे साहित्य खासतौर से हिंदी तथा साहित्य को अब चौंकन्ने पाठकों और सुधी आलोचकों द्वारा गंभीरता से लिया जाने लगा है, गंभीरता से लिखा जाना ही गंभीरता से पढे, समझे जाने के प्रयासों का आधार बनता है और परिणामस्वरूप से प्रयास लिखने वाले को रचनात्मक रूप से अधिक गंभीर और जिम्मेदार बनाते है।''

हिंदी प्रवासी साहित्य में मूलतः दो प्रमुख धाराएं देखने को मिलती हैं। गिरमिटिया मजदूरों के देश का साहित्य और विश्व के विकसित देशों में रचा हिंदी साहित्य। प्रथम धारा के अंतर्गत हम मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों में जन्में उन भारतवासियों को पाते हैं जिनके पूर्वजों को अंग्रेज सरकार द्वारा गिरमिटिया मजदूर बनाकर अपने साथ ले गई थी। इन भारतीयों पर अमानवीय अत्याचार हुए। ये प्रवासी अधिकतर बिहार प्रांत से गये थे जो अपने साथ हनुमान चालीसा, रामचरितमानस आदि ग्रंथ ले गये थे। इन्होनें भोजपुरी के साथ हिंदी भाषा को जीवित रखा और विषम परिस्थितियों में भी साहित्य सृजन करते रहे।

हिंदी प्रवासी साहित्य की नींव मॉरीशस में रखी गयी। पंडित वासुदेव विष्णु दयाल तथा हेमराज संदर आदि साहित्यहकारों ने हिंदी साहित्य को, हिंदी भाषा को विदेश में स्थापित किया। अभिमन्यु अनंत इसके पुरोधा हैं। प्रवासी लेखकों के प्रति अपना विचार देते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार कमल किशोर गोयनका कहते हैं —''हिंदी के प्रवासी लेखकों के लिए कविता और कहानी दो प्रिय विधाएं हैं और इसमें बराबर लेखन हो रहा है। कविता की तुलना मुझे कहानी साहित्य अधिक विकसित तथा प्रौढ लगता है क्योंकि वे प्रवासी जीवन के यथार्थ के साथ संबंध करते हैं और हमारे ज्ञान एवं अनुभूतियों का विस्तार करते हैं।''

साठ के दशक के अंतिम चरण में पंजाब के मेहनतकश समुदाय ने ब्रिटेन पहुँचकर वहाँ पर पंजाबी एवं हिंदी भाषा के साहित्य को समृद्ध करने का कार्य शुरू किया। अपनी भाषा, साहित्य, संस्कार की ज्योति जलाई।

इन्हीं हिंदी प्रेमियों ने 1969 में बच्चों के लिए हिंदी शिक्षा का भी प्रबंध किया जो मंदिरों और घरों में सप्ताहांत पर दी जाती थी। जिसमें कवि गोष्ठियाँ और साहित्यिक चर्चाएं की जाती थी।

विश्व में भारतीय भाषा के प्रसार में विदेशी और प्रवासी विद्वानों और साहित्य कारों के योगदान को भारतीय साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों से कम नहीं आँका जा सकता। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रवासी भारतीयों को जाता है। ''वसुधैव कुटुबंकम्'' जो हमारी संस्कृति का मूल भाव है वह विदेशियों को बहुत आकर्षित करता है। जब विदेशी अपने देश में भी भारतीयों की आत्मीयता को देखते हैं तो इस भाव से वह भी अनुप्रेरित होते हैं। हिंदी के प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, जीवन दृष्टि, सरोकार तथा परिवेश में परिलक्षित होता है मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम आदि देशों में भारतवासियों की दूसरी और तीसीर पीढ़ी के साहित्य में उनका देश बोलता है जिस पर हिंदू धर्म का प्रभाव है।

प्रवासी साहित्य ने हिंदी मनोवैज्ञानिक और आजीविका से उत्पन्न द्वंद्व का एक अलग अनुभव दिया है, जैसे एक ही समय से दूर होने का दर्द और घर से दूर होने की जरूरत हमें प्रवासी साहित्य की अनेक कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है। प्रवासी लेखक के सामने रंगभेद की समस्या, अतीत के प्रति मोह, सांस्कृतिक संकट, पीढ़ीगत अंतर, बेगानापन, नारी की दशा के अलावा और भी संवेदनाएं आती हैं।

प्रवासी साहित्यकार अपना अनुभव और भावनाओं को साहित्य के माध्यम से अपने घर पहुँचाता है। वह अपने लोगों के लिए एक खुली खिड़की का कार्य करता है। जैसे तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'पासपोर्ट का रंग', उषा प्रियंवदा की 'वापसी', सौमित्र सक्सेना की ''लडैती', सुषमा बेदी की कहानी ''लौटना, 'अरूणा सब्बरवाल की 'मरीचिका', दिव्यां माथूर की ''साजिश'' अलका भटनागर की ''इंतजार'' निर्मल वर्मा की नस्लवाद से जूझती कहानी ''लंदन की एक रात' सुधा ओमढींगरा की 'कौन सी जमीन अपनी 'आदि कहानियों के माध्यम से वहाँ की दशा और उससे जूझते लोगों की पीड़ा को हम भली–भाँति समझ सकते हैं।

आज विदेशों में रहने वाले भारतीय प्रवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं और समस्याओं को अपने साहित्य द्वारा उजागर कर रहे हैं। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विषमताएं और जटिलाताएं आती हैं, दो संस्कृतियों में सामंजस्य स्थापित करने में नए संस्कार, नई सोच, नया दृष्टिकोण से देखने लगते हैं और उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है और प्रवासी साहित्य बनता है। ये रचनाकार अपने द्वंद्व को बताने के लिए सिर्फ नई जमीन को नहीं तलाश रहे हैं वरन् हिंदी साहित्य को नए विषय वस्तु के साथ नई शब्दावली, नए मुहावरे, नयी शैली, नए प्रतिमान के साथ ही कभी कभी नई भाषा के साथ तत्परता से पश्चिमी जगत के यथार्थपरक परिवेश से जोड़ रहे हैं। भावुक भारतीय जब विदेशी जीवन से उकता जाते हैं या खाली वक्त पाते हैं तो कलम उठाकर मन की पीड़ा को कागज पर उतार देते हैं। इस तरह प्रवासी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विदेशों में हिंदी का प्रसार कर रहे हैं। हिंदी भारत के राष्ट्रीय व्यक्तित्व की प्रतिनिधि भाषा है इसलिए यह जरूरी है कि हिंदी की अपनी अस्मिता बची रहे।

वर्तमान समय में प्रवासी साहित्य। वास्तव में उस मानसिकता का द्योतक है या प्रमाण है जो प्रवास में रहकर आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहा है। भारतीय मुद्रा की तुलना में विदेशी मुद्रा का भारीपन भारतीय युवा वर्ग को और अधिक आकर्षित कर रहा है। जिस काम करते हुए अपने देश, राज्य, शहर में उसे ग्लानि होती है, उसे तुच्छ लगता है वही काम वह विदेश में रहकर करने के लिए तत्पर हो जाता है। तेजेन्द्र शर्मा अपनी कहानी 'देह की कीमत' में इसे बखूबी से चित्रित करते हैं। सुषमा बेदी अपने उपन्यास 'हवन' में इसका बखूबी से चित्रण

करती है।

अर्थोपार्जन की लालसा में व्यक्ति को मशीन ने ही लोभी बना दिया है। वह ज्ञान, कौशल और क्षमता को ताक पर रखकर केवल धनोपार्जन से मतलब रखता है। पैसे की चकाचौंध ने मानव की मानसिकता को बहुत अधिक कुंठित कर दिया है। मानव ने वर्तमान समय में अपने अस्तित्व, का आधार अर्थ को ही बना लिया है। वह अर्थ का कीर्तिदास बन कर रह गया है।

आज हर सामाजिक रिश्ते को धन की तराजु पर तौला जा रहा है। गौतम सचदेव की कहानी आपका 'स्टेशन का आ गया' में नायिका निशा के अर्थ पिपाशु चरित्र का चित्रांकन कहानीकार करते हैं।

आज विश्व बाजार में भारत की भूमिका ने हिंदी के कदमों को मजबूती प्रदान की है। वर्तमान परिदृश्य में हिंदी साहित्य समृद्ध भी है। अनंत सभावनाओं के साथ भविष्य की ओर अग्रसर हो रही है। भारतीय संस्कृति लोक साहित्य, लोक कलाओं, धर्म, दर्शन और साहित्य के प्रति प्रवासियों में जो लगाव है वह सराहनीय है।

प्रवासी साहित्य में भूमंडलीय बाजारवाद, उपभोगतावादी संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यहीनता का चरम यथार्थ देखने को मिल रहा है। सामाजिक संबंधों में धन का ही महत्पूर्ण स्थान है तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'अभिशप्त' में भी इसी तथ्यन को उजागर करते हैं। रजनीकांत नामक पात्र ऐसे ही वर्ग का सूचक है। जो रिश्तों की आड़ में केवल धनोपार्जन में विश्वास रखता है– ''रजनीकांत उम्र में तो निशा से करीब तीन वर्ष छोटा है। इस ओर वीजा का बचा डेढ महीना, दूसरी ओर तीन वर्ष की बड़ी पत्नी, माँ–बाप के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की चाह ने लंदन में बसने की मजबूरी ने सप्ताह भर बाद ही रजिस्ट्रार के दफ्तर में विवाह के प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर करवा दिए। पार्टी का सारा खर्च निशा के माता–पिता ने ही वहाँ किया।'' कभी मजबूरी में तो कभी स्वार्थ से प्रेरित होकर ऐसे संबंधों की नींव डाल ली जाती है। जहाँ आत्मीयता की जगह अर्थ और आर्थिक महत्व को महत्वपूर्ण माना जाता है। जो है उससे संतुष्ट न होकर जो नहीं है मेरे पास वह चाहिए की मानसिकता आजकल प्रबल है। अधिक से अधिक धनोपार्जन की होड़ में व्यक्ति अपनी देह तक का सौदा करने को तैयार हो जाता है। विदेश में यह स्थिति प्रबल है। विदेशों में स्त्री देह की तुलना में पुरूष देह की कीमत अधिक है। अतः पुरूष भी देह को वस्तु के रूप में बाजार में उपलब्ध न करके अधिक धन कमाने में तत्पर रहते हैं। सुषमा बेदी अपनी 'सलोनी' कहानी में इसका चित्रण करती है– ''सौरभ में अपने बूते जीने का दमखम कतई नहीं था – मेहनत करने की बजाय अपने जिस्म को बेचना उसे कहीं ज्यादा और सुखकर लगने लगा–फिर उसका पौरूष इसी में गौरव मानने लगा कि उसकी कितनी माँग है।''

उषा राजे सक्सेना अपनी कहानी में अपने भोगे हुए यथार्थ को चित्रित करती है। समाज में जो देखती है, जो जीती हैं उसे ही कलमबद्ध करती हैं। उषा राजे स्वयं कहती है समाज के यथार्थ को अपनी कहानी 'एक मुलाकात' में नारी चेतना को चित्रित करती हुई लिखती है– ''बहिन मुश्किलों में आपको याद कर रही हूँ। जब तक आपको खत मिलेगा में खुदखुशी कर चुकी होऊँगी। मेरी गोद में बच्ची का गला मेरे खाविंद ने घोंट दिया, क्योंकि उस मासूम की शक्ली उससे नहीं मिलती थी। बड़ी बेटी को मैने मुमानी के पास भेज दिया है पता लिख रही हूँ। आप जल्दी से उसे यतीम खाने भेज दीजिए। जहाँ मेरा खाविंद उसे पा न सके। मेरे पेट का बच्चा अल्लाह के दरबार में उससे फरियाद करेगा।''

बाजारवाद के समय में नैतिकता, मान मर्यादा की जगह बाजारू स्वतंत्रता को रेखांकित करती है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानी– 'श्वेरत दृश्य लम'! यहाँ पर दैहिक स्वतंत्रता ही सब कुछ है। पाँच सितारा होटलों में प्रेम

दीवानी सुनीता वैवाहिक संबंधों को ताक पर रखकर कृत्रिम स्वतंत्रता से संचालित हो बाजार की चाकरी के लिए निकल पड़ती है। विचित्र स्थिति जिस समय कंपकपांती शीत ऋतु में उसका पति देश की सीमा पर पट्टेदारी कर रहा था, उस समय सुविधापस्त जीवन शैली के लिए वह बाजार में उत्पाद बनी खड़ी थी। कहानी में देवर के समक्ष उसके यौन कर्मी होने के भेद खुलने पर भी उसमें अपराध बोध का भाव नहीं दीखता है। न उसे लगता है कि वह गलत कर रही है। सुनीता को लगता है जब पुषन गलत नहीं है तो मैं कैसे गलत हो सकती हूँ। यहाँ पर शर्मा समाज के मनोवृत्ति का विरोध करते दिखाई देते हैं जिसका उल्लेख प्रभा खेतान अपनी कहानी 'बाजार के बीच बाजार के खिलाफ' में करती है– ''प्रायः सोचा जाता है वेश्याएं कुलटा हैं, पतिता है। लेकिन ग्राहक एक भोला भाला या अकेला इंसान।''

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'मलबे का मालकिन' एक ऐसी चर्चित कहानी है जिसमें अस्मिता और सामाजिक मानदण्डों के बीच संघर्षरत नारी का चित्रण है। कहानी की नायिका प्रियदर्शिनी अपनी बेटी नीलिमा के जन्म के बाद अपनी सास द्वारा कितने अमानवीय, असामाजिक एवं अव्यावहारिक दंश की असहनीय पीड़ा भोगती है। नर समाज की असहनशीलता का प्रतीक विजय एवं नारी की सहनशीलता की पराकाष्ठो 'सिलवटें 'कहानी की सुलक्षणा है। शब्द देखिए–मेरी बीमारी का कारण अब केवल वह दुर्घटना नहीं थी, मेरी बीमारी का सबसे बड़ा कारण आप स्वयं हैं। मैं तो यह सोच–सोचकर घुलती जा रही हूँ कि मैं उस व्यक्ति की पत्नी हूँ जिसमें अपना गुनाह कबूल करने की हिम्मत नहीं। जब बहू कुत्य करते हुए आप नहीं डरे तो इतने वषों अपनी पत्नी को क्यों अंधेरे में रखा? आज तो मेरी दो मिनट की चुप्पी नहीं सह पा रहे मैनें तो आपकी चुप्पी को वर्षों तक सहा है।'' विवाह जहाँ एक तरफ सहयन करने का अधिकार देता है, वहीं पर हम माने या न माने आत्मिक रूप से एक हो जाते हैं। ऐसे में कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से पत्नी के चल बसने का भाव बोध उससे उत्पन्न मन का विचलन और खौफ भरा त्रासद अनुभव किसी को भी विचलित कर सकता है।

निष्कर्षत – हम यह सकते हैं कि हिंदी प्रवासी मूलतः एक भारतीय संस्कृति परंपरा धर्म अपनी अस्मिता को लेकर शुरू हुआ था। दूसरा 1969 के बाद अर्थोपार्जन हेतु विदेश गए भारतीयों के द्वारा गिरमिटिया देशों के साहित्य में इतिहास के शोषण जीवन संघर्ष की मूक अभिव्यक्ति एवं अस्तित्व संकट से जुड़ी संवेदनाएं हैं। वहीं दूसरी तरफ 1960 के बाद अमेरिका, इग्लैण्ड कनाडा जैसे विकसित देशों के प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी जीवन अनुभवों वहाँ की संस्कृति नए सराबोर तथा बाजारवाद की गंध से रोबारह हिंदी का प्रवासी साहित्य अपनी विशेषताओं के चलते सदा से ही चर्चा का विषय बना हुआ है। इन सभी प्रवासी भारतीयों के साहित्य में सांस्कृतिक संवेदनाओं को बखूबी उकेरा गया है।

संदर्भ :–

1. उषा राजे सक्सेना हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी लेखन, पृष्ठ 62
2. सिलवटें (सीधी रेखा की परतें) तेजेद्र शर्मा, पृ. सं 181
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका – हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृ. सं. 47
4. डॉ वासुदेवन शेष –प्रवासी हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना– पृष्ठ सं. 217

चलभाष 9841383592

अनुडाक–SunilPatil7969@gamil.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 85-87

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा

डॉ भावना
असिस्टेंट प्रोफेसर, (हिंदी विभाग),
हुकुम सिंह बोरा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोड़ा), उत्तराखंड। पिन कोड–263637

सारांश :–

वर्तमान में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जो विविध विमर्श जुड़े हुए हैं, उनमें प्रवासी साहित्य नाम भी कोई अनसुना नाम नहीं है। बाजारवाद के इस दौर में जिस प्रकार विभिन्न देश एक दूसरे के निकट आए हैं, उसी प्रकार हिंदी भाषा व साहित्य का भी पर्याप्त प्रचार–प्रसार देश विदेशों में हुआ है। भारतीय मूल के लोग जो विभिन्न देशों में फैलकर व विदेशों को ही अपनी कर्मभूमि बनाकर भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, उन्हीं के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य के नाम से जाना जाता है। मॉरीशस, ब्रिटेन, अमेरिका, लंदन, कनाडा इत्यादि देशों में ऐसे अनेकों प्रवासी साहित्यकार हैं, जो साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चला रहे हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा एवं साहित्य को आज जो ख्याति प्राप्त हुई है उसका सारा श्रेय इन्हीं प्रवासी भारतीयों को ही जाता है।

मुख्य शब्द :– प्रवासी, गिरमिटिया, हिंदी साहित्य, देश, भारतीय संस्कृति इत्यादि।

'जो मैं ऐसा जानती, फिजी आए दुख होय।
नगर ढिंढोरा पीटती, फिजी न जइयो कोई।।'[1]

हिंदी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करने में अनेक विदेशी विद्वानों एवं प्रवासी भारतीयों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है, साथ ही साथ यह बात भी निर्विवाद है कि हिंदी भाषा व साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का श्रेय जिन भारतवासियों को दिया जाता रहा है ये वे लोग हैं जो गिरमिटिया के रूप में भारत से बाहर जाकर विदेशों में बस गए। देश के ऐसे कई इलाके जहां गरीबी, शिक्षा के संसाधनों इत्यादि का अभाव था ये गिरमिटिया लोग ऐसे ही प्रांतों से निकलकर रोजी–रोटी की तलाश में विदेशों को निकल गए। गिरमिटिया लोगों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो बंगाल, उड़ीसा, मद्रास, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र इत्यादि प्रांतों से निकले थे। यदि हम प्रवासी साहित्य की बात करें तो हिंदी में हमें दो तरह का प्रवासी साहित्य देखने को मिलता है। पहला प्रवासी साहित्य वह है जो फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका इत्यादि देशों में जाकर बसे हुए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की संतानों द्वारा रचा गया। तथा दूसरा प्रवासी साहित्य वह है जो यूरोप, अमेरिका, इंग्लैंड इत्यादि में स्वेच्छा से जाकर बसे हुए हिंदी के साहित्यकारों द्वारा रचा गया है। किंतु इन दोनों ही प्रवासी हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं में शिक्षा, भाषा, परिवेश, एवं आधुनिकता इत्यादि के आधार पर पर्याप्त भिन्नता

पाई जाती है। सन् 1879 में ब्रिटिश एजेंटों द्वारा जब भारतीयों को बहला–फुसलाकर गन्ने की खेती कराने के लिए फिजी में लाया गया तो इन सीधे–साधे भारतीयों के हाथ सिर्फ निराशा ही लगी। इन्हें न पेट भर भोजन ही मिला और ना ही रहने को घर मिला। दिन भर कड़ी मेहनत के बाद इन्हें हर समय अपमानित ही किया जाता था। इनके साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार किया जाता था, जिसकी इन्होंने कभी कल्पना तक नहीं की थी। पंडित कमला प्रसाद मिश्र का नाम फिजी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवियों में गिना जाता है। इन्होंने गिरमिटिया जीवन की यातनाओं को बहुत नजदीकी से देखकर उसका यथार्थ वर्णन अपनी रचनाओं में किया है कि किस प्रकार अंग्रेजों द्वारा इन भोले भाले भारतीयों को अपमानित करके लात–घूसों से मारकर भूखे रखा जाता था। 24 घंटे मजदूरी करने के बाद भी इनके हिस्से में सिर्फ गालियां ही आती थी। ऐसे अमानवीय दुर्व्यवहार को बालक मिश्र ने भली–भांति महसूस किया था। ऐसे ही फिजी की सुप्रसिद्ध कवयित्री अमरजीत कवल ने भी अपनी रचनाओं में भारतीय मजदूरों की त्रासदी का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इन्होंने रामायण की कथा को माध्यम बनाकर लिखा है कि–

'हाय हाय दिन जाए रोए रोए रैन जाए
काली कोहरिया मां सोए गिरमिटिया
रावण जो कोई आए के सीता को हर लीना
देख न लखन कोऊ बेहाल है
हे राम रोए गिरमिटिया'।[2]

ऐसे ही यदि हम मॉरीशस में हिंदी साहित्य के शुरुआत की बात करें तो 'गणेशी' उपनामधारी कवि के द्वारा यहां सर्वप्रथम 'होली' नामक कविता रची गई थी। इस कविता को आर्य समाज से प्रभावित माना जाता है तथा यह भी कहा जाता है कि इस कविता को भारत से जाने वाले किसी विद्वान द्वारा लिखा गया था। एक अन्य पुस्तक जो मॉरीशस का आदिकाव्य नाम से प्रकाशित हुई थी, उसमें 1913 से 1930 के बीच प्रकाशित कविताओं को संकलित किया गया। इन कविताओं में देश का उत्थान, भारतीय महापुरुषों का गुणगान तथा सादा जीवन उच्च विचार जैसी विशेष प्रवृतियां देखने को मिलती हैं। हम देखते हैं कि अभिमन्यु अनत का नाम हर किसी की जुबां पर रहता है। यह मॉरीशस के ऐसे सशक्त रचनाकार हैं, जिन्होंने न केवल स्वयं लेखन कार्य किया बल्कि अपने परवर्ती रचनाकारों को भी सशक्त लेखन करने की प्रेरणा प्रदान की। उनकी प्रसिद्ध रचना 'टूटी प्रतिमा' में अभिमन्यु अनत ने प्रेम और त्याग का आदर्श प्रस्तुत किया है। भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति एवं हिंदी सीखने की प्रेरणा हमें सूरीनाम के हिंदी लेखकों की रचनाओं में भी पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती है। साथ ही इन्होंने अपनी रचनाओं में अतीत का गौरव गान व समस्त जीवन की अनुभूतियों के बहुआयामी चित्रों को भी उकेरा है।

त्रिनिदाद में प्रवासी हिंदी साहित्य की बात की जाए तो भारत में जन्मे प्रोफेसर हरि शंकर आदेश का त्रिनिदाद के प्रवासी साहित्यकारों में एक महत्वपूर्ण नाम है। इन्होंने विविध विधाओं जैसे महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, बाल गीत, कविता संग्रह, कहानी संग्रह इत्यादि में लेखन कार्य किया है। इनके लेखन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि विधा चाहे कोई भी हो पर उसके केंद्र बिंदु में हमेशा भारत माता की वंदना ही रही है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में अपनी उत्कृष्टता के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति का गुणगान करने वाले लेखक पूरे विश्व के कोने–कोने में फैले हुए हैं। भारतीय संस्कृति की मशाल को जगाए रखने का

संदेश देते हुए कवयित्री डॉ अंजना संधीर ने अपनी कविता संग्रह 'अमेरिका हड्डियों में जम जाता है' में भारतीय संस्कृति का गुणगान करते हुए लिखा है कि–

"संस्कृति की मशाल जगाए रखना,
अमेरिका को हड्डियों में मत बसने देना अमेरिका सुविधाएं देकर हड्डियों में बस जाता है।"[3]

भारतीय लोग चाहे दुनिया के किसी भी कोने में क्यों ना बसे हो किंतु उनकी आत्मा भारत में ही बसती है। प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएं, कहानियां, उपन्यास, नाटक, महाकाव्य, खंडकाव्य, एकांकी, यात्रा वृतांत, आत्मकथा इत्यादि विधाओं में साहित्य सृजन हुआ है। इस प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है और कई देशों में रचा जा रहा है। इस आधार पर निश्चय ही प्रवासी हिंदी साहित्य का भविष्य उज्जवल है।

संदर्भ :–

1. फिजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, विमलेश कांति वर्मा; संस्करण– 2012 पृष्ठ– 18
2. विस्थापन का दर्द और मानस का मरहम, डॉक्टर सुरेश ऋतुपर्ण; विश्व हिंदी पत्रिका 2010 पृष्ठ –124
3. अमेरिका हड्डियों में जम जाता है, डॉ अंजना संधीर; वर्ष –2011 पृष्ठ –109

ईमेल upadhyaybhawna2018@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 88-89

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य में समाज

डॉ. जैस्मीन
हिन्दी लेक्चरर, एसवी आर. के. जी. डी. सीनिडदावोल, पश्चिम गोदावरी।

प्रवासी साहित्य हिन्दी को एक नयी पहचान दिल रहा है। भारतीय और विदेशी संस्कृति के टकराव एवं विदेशों में भारतीयों के संघर्ष को लेकर ही प्रवासी हिन्दी साहित्य का कथा साहित्य हमारे सामने आता है। प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य है। प्रवास शब्द का अर्थ है, विदेश गमन या विदेश यात्रा। जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहने वाली व्यक्ति प्रवासी है। प्रवासी ऐसे लोगों का एक बड़ा समूह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गए हैं। डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है कि "प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"

संसार का हर वस्तु या प्राणी गतिशील होता है। जो वस्तु या प्राणी अपने समय की चुनौतियों के साथ परिवर्तन नहीं करता, उसका अस्तित्व धीरे–धीरे समाप्त होने लगता है। अगर बात मनुष्य की करें तो मनुष्य की जिन जातियों ने या सभ्यताओं ने स्वयं में समय के अनुकूल परिवर्तन किया, उन्होंने विश्व में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की और जो मानव सभ्यताएँ रूढ़िवादी थी और किसी भी तरह के परिवर्तन के विरोध में थी, उनका पतन हो यों कहें कि वे एक सीमित समय व सीमित भू–भाग में ही सिमट कर रह गयी। यही स्थिति साहित्य की होती है। विश्व की जिन भाषाओं ने उन्नति की, उनका साहित्य विश्व स्तर का साहित्य बन गया। उदाहरण के तौर पर आज जिस तरह से अंग्रजी भाषा ने उन्नति की है, उसी तरह से उसके साहित्य ने भी उन्नति की है।

आज इक्कीसवीं सदी में हिन्दी भाषा भी विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व भाषा की पंक्ति में आ खड़ी हुई है। इसके प्रमुख कारणों में से एक कारण प्रवासी भारतीय हैं, जिन्होंने हिन्दी को विदेशों में प्रसारित किया और इन्हीं में से एक है हिन्दी का प्रवासी साहित्य। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार "हिन्दी के प्रवासी साहित्य का रूप–रंग उस की चेतना और संवेदना भारत के हिन्दी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भावबोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करना है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत तथा स्वदेश पर देश की द्वंद पर टिकी है तथा बार–बार हिन्दू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।"

आज प्रवासी साहित्य हिन्दी को एक नयी पहचान दिला रहा है। भारतीय और विदेशी संस्कृति के टकराव

एवं विदेशों में भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों अथवा भारतीयों के व संघर्ष को लेकर ही प्रवासी हिन्दी साहित्य का कथा साहित्य हमारे सामने आता है। प्रवासी साहित्य गद्य तथा पद्य साहित्य के माध्यम से हिन्दी भाषा के भविष्य को उज्जवल बना रहा है। आज प्रवासी साहित्य के कथा साहित्य के अन्तर्गत आने वाली कहानियाँ प्रवासी साहित्य को और अधिक बल प्रदान कर रही हैं। प्रवासी भारतीय कथाकारों ने चाहे किसी भी देश को अपनाया हो, परंतु उनकी सोच भारत में हो रही गतिविधियों से भी संचालित होती है जोकि प्रवासी कथा साहित्य में व जगह–जगह पर दिखायी भी देती है। प्रवासी कथा साहित्य में अपने अपनाये हुए देश के परिवेश, संघर्ष रिश्तों और उपलब्धियों पर जाने–माने प्रवासी कथाकारों ने अपने लेखन द्वारा एक भिन्न समाज से परिचित करवाया है। भारतीय प्रवासी कथाकार के लिए यह आसान नहीं होता कि वह अपनाये हुए देश की संस्कृति, सभ्यता और रीति–रिवाजों से पूरी तरह जुड़ पाये। उनकी जड़े अपनी मातृभूमि संस्कारों एवं भाषा से जुड़ी होती हैं।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 90-94

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य और सांस्कृतिक परिवेश

बीरम देव

सहायक आचार्य हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी (राज.)

शोध सार :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी प्रवासी साहित्य की उपस्थिति उसका सर्वेक्षण और विवेचन उसके स्वतंत्र अस्तित्व के साथ उसकी प्रतिष्ठा एवं महत्त्व का प्रमाण है। यद्यपि बींसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक के अंतिम वर्षों में हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्य का नामोनिशान भी नहीं था परन्तु एक दो दशकों से प्रवासी साहित्य की चर्चा हिन्दी लेखकों, आलोचकों, संस्थाओं, पत्र–पत्रिकाओं में होने लगी थी। प्रवासी भारतीय लेखक इस कार्य में सृजन करने लगे लेकिन यह जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत नहीं बन सका। वे अपने मानसिक उद्गारों को प्रकट करने लगे थे तथापि इसका वांछित स्तर गरिमा को प्राप्त नहीं कर सका परन्तु विगत दो दशकों से इस विषय पर भारत और विदेशों में कार्यशालाओं समारोह के माध्यम से गंभीर चर्चाएँ हुई।

मुख्य शब्द :- कार्यशाला, जीविकोपार्जन, विश्लेष्णात्मक, प्रवासी साहित्य, ज्ञानवर्धक, भूमंडलीकरण, डायस्पोरा आदि।

हिन्दी का प्रवासी साहित्य अब एक आन्दोलन नहीं बल्कि एक वास्तविकता है और हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा का ही अंग है, जैसा दलित आदिवासी साहित्य। "यह इक्कीसवीं सदी का नया साहित्य विमर्श है। हिन्दी में प्रवासी साहित्य का आगमन यद्यपि बींसवीं सदी में ही आरम्भ हो गया था किन्तु भूमंडलीकरण ने प्रवासी विमर्श को नई शक्ति, नई ऊर्जा और नई सार्थकता प्रदान की है। हिंदी के इस प्रवासी साहित्य के 'प्रवासी' कहलाने और पहचानने पर कोई भी आपत्ति निरर्थक है क्योंकि यह नामकारण अब इतना प्रचलित एवं स्वीकृत हो चूका है कि इसे बदलना संभव नहीं है और भारतेतर देशों में रहकर कोई भारतीय हिंदी में रचना करेगा तो वह देश विदेश में सर्वत्र हिंदी का प्रवासी साहित्य कहलायेगा।"[1]

आज प्रवासी भारतीय विश्व के सभी प्रमुख देशों में चाहें अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड या खाड़ी के विभिन्न देश हो सभी जगह निवास करते है। "प्रवासी साहित्य चाहे फीजी का हो या सूरीनाम का, दक्षिण अफ्रीका का हो या मोरिशस का सभी की मूल संवेदना एक ही है। प्रवास की पीड़ा अपनी धरती के प्रति मोह, अपनी भाषा और अपनी संस्कृति की सुरक्षा, प्रतिष्ठा और संरक्षा के लिए सतत प्रयत्न, नये देश और नयी भूमि में जमने के लिए संघर्ष, वर्तमान परिस्थितियों के प्रति असंतोष, आवास और आजीविका के कष्ट, आत्मग्लानि, मन का अन्तर्द्वन्द्व, आत्मरति और आत्मश्लाघा, नये देश का प्राकृतिक सौन्दर्य आदि सभी कुछ आपको इसमें देखने को मिलेगा।"[2]

भारतीय समाज राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और भौगोलिक स्तर पर विविधताओं से भरा है। इस स्थिति में एक संस्कृति की अपेक्षा करना अनुचित होगा। हाँ ध्यान रखने की जरूरत हैं कि इसमें कट्टरता, धार्मिक रूढ़िवादिता, शोषण और अत्याचार के तत्त्व समाविष्ट न हो जाएँ। यद्यपि भारतीय संस्कृति ऊपर से समानता और बंधुत्व की बात तो करती है लेकिन भीतर से बहुत ही भेदकारी और शोषण युक्त है इसके लिए वर्णाश्रम व्यवस्था से लेकर वर्तमान में प्रचलित छद्म राजनीति तक को समझा जा सकता है। इन सारी चीजों से सभ्यता और संस्कृति का जुड़ाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से होता है। इस स्थिति में संस्कृतियों के बीच टकराव प्रारम्भ हो जाता है। जहाँ एक शक्ति अपनी श्रेष्ठता, सामंती और शुद्धिवादी मानसिकता को संस्कृति के चादर के तहत् ढककर बनाये रखना चाहती हो उस स्थिति में शोषण और भेदकारी नीति पर आधारित संस्कृति से बहुजन समाज की कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। इस स्थिति में एक समतामूलक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि समतामूलक समाज नहीं बनता तो फिर समन्वयकारी संस्कृति की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

यह तो हुई भारतीय संदर्भ में बातचीत विश्व पटल पर भी दो विचारधाराएँ आपस में टकराती है। समाजवाद और पूँजीवाद के आपसी द्वन्द्व के कारण दो संस्कृतियाँ आपस में टकराती है। पूँजीवादी संस्कृति और सर्वहारा संस्कृति जिनमें सामाजिक, आर्थिक संरचनाओं में उत्पादन संबंधों के क्षेत्र में विग्रहपूर्ण वर्गीय अंतर्विरोध व्याप्त होते हैं, उनमें आत्मिक संस्कृति के विकास का स्वरूप अंतर्विरोधमय और वर्ग विभेदिता से युक्त होता है। उदाहरणतः पूँजीवाद की परिस्थितियों में प्रभावी बुर्जुआ (रूढ़िवादी मध्यवर्ग व समुदाय जिसकी सामाजिक और आर्थिक मान्यताएँ वस्तु और पूँजी केन्द्रित होती है जो निम्न वर्ग की उपेक्षा करता है।) संस्कृति के अलावा जनवादी और समाजवादी संस्कृति का भी विकास होता है। उत्पादन साधनों के स्वरूप और प्रभावी सामाजिक संबंधों के बीच रिश्ते पर विशेषतः जोर देते हुए मार्क्स ने लिखा है– ''हाथ से चलने वाली चक्की उस समाज को जन्म देती है, जिसका प्रधान सामंती प्रभू होता है और भाप से चलने वाली चक्की उस समाज का, जिसका प्रधान औद्योगिक पूँजीपति है।''[3]

प्रवासी भारतीय समुदायों की सामाजिक सांस्कृतिक विविधता के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वतापूर्ण लेखों के अनुशीलन से यह बात स्पष्ट तौर पर उभरती है कि इन समुदायों के स्थानीय अनुकूलन में इनके मूल स्थानों और पृष्ठभूमि की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। "कैरेबियाई क्षेत्रों के भारतीय समुदायों के धार्मिक विश्वासों और पूजा पद्धतियों में भारतीय सभ्यता की लघु परंपरा के दर्शन होते है। लघु परंपरा का मूल स्त्रोत भारतीय गाँवों में माना जा सकता है। काली माई की पूजा, डीह की स्थापना आदि इसके उदाहरण हैं। इसी तरह उत्तरी अमेरिका के प्रवासी समुदायों में भारत के सांस्कृतिक– हिंदुत्व के तत्त्व अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। भारत–भूमि के सामाजिक–सांस्कृतिक आन्दोलनों में भी प्रवासी भारतीय समुदायों की जीवन पद्धति को गहराई से प्रभावित किया है। भारत में हिन्दू सुधारवादी आन्दोलन आर्य–समाज की स्पष्ट छाप अधिकांश द्वीपीय भारतीय डायस्पोरा में देखी जा सकती है।"[4]

विश्व संस्कृति पर विचार करने से पहले विश्व संस्कृति पर भरतीय चिंतक और मनीषियों के विचारों से अवगत होना उपयुक्त होगा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– ''मैं संस्कृति को किसी देश–विशेष या जाति–विशेष की अपनी मौलिकता नहीं मानता। मेरे विचार से सारे संसार के मनुष्यों की एक सामान्यत मानव–

संस्कृति हो सकती है यह दूसरी बात है कि वह व्यापक संस्कृति अब तक सारे संसार में अनुभूत और अंगीकृत नहीं हो सकी है।''[5] समन्वयकारी संस्कृति के संदर्भ में द्विवेदी जी लिखते है– ''वैदिक युग से लेकर ईसा की 19वीं सदी तक निरन्तर समन्वय ही भारतीय संस्कृति का इतिहास है। कर्म प्रधान वैदिक धर्म के साथ जब वैराग्य प्रधान अध्यात्मवादी आर्येतरों का संघर्ष हुआ, तो इस संस्कृति ने बड़ी शीघ्रता के साथ मानव–जीवन को चार आश्रमों में बाँटकर समन्वय कर लिया। आर्यों का स्वर्ग और आर्येतरों का मोक्ष तथा पुनर्जन्म–सिद्धान्त इस संस्कृति में दूध, चीनी की तरह घुल गये। कबीर, नानक, दादू, अकबर, राजा राममोहन राय आदि का प्रयत्न समन्वय का प्रयत्न था।''[6]

द्विवेदी जी का यह मत है कि चार आश्रमों में बाँटकर समन्वय कर लिया तथा कबीर का प्रयत्न समन्वय का था तर्कसंगत नहीं है। चार आश्रमों का सृजन तो ब्राह्मणवादी हितों की पूर्ति के लिए किया गया था। इस स्थिति में ब्राह्मण, क्षत्रिय के साथ शूद्रों का समन्वय कैसे हो सकता है? कबीर जिनका सम्पूर्ण जीवन ब्राह्मणवादी श्रेष्ठता के विरोध में गुजरा वह बाकी वर्गों के साथ समन्वय कैसे चाहेंगे? इस स्थान पर द्विवेदी जी दिग्भ्रमित प्रतीत होते है। विश्व संस्कृति के संदर्भ में उन्होंने लिखा है– ''जहाँ हजारों वर्ष से एक साथ वास करने वाली जाति के हाथ का छूआ पानी भी ग्रहणीय न समझा जाता हो, वहाँ विदेशी संस्कृति की अदला–बदली एक असंभव सी धारणा है। यह कैसे मान लिया जाय कि गर्वीली आर्यजाति के वंशधरों ने उन लोगों के धर्म–विश्वास और आचार–परम्परा को भी अपनाया है, जिसे वे अपनी भाषा सुनाने के योग्य नहीं समझते थे।''[7] यहाँ द्विवेदी जी भारतीय समाज का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं। एक ओर वह समाज है जिसे पढ़ने–लिखने तथा समाज में सम्मानित ढंग से जीने तक का अधिकार नहीं है, ऐसी स्थिति में समन्वय का कारक और कारण कौन होगा? यह एक चिन्ताजनक प्रश्न है। विदेशी संदर्भ में यह भी सवाल है कि संस्कृति की बात जब करते हैं तो इसमें भारतीय समाज, परिवेश ही नहीं शामिल होता बल्कि पूरी सभ्यता जिसे हम हड़प्पा, मोहन जोदड़ों से लेकर वैदिक संस्कृति तक लेते हैं।

भारतीय संस्कृति एवं विश्व संस्कृति की तुलना कर सभी का एक तर्क पर पहुँचना असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर है। वैसे किसी सभ्यता और संस्कृति को कम आँकना और किसी को उन्नत और सर्वश्रेष्ठ यह बौद्धिक ईमानदारी पर निर्भर करता है। सैमुअल पी. हटिंग्टन ने 'क्लास ऑफ सिविलाईजेशन' में कई सभ्यताओं की चर्चा की है, लेकिन विश्लेषण के दौरान वे पश्चिम सभ्यता को सभी सभ्यताओं से उन्नत एवं श्रेष्ठ साबित करते है। यह तो किसी पर अपनी विचारधारा थोपना जैसे हैं। "यह एक नस्लवादी चाल है, जिसमें जो गौरा नहीं वह मलेच्छ, तुच्छ और असभ्य करार दिया जाता है। नस्लवाद अमरीकी लोकतंत्र की विशेषता है। मजे की बात यह हैं कि नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करने वाले गौरों और कालों का प्रतिशत एक ही है लेकिन पुलिस जितने गोरों को पकड़ती है, उनसे पाँच गुना ज्यादा कालों को पकड़ती है। इस नस्लवाद से आक्रामक विदेश नीति जुड़ी हुई है, अमरीका की नाक के नीचे क्यूबा नये तरह के समाज का निर्माण कर रहा है। अमरीका को यह बर्दाश्त नहीं।"[8]

यह रंगभेद सिर्फ पश्चिमी देशों में ही नहीं बल्कि तीसरी दुनियाँ के देशों में भी है। भारत में इसे वर्णाश्रम व्यवस्था कि रूप में समझा जा सकता है। यहाँ के दलितों, पिछड़ों जिसे शूद्र वर्ण की संज्ञा दी गई है, का शोषण और अत्याचार अमेरिकी काले लोगों से कम नहीं हुआ है। सभ्यता के प्रारंभ में, जब समाज मातृ प्रधान था उस

समय ऐसी बात नहीं थी। यह मनुवादी भेदभाव के बाद में दिनों आया। भारतीय समाज में यह कैंसर की भाँति फैल गया जिसमें ब्राह्मण जाति की श्रेष्ठता और जन्म लेते ही दूसरे से भिन्न और सर्वश्रेष्ठ बन जाते हैं। प्रो. अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध' में इसके पीछे की साजिश का खुलासा किया हैं– ''जो समाज सामाजिक राजनीतिक सत्ता से वंचित कर दिया गया, जिसकी नियति इतिहास रथ के पहियों के नीचे पिसने तक सीमित रह गयी हो, उस पहचान, अस्मिता का संकट ज्यादा सरल हैं। जन्म से ही अछूत, बिना अपराध के कमीना, अकारण हास्यास्पद मान लिया गया व्यक्ति अपने अनुभवों की खुरदरी जमीन से तभी कट सकता है जब वह अचौत रहने का बकायदा फैसला कर ले जो यह फैसला न कर पाए (जैसे कबीर) उसे यह अंक बार–बार सताएगा कि हम तो जात कमीना।''[9] भारत के दलितों, पिछड़ों पर ब्राह्मणवादी मानसिकता वाले लोगों द्वारा किस प्रकार का षड्यंत्र रचा गया इसकी पुष्टि प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की इस निम्न पंक्ति से स्पष्ट हो जाती है– ''उपनिवेशीकरण से पहले के भारत में सवर्ण पुरुष 'हम कौन थे' सरीखी पंक्तियाँ नहीं लिखते थे, क्योंकि सामाजिक–राजनीतिक सत्ता से वंचित रहने का दुर्भाग्य उनके सवर्ण पुरुष, चाहे गरीब और निर्बल हो तो भी, लेकिन सांस्कृतिक वर्चस्व उसी का था। उसके अपने आत्मबोध में वह स्वतंत्र, सम्माननीय और श्रेष्ठ था। अछूत, हास्यास्पद, पूर्वजन्म का पापी और जात कमीना नहीं। दूसरों की निगाह में भी, सवर्ण पुरुष होना पूर्वजन्म के पुण्यों का ही प्रमाण था। किसी खास वक्त पर किसी वजह से हासिल भले न हो, लेकिन वर्चस्व और सत्ता की दुनियाँ में उसकी जगह सुरक्षित अवश्य थी।''[10]

भारत के बहार प्रवासी भारतीयों और उनके वंशजों को समुदाय के रूप में संगठित करने में हिंदुत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। "भारतीयों का प्रवासन विश्व के अधिकांश हिस्से में होने के कारण हिन्दू धर्म का वैश्विक प्रसार हुआ है द्य भारतीय डायस्पोरा में धर्म के स्वरुप और इसके आन्तरिक बनावट को समझने के लिये कैरेबियाई सन्दर्भ और विशिष रूप से गयाना, सूरीनाम और त्रिनिदाद में हिन्दू धर्म के विकास को एक केन्द्रीय उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।"[11]

हिन्दी प्रवासी जीवन के विभिन्न पक्ष, प्रवास के कारणों को उल्लेखित करते हुए प्रवासी जीवन मूल्यों, उनका साहित्य पर प्रभाव व वैश्विक प्रवासी साहित्य की विकास यात्रा का क्रम निर्धारित किया गया हैं। साहित्य की विकास यात्रा में साहित्य के प्रमुख केन्द्रों मॉरीशस, फिजी, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका व टुबैगो के साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए भारत के पड़ोसी देशों नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका और म्यांमार के हिन्दी प्रवासी साहित्य लेखन के योगदान का भी संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं साथ ही विश्व के अन्य महाद्वीपों अमेरिका और इंग्लैण्ड की प्रवासी संस्कृति व भारतीय संस्कृति का प्रवासी साहित्य के माध्यम से विवेचन प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :–

सामान्यतया हिन्दी का प्रवासी साहित्य आज भारत में जिस स्थिति में है, उसके मूल्यांकन में डॉ. कमल किशोर गोयनका का विशेष योगदान है। अतः हिन्दी प्रवासी साहित्य अपने आप में एक विशेष दर्जा प्राप्त करने योग्य साहित्य है। जो आज भारतीय साहित्य के साथ मुख्यधारा में जुड़ने का प्रयास कर रहा है। अगर यह साहित्य भारतीय हिन्दी साहित्य की धारा में जुड़कर चलता है तो भारतीय हिन्दी साहित्य के साहित्य कोश में वृद्धि होगी जो जानकारी के साथ–साथ पाठकों के ज्ञानवर्धक भी असीम वृद्धि का कारक बनेगा एवं प्रवासी हिन्दी

साहित्य के सन्दर्भ में भारतीय एवं विभिन्न देशों के सांस्कृतिक परिवेश को जानने व समझने का अवसर भी मिलेगा।

सन्दर्भ सूची :–

1. हिन्दी प्रवासी साहित्य, खंड : एक (कविता), डॉ. कमल किशोर गोयनका, पृ. 7
2. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य, सं. विमलेश कांति वर्मा, पृ. 16
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली–9, पृ. 200
4. भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम, सं. रामशरण जोशी, पृ. 139
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली–9, पृ. 217
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली–9, पृ. 199
7. राम विलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, भाग–2, पृ. 749
8. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, पृ. 15
9. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, पृ. 15
10. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, पृ. 22
11. भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम, सं. रामशरण जोशी, पृ. 140

बीरम देव
सहायक आचार्य हिन्दी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी
लंका गेट रोड़, बून्दी (राज.)– 323001
मो0 न0– 8058951121
ईमेल आई डी– devbiram27@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 95-98
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य के विविध आयाम–एक संक्षिप्त परिचय

डॉ. राजू सी.पी.
अध्यक्ष एवं मार्गदर्शक, हिन्दी विभाग, सेंट अलोयष्यस कॉलेज, एलत्तुरुत्त, तृश्शूर, केरल।

हिंदी शब्दकोशों में 'प्रवासी' का अर्थ मिलता है – विदेश में रहने वाले भारतीय। लेकिन अन्य भाषाओं में इस शब्द का अर्थ अलग है और उपयोग भी अलग है। कुछ विद्वान के मतानुसार हिन्दी में इसका बहुत ही संकीर्ण अर्थ लिया जाता है। व्यापक अर्थ में जो लेखन अपने घर से दूर अर्थात विदेशों में हुआ है, वह प्रवासी साहित्य है। वोक्यूबलरी डिक्शनरी में उसकी परिभाषा इस प्रकार दी गयी है– "डायस्पोरा एक है समान विरासत या मातृभूमि वाले लोगों का बड़ा समूह जो तब से है दुनिया भर के स्थानों में चले गए। यानी ऐसे लोगों की बड़ी संख्या ऐसे समूह जिनकी साझी विरासत या मातृभूमि है और जो दुनिया में अन्य स्थानों पर चले गए हैं। "डायस्पोरा शब्द ग्रीक शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है– बिखरे हुए लोग. ऐसे लोग जिनकी उत्पत्ति किसी छोटे भौगोलिक क्षेत्र में होती है। 'डायस्पोरा' का उपयोग उन लोगों के लिए भी किया जाता है जो अपनी मातृभूमि से अन्य स्थानों पर जाते हैं। डायस्पोरा अधिकतर उन लोगों पर लागू होता है जो किसी ऐतिहासिक घटना के कारण अनैच्छिक रूप से बिखर जाते हैं।"

प्रवासी साहित्य एक महत्वपूर्ण विषय है जो देश के अलग–अलग क्षेत्रों में बसे हुए लोगों की भाषा, संस्कृति और अनुभवों को प्रकट करता है। यह साहित्य आयाम मनुष्यों की अन्यता, गहराई और विविधता को दर्शाता है जो भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रवासी साहित्य का एक महत्वपूर्ण आयाम भाषा होता है। भाषा प्रवासी जीवन के माध्यम से अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को संजोने और प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण साधन होती है। प्रवासी लेखकों को विदेशी भाषा के साथ अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने का संकोच नहीं होता है, बल्कि उन्हें यह गर्व का कारण बनता है। भाषा प्रवासी साहित्य में भाषाई अनुभवों, भाषा संघर्षों, और भाषा के बारे में चिंताओं को दर्शाती है। प्रवासी लेखक अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं, अनुभवों, और संघर्षों को व्यक्त करते हैं, जिन्हें विदेशी भाषा में व्यक्त करना उनके लिए कठिन हो सकता है। भाषा के माध्यम से, प्रवासी लेखक अपने विचारों, भावनाओं, और आत्म–पहचान को अद्वितीय तरीके से प्रकट करते हैं।

विदेशी भाषा के साथ अपनी मातृभाषा का प्रयोग करके, प्रवासी साहित्य लोगों को एक विशेष संपर्क भाषा प्रदान करता है, जो उनकी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को मजबूती से जोड़ता है। भाषा प्रवासी साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के बीच समझदारी और सहयोग का माध्यम बनती है, जिससे अद्वितीयता के साथ समानताओं को भी प्रकट किया जा सकता है। इस प्रकार, भाषा प्रवासी साहित्य के लिए

अत्यंत महत्वपूर्ण है जो प्रवासी लेखकों को उनकी मातृभाषा की शक्ति और महत्व को अपने कार्य में सम्मिलित करने में सहायता करती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में बसे हुए लोग अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपने भावों, विचारों, कथाओं और विचारधाराओं को व्यक्त करते हैं। इससे प्रवासी साहित्य विविधता, सामूहिक एकता और संघर्ष को दर्शाता है। यह साहित्य लोगों की भाषा के माध्यम से उनकी आत्म–पहचान को स्थापित करता है और उन्हें उनकी मूल जड़ों से जोड़ता है।

प्रवासी साहित्य का एक और महत्वपूर्ण आयाम है संस्कृति। प्रवासी साहित्य का संस्कृति के साथ महत्वपूर्ण संबंध होता है। प्रवासी जीवन व्यक्ति को नई और अनजाने सांस्कृतिक माहौल में ले जाता है, जहां उन्हें विभिन्न लोगों, भाषाओं, धर्मों, और आदिकारों के साथ आपसी संवाद और व्यापार करना पड़ता है। यह प्रवासी व्यक्तियों के द्वारा उनकी मूल संस्कृति को बचाने, पुनर्जीवित करने, और मान्यता देने का एक माध्यम बनता है। प्रवासी साहित्य द्वारा व्यक्तियों को उनकी मूल संस्कृति से जुड़े तत्वों का सम्मान करने और संजोय करने का एक माध्यम मिलता है। यह लेखकों को संस्कृति, परंपरा, मूल्यों, और अनुभवों को बचाने और संघटित करने का भी माध्यम है। प्रवासी साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकताओं को बचाए रखने के लिए व्यक्तियों द्वारा काम किया जाता है।

संस्कृति भी प्रवासी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से लोग अपनी मूल संस्कृति के साथ जुड़े रहते हैं, अपनी भाषा, रीति–रिवाज़, आदिकारों को मान्यता देते हैं, और इसे आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। प्रवासी साहित्य द्वारा, लोग विभिन्न सांस्कृतिक आदान–प्रदान, सम्मेलन, कार्यशालाओं, और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी संस्कृति को साझा करते हैं। संक्षेप में कहें तो, प्रवासी साहित्य में संस्कृति एक महत्वपूर्ण आयाम है जो व्यक्तियों को उनकी मूल संस्कृति से जोड़ता है, संघटित करता है, और सम्मान करता है। यह व्यक्तियों को उनके गहन संबंध, पहचान, और आपसी समरसता का अनुभव कराता है, जिससे सांस्कृतिक विविधता और समान्यता की एक मिश्रण की सृजन होती है।

प्रवासी साहित्य अपनी मातृभूमि की संस्कृति को बचाता है और प्रदर्शित करता है। यह साहित्य लोगों की भाषा, रंग, संगीत, नृत्य, शिल्प और परंपरा को उजागर करता है। इसके माध्यम से लोग अपने रीति–रिवाज, त्योहार, और सामाजिक आयोजनों को जीवंत रखते हैं और अपनी संस्कृति को पीठ पीछे नहीं छोड़ते।

प्रवासी साहित्य का एक और महत्वपूर्ण पहलु है अनुभव। प्रवासी साहित्य का महत्वपूर्ण पहलू उन प्रवासी अनुभवों का होता है जो लेखकों द्वारा साझा किए जाते हैं। यह अनुभव व्यक्तियों के जीवन के एक महत्वपूर्ण हिस्से होते हैं और उनके विचार, भावनाएं, और प्रतिक्रियाएं साझा करते हैं। प्रवासी अनुभव साहित्य के माध्यम से पाठकों को विशेष दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। ये अनुभव विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक, और मनोवैज्ञानिक मामलों को छूने का मौका देते हैं। इससे पाठकों का ज्ञान और संवेदनशीलता विस्तारित होती है और वे अपनी संजीवनी में विभिन्न परिस्थितियों और विचारधाराओं को समझने का क्षमता प्राप्त करते हैं।

प्रवासी साहित्य अनुभवों को साझा करके विभिन्न समुदायों को आपसी समझ, सहयोग, और साझेदारी की भावना प्रदान करता है। इसके माध्यम से मानवीय संबंधों की मजबूती और समरसता का बढ़ावा मिलता है। लेखकों के अनुभव और भावनाओं के माध्यम से पाठकों को विदेशी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मामलों की अवधारणाओं, प्रेक्षापटों और तत्वों को समझने में मदद मिलती है। प्रवासी साहित्य के माध्यम से व्यक्तिगत

पहलुओं, जैसे प्रेम, उत्साह, रोमांच, और उम्मीदों को साझा करने का अवसर मिलता है। ये अनुभव आपसी अनुबंध और व्यक्तिगत जीवन की गहराई को दर्शाते हैं और पाठकों को प्रेरणा और संवेदना के साथ बाध्य करते हैं। इस प्रकार, प्रवासी साहित्य में अनुभव एक महत्वपूर्ण पहलू है जो अपनी अद्वितीयता और विशिष्टता के माध्यम से पाठकों को संवेदनशील बनाता है और उन्हें विश्वास, समझदारी, और सहयोग की भावना से संपर्क कराता है।

प्रवासी साहित्य एक व्यापक और विविध शैली है जिसमें अनुभवों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। प्रवासी साहित्य में सबसे आम विषयों में से कुछ इस प्रकार हैं :

– **जड़हीनता और विस्थापन :–** कई प्रवासी लेखक अपनी मातृभूमि से उजड़ने और एक नई और अपरिचित जगह पर रहने के अनुभव का पता लगाते हैं। इससे अलगाव, भटकाव और हानि की भावना पैदा हो सकती है।

– **उदासीनता और लालसा :–** प्रवासी लेखक अक्सर अपनी मातृभूमि के लिए गहरी लालसा व्यक्त करते हैं, भले ही वे वहां कभी नहीं गए हों। यह पुरानी यादें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकती हैं, क्योंकि यह अतीत को रोमांटिक बना सकती है और लेखक को अपने नए जीवन को पूरी तरह से अपनाने से रोक सकती है।

– **पहचान का संकट :–** प्रवासी लेखक अक्सर अपनी पहचान परिभाषित करने के लिए संघर्ष करते हैं, क्योंकि वे दो संस्कृतियों के बीच फंस जाते हैं। इससे भ्रम, अस्पष्टता और कहीं भी अपना न होने की भावना पैदा हो सकती है।

– **सम्मेलन और संस्कृतिकरण :–** प्रवासी लेखक अक्सर एक नई संस्कृति में आत्मसात होने की चुनौतियों और उन तरीकों का पता लगाते हैं जिनसे वे अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रख सकते हैं। यह एक कठिन संतुलनकारी कार्य हो सकता है, क्योंकि इसमें लेखक को दो अलग–अलग दुनियाओं के बीच बातचीत करने की आवश्यकता होती है।

– **प्रवासी भारतीयों की राजनीति :–** प्रवासी साहित्य अक्सर उन राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों से जुड़ा होता है जो प्रवासी समुदायों को प्रभावित करते हैं। इसमें नस्लवाद, भेदभाव और मान्यता के लिए संघर्ष जैसे मुद्दे शामिल हो सकते हैं।

इन सामान्य विषयों के अलावा, प्रवासी साहित्य में अन्य अनुभवों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला भी शामिल है। उदाहरण के लिए, साहित्य का एक बढ़ता हुआ समूह है जो विचित्र प्रवासी लोगों, प्रवासी महिलाओं और रंगीन प्रवासी लोगों के अनुभवों की पड़ताल करता है।

प्रवासी साहित्य एक शक्तिशाली और जीवंत शैली है जो मानवीय अनुभव पर एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह प्रवासी लेखकों को अपनी कहानियाँ साझा करने और वैश्वीकृत दुनिया में रहने की चुनौतियों और जटिलताओं का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

संक्षेप में प्रवासी साहित्य लोगों के अनुभवों, कठिनाइयों और सफलताओं को व्यक्त करता है। जब लोग अपने घर से दूर जाते हैं, तो वे नई स्थितियों का सामना करते हैं, नए लोगों से मिलते हैं और नई संभावनाओं का सामना करते हैं। इससे प्रवासी साहित्य में एक मजबूत वाद–विवाद, सामाजिक चर्चा और लोकांतरित करने

की क्षमता विकसित होती है। प्रवासी साहित्य के विविध आयामों के माध्यम से हम देख सकते हैं कि हमारा देश एक अद्वितीय संगम स्थान है, जहां विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ और अनुभवों का मिलन होता है। प्रवासी साहित्य हमें यह याद दिलाता है कि हम सभी एक ही मूल से बड़े या छोटे संगठन हैं और हमारी विविधता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

संदर्भ :-

1. http//www.shreeprakashan.com/Documents/20160830110004647.8.%20Dr.%20Uttam%20Patel.pdf.
2. https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/pravasi&sahitya.html.
3. https://m.sahityakunj.net/entries/view/videshon&mein&hindi&sahity&srijanatmakata&ke&vividh&ayam.
4. https://www.garbhanal.com/the&challenges&of&overseas&hindi&literature&asmita.

Dr. Raju C. P;

Associate Professor & Head, (Research Supervisor)

Department of Hindi,

St. Aloysius College, (Affiliated to University of Calicut)

Elthuruth P.O, Thrissur-Kerala, Pin: 680611

Mob: 8330080066, 8330080022

Email: drrajucp@gmail.com, rajucp@staloysiuselt.edu.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 99-101
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना

डॉ. पूजा चौहान
प्रवक्ता, श्री साईंबाबा इंटर कॉलेज, अमरोहा।

भारतीय साहित्यकार जो इतर दूर देशों में सृजनशीलता के क्षेत्रों में निरन्तर विकास कर रहे हैं। दूतावास के अधिकारी, विदेशी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं सामान्य लेखक जो नियमित लेखन और अध्यापन से विदेशों में हिंदी को लोकप्रियता दिलाने का विशेष कार्य कर रहे हैं। विदेश में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्यों कि उनकी रचनाओं में अलग–अलग देशों की विभिन्न यथार्थ वातावरण को विकास मिलता है और इस प्रकार हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय विकास होता है और समस्त विश्व हिंदी भाषा में विस्तार पाता है।[1] प्रसिद्ध भारतीय हिंदी साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचंद्र ने स्पष्ट कहा है :–

"निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।"

जब हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य की मूल संवेदना की चर्चा हो तब वो प्रवासी भारतीय शब्द के अर्थ–संदर्भ से अभिहित होती है। यह शब्द उन भारतीय के लिए प्रयुक्त होता है जो 100–150 वर्ष पहले उपनिवेशवादियों ने 'गिरमिट प्रथा' के अन्तर्गत मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, गुयांना, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में जबरदस्ती बसा दिए थे और फिर पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही उनकी संतानें प्रवासी भारतीय कहलाती हैं। इन प्रवासी भारतीयों का शुरुआती साहित्य वाचिक था और ये मर्मस्पर्शी दर्द, संघर्ष, स्मृतियाँ और नए परिवेश में पहचान की चुनौती भरा साहित्य था जिसमें उनकी मूल संवेदनाएं निहित थीं जैसे कि सूरदास जी ने श्री कृष्ण के मुख से कहलवाया है :–

"ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नांहि।
हंस सुता की सुन्दर कगरी अरू कुंजन की छाहि।"

अभिमन्यु अनन्त ने अपनी कविताओं में मानव हित कल्याण के साथ अप्रवासी भारतीयों की मौन चीख को मार्मिकता से उकेरा है। यह अनजान अप्रवासी में लिखते हैं–

''वह अनजान अप्रवासी
देश के अंधे इतिहास ने न तो उसे देखा था
न तो गूँगे इतिहास ने
कभी सुनायी उसकी पूरी कहानी हमें
वह पहला गिरमिटिया इस माटी का बेटा

जो मेरा भी, अपना था तेरा भी अपना।"

अभिमन्यु अनंत की रचनाओं में उपनिवेशवादियों द्वारा रोपित दास प्रथा के शोषण चक्र का सृजन, वी.एस. नायपाल की रचना प्रवासी की कहानी में ट्रिनिडाड के भारतीयों के परखे देश में अनुभव, ब्रजेन्द्र कुमार 'भगत' की हिंदू मंगल में प्रवासी देश में हिंदू जाति की पराधीनता की पीड़ा के साथ हिंदू संस्कृति का स्मरण है। इस तरह प्रवासी साहित्य के मूल में प्रवासियों द्वारा नए समाज के अन्तर्विरोधों, विडम्बनाओं का मातृभूमि की संस्कृति के साथ इन्हें, प्रवास के दौरान अस्तित्व संकट की अभिव्यक्ति, विस्थापन का दर्द, अलगाव की सृजनात्मक संवेदनाएँ अभिव्यक्ति पाती है जिनका सृजन स्थानीय देश परिवेश में असम्भव है। हिंदी प्रवासी साहित्य की ये मूल संवेदनात्मक प्रवृत्तियाँ गिरमिटिया मजदूर बनकर गए प्रवासी भारतीयों द्वारा इन देशों में रचे गए साहित्य में दृष्टिगत होती है। दूसरे ये प्रवृत्तियाँ अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा आदि देशों में शिक्षण व्यवसाय के लिए बस गए भारतवंशियों की समस्याओं को उजागर करने वाली प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं में है।

मानवीय संवेदना, आशय एवं स्वरूप–मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व होता है। इसे ही संवेदना की संज्ञा दी जाती है। मनुष्य की जीवंतता, सजगता और चैतन्यता .... की अलौकिक पात्र चयन करने पर उसे भौतिक धरातल पर मानवीय गुण से जोड़ा जाता है। कादम्बरी मेहरा जी की कहानी में मनुष्य का भौतिक स्वरूप दिखाया है। एक ऐसे व्यक्ति की संवेदनशीलता का स्वरूप तथा बदलाव दिखाया गया है।

मानवीय संवेदना का आशय–मन में होने वाला अनुभव या बोध। संवेदना मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होने वाला अनुभव का बोध कराती है। किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाला दुःख। या किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। और वह अपने स्वभाव और बुरे कर्मों को छोड़कर एक सुलझा हुआ व्यक्ति बन जाता है।

ऊषा प्रियंवदा ने विविध भावों को मार्मिकता और सहजता के साथ सृजन किया है और कहीं भी आर्टीफिशियलता नहीं आई। भारतीय और विदेशी परिवेश में टकराहट उत्पन्न करती हुई उनकी कहानियाँ .... उन्होंने स्वीकार किया है। "जिन्दगी और गुलाब के फूल" संग्रह की सभी कहानियाँ जो भारतीय मन और विदेशी परिवेश का द्वन्द्व सामने रखती है। नए परिवेश और संस्कारो के बनने–बिगड़ने को कथा रूप देती है, प्रमाणिक और निर्भीक अनुभूतियों को पहली बार साहस तथा तटस्थता से स्वीकृति देती है।[2] "महानगरीय संवेदना की हिंदी कहानियों का एक सशक्त पक्ष यह है कि इनमें बारीकी से नौकरी पेशा नारी की समस्याओं और तीव्र भावात्मक संघर्ष, उसके टूटते–जुड़े व्यक्तित्व आदि का सशक्त चित्रण होता है।

सुधा जी ने अपनी कविता में स्त्री मन की संवेदना के माध्यम से न केवल वर्तमान में न्याय व पहचान की मुखालफत की है बल्कि ऐतिहासिक संदर्भों को भी पुनर्भाषित किया है–

"राम बने तुम अग्नि परीक्षा लेते रहे। भावनाओं के जंगल में। वनवास मैं काटती रही। देवी बना मुझे। पुरुषत्व तुम दिखाते रहे। सती होकर सतीत्व की रक्षा मैं करती रही।"[3]

प्रो. हरिशंकर आदेश ऐसे प्रवासी साहित्यकार हैं जो न केवल कनाडा बल्कि अमेरिका व ट्रिनिडाड में साहित्य, संगीत, कला, भारतीय संस्कृति और भारतीय भक्ति और दर्शन का प्रचार व प्रसार करने में अग्रणी है। वह लम्बे समय से विदेश में रहने के बावजूद भी अपनी भारतीय संस्कृति की मिठास को नहीं भूल पाते हैं। उनकी कविता में आज भी भारतीय प्रकृति मौसम तथा सरसों की पीली रंग–बिरंगी दुनिया विद्यमान हैं–

"रंग–बिरंगी लिए उमंगें लिए फागुन आया रे। फागुन आया रे। राग रंग को लिए तिरंगे फागुन आया रे। फागुन आया रे। चले बसंती बयार मन में प्यार पले रे।"[4]

सुषमा बेदी ने विविध विधाओं में अनेक रचनाएँ सृजित की है। अजेलिया के रंगीन फूल में मिसेज मिलकर नामक पात्र के अपने को विदेश के माहौल के अनुरूप ढालने की कोशिश करने पर भी वहाँ का समाज उसे स्वीकार नहीं करता और हमेशा उन्हें बाहरी होने का अहसास कराकर उसने उनमें हीनता की भावना पैदा कर दी जिसकी वजह से वे अपने भारतीय होने को दोषी मानती थी।

हिंदी प्रवासी साहित्य का एक विस्तृत संसार है। जिसकी असीम सम्भावनाएँ और वह हिंदी साहित्य के विकास का परिचायक है। मूल संवेदनाओं की ये भिन्नता, जीवन अनुभवों के यथार्थ की भिन्नता के कारण है–मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम आदि गिरमिटिया देशों के साहित्य में इतिहास के शोषण जीवन संघर्ष की मूल अभिव्यक्ति व अस्तित्व के संकट से जुड़ी संवेदनाएँ है वहीं अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा जैसे विकसित देशों के प्रवासी हिंदी साहित्य की आवाज स्वदेश–परदेश की दो संस्कृति के मिलन से जन्मी नई संस्कृति, नए सरोकारों का चित्रण है। प्रवासी साहित्य देश के जीवन अनुभवों संस्कृतियों का साहित्य में सम्मिश्रण नए सरोकारों व आयामों को प्रस्तुतकर, साहित्य समृद्धि का घोतक बनता है।

संदर्भ सूची :–

1. वतन से दूर।
2. उषा प्रियंवदा–जिन्दगी और गुलाब के फूल।
3. धूप में रूठी चांदनी, डॉ0 सुधा ओम दीगरा।
4. महाकवि प्रो0 हरिशंकर आदेश, फागुन आया रे ....।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 102-105
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गाँधीवाद और प्रवासी हिन्दी साहित्य

अंजलि शर्मा
शोधार्थी, कल्याणी विश्वविद्यालय।

शोध सार :–

गांधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक दर्शन, एक विचार, एक आंदोलन हैं। गांधी का चिंतन समाज, साहित्य और राजनीति बल्कि ऐसा कहें कि जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है तो अतिशयोक्ति न होगी। महात्मा गांधी विश्व के लगभग सभी देशों में एक मॉडल एक रूप मे, विचार के रूप में, जीवन की शैली के रूप में कुछ ऐसे सरोकार सबके सामने उपस्थित किए हैं जिसे कोई विस्मृत नहीं कर सकता। आज जब विश्व के सामने हिंसा की चुनौती, सह अस्तित्व की चुनौती, पर्यावरण संकट तथा पारिवारिक विघटन होते जा रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति लोगों के दिलों–दिमाग पर चढ़ी हुई है– ऐसे में गांधी जी के सत्य, अहिंसा और विश्व बंधुत्व की बात करना आवश्यक हो जाता है तथा गांधी आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हो जाते हैं।

मूल शब्द :– महात्मा गांधी, प्रवासी साहित्य, सत्य, अहिंसा, विश्वबंधुत्व, नस्लवाद, रंगभेद आदि।

प्रस्तावना :–

बैरिस्टर के रूप में अपने जीवन का आरंभ करने वाले मोहनदास के जीवन की परिवर्तनकारी घटना दक्षिण अफ्रीका में उनका प्रवास माना जाता है। यह प्रवास गांधी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। गांधी जी ने स्वयं स्वीकार किया हैं कि– ''मैं गया तो वहाँ पैसा कमाने था, लेकिन वहाँ जाकर मेरे जीवन का दृष्टिकोण ही बदल गया।''[1] सन् 1893 से 1914 ई. तक के प्रवास काल के दौरान गांधी जी ने महसूस किया कि वहाँ रहने वाले भारतीयों और अश्वेतों के प्रति सरकार का व्यवहार अत्यंत निंदनीय था। रंगभेद के चलते इन लोगों के साथ अत्यंत दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता था। मताधिकार जो कि एक आधुनिक और मानवीय हितों के अनुकूल अपनी पंसद का चुनाव करने का कारगर तरीका होता है। भारतीयों प्रवासियों को उस अधिकार से वंचित करने के लिए जून 1894 में एक विधेयक नेटाल की विधान सभा में पेश होने वाला था। अंग्रेजी का अल्पज्ञान होने के कारण भारतीय इस विधेयक के परिणाम और प्रभाव से अपरिचित थे। गाँधी जी ने इस विधेयक के दुष्परिणाम को भारतीय प्रवासियों को समझाया और कहा ''यह तो भारतीयों की हस्ती मिटा देने की ओर पहला कदम है।''[2]

इस पर भारतीय प्रवासीयों ने उनसे आग्रह किया कि वह नेटाल में रूके और उनकी ओर से संघर्ष करें। गांधी जी ने उपेक्षितों को उनके अपेक्षित अधिकार दिलाने के लिए संगठित और एकजुट किया और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए देश में 'नताल इन्डियन कांग्रेस' की स्थापना की और भारतीयों को संघर्ष करने के किए प्रेरित किया। गांधी जी का कहना था कि–''जनतंत्र का फल उनको ही मिलेगा जो उसकी कीमत चुकाएंगे

और इसका अर्थ है अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए उन्हें कठिन संघर्ष करना है।"[3]

गाँधी जी के सत्याग्रह, अहिंसा और विश्व बंधुत्व, ये वे ब्रह्मास्त्र थे, जिन्होंने अपनी शक्ति और सामर्थ्य से समस्त विश्व को स्तबद्ध कर दिया। दीन–दलित, शोषित–उत्पीड़ित के हित संधान के लिए अपनी आवाज़ उठाने वाले गांधी जी की यह अतुलनीय और असाधारण विचारधारा का ही परिणाम था कि उनके सिद्धांतों से प्रभावित होकर दलाई लामा, नेल्सन मंडेला, बराक ओबामा, मदर टेरेसा और जूनियर मार्टिन लूथर किंग जैसे न जाने कितने वैश्विक नेताओं ने उनकी विचारधारा से प्रेरणा ग्रहण की और उसके अनुसार अपनी सोच में आमूलचूल परिवर्तन किया। प्रख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन तो महात्मा गांधी से प्रभावित होकर यहाँ तक कह देते हैं कि "आने वाली पीढियाँ मुश्किल से ही विश्वास कर पाएंगी कि गांधी जैसा हाड़–मांस का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ होगा। वह इंसानों में एक चमत्कार था।"[4]

डॉ. जॉन हेन्स होम्स ने कहा था कि "गौतम बुद्ध और ईशा मसीह के बाद महात्मा गांधी सबसे महान व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हुए।"[5] और इस महान व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति भारतीय साहित्य के साथ–साथ प्रवासी लेखकों के लेखन में भी देखने को मिलता है। गांधी जी के चरित्र और जीवन दर्शन ने प्रवासी साहित्यकारों को गहरे तक प्रभावित किया है। हिन्दी साहित्यकारों में माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, भवानी प्रसाद मिश्र आदि कवियों ने गांधीवादी विचारधारा को अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भवानी दयाल सन्यासी और कमला प्रसाद मिश्र जैसे प्रवासी साहित्यकारों ने विदेशों में गाँधीवादी विचारधारा की नींव रखी। समकालीन साहित्यकारों में मॉरीशस से अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर, त्रिनिदाद से हरिशंकर आदेश, अमेरिका से उषा प्रियंवदा और सुषम वेदी, ब्रिटेन से अचला शर्मा और तजेंद्र शर्मा, अबूधाबी से कृष्ण बिहारी आदि प्रवासी साहित्यकारों ने गाँधीवादी विचारधारा को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

मॉरिशस के प्रसिद्ध साहित्यकार अभिमन्यु अनत प्रवासी साहित्य के विशेषज्ञ डॉ. गोयनका को दिए गए एक साक्षात्कार में गांधी जी के प्रति अपनी सम्मान भावना को प्रदर्शित करते हुए कहते हैं– "महात्मा गांधी जी ने अपनी मॉरिशस यात्रा के दौरान मॉरिशस की जनता को एक नई चेतना दी। एक अभय दान दिया, शक्ति दी और उन्होंने उस समय यह भी आह्वान किया कि मॉरिशस की भारतीय जनता अपने को राजनीति में सक्रिय करे और अपने देश की प्रतिष्ठा के लिए वह कर दिखाए जिससे उनके पूर्वजों का देश भारत उन पर गर्व कर सके।'[6]

यही भवना अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'गांधी जी बोले थे' का पात्र प्रकाश में दिखती है, जो गाँधीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। प्रकाश का विचार है कि–"हिंसा मेरे विचार में नहीं है.. मैं कायरों को अहिंसा का पाठ नहीं सिखा उसी तरह जैसे अंधे व्यक्ति को जंगल की सुंदरता नहीं दिखाई जा सकती। अहिंसा विराता का सर्वोच्चय रूप है..।"[7]

रामदेव धुरंधर के उपन्यास 'पथरीला सोना' जिसके चौथे और छठे खंड में गांधीजी के बारे में विस्तार से लिखा गया है। चौथे खंड में 1947 भारत की आजादी तथा छठे खंड 1968 में मॉरीशस की आजादी का वर्णन है। रामदेव धुरंधर लिखते है कि–"मॉरीशस में लोग गांधीजी से बहुत प्रेरित थे। घर–घर गांधी जी की चर्चा होती थी और उनकी प्रेरणा से ही मॉरीशस को आजादी मिली।"[8]

मानव के उपासक, अपनेपन के अभिलाषी प्रो. हरिशंकर आदेश साहित्य और संगीत की मधुर वर्षा में मानवतावाद के अनुप्रेरक दिखाई देते हैं। उनकी समस्त रचनाएं गाँधीवादी विचारधारा से ओत–प्रोत है, कवि का मन चारों और फैली आराजकता, स्वार्थपरता, अवसरवादिता, जातिवाद, संप्रदायवाद और सामाजिक–वैयक्तिक विसंगतियों से आक्रांत है। कवि लिखते हैं कि :–

"जातिवाद ने, प्रांतवाद ने, भाषा ने बाँटा है
वर्ण भेद के विषधर ने मानव–मन को काटा है।
बिखर रहा है विश्व गुटों में, धर्म हुआ है विस्मृत
आहत मानवता के गृह में छाया सन्नाटा है।"[9]

महाकवि हरिशंकर आदेश जी का हृदय अपने देश समाज, साहित्य एवं अपनी सभ्यता व संस्कृति के प्रति अथाह अनुराग एवं सम्मान से भरा हुआ है। उनका यह अनुराग मात्र भारत एवं भारतीय जनता के प्रति के ही नहीं है बल्कि वह प्राणिमात्र का कल्याण करने का अनुराग है। वह समस्त विश्व को अपना घर परिवार मानते हैं और विश्व प्रेम एवं बंधुत्व की कामना करते हैं। यही उनका धर्म है, यही उनका कर्म है। उनके अनुसार–

"एक सूत्र में बांधे सबको,
उगा परस्पर प्रेम–स्वधर्म,
सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय,
सदा धर्म का यथार्थ मर्म।"[10]

यूरोप और उत्तरी अमेरिका के प्रवासी साहित्य में गांधी प्रत्यक्ष रूप से तो विद्यमान नहीं है परंतु अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य विद्यमान है। जहां भी नस्लवाद, भेद–भाव, अत्याचार, मानव अधिकारों का हनन होगा, जहां भी परिश्रम और स्वालंवन की बात होगी वहाँ गांधी जी अनायास ही खड़े हो जाएंगें। तजेंद्र शर्मा की कहानी 'बेतरतीब जिंदगी' और उषा राजे जी कहानी 'यूं कदम आगे बढ़े' में प्रवासी जीवन की पीड़ा, विषमताएं, अकेलापन की समस्या आदि का चित्रण बारीकी से किया गया है जिसमें गाँधीवाद का प्रभाव, गांधी विचार और गांधी दर्शन प्रकट होता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि महात्मा गांधी विश्व के लगभग सभी देशों में एक मॉडेल एक रूप मे, विचार के रूप में, जीवन की शैली के रूप में कुछ ऐसे सरोकार सबके सामने उपस्थित किए हैं जिसे कोई विस्मृत नहीं कर सकता। आज जब विश्व के सामने हिंसा की चुनौती, सहअस्तित्व की चुनौती, पर्यावरण संकट तथा पारिवारिक विघटन होते जा रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति लोगों के दिलों–दिमाग पर चढ़ी हुई है– ऐसे में गांधी जी के सत्य, अहिंसा और विश्व बंधुत्व की बात करना आवश्यक हो जाता है तथा गांधी आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हो जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. https://www.setumarg.com
2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी और गांधीवाद, स्मृति उपाध्याय, शोधग्रंथ, पृ. 37
3. https://www.setumarg.com

4. गांधी, दक्षिण अफ्रीका से भारत आगमन और गोलमेज सम्मेलन तक, खंड 1, रामचंद्र गुहा, अनुवाद सुशांत झा, पेंगुइन बुक्स।
5. प्रहालाद रामशरण– महात्मागांधी और मॉरीशस पर उनका प्रभाव,2011 का हिंदी अनुवाद।
6. हिंदी का प्रवासी साहित्य, कालीचरण स्नेही, आराधना ब्रदर्स, पृ. 10
7. गांधीजी बोले थे, अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन।
8. पथरीला सोना, रामदेव धुरंधर।
9. प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति, सुनील पाटिल।
10. प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति, सुनील पाटिल।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 106-110
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य में बिखरते जीवन मूल्यों का दर्द

दीक्षा गुप्ता
शोधार्थी, हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता– 700073

प्रवासी साहित्य अपने लंबे संघर्षों के बाद वर्तमान में किसी पहचान का मोहताज नहीं है। अभिमन्यु अनंत से लेकर दिव्या माथुर तक आते हुए प्रवासी साहित्य के स्वरूप में बहुत बदलाव आया है। जिस तरह हमारी पूर्व पीढ़ी दाल–भात में संतुष्ट हो जाती थी, समाज और संस्कृति की रक्षा करते हुए बढ़ती थी परंतु वर्तमान पीढ़ी पिज्जा–बर्गर को भोजन मानती है, पॉप कल्चर को अपनाना चाहती है। उसी तरह प्रवासी भारतीय जिस भारतीय संस्कृति और स्वदेश प्रेम को हृदय में बसाए विदेश गई थी वह सारे मूल्य उनकी अगली पीढ़ी में पूर्णतः स्थानांतरित नहीं हो पाई। जब एक भारतीय अपने ग्राम से निकालकर शहरों में जाता है तो उसे भी बहुत संघर्ष करते हुए अपने लिए जमीन तैयार करनी पड़ती है। उसी तरह एक प्रवासी भारतीय भी विदेश जाकर पराए लोगों के बीच अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है और जगह बनाता है।

ऐसे में उसका अपने स्वदेश के प्रति प्रेम सदैव बढता रहता है। वह अपनी मातृभूमि को, अपनी संस्कृति को अपने छोटे से आशियाने में सँजोए रखता है। अपनी मिट्टी से प्रेम करता हुआ वह अपनी मिट्टी में ही अपनी अंतिम परिणति की आशा करता है परंतु जब उसकी युवा पीढ़ी अपने देश भारत को 'इंडिया' कहती है, उसकी संस्कृतियों को दकियानूसी समझती है तब प्रवासी रचनाकार की आत्मा दुःखी हो जाती है और वह अपने कलम की ताकत से नयी पीढ़ी को सही दिशा दिखाने के लिए तत्पर हो जाता है। हालांकि भारतीय युवा वर्ग भी पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित है ऐसे में प्रवासी साहित्य भारतीयों को अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों को संग्रहित करने और अपनाने की सीख देती है। वह भारतवासी और भारतीय समाज को विदेशी चकाचौंध भरे जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती है।

सभी प्रवासी रचनाकारों के साहित्य में यदा–कदा बिखरते जीवन मूल्यों का दर्द दिखता है चाहे वो तेजेन्द्र शर्मा हो, जकिया जुबेरी हो, सुषम वेदी हो, दिव्या माथुर हो, जय वर्मा हो, अर्चना पैन्यूली हो, सुधा ओम ढ़ींगरा हो आदि। पाश्चात्य संस्कृति एक भौतिकवादी संस्कृति है। वह भोगवाद को बढ़ावा देती है। वर्तमान युग संक्रमणवादी संस्कृति का युग है। ऐसे में भारतीय संस्कृति बहुत ही उदारवादी संस्कृति है, वह अन्य संस्कृतियों के साथ सामंजस्य बैठा लेती है। भारतीयों की यह खासियत भी है कि वे कहीं भी रहें, अपनी संस्कृति को नहीं भूलते हैं। यही दृष्टिकोण उनके साहित्य में भी प्रस्तुत होता है।

प्रवासी साहित्य में बिखरते जीवन मूल्यों का दर्द के संदर्भ में प्रवासी रचनाकारों की कहानियों को देखा जा सकता है। जाने–माने कथाकार तेजेंद्र शर्मा प्रवासी साहित्य के हस्ताक्षर लेखक हैं। उनकी कहानी 'कोख

का किराया' भारतीय मूल्यों के बिखराव की कहानी है। लेखक भारत से लेकर ब्रिटेन में जाकर बसने तक जीवन में अनेक आयामों को देखा–भोगा है। यही देखा और भोगा यथार्थ उनकी कहानियों में प्रस्तुत हुआ है। 'कोख का किराया' कहानी में मनप्रीत खुले विचारों की है। वह नियमों को तोड़ना पसंद करती है। लेखक के शब्दों में – "मनप्रीत की सोच तो हमेशा से यही रही है, यह मनुष्य का जन्म क्या बार–बार मिलता है? अरे जीवन के मजेले लो! नहीं तो भगवान भी वापस धरती पर भेज देगा कि जाओ, अभी कितने काम करना बाकी है तुमने चरस नहीं चखी, सिगरेट का धुआं नहीं उड़ाया, शराब का स्वाद नहीं जाना यू बोर! गो बैक अगेन !"[1]

मनप्रीत लंदन में रहते हुए विदेशी चाल ढाल में ही ढल गई थी। उसने अपने नाम को भी छोटा करके मैनी कर लिया था ताकि वह भी ब्रिटिश लग सके। उसकी माँ उसे हमेशा ही समझाया करती थी कि वह गोरे लड़कों के साथ ज्यादा मेलजोल ना रखें। उसकी मां अपनी बेटी को एक भारतीय स्त्री के रूप में ही देखना चाहती है परंतु मैनी अपनी मां की हर बात को टाल देती है। मनप्रीत की माँ की बेचैनी को लेखक ने इस तरह प्रस्तुत किया है– "माँ को तो प्रीतो का गोरे लड़कों के साथ मेलजोल कभी भी सहन नहीं होता था। ओए तू गाय का मीट खाने वालों से कैसे बोल लेती है। दुनिया आवाज की गति से तेज उड़ान भर रही है और माँ अब तक गाय के चक्कर में पड़ी है। कितनी अनपढ़ है माँ भी, बीफ़ को बीफ़ न कहकर गाय का मीट कहती है। मनप्रीत तो आज भी खाना पकाने के लिए रसोई में जाने के मुकाबले मैक डॉनल्ड का हैम् बर्गर मंगवाना पसंद करती है। हैप्पी मील ! बिगमैक! बेकन डबल चीज बर्गर! क्वार्टर पाउडर! और न जाने क्या–क्या !"[2]

मनप्रीत के माँ की बेचैनी एक प्रवासी भारतीय की बेचैनी है। एक प्रवासी भारतीय अपनी संतान को भारतीय संस्कारों को मानते हुए देखना चाहता है। परंतु उनकी अगली पीढ़ी मनप्रीत की तरह ही मैनी बन जाते हैं। मनप्रीत बनी मैनी अपने माता–पिता की बात ना सुनकर उसका परिणाम भी आगे भुगतते हैं। कहानी में मनप्रीत एक गैरी नामक ब्रिटिश रेल ड्राईवर से शादी कर लेती है। गैरी भारतीय स्त्रियों के संस्कारों से बहुत ही प्रभावित था यही कारण है कि वह मनप्रीत से विवाह करता है। परंतु मनप्रीत का भारतीय संस्कारों और मूल्यों से दूर–दूर तक कोई भी नाता नहीं रहता है। जिस वजह से मनप्रीत और गैरी के रिश्ते में दूरियां आ जाती हैं। मनप्रीत अपने पति के इच्छा के विरुद्ध फुटबॉल खिलाड़ी डेविड के बच्चे किसे रोगेट बनती है।

असल में मनप्रीत डेविड को बहुत पसंद करती थी परंतु डेविड अपनी पत्नी जया से बहुत प्रेम करता है। जया एक भारतीय है। उसके व्यक्तित्व में एक ठहराव है और वह अपने मूल्यों के साथ समझौता नहीं करना चाहती हैं। जबकि मैंने के व्यक्तित्व में ठहराव नहीं है। यही कारण है कि मनप्रीत अपने एक निर्णय और लालसा की वजह से अपने पति से भी दूर हो जाती है और डेविड और जया के बच्चे को जन्म देने के बाद वह भी उससे दूरी बना लेते हैं अर्थात् मनप्रीत पूरी दुनिया में अकेली हो जाती है और तब उसे अपनी मां की बातें बार–बार याद आती हैं। पूरी कहानी फ्लैश बैक में चलती है। लेखक ने बहुत करीब से विदेशी जीवन को देखा है और मनप्रीत जैसे भारतीयों के विदेशी जामा पहनने के बाद की गति को भी देखा है। यही कारण है कि लेखक भारतीय मूल्य और संस्कारों को जीवंत बनाए रखने की प्रेरणा इस कहानी के माध्यम से देते हैं।

इसी संदर्भ में जकिया जुबेरी की कहानी 'सांकल' भारतीय मूल्यों के विघटन की कहानी है। इस कहानी में सीमा एक अच्छी पत्नी और एक अच्छी मां है जिसमें अपने पति और बेटे कि पूरे समर्पण के साथ सेवा की है। वह विदेश में बैठकर भी अपने बेटे समीर को अपने पति जैसा बनने से रोक नहीं पाती है। आज भी हमारे

देश में पुत्र को माता–पिता के अंधे की लाठी मानी जाती है। उसे ही वंश परंपरा को आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा जाता है। कहानी की सीमा अपने पुत्र समीर द्वारा किए गए अपमान और उसके द्वारा दिए गए चोट पर यकीन नहीं कर पा रही है। लेखक एक प्रवासी मां के दुःख को व्यक्त करते हुए लिखते हैं– "आज उन्हीं हाथों ने उसके बदन.... उसके दिलो–दिमाग को चूर–चूर कर दिया है। नील के निशान ने उसकी तीस वर्षों की तपस्या को तार–तार कर दिया है। नील का निशान तो समय के साथ धुंधला होकर मिट जाएगा पर मन पर लगा यह झटका..... यह जख्म कैसे भरेगा... । रिसता रहेगा। क्या यह मेरे दिए हुए संस्कार हैं? सीमा कुछ समझ नहीं पा रही–बिल्कुल ब्लैंक हो गई थी।"[3]

सीमा अपने बेटे समीर को बहुत प्यार से ममता की छांव में पालती है परंतु वही पुत्र बड़ा होने के बाद किसी की नहीं सुनता है। वह विदेशी परिवेश में रहते हुए विदेशी कल्चर में ढल जाता है। सीमा आज की नई पीढ़ी के मिजाज को समझती थी इसलिए वह अपने बेटे से प्रश्न भी सोच समझकर ही पूछा करती थी। समीर अक्सर अपने घर में विदेशी लड़कियों को लेकर आता था और सीमा उसे समझाती थी– "नहीं बेटे हमारा यह कल्चर नहीं है। यहां तुम्हारी बहन के सात–आठ वर्ष के बच्चे आते हैं वह क्या समझ पाएंगे इस रिश्ते को उनको क्या बताया जाएगा।"[4]

आज की नई पीढ़ी के उसूल दोहरे मापदंड पर चलते हैं। एक प्रवासी मां अपने बेटे के दोहरे उसूलों को समझते हुए भी समझा नहीं पाती है। समीर अपने मामले में तो पश्चिमी मूल्य रखता है परंतु अपनी मां और बहन के मामले में भारतीय मूल्यों की दुहाई देने लगता है। समीर ने जिल नामक एक विदेशी स्त्री से विवाह किया था। जिल एक बहुत अच्छी लड़की है वह एक कंपनी के ऊंचे पद पर काम करती थी फिर भी वह भारतीय मूल्यों और संस्कारों को पूर्णता अपनाने की कोशिश करती है। वह अपने पति समीर के लिए सुबह उठकर नाश्ता बनाती थी घर को साफ सुथरा करने के बाद ही घर से निकलती थी। फिर भी समीर को उससे बहुत सारी शिकायतें थी। समीर के अंदर भारतीय पुरुषवादी सोच बहुत गहरी थी। वह उम्मीद करता था कि यदि वह रात को जागे तो जिल को भी जागना चाहिए। लेखिका ने इस कहानी में नई पीढ़ी मैं भारतीय मूल्यों और संस्कारों के विघटन की समस्याओं को रेखांकित किया है।

जयवर्मा की कहानी 'गुलमोहर' भी भारतीय मूल्यों और संस्कारों को ताक पर रखते हुए एक निर्मम पुत्र और ममतामयी माँ की कहानी है। कहानी की मां कमला भारत में अपने गुलमोहर नामक पुश्तैनी कोठी मैं अकेले रहती है। कमला के पति की आकस्मिक मृत्यु होने के बाद से वह अकेले ही रहती है। उसका बेटा ध्रूव कनाडा में रहता है। कमला और उसके पति सेठ ललित ने अपने बेटे ध्रूव की शिक्षा दीक्षा में कोई कमी नहीं छोड़ी। कमला अपने बेटे को रात भर पढ़ते हुए देखकर उसे नींदना आ जाए इसलिए कॉफी बनाकर देती और रात भर आराम कुर्सी पर बैठकर बुनाई करती। जयवर्मा ने कमला के पुत्र–प्रेम को प्रकट करते हुए लिखती हैं– "कितने चाव से रास्ते में खाने के लिए चीजें तैयार की जाती थी। दो दिन पहले ही मट्ठी, नारियल के कटे हुए टुकड़े तथा चिरौंजी वाली बर्फी और देशी घी के, बेसन के लड्डू खरबूजे के बीज डालकर बांधे जाते थे। कमला के हाथ लड्डू बनाते समय प्यार से कुछ ज्यादा ही बड़े लड्डू बनाने लगते थे।... नैनीताल में ठंड बहुत पड़ती है। तुम प्रतिदिन दो लड्डुओं के साथ गर्म दूध पी लेना।... सर्दी नहीं लगेगी और मेरा लाल भूखा भी नहीं रहेगा।"[5]

माता–पिता अपने बच्चे की खुशी में ही खुश रहना जानते हैं। कमला भी अपने बेटे के खुशी में खुश है

वह कभी नहीं चाहती थी कि उसका बेटा इतनी दूर कनाडा में जाकर बस जाए। अब कमला के जीवन मे वह पुश्तैनी कोठी गुल मोह रही है जो उसके यादों का पिटारा है। ध्रूव कनाडा में बॉर्डर पार 00 करते ही नियाग्रा फॉल के पास झील के किनारे बसे एक छोटे शहर में रहता था। वह वहां एक छोटा मोटल खोलना चाहता था। मोटल खोलने के लिए ध्रूव अपनी माँ के जीवन के आखरी सहारे गुलमोहर को बेच देता है। ध्रूव अपने स्वार्थ के लिए अपनी मां को बेघर कर देता है। वह कहता है– "माँ आपको मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं है। मैं मकान बेचने में अपने आपको गुनाहगार नहीं मानता। यह बात उसूल की है। मैं अपना हक ही ले रहा हूँ। यह तो हमारा पुश्तैनी घर है और पापा हमेशा कहा करते थे कि यह मकान में राही है। कोई और क्यों बुरा मानेगा? किसी और का हिस्सा तो नहीं ले रहा हूँ मैं? मां मैं आपका अकेला बेटा हूँ।"[6]

आज की नई पीढ़ी अपने स्वार्थ के लिए झूठे उसूल और सिद्धांत का हवाला देती है। ध्रूव अपनी माँ से न केवल उनके जीने का सहारा चिंता है बल्कि एयरपोर्ट पर उन्हें अकेला छोड़कर कनाडा चला जाता है। कमला अपने बेटे द्वारा किए गए धोखे पर विश्वास नहीं कर पाती है। वह बार–बार अपने मन को सांत्वना देती रहती है कि जरूर कोई काम पड़ गया होगा लेकिन उसका मन भी जानता है कि उसके बेटे ने उसके साथ धोखा किया है। प्रवासी साहित्यकार जय वर्मा इस कहानी में भारतीय मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए चिंतित हैं। आज की नई पीढ़ी विदेशी जामा पहनकर खुद को भी विदेशी समझ बैठती है। वह अपने भारतीय मूल्यों और संस्कारों को एक झटके में भुला देती है।

पुष्पा सक्सेना की 'तस्वीर' कहानी भारतीय मूल्यों और संस्कारों की कहानी है। इस कहानी में एक घर अहंकार के कारण बर्बाद हो जाता है। पति–पत्नी के बीच प्रेम ही सब कुछ होता है। यह कहानी एक अमेरिकी पत्रकार लिंडा की दो भारतीय महिलाओं नंदितारे (बांग्ला लेखिका) तथा सुप्रिया जादवानी से बातचीत कहानी का रूप ले लेती है जिसका मूलाधार अमेरिकी–भारतीय स्त्रियों की तुलनात्मक स्थिति का विवेचन है। लिंडा पाश्चात्य संस्कृति की प्रतीक है, उसे बहुत आश्चर्य होता है कि भारत में एक स्त्री अपना पूरा जीवन एक पति के साथ कैसे बिता देती है तथा क्या उसे चेंज की जरूरत नहीं होती? वही नंदी तारे जोकि भारतीय हैं उनका मानना है कि भारत में स्त्री भोग की वस्तु है परंतु हिंदी लेखिका सुप्रिया भारतीय स्त्री का दूसरा रूप प्रस्तुत करते हुए कहती हैं भारतीय समाज आज भी भारतीय नारी की सहिष्णुता और त्याग पर स्थिर है वरना वहां भी रोज तलाक होते रहते। सुप्रिया लिंडा से भारत के रिश्तों में आत्मीयता, प्रेम, लगाव, सौहार्द्र, अपनत्व की चर्चा करती है और बताती है कि यही सारी भावनाएं इंद्रधनुषी धागों में एक–दूसरे से परस्पर जुड़े रहते हैं।

प्रवासी साहित्यकारों ने अपने रचनाओं में प्रवासी भारतीय जीवन मूल्य के विविध स्वरों को उभारा है। उन्होंने प्रवासी जीवन का वर्णन करते हुए भारतीय मूल्यों और संस्कारों के बिखरने की कथा को प्रस्तुत किया है। प्रवासियों के भीतर एक रिक्तता और स्वदेश प्रेम का एहसास सदैव बना रहता है। वे सोचते हैं कि कहां यह विदेशी परिवेश में संबंधों की जड़ता और क्षणभंगुरता, जो आदमी को असंपृक्त और उदासीन बनाती जा रही है।

वहीं भारत में आत्मिक सुख–चैन के साथ व्यक्ति अमन–चैन के साथ रह सकता है। प्रवासी साहित्यकार अपने पात्रों में स्वदेश प्रेम की बेचैनी, मूल्यों और संस्कारों से दूर होते जाने की 'टीस' को दिखाकर मूल्यहीनता के दौर में मानव मूल्यों को बढ़ावा दे रहा है। आज के दौर में मानवतावादी मूल्यों की रक्षा कितनी जरूरी है यह हम आए दिन घटते घटनाओं सांप्रदायिक हिंसा, युद्ध, अशांति, आगजनी आदि से अंदाजा लगा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. http://gadyakosh.org/gk/
2. http://gadyakosh.org/gk/
3. https://www.hindisamay.com/content/9878
4. https://www.hindisamay.com/content/9878
5. शर्मा तेजेंद्र, डॉ. इंदुसिंह, प्रवासी कहानियां, सदीनामा प्रकाशन, कोलकाता, 33, प्रथम संस्करण– 2020, पृष्ठ संख्या– 61
6. वही, पृष्ठ संख्या– 69

ईमेल– guptadiksha08@gmail.com

मो. 8013064075

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 111-115
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Diasporic Literature : A Historical Perspective

Dr. M. Esther Kalyani Asirvadam
Reader in History, C.H.S.D. St. Theressa's College for Women (A),
Eluru, Eluru District, Andhra Pradesh.

Abstract :-

This research article explores the historical development and significance of diasporic literature, a genre that captures the experiences of individuals uprooted from their homelands. Tracing its origins to ancient civilizations, and literature, we examine how diasporic literature evolved through medieval and Renaissance periods, such as Sephardic Jewish writings and African slave narratives. We then delve into the modern era, where postcolonial literature emerged as a significant force, empowering formerly colonized writers to reclaim their narratives. Contemporary diasporic authors continue to explore themes of assimilation, acculturation, and the interplay between tradition and modernity.

The significance of diasporic literature lies in its ability to challenge traditional notions of identity, foster empathy, and promote cross-cultural dialogue. It serves as a vital tool for understanding the human condition and the challenges of displacement, cultural dislocation, and the search for belonging. Diasporic literature also contributes to the preservation and revitalization of cultural heritage, allowing diasporic communities to maintain their unique identities in new contexts. It empowers marginalized voices, expands the literary canon, and advocates for social justice.

Keywords :- 1. Diasporic literature, 2. Displacement, 3. Cultural transformation, 4. Identity, 5. Cross-cultural dialogue, 6. Cultural preservation.

Introduction :-

Diasporic literature, a genre that captures the essence of displacement, cultural transformation, and the longing for a sense of belonging, holds a significant place in the literary world. It is a realm where the experiences of individuals uprooted from their homelands find solace, expression, and communal understanding. Diasporic literature, with its historical roots in ancient civilizations and its continued evolution through different eras, holds a significant place in the literary world. Throughout

history, diasporic writers have crafted narratives that explore the complexities of displacement, cultural transformation, and the yearning for a sense of belonging.

The concept of diaspora, originating from the Greek term "diaspeirein," meaning "to scatter," encapsulates the essence of the human experience of migration, exile, and displacement. From the earliest civilizations to the modern age, countless communities have been forced to traverse unfamiliar territories, carrying with them the weight of their heritage, memories, and dreams. Diasporic literature emerges as a testament to the resilience and creativity of individuals navigating the complex intersections of culture, identity, and belonging.

Ancient Origins :-

In exploring the historical roots of diasporic literature, we encounter the rich tapestry of ancient civilizations where the seeds of this genre were first sown. Ancient Hebrew literature, as found in the Hebrew Bible, provides an enduring example of diasporic storytelling. The Book of Exodus recounts the arduous journey of the Israelites from Egypt to the Promised Land, embodying the struggles, aspirations, and faith of a displaced people. The narrative of Exodus not only conveys the physical journey but also delves into the emotional and spiritual landscapes of the diaspora experience.

Similarly, Greek literature of the Hellenistic period presents a vivid portrayal of diasporic themes. The great library of Alexandria became a melting pot for diverse cultures and languages, providing fertile ground for diasporic voices to emerge. Poets like Callimachus, who composed his works in Alexandria, captured the complexities of Greek immigrants' lives, their nostalgia for the homeland, and their quest to establish a sense of community in foreign lands. Through their verses, these ancient writers reflected the universal yearning for a place to call home, while navigating the challenges of cultural adaptation and preservation.

Medieval and Renaissance Periods :-

The medieval and Renaissance periods witnessed diasporic literature flourishing across different regions and communities. The expulsion of the Sephardic Jews from Spain in 1492 led to a significant diaspora, resulting in a distinctive body of Sephardic literature. Works such as Isaac Abravanel's "Dialogues" and Solomon ibn Verga's "ShevetYehudah" provide valuable insights into the experiences of Sephardic Jews, their resilience in the face of persecution, and their efforts to preserve their cultural identity amidst a changing world.

In the context of the African diaspora, the transatlantic slave trade stands as a tragic chapter in history. Yet, within this dark period, narratives of resilience and resistance emerged through the voices of enslaved individuals. Slave narratives, such as Olaudah Equiano's "The Interesting Narrative of the

Life of Olaudah Equiano," bear witness to the horrors of slavery while revealing the strength of the African diaspora. These powerful accounts not only exposed the brutalities of enslavement but also highlighted the indomitable spirit and quest for freedom that defined the African diaspora's journey.

Modern Era:

The modern era marks a turning point in the evolution of diasporic literature, as globalization and mass migrations reshaped the cultural landscape. The postcolonial wave of literature emerged as a powerful force, enabling formerly colonized writers to reclaim their narratives and articulate their experiences of displacement and cultural encounters. Renowned authors like Chinua Achebe, Jamaica Kincaid, and Salman Rushdie, to name a few, crafted literary works that confronted issues of cultural hybridity, colonialism's legacy, and the search for identity within a diasporic context.

Throughout the 20th and 21st centuries, diasporic literature continued to evolve, expanding its scope to incorporate diverse perspectives and explore new themes. Writers like Jhumpa Lahiri, Junot Díaz, and Chimamanda Ngozi Adichie navigated the intricacies of assimilation, the complexities of cultural negotiation, and the intergenerational transmission of cultural heritage. Through their storytelling, they provided profound insights into the challenges, triumphs, and multifaceted identities that define diasporic communities.

Significance and Impact :-

Diasporic literature holds immense significance as a cultural and literary phenomenon, leaving a lasting impact on both the writers who create it and the readers who engage with it. This genre serves as a vital tool for understanding the human condition, promoting empathy, and fostering cross-cultural dialogue. By delving into the experiences of displaced individuals, it illuminates the challenges of cultural dislocation, the longing for home, and the search for identity. Moreover, diasporic literature contributes to the preservation and revitalization of cultural heritage, enabling diasporic communities to maintain their unique identities in new contexts. Its significance lies in its ability to shape our perceptions of history, identity, and the interconnectedness of the global community.

One of the key contributions of diasporic literature is its power to challenge and disrupt traditional notions of identity. In exploring the experiences of diasporic individuals, this genre illuminates the complexities of multiple identities and cultural hybridity. By embracing and celebrating diversity, diasporic literature helps to dismantle the limitations of fixed identity categories, enabling readers to recognize the fluidity and richness of human experiences. It allows individuals from diverse backgrounds to find resonance and common ground in shared struggles, fostering a sense of collective understanding and empathy.

Furthermore, diasporic literature acts as a bridge between cultures, fostering cross-cultural

dialogue and promoting a deeper appreciation for diverse perspectives. Through the narratives of diasporic writers, readers gain insights into the histories, traditions, and customs of different communities, ultimately breaking down stereotypes and fostering a more nuanced understanding of cultural diversity. This intercultural exchange engendered by diasporic literature cultivates empathy, broadens worldviews, and nurtures a sense of global citizenship.

Diasporic literature also plays a crucial role in the preservation and revitalization of cultural heritage. For diasporic communities, the written word becomes a means to keep their traditions alive, maintain connections to their ancestral homelands, and transmit cultural knowledge across generations. Through storytelling and literary expression, diasporic writers contribute to the archive of cultural memory, ensuring that their histories and experiences are not forgotten. This preservation of cultural heritage is particularly significant in contexts where diasporic communities face the challenges of assimilation and cultural erasure.

In addition to cultural preservation, diasporic literature serves as a powerful tool for cultural revitalization and reclamation. It allows diasporic individuals to assert their identities, challenge dominant narratives, and reclaim agency in the face of historical injustices and systemic marginalization. By providing a platform for marginalized voices, diasporic literature contributes to the decolonization of literature and expands the canon to include narratives that have traditionally been overlooked or suppressed.

Moreover, diasporic literature has a profound impact on individual readers, as it provides them with a means to navigate their own complex identities and experiences. By encountering characters who grapple with issues of displacement, cultural negotiation, and the search for belonging, readers find validation and a sense of resonance with their own journeys. This literature offers a space for self-reflection, fostering a deeper understanding of personal histories and cultural roots.

Furthermore, diasporic literature has the potential to shape public consciousness and influence societal discourse. Through its exploration of issues such as race, ethnicity, immigration, and cultural assimilation, it engages with pressing social and political questions. By bringing these themes to the forefront of public discourse, diasporic literature challenges dominant narratives, exposes systemic inequalities, and advocates for social justice. It inspires readers to critically examine power structures and encourages them to actively participate in shaping a more inclusive and equitable society.

Conclusion :-

Diasporic literature has a rich historical foundation that spans ancient civilizations to the present day. Through various periods and across diverse cultures, this genre has explored the complexities of diaspora, providing insight into the universal experiences of displacement, identity

formation, and cultural hybridity.

Diasporic literaturehas its historical roots in ancient civilizations and throughout history, diasporic writers have crafted narratives that explore the complexities of displacement, cultural transformation, and the yearning for a sense of belonging. From ancient Hebrew literature to Greek poetry in Alexandria, from Sephardic Jewish writings to African slave narratives, the voices of the diaspora have persevered, leaving an indelible mark on the literary landscape. The modern era witnessed a flourishing of diasporic literature, as globalization and mass migrations reshaped the cultural milieu. Postcolonial literature became a powerful force, empowering formerly colonized writers to reclaim their narratives and explore the intersections of culture, identity, and diaspora. Contemporary diasporic authors continue to explore themes of assimilation, acculturation, and the interplay between tradition and modernity.

The significance and impact of diasporic literature lie in its ability to shape our perceptions of history, identity, and the interconnectedness of the global community. It challenges traditional notions of identity, fostering empathy and promoting cross-cultural dialogue. Diasporic literature serves as a vehicle for cultural preservation and revitalization, ensuring that diasporic communities maintain their unique identities in new contexts. It empowers marginalized voices, contributes to the decolonization of literature, and expands the canon to include narratives that have traditionally been overlooked or suppressed. Moreover, diasporic literature has a profound impact on individual readers, providing validation, self-reflection, and a deeper understanding of personal histories.

References :-

1. Achebe, C. (1958). Things Fall Apart. William Heinemann Ltd.
2. Adichie, C. N. (2006). Half of a Yellow Sun. Fourth Estate.
3. Díaz, J. (2007). The Brief Wondrous Life of Oscar Wao. Riverhead Books.
4. Equiano, O. (1789). The Interesting Narrative of the Life of Olaudah Equiano. Gustavus Vassa.
5. Kincaid, J. (1985). A Small Place. Farrar, Straus and Giroux.
6. Lahiri, J. (1999). Interpreter of Maladies. Houghton Mifflin Harcourt.
7. Rushdie, S. (1981). Midnight's Children. Jonathan Cape.
8. Shumway, D. R. (2003). Diasporic Literature and Theory – Where Now? The Journal of Commonwealth and Postcolonial Studies, 10(1), 1-16.
9. Siddiqui, S. (2016). Displacement and Belonging in Contemporary Postcolonial Fiction. Palgrave Macmillan.
10. Vermeulen, P., &Braidotti, R. (2013). Deleuze and Guattari: A Psychoanalytic Itinerary. Columbia University Press.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 116-122

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आदर्श मानव संबंधों के पुनर्गठन में प्रवासी हिन्दी कहानी साहित्य की भूमिका

डॉ. एस. कृष्णबाबु

अध्यक्ष, वाजा ए पी एवं हिन्दी साहित्य भारती, आन्ध्र प्रदेश इकाई, फ्लॉट नं 201
वल्लूरि विल्ला, लॉसन्स बे कॉलोनी, विशाखपट्टणम 530017

प्रत्येक युग में जब जब सामाजिक एवं राष्ट्रीय यथार्थ विकृत होकर उनके सदस्यों को त्रस्त कर देता है तो उसे सुधारने अथवा ध्वस्त करके पुनः विकसित करने की अनिवार्यता का अनुभव किया जाता है। यह तो सर्वविदित है कि समसामयिक भारतीय समाज विविध प्रकार की विसंगतियों से गुजरता हुआ उसके विविध सदस्यों को किंकर्तव्यविमूढ बनाता जा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् सत्तर वर्ष व्यतीत हो गए और इस अवधि में भारतीय समाज के अंतर्गत कौन–सी स्थितियाँ संपन्न हुईं, उन सबसे इस देश का प्रत्येक नागरिक पूर्णतया परिचित है। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत की तुलना की जाए तो थोड़ी बहुत संतुष्टि का अनुभव होता है। परंतु ज्यादातर निराशा का ही सामना करना पड़ता है। राजनैतिक क्षेत्र के हमारे नेतागण हमें तसल्ली देते हैं कि हमने आजादी के पश्चात् काफी तरक्की की। वर्ष 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। और उससे पहले उसने लगभग दो–ढाई सौ साल अंग्रेजों की गुलामी की। हमें तो अंग्रेजों ने पूरी तरह से लूट–कसोटकर छोडा था। उस समय भारत में सुई तक नहीं बनती थी। सारा देश राजा रजवाडों के झगडों में फँसा हुआ था। देश के मात्र 50 गाँवों में बिजली थी। पूरे राजस्थान के केवल 20 राजाओं के पास टेलीफोन था। किसी भी गाँव में नल नहीं थे। सीमाओं पर सिर्फ थोड़े–से सैनिक थे। चार विमान और 20 टैंक थे। देश की सीमाएँ चारों तरफ से खुली थीं। खजाना खाली था। ऐसी बाधाए में हिंदुस्तान आजाद हुआ।

इन सत्तर साल में भारत ने बड़ी मेहनत से अपने आपको सबसे बड़ी ताकतवर सिद्ध किया। सबसे बड़ी सेना तैयार की गई। हजारों विमान, हजारों टैंक, लाखों गाँवों में बिजली, हजारों बाँधों का निर्माण संपन्न हुआ। लाखों किलोमीटर की सड़कों का निर्माण हुआ। हर हाथ में फोन, हर घर में मोटर गाड़ी, हर परिवार में टेलीविजन। भारत का संविधान विश्व में ही सर्वश्रेष्ठ संविधान माना जाता है। बाबा न्यूक्लिअर रीसर्च सेंटर की स्थापना हुई, जिसने देश भर को कई फायदे दिए। तारापुर बिजली परमाणु घर शुरू हो चुका। पूरे देश में दर्जनों एआईएमएस, आईआईटी और सैकडों विश्वविद्यालय खुल चुके। नेहरू के समय में नवरत्न कम्पनियों की स्थापना हुई। कई साल पहले भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों को लाहौर के अंदर तक घुसकर मारा था और लाहौर पर कब्जा कर लिया था। पुर्तगाल को जीतकर भारत में मिला लिया गया था। आई. एस. आर. डी. की स्थापना

हुई। श्वेत क्रांति और हरित क्रांति के नाम पर कई शिखर हासिल किए गए। पूरे देश में भारी उद्योगों का जाल बिछा दिया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। सिक्किम को देश में जोड़ लिया गया। अनाज और गेहूँ के उत्पादन की दिशा में भारत पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो चुका था। भारत में हवाई जहाज और हेलीकोप्टर तक बनाए जाने लगे। सुपर कम्प्यूटर और इंटरनेट की व्यापक सुविधा ने इस देश की सूचना क्रांति में चार चाँद लगा दिया। विश्व में भारत सर्वाधिक विदेश मुद्रावाला कोश बन चुका। चंद्रयान, मंगल मिशन, जे एस एल वी, मेट्रो रेल और न्युक्लियर पनडुब्बी किस–किस का नाम लें, पृथ्वी, अग्नि, नाग जैसे अनेक मिसाइल यहाँ बनाए गए। वर्तमान भारत के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे विश्व के अन्य कई देशों के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों की तुलना में अत्यंत सुविधाजनक और अधिक आकर्षक माने जा सकते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि उपर्युक्त भौतिक उपलब्धियों से क्या इस देश का कोई भी नागरिक अथवा इस समाज का कोई भी सदस्य पूर्णतया संतुष्ट है? क्या यहाँ के सब लोग मानसिक रूप से इस देश के प्रशासन एवं समाज की व्यवस्था से पूर्णतया तृप्त हैं? क्या वे अपने चारों तरफ की स्थितियों से संतुष्ट होकर सुख एवं चैन का जीवन व्यतीत कर रहे हैं? तो इन प्रश्नों के उत्तर में हाँ कहने से हममें से किसीको भी बड़ा संकोच हो सकता है। बाहरी तौर पर होनेवाली प्रगति और उसके विविध उत्पादन हमें भौतिक सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं। परंतु मन को सुकून पहुँचाने की दिशा में इनकी भूमिका कदाचित् नगण्य मानी जा सकती है। बाह्य जगत की स्वच्छता की तुलना में मानव मात्र के अंतर्जगत की स्वच्छता का अधिक महत्व होता है। जब तक किसी समाज के विविध सदस्यों में चारित्रिक दृष्टि से सकारात्मक संस्कारों का उन्नयन नहीं होता तब तक वह समाज और उसका यथार्थ भयानक रूप से विकृत दिखाई देंगे।

स्वतंत्रता के पश्चात् हमने अपने देश के लिए बड़ी सशक्त सेनाएँ तैयार कर लीं और बाहर के दुश्मनों से इस देश की रक्षा करने में सफल हो गए। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि देश के अंदर ही पनपकर बढ़ने वाले आंतरिक शत्रुओं को नियंत्रित करते हुए उनसे इस समाज की रक्षा करने की दिशा में कोई कारगर कदम उठा नहीं पाए। पूरे देश में अनाचार, अत्याचार और भ्रष्टाचार की मात्रा दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। देश के जिन नेताओं को इन स्थितियों पर ध्यान देकर इन्हें दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए, वे ही नेतागण पूर्णतया इन स्थितियों में मग्न होकर ऐश कर रहे हैं। आजादी के पहले हमें मुगलों, मुसलमानों और अंग्रेजों ने लूटा था। अब आजादी के बाद हमें अपने ही लोग लूट रहे हैं। तो पता नहीं चलता कि ऐसी स्थिति से मुक्ति का क्या उपाय किया जा सकता है? नेतागण जब सकारात्मक संस्कार हीन होकर अपने ही जेब भरने में मग्न रहने लगे तो "यथा राजा तथा प्रजा" वाली लोकोक्ति का अनुसरण करते हुए जनता भी उन्हीं के पदचिह्नों पर आगे बढती जा रही है।

इस प्रकार भारत का समग्र समाज स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, जुगुप्सा, क्रोध जैसे मनोविकारों से पूर्ण व्यक्तित्व वाले लोगों से भरता जा रहा है। भारतीय समाज को यदि ऐसी दुर्दशा से मुक्ति दिलाकर उसे सकारात्मक चिंतन से युक्त व्यक्तित्व वाले सदस्यों से भरना हों तो उनके मध्य आदर्श मानव संबंध विकसित करने के लिये उन में आपसी विश्वास की भावना की श्रीवृद्धि अनिवार्य है। जब इस देश के प्रत्येक नागरिक में यह सद्भाव बढ़ेगा तो यहाँ का समाज यथापूर्व विश्व के सम्मुख उत्कृष्ट आदर्श एवं उनसे भरी संस्कृति प्रतिपादित कर पायेगा।

वास्तव में हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति विश्व के सम्मुख अनेकानेक भव्य आदर्शों और मूल्यों को

प्रदर्शित करती आई है। लोकहित एवं मानव कल्याण की दिशा में यहाँ की परंपराएँ, यहाँ तक कि यहाँ की सामाजिक रूढियाँ भी कार्यरत रहा करती थीं। परंतु दुख की बात यह है कि वर्तमान युग में ऐसी परंपराएँ लुप्त होती जा रही हैं और अंधविश्वासों को जन्म देने वाली सामाजिक रूढियों के ही प्रचलन और महत्व बढते जा रहे हैं। एक जमाने में भारत विश्व के अन्य देशों के सम्मुख अपनी सांस्कृतिक विरासत के असंख्य अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता था जिनसे शिक्षा पाकर वे देश अपनी संस्कृतियों को निखार चुके। परंतु हम हैं जो उन्हें भुलाकर समसामयिक सामाजिक यथार्थ को विकृत बनाने पर तुले हुए हैं। साहित्य विशेष रूप से प्रवासी साहित्य भारत के वर्तमान समाज की इस दुर्दशा से यहाँ के लोगों को मुक्त कर उन्हें सुकून–भरा जीवन प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य की कृतियों का अध्ययन करने से हमें एक ओर अपने सांस्कृतिक विरासत के मूल्यवान तत्वों का परिचय हो सकता है तो दूसरी ओर विश्व के अन्य देशों में प्रचलित सकारात्मक संस्कारों की जानकारी भी प्राप्त हो सकती है।

हिंदी में प्रवासी साहित्य का शुभारंभ मुंशी प्रेमचंद कृत "यह मेरी मातृभूमि" है। 1908 और शूद्रा 1926 नामक दो कहानियों से माना जा सकता है। समय के व्यतीत होते–होते किसी भी समाज की भौतिक स्थितियों में आमूल परिवर्तन आना अत्यंत सहज है। परंतु सास्कृतिक विरासत के आदर्शों तथा उनसे संबंधित परंपराओं में परिवर्तन आना उस समाज के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होगा। "यह मेरी मातृभूमि है" नामक कहानी में लेखक अपना देश छोड़कर अपनी आजीविका के लिए अमरीका चला जाता है। 90 साल की उम्र में अपना अंतिम समय अपनी मातृभूमि में व्यतीत करने के सदुद्देश्य से भारत लौटता है। तो उसे ताज्जुब होता है कि यहाँ की सारी स्थितियाँ बदल चुकी हैं। भौतिक यथार्थ ही नहीं, परंपरागत आदर्शों में भी आया हुआ परिवर्तन देखकर उसे बड़ी चिंता होने लगती है।

"अतिथिः देवोभवः" वाली आर्योक्ति भारतीय संस्कृति की एक खास विशेषता है। अनादि काल से अतिथियों को ईश्वर मानकर उन्हें सम्मान देना और भोजन आदि देकर संतुष्ट करना ही नहीं परंतु उन्हें सस्नेह आश्रय देकर विदा करना भी इस देश की एक परंपरागत सांस्कृतिक विशेषता है। इसीलिए प्रस्तुत कहानी का नायक, लेखक जो अपनी युवावस्था में अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अमेरिका गया हुआ था, 90 वर्ष की आयु तक उसने वहाँ पर्याप्त परिश्रम किया और महान् संपत्ति प्राप्त की। उसकी पत्नी अलौकिक सौंदर्यवती ही नहीं, परंतु सहधर्मचारिणी होने के कारण आज्ञाकारिणी एवं अपने पति को परमेश्वर माननेवाली परम पतिव्रता थी। पाँच ह्रष्टपुष्ट एवं सुशील पुत्र थे जिन्होंने लेखक के कारोबार में चार चाँद लगा दिए था। बड़े ही प्यारे नन्हें–नन्हें पौत्र समय–समय पर लेखक की गोद में किलकारियाँ मारते हुए खेला करते थे। इतना होने पर भी लेखक अपने 90 साल की अपनी वृद्धावस्था में अपने मातृभूमि के प्रति अटूट श्रद्धा एवं अपार भक्ति के कारण भारत लौट आते हैं।

भारत लौटने पर उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है कि यहाँ के माहौल पूरी तरह बदल चुके हैं। यहाँ के हृदय विदारक दृश्यों से दुःखी होकर लेखक ने एक आदमी से, जो देखने में सभ्य मालूम होता था, पूछा "महाशय! मैं एक परदेशी आदमी हूँ। रात भर लेटे रहने की मुझे अनुमति मिल सकती है?" उस आदमी ने लेखक को सर से पैर तक गहरी दृष्टि से देखकर कहा "आगे जाओ। यहाँ जगह नहीं है। लेखक आगे गया। वहाँ से भी यही उत्तर मिला। पाँचवी बार एक सज्जन से स्थान माँगने पर उसने लेखक के हाथ में एक मुट्ठी चने डाले। चने

लेखक के हाथ से छूट गए। और उनके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह निकली।उनके मुँह से सहसा निकल पडा, "हाय! यह मेरा देश नहीं कोई और देश है! यह हमारा अतिथि सत्कारी प्यारा भारत नहीं है कदापि नहीं।"

उपर्युक्त प्रसंग से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि विभिन्न भारतवासियों के अंतर्गत आपस में एक दूसरे के प्रति विश्वास की भावना पूरी तरह लुप्त हो चुकी है। और ऐसी स्थिति में कोई अपरिचित परदेशी के प्रति सद्भावना कैसे रख सकता है? अतिथियों का सत्कार करने का उपदेश देने वाली इस देश की सांस्कृतिक परंपराओं का प्रेमचंद के समय तक क्या महत्व रह गया है यह इस कहानी के द्वारा स्पष्ट हो जाता है। तो प्रेमचंद के लगभग 120 साल के बाद यह स्थिति और कितनी विकृत हो गई है इसका कोई भी विवेकशील सहृदय पाठक बड़ी आसानी से अनुमान लगा सकता है।

संपत्ति के प्रति मोह एवं स्वार्थी मानसिकता वर्तमान भारत के प्रत्येक नागरिक में कूट—कूट कर भरी पडी—सी लगती है। यहाँ तक कि लोग अपने स्वार्थी आशयों की पूर्ति के लिए अपने परिवार के सदस्यों अथवा नज़दीक के सगे—संबंधियों तक को प्राणां तक हानि पहुँचाने में तनिक भी संकोच नहीं करते। डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा कृत "कौन—सी ज़मीन अपनी" नामक कहानी पढ़कर सहृदय पाठक यही अनुभव करेगें कि आखिर हमारे देश के लोगों में व्याप्त क्रूर मानसिकता को कैसे दूर किया जा सकता है। विश्व के कई अन्य देशों में कदाचित ऐसी मानसिकता बहुत कम देखने को मिलती है। उन्हें देखकर हमें लगता है कि क्यों न हम भी स्वार्थ—रहित प्रवृत्तियाँ अपना कर अपने ही काम से संबंध रखते हुए आदर्श जीवन व्यतीत करें। डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा कृत उपर्युक्त कहानी की वस्तु चेतना संक्षेप में इस प्रकार है—

मनजीत सिंह और मनविंदर कौर बहुत समय से अमेरिका में बसे हुए एक अच्छे पति—पत्नी हैं। उनके दो प्रतिभावान बच्चे भी हैं जो डाक्टरी और वकालत पढ़कर वहीं स्थिर हो गए हैं। मनजीत सिंह तो अपने जीवन का अंतकाल पंजाब के खेतों में व्यतीत करना चाहता है। इसी उद्देश्य से वह अपनी पत्नी एवं बेटे के मना करने पर भी पंजाब में रहने वाले अपने भाइयों को खेत और जमीन खरीदने के लिए समय—समय पर बड़ी मात्रा में पैसे भेजता रहता है। बच्चों के विवाह के बाद मनजीत सिंह अपनी पत्नी मनविंदर को साथ ले कर पंजाब में अपना पैतृक गाँव नवाशहर पहुँचता है। परंतु उनके घर—परिवार में उनके साथ मेहमानों का सा व्यवहार किया जाता है तो मनजीत को वह कुछ विचित्र सा प्रतीत होता है। छोटा भाई ही नहीं, माँ—बाप के व्यवहार में भी काफी परिवर्तन आ जाता है। मनजीत जब अपने पैसों से खरीदी हुई जमीनों के हक की बात करता है तो उसका भाई उस पर बहुत ही क्रोधित हो जाता है। रात में अपने भाई की फुसफुसाहट भरी आवाज़ से पता लगता है कि उसकी योजना पति—पत्नी दोनों की हत्या करके उन्हें ठिकाने लगाने की बन चुकी है। मनजीत को यह भी पता चलता है कि उन लोगों ने अपनी इस योजना में पुलिस को भी शामिल कर लिया है। यह सब सुनकर मनजीत का हृदय छलनी हो जाता है।

अगले दिन जब आधी रात को मनजीत सिंह पानी पीने जब नीचे आता है तो उसे दारजी के कमरे से घुटी—घुटी आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं। दोनों भाई दारजी को समझा रहे थे— "मनजीत को समझा कर वापिस भेज दो, नहीं तो हम किसी से बात कर चुके हैं। पुलिस से भी सांठ—गांठ हो चुकी है। केस इस तरह बनाएंगे कि 'पुरानी रंजिश के चलते, वापिस लौटकर आए एन.आर.आई का कत्ल।' केस इतना कमज़ोर होगा कि जल्दी ही रफ़ा—दफ़ा हो जाएगा, बेशक अमेरिका की सरकार भी ढूँढ़ती रह जायेगी। कोई सुराग नहीं मिलेगा, ऐसी

अट्टी–सट्टी की है।" मनजीत और मनविंदर रात को ही चुपचाप घर छोड़कर निकल जाते हैं। मनजीत चलते वक्त मनविंदर से कहता है, "जान नहीं पा रहा हूँ कि कौन सी जमीन अपनी है।" प्रस्तुत कहानी द्वारा कहानीकार सहृदय पाठकों को यही संस्कार प्रदान करना चाहती है कि किसी को कभी भी कोई जमीन अपनी नहीं होती है। यदि होते हैं तो सिर्फ लोग अपने होते हैं, चाहे वे अपने देश के हों या विदेश के हों, आदर्श मानव संबंध सदैव स्थानीय अथवा प्रांतीय होंगे, यह कोई जरूरी बात नहीं।

सुषम बेदी कृत 'लौटना' कहानी का इतिवृत्त भी इसी तथ्य को स्पष्ट करती है कि समसामयिक भारत में पारिवारिक संबंध ही नहीं बल्कि सामाजिक संबंध भी विघटित हो चुके हैं क्योंकि भारत के ज्यादातर नागरिकों मे संपत्ति को भोगने की अधिकाधिक इच्छा बढती ही जा रही है चाहे वैसी संपत्ति के अर्जन के लिये उन्हें अनैतिक पद्धतियाँ अपनाते हुए अपने ही मित्रों को धोखा क्यों न देना पड़े। स्वार्थी प्रवृत्ति के बढते जाने के कारण स्नेह के माधुर्य से वंचित रहने के लिये भी लोग संकोच नहीं करते। इसी तथ्य को उजागर करने वाली 'लौटना' कहानी की वस्तु चेतना संक्षेप में इस प्रकार है।

सिद्धार्थ और गुरुप्रीत अच्छे मित्र थे। दोनों मिलकर बडी मुश्किल से पंजाब में हेन्ड टूल्स का एक फेक्टरी लगाते हैं। सिद्धार्थ के भरोसे पर कुछ और लोग भी उसमें पैसे लगाते हैं। थोड़े ही दिन बाद सिद्धार्थ को एक अमेरिकी कंपनी में नौकरी मिलती है तो वह फैक्टरी का सारा कारोबार गुरुप्रीत पर छोडकर अपनी पत्नी पूनम के साथ अमेरिका चला जाता है। तीन साल के अंदर अंदर गुरुप्रीत फैक्टरी के जरिये अच्छा खासा मुनाफा कमाता है परंतु सिद्धार्थ के दोस्तों को झूठ बोलकर उन्हें फैक्टरी से अलग कर देता है। उसी समय सिद्धार्थ छुट्टी पर भारत आता है तो वह गुरुप्रीत के इस व्यवहार से बहुत दुःखी होता है। लेकिन उसे लगता नहीं कि गुरुप्रीत खुद उसे धोखा देगा। वह लौटकर अमेरिका चला जाता है। फिर तीन साल बाद जब दोबारा सिद्धार्थ छुट्टी ले कर आता है तो देखता है कि गुरुप्रीत पूरी तरह बदल चुका है। वह इंडस्ट्रियलिस्ट लोगों के गुट में शामिल हो गया था। सिद्धार्थ की छुट्टियाँ खत्म होने वाली ही थी कि एक शाम को गुरुप्रीत के दोस्त तेजेन्द्र के घर पर पार्टी हुई। शराब के नशे में तेजेन्द्र ने स्पष्ट किया कि गुरुप्रीत के फैक्टरी में उसका शेयर है। सिद्धार्थ के पूछने पर वह कह उठा, 'फेक्टरी में गुरुप्रीत और मेरा फिफ्टी फिफ्टी है। उसके सारे दोस्तों के शेयर मैं ने खरीद लिये हैं।'

तेजेंद्र की इन बातों से सिद्धार्थ के चेहरे पर चिंता की जो परख चढ़ी वह कई दिनों तक उतरी नहीं। उसे अभी भी विश्वास नहीं होता कि गुरुप्रीत उसके साथ ऐसा धोखा कर सकता है। वर्तमान भारत के विविध प्रांतों में जाति या धर्म जो भी हों, ऐसे अनेक गुरुप्रीत मिलेंगे जिनके कारण मानव संबंधों को सुदृढ़ बनाए रखने की क्षमता रखने वाले नैतिक आदर्शों का नामोनिशान तक मिटता जा रहा है। इसी वजह से समाज के किसी भी क्षेत्र में पारस्परिक विश्वास का अस्तित्व नाममात्र के लिए भी दिखाई नहीं दे रहा है। जहाँ तक स्त्री पुरुष के मध्य वाले पारिवारिक मानव संबंधों का प्रश्न है, वहाँ भी पुरुषाधिक्य के साथ–साथ अहम भरी पुरुष मानसिकता पारिवारिक यथार्थ को विकराल बनाती जा रही है।

प्रवासी कहानी साहित्य में इस तथ्य का समर्थन करने वाली अनेकानेक कहानियाँ मिल जाती हैं जिनमें भारतीय पुरुष नारी को हीनता की दृष्टि से देखते हुए उसे पत्नी, दोस्त अथवा साथी न मानकर मात्र एक नौकरानी के रूप में देखने की चेष्टा करता है तो उसके परिवार में सुख और शांति के दर्शन कहाँ से हो पाएँगे! इसी कारण से अमरीका में रहने वाली भारत की लड़कियाँ अमरीकी युवक से पारिवारिक संबंध स्थापित करने

के लिए उद्यत हो रही हैं। सुधा ओम ढींगरा कृत 'क्षितिज से परे' कहानी का इतिवृत्त इस तथ्य का एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है। 17 साल की मेट्रिक पास सारंगी सुलभ के साथ नई–नई शादी करके अमरीका चली जाती है जहाँ किसी यूनिवर्सिटी में सुलभ को पी एच डी करने को प्रवेश प्राप्त हुआ था। तब से लेकर चालीस साल तक उनके दांपत्य जीवन में सुलभ सारंगी को हीनता की दृष्टि से देखा करता था और उसे जो भी बात कहनी होती तो वह उसे 'बेवकूफ' कहकर संबोधित करता था। चालीस साल की अवधि में अपने बच्चों और पोते–पोतियों के साथ काफी बढ़ गई थी। पेंटिंग भी इतना अच्छा करती कि उसके पेंटिंग की आसपास के कई शहरों में प्रदर्शिनियाँ लगा करती थी। फिर भी सुलभ की नजरों में वह बेवकूफ ही रह गई। ऐसी अवस्था में तलाक लेने वह वकील सुबह वर्मा के पास जाती है।

इस संदर्भ में उसका यह कथन विशेष उल्लेखनीय है, 'बच्चों के पास इतने वर्ष अपमानित हुई, पर ग्रांड चिल्ड्रन के सामने बेइज्जत होना नहीं चाहती। आगे वह यह भी कहती है, 'मेरी बेटियों ने स्थानीय पति ढूँढे हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें अमरीकी कल्चर से प्यार है। अमरीकी लड़कों के साथ गृहस्थी निभाते हुए भी वे भारतीय हैं। वे भारतीय व्यवहार, स्वभाव और मानसिकता से इतनी आहत हुई हैं कि भारतीय मर्दों और उनके दोहरे मापदंडों से नफरत करने लगी। प्रस्तुत कहानी द्वारा कहानीकार यही तथ्य साबित करना चाहती है कि भारत में पुरुष मानसिकता अन्य देशों की तुलना में अधिक निष्ठुर होती जा रही है जिसकी वजह से पारिवारिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक जगत के किसी भी क्षेत्र में सांस्कृतिक दृष्टि से सुविधाजनक जीवन व्यतीत करना असंभव होता जा रहा है।

जकिया जुबैरी कृत 'सांकल' कहानी की नायिका सीमा के जीवन से भी ये ही तथ्य स्पष्ट होते हैं। सीमा का पति अथवा समीर का पिता एक बड़ा ही निष्ठुर आदमी था। वह बन तो गया बड़ा आदमी, पर संस्कार नामक शब्द उसके शब्दकोश में था ही नहीं। सीमा नहीं चाहती कि समीर अपने बाप की भाँति कठोर पुरुष बने। इसी दृष्टि से वह बचपन से ही समीर को बड़े ध्यान से अच्छे संस्कार देने की चेष्टा कर रही थी। इसी आशय की पूर्ति के लिए उसने समीर की शादी जिल नामक एक अत्यंत सुशील एवं घरेलू नीली आँखों वाली अंग्रेजी लड़की से कर दी। जिल तो अपनी कंपनी में ऊँचे पद पर काम करती थी और सवेरे जल्दी उठ कर समीर का नाश्ता भी बनाती थी, घर को साफ–सुथरा करने के बाद ही घर से निकलती। सीमा को जिल की सारी आदतें बेहद पसंद थी। इसी लिए सास–बहू में गाढ़ी छनती थी। दोनों जैसी सहेलियाँ बन गईं थीं। अँग्रेज़ तो वैसे भी कभी एक दूसरे से उम्र नहीं पूछते... और न ही उनका पता,उनका पेशा या कौन–कौन सी कार चलाता है या कैसे आता–जाता है। किसी को किसी की कोई खोज नहीं रहती आपस में। केवल दोस्ती का रिश्ता होता है या नहीं भी होता...तो भी दुश्मनी नहीं होती।

द्रष्टव्य है कि पाश्चात्य जगत में सद्भावना भरी मानसिकता के कारण आदर्श व्यक्तित्व एवं अनुसरणीय चरित्र रखने वाले मनुष्यों का बोलबाला है। ऐसी विशेष प्रवृत्ति वाले लोगों के अभाव के कारण भारतीय सामाजिक जगत में न केवल विकृत यथार्थ का प्रचलन हो रहा है बल्कि दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों के प्रचलन से यहाँ के प्रत्येक नागरिक को अपना जीवन दुर्भर प्रतीत हो रहा है। वह अंदर से खोखला बनता ही जा रहा है। वह अपने चारों तरफ के परिसर में पनपने वाले व्यक्तियों और स्थितियों के विकराल रूप से त्रस्त होता जा रहा है। सामाजिक क्षेत्र में पारस्परिक विश्वास एवं सद्भावना पूर्ण मानव संबंधों के अभाव के कारण वह नितांत असंतुष्ट जीवन

व्यतीत कर रहा है। उसकी इस दुर्दशा को यथासंभव दूर करने की दिशा में प्रवासी कहानियाँ अपने पात्रों और उनके इर्द–गिर्द संपन्न होने वाली घटनाओं का रूपांकन करती हुई भारतीय जीवन को सार्थक बनाने की दिशा में अग्रसर होती प्रतीत होती हैं। उनकी यह चेष्टा तभी सफल हो पाएगी जब तर्कशील समालोचक उनकी व्याख्या तथा उनके विवेचन द्वारा अधिकाधिक सहृदय पाठकों को उन्हें पढ़ने और उनमें प्रतिपादित जीवन दर्शन का अनुसरण करने को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें।

संदर्भ :–

1. मानसरोवर, भाग 6, मुंशी प्रेमचंद, पृष्ठ सं 4
2. कौन सी जमीन अपनी, सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ सं 18
3. चिड़िया और चील, सुषम बेदी, पृष्ठ सं 84
4. साँकल, जकिया जुबैरी, पृष्ठ सं 105

मोबाइल नं. 8885990444

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 123-130
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी भाषा में प्रवासी जनजीवन

डॉ. सुरेश कड़वासरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी महासभा, नयी दिल्ली।

नोट :– अछोप खस– अन्तिम छोर पर खड़ा समाज।

भूमिका :–

मानुष; प्रकृति का सहचर बनकर उसके ताल में ताल मिलाने की कोशिश कर अपने वजूद को स्थापित करता है। वह पर्यावरणानुसार शरीर के नाक कान मुँह त्वचा से; अपने अंतरतम को आभासित करवाता है और हाथ पैर का सहयोग पाकर जिह्वा को लपलपाता है, जिससे मानुष के शारीरिक कर्म (स्थान–समय–शक्ति) लगन बौद्धिक क्षमता की गतिविधियों में; गति प्रदान होती है। तभी ही जिह्वा; मानस के मनोभावों को बोली में उद्धृत करती हुयी मंजनता में लपेटकर सुखद–दुखद राह का मार्ग प्रशस्त करती है। वह अपने; स्वभावानुसार क्षेत्र विशेष में जकड़ या सामंजस्य बनाकर; अड्डा जमा लेती है या वहाँ से निकलकर आसपास की बोली भाषा में समाहित का तालमेल बैठाती है और आगे की ओर अनवरत कदम बढ़ाने लगती है। वही; मानुष के प्रवास के दौरान क्षेत्र देश प्रदेश में प्रवास करती हुयी तत् स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों में घुल; प्रवासी जन की वस्तुतात्मकता में भाव के पुट के घोल को दर्शाती है। इसी का समुचित एनालिसिस करना ही कर्तव्य बौद्ध का अहसास करवाता है।

शब्द कुंजी :– जीवन, भाषा, प्रवासी, साहित्य, आमजन।

परिचय :–

बोली भाषा; अपने माइग्रेट के साथ–2 चलती है, तो जहाँ–2 कुनबा माइग्रेट होता है। वहाँ–2 उस दायरे में विराजमान रहती है। लेकिन माइग्रेट या क्षेत्र जन, जो भी अपने को; उच्च श्रेष्ठ मान लेता है, तो मानने वाला जन की बोली भाषा विशेष क्षेत्र या जन में सिमटकर रह जाती है या सर्वश्रेष्ठ मानक हेय भाव पैदा कर; सामने वाले की बोली भाषा को दबा; कुचल देता है। वह क्षेत्र विशेष में घुट–2 कर दम तोड़ती बचती रहती है। फिर भी वह; मानुष के आंतरिक तर्क कर्म की कार्य शैली को दर्शाती हुयी हर एक इंसाँ में; अपने सामर्थ्यानुसार बखूबी से अंज़ाम के आवरण को फैलाकर जीवन की बगिया के फूलों में खुशबू भरती है। यह अलग बात है कि किस बोली भाषा की महक; प्रकृति के साथ घुल–2 के कितनी दौड़ लगाती है। वह तो; उसकी प्रवृति पर पूर्णतः निर्भर करती है। जिस बोली भाषा के शब्द; ग्रहणशील व प्रयोजनमूलकता के गुणों से सराबोर होते हैं। वह अपने आधारानुसार क्षेत्र सम्युदाय में; शब्द भण्डार को निरन्तर बढ़ाने में; आमादा रहती है। वही बोली भाषा शनैः–2

अपने पर को; फड़फड़ाती हुयी दायरा विशेष को सम्मानपूर्वक लाँघकर प्रवास में भी; अपने प्रभाव को दर्शाती है, जो धीरे–2 आमजन के दैनिक जीवन में घुल मिलने लगती है। जिससे वह प्रवासीजन की क्रियाकलापों को आम करने लगती है। यह सार्वभौम अपनत्व सुदृढ़ता का भाव ही प्रवासी साहित्य में; बोली भाषा को पैदा करता है।

हिन्दी भाषा के उद्गम पर नजर डाले, तो हमें बोली के आरम्भिक दौर से गुजरना होगा। तभी ही प्रवासी जनजीवन में हिन्दी भाषा को तलाश सकते हैं। मानुश की प्रारम्भिक जिह्वा की ध्वनि पर गौर करें, तो यूरेशिया अफ्रिका अमेरिका प्रशांत भौगोलिक भाषा खण्डों में व्यक्त है। भारत में यूरेशिया भाषा खण्ड : 1. भारोपीय 2. द्रविड़ 3. आग्नेय/आस्ट्रिक/आस्ट्रोनीशियाई/आस्ट्रो–एशियाटिक 4. चीनी–तिबब्त–बर्मी 5. अण्डमानी 6. अन्य भाषा परिवार के रूप में देखा जा सकता है। भारोपीय भाषा परिवार : 1. ईरानी–यूरोपीय 2. इन्डो/हिन्द/भारत–यूरोपीय भाषा परिवार में विभक्त किया है व इन्डो/हिन्द/भारत–यूरोपीय भाषा परिवार का क. ग्रीक ख. इटैलिक ग. जर्मनिक घ. इंडो–इरानी ड़. अल्बानियाई च. अर्मेनियाई छ. हेलेनिक ज. सेल्टिक/केल्टिक झ. बाल्टो–स्लाविक/बाल्टिक ञ. अनतोलियाई ट. स्लाव ठ. तोख़ारी भाषा परिवार में वजूद देखा जा सकता है और इंडो–इरानी भाषा परिवार : अ. ईरानी ब. दार्दी स. नूरिस्तानी द. हिन्द–आर्य भाषाओं में दृष्टिगत है। लेकिन दार्दी भाषा झ. पैशाची भाषा झ. प्राकृत बोली व चूलिका पैशाची या प्राकृत भाषा में लोकापर्ण हुआ है। प्राकृत भाषा कालानुसार पाली बोली में तब्दील होती है और लौकिक संस्कृत झ. वैदिक संस्कृत झ. आधुनिक संस्कृत के क्रमाधार पर विकसित होती है। भारतीय भौगोलिक मानस में दार्दी भाषा परिवार व आर्य/संस्कृत भाषा परिवार का प्राकृत/पैशाची भाषा के बाद; अक्षर शब्दों का आदान प्रदान का दौर धीरे–2 शुरू हो जाता है। अपभ्रंश भाषा; पाली भाषा का क्रमशः रूप है। अपभ्रंश भाषा का आकार 1. शौरसेनी 2. मागधी 3. अर्ध मागधी 4. महाराष्ट्री 5. ब्राचड़ 6. खस बोली भाषाओं के द्वारा रूपांतरण होता है और भौरसेनी, मागधी, अर्ध मागधी भाषाओं से हिन्दी भाषा का प्रादुर्भाव होता है। हिन्दी भाषा; अपनी प्रवृति व स्वभावानुसार अपने क्षेत्रक को विस्तृत करने का निरन्तराभ्यास करती हुई प्रवासी मानुभावों के माध्यम से प्रवास में भी अपना जलवा, सामंजस्य व अट्रेक्शन पैदा करती है। यह भाव ही; प्रवासी जनजीवन को प्रवृत्त करती है।

व्यक्ति; मातृक पैतृक स्थान से प्रदेश में; मजदूरी मजबूरी लाचारी व्यापार औपनिवेशिकता हेतु अपनी जीविका को सुगम बेहतर सुरक्षित करने के लिये पलायन; प्रस्थान करते हैं। या जबरण अपहरण लालच ईर्ष्या द्वेश धोखेबाज से प्रवास में ठूँस; स्थापित कर दिया जाता है और भारत में; बंधुआ मजदूर की पैदाइश का मुख्य कारण मनुस्मृति की वर्ण व्यवस्था है। मनुस्मृति में गुलाम को बेचने खरीदने का स्पष्टतः वर्णन है। वही शुंग काल से; धड़ल्ले से दौड़ती हुई अछोप खस की जिन्दगी को कोल्हू के बैल की तरह पिसती हुई नजर आ रही है। जिसका ब्रिटिश शासन (1795 ई.) ने सम्पत्ति रखने का अधिकार व गवर्नर जनरल लॉड एलनबरो (07.04.1843) ने दास व्यापार और दासता उन्मूलन कन्वेंशन का कानून बनाकर क्रूर मानसिक के द्योतक पर जबरदस्त प्रहार किया था। जिसका उद्देश्य; अछोप खस (शूद्र अस्पृश्य) को दासता व दास व्यापार से छुटकारा दिलाना था। लेकिन मनुवादी चाटुकार; उसमें अपने स्तर व अंग्रेज अधिकारियों को भरमाकर ही रखते थे। जिससे अछोप खस को टपके रस का; कभी फायदा भी मिल पाया हो या ऐसा अहसास कभी हुआ भी हो। ऐसा लगता नहीं दास

प्रथा के उन्मूलन के बाद मजदूरमय जीवन में अजीबोगरीब उत्साह की सुगबूगाहत घुचलगी मारने लगी। लेकिन गरीबी अकाल वर्ण व्यवस्था ने गरीब लाचार मजबूर मजदूर खेतीहर मजदूर भूमिहीन जन को झकझोर दिया था, जो अपने व अपने परिवार के पेट की आग को शांत करने हेतु प्रयासरत थे। उसका अंग्रेज व अंग्रेजों के चाटुकारों ने बड़ी ही सावधानी से ब्रिटिश राज से प्रवासी श्रम प्रणाली 1834 ई. का अधिनियम बनवा; अपना उल्लू की बल्ले बल्ले करने लगे। मजबूरकश जन को कुछ पेशगी धनराशी देकर ऋणी बॉण्ड भरवा; निश्चित समयावधि (मिनिमम कालावधि 5 वर्ष) हेतु अनुबंधित किया जाने लगा। वहीं से गिरमिटिया शब्द प्रारम्भ हो; मजदूर के साथ जुड़ जाता है। गिरमिटिया मजदूर समयावधि के; बंदिश में ही बंधा रहता है। उसके बाद जब तक दूसरा बंधन में नहीं फँसता है। तब तक आजाद रहता है। जबकि बंधुआ मजदूर को पशुवत खरीदा और बेचा जाता है और यह प्रक्रिया पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ अनवरत चलती थी। यही दासमयी जीवन; रूँह को कम्पकम्पा देती थी। पशु की तो समुचित देखभाल की व्यवस्था की जाती है पर बंधवा मजदूर के साथ, तो क्रूरता की सभी सीमायें लाँघ दी जाती हैं। दास प्रथा के चगूँल में जकड़ी माँ बहन बेटियाँ; दरिंदों की जूठन वस्तुवत से भी बदतर बनकर रह जाती थी।

चाटुकारों ने चाटुकारिता की हद को भी भार्मसार करते हुये गिरमिटिया मजदूर को; नयी दास प्रथा या बंधक प्रणाली में कस; उसकी छोटी बहन के रूप में उद्धृत कर देते हैं, जो गिरमिटियाधारियों के सुनहरे स्वप्नमय जीवन को अधरझूल में लटका; फदीड़ मार तड़पा देते हैं। उसी तरज पर आज गोदी मीडिया व लगभग हिन्दी प्रिंट मीडिया ने आमजन को देश की वस्तुस्थिति से भरमाकर; धार्मिक उन्माद व वनपर्सन को चमकाते हुये भरतीय सद्भाव में हॉल पे हॉल पैदा कर इंसानियत को दुष्कर बना रहे हैं। आरएसएस सपोर्टेड; मोदी की डबल सरकार (सीएम नोंगथोम्बम बीरेनसिंह, मणिपुर) ने कोर्ट (अप्रैल, 2023) में मैतेई (एससी/ओबीसी) को एसटी में सम्मिलित करने का; समर्थन करके ही दम लेती है। एसटी सम्मुदाय (नगा–कुकी, ईसाई) के संगठनों ने "आदिवासी एकता मार्च" के तहत 03 मई, 2023 को वैधानिकानुसार उक्त के विरोध में रैली निकालते पर; मैतेई जन या प्रोपगेण्डाधारी; विरोध का विरोध करने लगे, तो मानवीय सद्भाव खण्डित होकर जातीय वैमनस्य में जकड़ित हो जाते हैं, जो जातीय जहर का परवान उबलने लगता है। भाजपा सरकार की लापरवाही के कारण; अद्यावधि खूनी संघर्ष में 143 प्लस जन; मारे जाते हैं। अनेक घायलावस्था में तड़प रहे हैं और भय के खौफ से हजारों की टोली बनाकर; जन समूह पलायन करने लगते हैं। मैतई मुस्लमान अपने घरों पर; अपनी पहचान लिखकर जातीय जहर से बचने की हर सम्भव कोशिश करते हैं। पलायन जन; परिस्थिति के मारे मनुवादियों के एजेण्डा का शिकारी बन जाते हैं। मनुवादी; अपने स्वार्थानुसार अवसर को शह देकर बड़ी ही सावधानी पूर्वक उल्लू सीधा करते हैं।

भारत चीन के साथ पड़ौसी देश से भी गिरमिटिया मजदूरों के लिये 5 वर्ष या अधिकावधि हेतु अनुबंधित पत्र पर अगूँठा या हस्ताक्षर करवाकर विदेशी धरती फिजी, केरेबियन द्वीप समूह, मॉरीशस, ब्रिटिश, डच, गुयाना, न्यूजीलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, टोबेगा, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका), ट्रिनीदाद पर उन्नीसवीं सदी की नयी दास प्रणाली में; गरीबी को नये सिरे से बांधते हुये अपना उल्लू निकाल; आमजन को उल्लू बनाके बेगार की बंदिश में जकड़ रहे थे। स्वार्थी खोर मनुवादियों ने गिरमिटिया मजदूरों की अज्ञान व मजबूरी का नाजायज फायदा उठाने की सभी

सीमायें लाँघ देने पर शासक ने 18 जनवरी, 1826 को; गौवरमेंट ऑफ फ्रेच इंण्डिया ऑशन आयरलैण्डस के तहत गिरमिटिया मजदूरी की शर्त व स्थिति को मैजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत् करने को मजबूर किया था और वे कोर्ट में; उक्त अग्रीमेंट पर जब तक स्वेच्छा से अगूँठा हस्ताक्षर करना स्वीकार नहीं कर लेते थे। तब तक आगे की कार्यवाही शुरू नहीं होती थी। बंधित मजदूरों के कठिनतम दौर पर कुछ इंसाँ के मनोभाव, दौड़ लगाते हुये उहापोह की ललक को पैदा कर रहे थे।

बंधुआ गिरमिटिया मज़दूरों का भारतीय इतिहास में प्रवासीय जनजीवन को कम ही देखने को मिलता है। लेकिन प्रवासी जनजीवन हिन्दी भाषा में अपना वजूद को कायम बना रखा है। गिरमिटिया मज़दूरों का दौर 1934–1922 ई. तक चला था। जिसके उन्मूलन में महात्मा फुले, महात्मा गांधी, मो. जिन्ना, सरोजिनी नायडु, मदनमोहन मालवीय, गोपाल कृश्ण गोखले, बाबा साहब, तोताराम सनाढ्य (गिरमिटिया), कुन्ती, स्वतंत्रता सेनानियों .... के दबाव में आकर; ब्रिटिश सरकार ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल (भारत) के द्वारा 1917 ई. में प्रतिबंधित कर देने पर भी 1922 ई. तक धड़ले से मनुवादियों के सहयोग से चलता रहा और काँग्रेस सरकार ने बंधुआ मज़दूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 व बालश्रम प्रतिषेध व विनियमन अधिनियम 1986 बना कर बंधुआ व बालश्रम मज़दूरी का पटाक्षेप किया है। नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने 2014 ई. के चुनावी प्रचार के दौरान जनआम को 2 करोड़ रोजगार प्रति वर्ष, भ्रष्टाचार मुक्त भारत, विदेशी काला धन लाकर प्रति व्यक्ति को यूँ ही 15–15 लाख रुपये मिल जाने वाले वादों का; खाली पुलाव को आज, मोदी सरकार ने; मनमोहन सरकार (26 मई, 2014) के 25 करोड़ भारतीय जन; गरीबी रेखा के तहत राशन मिलने वालों को 80 करोड़ जन शक्ति पर आरुढ़ कर दिया और वैश्विक भूखमरी सूचकांकाधार (ग्लोबल हंगर इंडेक्स, 2022) पर 2014 में 76 देशों में से 55वें (स्कोर 28.2 प्रतिशत) पर था, जो मजबूत सरकार ने 2022 में 121 देशों की रैंकिंग में 107वें (स्कोर 29.1 प्रतिशत) स्थान पर पक पकवाके पकाते हैं। मोदी मैजिक ने; रात 8 बजे, 08 अगस्त, 2016 को नोटबंदी का प्रसाद चखाकर रात 8 बजे, मार्च 19, 2020 को 'जनता का जनता पर कर्फ्यू' व मार्च 22, 2020 को देश को लॉक कर; सायं 5 बजे पांच मिनट तक ताली थाली कटोरा परात चम्मच को बजा बजवाते हैं और अप्रैल 05, 2020 को घर की लाइट; रात 9.00 से 9.09 तक बंद करवाकर मोमबत्ती दीया टॉर्च फ्लैश लाइट जलवाने में व्यस्त हैं। लेकिन भूख; मजदूर गरीब को जठराग्नि में तड़पाती है। थक हाकर प्रवासी जन हजारों किलोमीटर दूध मुँहियों बच्चों के साथ रास्ता नापते हैं और प्रवासीजन रेल बस गाड़ी के चपेट में आकर व कोरोना पीड़ित; ऑक्सीजन के अभाव में मृत्यु के आगोश में समा जाते हैं।

गिरमिटियाधारी या पलायनधारी; अपनी बंधुआवस्था या पलायनावस्था की दुनिया में; तत् स्थान की रहन सहन आचार विचार संस्कृति के साथ; अपने संस्कारों के वजूद को दौड़ाते हुये मर्यादित या अमर्यादित अपनत्व को घोलते हैं व टकराव या सामंजस्य के जीवन को बढ़ाते हुये जीवन की मंजिल की ओर दौड़ लगाने की कोशिश करते हैं। जिससे उक्त दो या दो से अधिक विचारधारायें; आपसी गोताकार में डूबकी लगाकर एक नये विचार का जन्म दे रही थी। वह ही समय पाकर; उस भूभाग में विचरण करने लगती है, जो अपने पूर्ववर्ती संस्कारों का सह पाकर; अपने परिवार समाज में; तरोताजगिक रूप को बनाये रखने का अभ्यास करती है और

वह सुदूर भौम की गोद में; जीवनमय गुलदस्तों को सजाते हुये जन्म भौम के मूल तार की चाहत अपनत्व या उदासीन तिरस्कृत भाव के साथ; अपनी लेखनी में या लेखक; अपने मर्मज्ञ द्वारा; उक्त उहापोह मनोदशाओं को मातृ राज राष्ट्र अर्न्तराज्य अर्न्तराष्ट्रीय भाषा में आबद्ध करते हैं, तो उसे प्रवासी साहित्य का मानक माना जाने लगा। यह उनके या उनके पूर्वजों की अहम पहचान को लोक मानस में; दो या दो से अधिक बोली भाषा क्षेत्र परम्परा संस्कार परिस्थिति के सामंजस्य में; जकड़ावस्था स्वभावानुकूल स्वतंत्रपूर्ण क्षेत्रानुसार अनुभव के मिश्रण से अवगत करवाता है और पढ़ा–लिखा–अनपढ़ गरीब–अमीर बड़ा–छोटा ऊँचा–नीचा भला–बुरा सद्भावी–असद्भावी सद्नीयत–बदनीयत में सराबोर होकर प्रवासी साहित्य; पात्रानुकूल घुचलगी की उड़ान भरता है। वही प्रवासी साहित्य या परम्परागत जीवन के द्वारा प्रवासी जनजीवन की धड़कन को पहचाने जाने लगा।

हिंदी भाषा; वैश्विक जीवन पर प्रवासीय जनजीवन को एक मुकाम प्रदान करने में अहम भूमिका निभाकर प्रवासी साहित्य की सार्थक लेखनी में लपेटते हुये उक्त परिस्थितियों के दृष्टिकोण को समझने व विस्तारित करने का साझा प्रयास करते हैं। भारतीय बहु भाषिक–सांस्कृतिक–भाव के बावजूद प्रवासी जन में साहित्य की विभिन्न परिवेशों से गुजरती हुयी आंतरिक पीड़ा को अपने लेखन के माध्यम से दुःख संघर्ष तड़पन अलगाववाद को अभिव्यक्त अभिनीत या एनआरआई प्रवास में जीविकोपार्जन हेतु प्रयास करते हैं। वे अपने परिवार समाज का स्मरण व माट्टी की सौंधी सुगंध को उसमें घोल; घोल बनाकर अपने एकांत दुमदुमी को दर्शाते हैं। शंकर मिश्रा ने एयर इंडिया की फ्लाइट–एआई 102 (न्यूयॉर्क से नई दिल्ली) में बुजुर्ग महिला पर 26.11.2022 को पेशाब कर व करौंदी–सिहवाल, सीधी–मध्य प्रदेश में आदिवासी भोले–भाले दशमत रावत गरीब पर भाजपा मुख्य कार्यकर्ता, प्रवेश शुक्ला 04.07.2023 की सायं के धुंधले अंधरे में नशायुक्त मुँह से सिगरेट का धुँआ निकालते हुये उसके सिर–मुँह पर पेशाब कर मनुवादी सोच को उद्धृत कर दिया।

आज हर जन को समानता स्वतंत्रता बंधुत्वता का अधिकार होने पर भी ऐसा जघन्य अपराध को बेखौफ से अंजाम दे देते हैं। पुलिस पकड़ती है और उसे ले जाते वक्त पीठ थपथपाती हुयी दुआ सलाम करती है। आमजन की प्रतिक्रिया होने से; उक्त प्रतिक्रियाओं से बचने हेतु कोलर पकड़ थप्पड़ मारने का विडियो बना; वायरल करते हैं और चुनावी नैतिक दबाब में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उक्त पीड़ित जन का पैर धोकर आदिवासी बाहुल में सार्थक होने का मैसेज देते हैं। यह बाबा साहब द्वारा निर्मित संविधान की शक्ति ही तो है। लेकिन उक्त 18 साल के राज में; आदिवासी उत्पीड़न के 30,400 प्लस हैं। उस वक्त भी संविधान था लेकिन शिक्षा का अभाव व चाटुकार मनुवादी अपने अंध स्वार्थ के कारण; गरीब व भोली–भाली जन को राई के पहाड़ के ख्वाबों पर आरूढ़ करते थे और उक्त पेशाब काण्ड से भी दुर्दंत हालात प्रवासी समुदाय का होता था।

उन्हीं भावों को बातपोस लेखक या प्रवासी जन; अपने व अपने पूर्वजों की असहनीय मानसिक शारीरिक यंत्रणाओं को समाचार पत्र–पत्रिकाओं– हिन्दोस्था (1883 ई. संपादक : कालाकांकर नरेश राजा रामपाल सिंह, पहला हिन्दी अंग्रेजी त्रैमासिक समाचार पत्र अर्थात् 1884 ई. इंग्लैण्ड– अंग्रेजी व 1885 ई. भारत– हिन्दी)। प्रवासिनी त्रैमासिक पत्रिका (1964 ई. संपादक : धर्मेन्द्र गौतम, हिन्दी प्रचार परिषद, लन्दन के तत्वावधान में आलेख : राधेश्याम सोनी, जगदीश मित्र कौशल, बैरागी, मोहन गुप्त, विनोद पांडे, सत्यंदेव प्रिंजा, अबू अब्राहम,

कान्ता पटेल)। मिलाप वीकली पत्र (जून, 1964 ई. संपादक : रमेश कुमार सोनी व 1966 ई. हिन्दी के दो पृष्ठ अर्थात् अद्यावधि आठ पृष्ठों का उर्दू–हिन्दी का सर्वाधिक दीर्घ अवधि तक प्रकाशित अखबार)। अमरदीप साप्ताहिक (23 मार्च, 1971–23 मार्च, 1971 संपादक : जगदीश मित्र कौशल) पत्रिका चेतक (संपादक : नरेश भारतीय, अल्पावधि हेतु)। पुरवाई त्रैमासिक पत्रिका (1997 ई.–अद्यावधि, संपादक : डॉ. पदमेश गुप्त)। वैब पत्रिका (2008 ई.–अद्यावधि, संपादक : श्रीमती शैल अग्रवाल)। भारत भवन छमाही पत्रिका (भारतीय उच्चायोग, जो ब्रेक लगा लगाके प्रकाशित कर रहा है। मर्यादा, चांद व विशाल भारत (हिंदी पत्र, प्रवासी अंक) नवचेतन (गुजराती पत्र, प्रवासी अंक)।

कहानी संग्रह– सांकल (जकिया जुबेरी), इक सफ़र साथ साथ (दिव्या माथुर), कौन सी जमीन अपनी (सुधा ओम ढींगरा), अटखेलियाँ व फ़ासला एक हाथ का (नीना पॉल)। कहानी– देह की कीमत (तेजेंद्र शर्मा), वे चार पराठे (अरुणा सभरवाला), थोड़ी देर ओर (शैलजा सक्सेना), पिंजरा (नीलम मलकानिया), नमस्ते (पूर्णिमा वर्मन), लकीर (महेंद्र दवेसर), वो रात बहुत चर्चित (उषाराजे सक्सेना)। उपन्यास– पथरीला सोना (रामदेव धुरंध ार), लाल पसीना (अभिमन्यु अनत), हवन व मैंने नाता तोड़ा (सुशम वेदी), गिरमिटिया (गिरिराज किशोर), तलाश व कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर (नीना पॉल)।

काव्य संग्रह– तुम लन्दन आना चाहते हो (1987 ई. डॉ. निखिल कौशिक), नेटिव सेंटस–वतन की खुशबू (दिव्या माथुर), जब माँ कुछ कहती मैं चुप रह सुनता (राम तक्षक)। लंबी कविता– मिसेज जोन्से और उनकी वह गली (डॉ सत्येन्द्र श्रीवास्तव)। कवितायें– आओ न! बैठो न! (राज हिरामन, मॉरीशस), अंहकार (अनीता वर्मा, चीन), शायद एक चाह (अनीता कपूर, अमेरिका), रोशनी की इबादत (गुलशन मधुर, अमेरिका), सब कुछ चाहिये (अनिल पुरोहित, कनाडा), अपनी राह से (पुष्पिता अवस्थी, नीदरलैंड), खड़िया (मोहन राणा, ब्रिटेन), यह घड़ी (सत्येन्द्र श्रीवास्तव, ब्रिटेन)। आलोचना– समकालीन हिंदी साहित्य और समाज (रूसी आलोचक डॉ. अलेक्सांद्र)।

आत्मकथा– प्रवासी की आत्मकथा (1947 ई. भवानी दयाल सन्यासी)। संस्मरण– फिजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष (बनारसीदास चतुर्वेदी)। अनुवाद– फिजी में भारतीय (रिपोर्टक : दीनबंधु एंड्रयूज़/अनुवादक : बनारसीदास चतुर्वेदी)। ग्रंथ– प्रवासी भारतवासी (बनारसीदास चतुर्वेदी)। इतिहास ग्रंथ–फिजी की समस्या (1921 ई. बनारसीदास चतुर्वेदी), फिजी की डायरी (गोविंद सहाय), ए पब्लिक वर्कर ऑफ साउथ अफ्रीका (1939 ई. भवानी दयाल सन्यासी)। रेखाचित्र, यात्रा वृत्तान्त... विद्याओं (हिन्दी भाषा) में उकेरा है और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रवासी विभाग की स्थापना कर उक्त के साथ तालमेल स्थापित किया है। साथ ही उषा प्रियंवदा, पूजानंद नेमा, राज हीरामन, प्रो. हरिशंकर आदेश, अंजना संधीर, अर्चना पैन्यूली, पुष्पा सक्सेना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, इला प्रसाद, भानुमति नागदान, रेखा राजवंशी, स्नेहा ठाकुर, प्राण शर्मा, डॉ कृष्ण कुमार, डॉ. कविता वाचक्नवी, मोहन राणा, डॉ गौतम सचदेव, डॉ पद्मेश गुप्ता, महेन्द्र दवेसर दीपक, रमेश पटेल, शैल अग्रवाल, भारतेन्दु विमल, उषा वर्मा, कादम्बरी मेहरा, पुष्पा भार्गव, विद्या मायर, कीर्ति चौधरी, प्रियम्वदा मिश्रा, श्यामा कुमार, डॉ इन्दिरा आनंद, वेद मित्र मोहला, नरेश अरोड़ा, अचला शर्मा, चंचल जैन, स्वर्ण तलवाड़, डॉ. कृष्ण कन्हैया, जय वर्मा, धर्मपाल शर्मा, सुरेन्द्रनाथ लाल, रमेश वैश्या मुरादाबादी, सोहन राही, रमा जोशी, डॉ. श्रीपति उपाध्याय, एस. पी. गुप्ता, जगभूषण

खरबन्दा, यश गुप्ता, जे एस नागरा, मंगत भारद्वाज, जगदीश मित्र, रिफत शमीम, इस्माइल चुनारा, तोषी अमृता, राज मोदगिल, उर्मिल भारद्वाज, निर्मल परींजा लेखकों ने भी; गिरमिटिया मजदूर (1843–1922 ई.) तिलमिलते जीवन, 80 दशक मजदूर की जीविका व 90 दशक मजदूर नौकरी अध्ययता व्यापारिक संबंधित प्रवासीय जनजीवन को अपनी लेखनी में बखूबी से आबद्ध किया है।

उपर्युक्त तथ्यानुसार; अन्त में कह सकते हैं कि मानव जीवन उहापोहात्मकताओं से लबालब है। लेकिन स्वार्थीजन; अपने स्वार्थीमयी लालसा तृष्णा में कुचलने मसलने की आजमाइशी होड़ में पीछे नहीं रहना चाहते हैं। ऐशो आराम को बरकरार रखने के लिये गरीब असहाय को शिकार बना; परिस्थितियाँनुकूल जकड़ लेता है और दास गुलाम प्रथा के पटाक्षेप के साथ ही गिरमिटिया मजदूर की पैदाइश कर; अपने मनसूबों के पर लगाकर फड़फड़ाने लगे। 56 ईंच सीने वाला 20 जून को अमेरिका में; 21 जून, 2023 के निर्धारित कार्यक्रमों हेतु मणिपुर का बोले बगैर अमेरिका के राष्ट्रपति हवाई जहाज के बाद विश्व में दूसरे नम्बर का मंहगा उड़न खटोले पर सवार हो; सुरक्षितता का आनन्द लेते हुये उड़ान भर अमेरिका में पहुँच जाते हैं और यहाँ 29–30 जून, 2023 को राहुल गाँधी मणिपुर के दौरे के दौरान; भाजपा के द्वारा विरोधाभास करने पर भी, वह राहत कैम्प व आम सड़क पर जन समुदाय से मिलकर अमन चैन शांति की कामना कर राज्यपाल अनुसुइया उड़के से लोगों के तकलीफ़ पर चर्चा करते हैं और मुख्यमंत्री 30 जून, 2023 को इस्तीफे पर हस्ताक्षर कर राज्यपाल से मिलने हेतु; अपने काफिले के साथ निकल पड़ते हैं। 200 मीटर के दायरे में राजनीतिक हाई वोल्टेज का ड्रामा ड्रामा।...? उनकी मैतई समाज की महिलाओं ने इस्तीफे को फाड़ देती हैं। लेकिन प्रधान सेवक का मणिपुर का म 20 जुलाई 2023 को फ्रीज से तब निकलता है जब 18 जुलाई, 2023 को 04 मई, 2023 का कुकु समाज की दो महिलाओं (कारगिल जाँबाज सुबेदार थाउबल की पत्नी भी थी) को; मतैई समाज के दुष्टजनों के द्वारा सामूहिक दुष्कर्म के बाद नग्न घुमाया जाने का विडियो सामने आने पर; आमजन–विपक्ष का आक्रोश व सोनिया गाँधी ने संसद में मुलाकात के दौरान मणिपुर पर संसद में चर्चा हेतु आग्रह व सुप्रीम कोर्ट (20.07.2023) ने स्वतः प्रसंज्ञान लेकर राज्य–केंद्र सरकार से रिपोर्ट माँगने पर चौकीदार का उद्गार फूट पड़ता है और कहते हें कि मेरा ह्रदय क्रोध से भर गया, देश शर्मसार हुअ, दोषियों को छोड़ेंगे नहीं। यह बड़ा ही अचरजमय भाव है, जो 78 दिन से जल तड़प रहा था और गृहमंत्री आवास व जंतर मंतर पर धरना प्रदर्शन कर विरोध दर्ज करवा रहे थे। तब; प्रधान सेवक का अंतरतम में उभार पैदा नहीं हुआ था। मुख्यमंत्री एन विरेन सिंह कहते हैं कि ग्राउण्ड पर जाकर देखिये, ऐसी हजारों केस पड़े हैं।

ऐसी ही अनगिनत घटनायें पर विश्व पटल के बाजार में प्रकृति इंसाँ के मर्मज्ञों ने; अपनी लेखनी पर तोलते हुये उनके जीवनकाल की बद से बदतर परिस्थिति का आँकलन कर गौर फरमाने लगते हैं। हिंदी भाषा धीरे–2 प्रवासी जनजीवन को आगे की ओर बढ़ाती हुयी प्रवासियों की भाव भंगिमाओं में स्वत्व अपनत्व का संचार भर; भाषा बोली व सांस्कृतिक अक्षुण्णताओं को नयी संचेतना के द्वारा उद्धृत करती हुई गिरमिटिया मजदूरों की मजबूरीमय जीवन को जनआम के समक्ष रखने का प्रयास किया है। मनुस्मृति में व्यक्त; सामाजिक जातीय व्यवस्था की गहनता में झाँकने पर उभर कर सामने आती है कि समाज व मानस को बाँटने दबाने का काम किया है।

गुलामीय जीवन अंधकूप में तड़पता लाचार भरा जीवन है और स्त्रीय जीवन की दुर्दशा कल्पनातीत है। दासीय साहित्य पर प्रकाश डाले, तो आज भी अधिकतर अनछुआ भाग; दफन की ओढ़नी से बाहर आने हेतु तड़प रहा है और दास प्रथा के दयनीय जीवन का लगभग 10 प्रतिशत तक ही; गिरमिटिया मजदूरों का जीवन कष्टप्रद रहा है, जो स्वामी भवानीदयाल सन्यासी ने प्रवासी जनों से मिलकर अंग्रेजी में रिपोर्ट प्रकाशित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर मजदूरों की मजबूरी को व्यक्त किया है।

"जय जवान जय किसान जय स्वच्छकर्ता।"

"बेटी चाहो, बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ।"

जय इंडिया।

संदर्भ :-

1. गूगल नेटवर्क।
2. हिंदी का प्रवासी साहित्य : डॉ. कमल किशोर गोयनका।
3. 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन (स्मारिका)
4. विदेशों में हिंदी साहित्य सृजन : उषाराजे सक्सेना।
5. प्रवासी साहित्य में स्त्री चिंतन : प्रो. चंदा बेन।
6. प्रवासी लेखिकाओं की कहानियों का जीवन : डॉ. मुदिता चंद्रा।
7. स्त्री यथार्थ को उकेरता प्रवासी कथा साहित्य : डॉ. मुकेश कुमार केशवानी।
8. इक्कीसवीं सदी की प्रवासी कहानियाँ : तेजेन्द्र शर्मा।

पता : सरस्वती कॉलोनी (नियर पुसि लाइन), झुंझुनूँ–राजस्थान : 333001, मो.नं. : 09468676668

E-Mail : dr.sureshkarwasra@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 131-134

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी महिला साहित्यकारों की रचनाओं में अभिव्यक्त स्त्री संघर्ष

डॉ. सुमित्रा कोतपल्ली,
डॉ. के.वि.एस.पि.बी. आचार्य, **बि विनायकुडु**, प्राचार्या,
भाषा विभाग, सर सी आर रेड्डी कॉलेज, एलुरु।

हिंदी साहित्य मे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श के साथ–साथ प्रवासी विमर्श के मुद्दे भी उठना आज बहुत ही आवश्यक हो गया है। हिंदी को अंतराष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के योगदान को हम नकार नहीं सकते बल्कि उनके द्वारा लिखे गए साहित्य में हमें एक अलग प्रकार की संवेदना प्रकट होती है, क्योंकि उनका मन तो भारतीय होता है पर प्रवास में निवास करने की वजह से उन्हे अलग–अलग चीजों का ग्रहण करना पड़ता है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं में एक बेचैनी और अखुलाहट को बखूबी महसूस किया जा सकता है। फिर भी ऐसी परिस्थितियों में भी कालजई रचनाओं का सृजन करते हुए देखी जा रहे है। सुषमा बेदी, सुधा ओम ढींगरा, जकिया जुबैरी, नीना पॉल, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, जय वर्मा, और उषा राजे सक्सेना, उषा प्रियंवदा आदि ने प्रवासी लेखिकाओं के रूप में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है। जकिया जुबैरी के कहानी संग्रह ''सांकल'' में स्त्री मन की कशमकश को चित्रित किया गया है। जकिया जी की कहानियों में नस्तालिजिया और वहाँ परिवार के बीच की स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। माँ और बेटे के अलावा माँ और पुत्र के बीच स्वाभिमान को बहुत ही संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया। सांकल के अलावा मारिया और लौट आओ तुम ऐसी ही कहानियाँ है।

नीना पॉल ने दो उपन्यास 'तलाश' और 'कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर' लिखे है। इसके अलावा दो कहानी संग्रह भी है। कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर उपन्यास में इंग्लैंड के लस्टर शहर के बनने की कहानी के साथ–साथ गुज़रातीओं के वहाँ जमने और संघर्ष करने को गूंधा गया है। उपन्यास में निशा के माध्यम से एक गुजराती परिवार की तीन पीढ़ियों का संघर्ष दिखाई गया है। निशा उसकी माँ सरोज बेनी और निशा की नानी सरला बेनी गुजरात से युगांडा और युगांडा से लेस्टर पहुँचे है। इन भारतीयों की कठोर मेहनत करने की क्षमता और कुशल व्यापार बुद्धि ने एक नए देश में भी धीरे–धीरे उन्हे इज्जत दिला दी। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें उपन्यासकार ने संतुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया है। भारतीयों के साथ हुए भेदभाव तो दिखाए ही गया है, परंतु अंग्रेज के क़ानून के पाबंधी होने को भी ईमानदारी से दिखाया है। साथ ही लेस्टर के इतिहास और भूगोल के सुंदर चित्र खींचे गए है। उपन्यास को पढ़कर लेस्टर का नक्शा स्पष्ट हो जाता है।

सुषमा बेदी हिंदी साहित्य लेखन में एक जानी पहचानी लेखिका हैं। उनका साहित्य पश्चिमी जगत के प्रवासी भारतीयों के अनुभव, परिस्थितियों का अंतर्द्वंद को अभिव्यक्त करता है। सुषमा बेदी का 'हवन' और 'मैने नाता तोड़ा' उपन्यास काफी चर्चा में रहा। इसमें अमेरिका के परिवेश में एक विधवा स्त्री के जीवन को दिखाया गया है। इसके अलावा उनके कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' ने भी पर्याप्त ख्याति पाई है। 'हवन' उपन्यास अमीरिका में प्रवासियों की जिंदगी का यथार्थ चित्रण करने वाला उपन्यास है। जिसमें दर्शाया गया है कि प्रवासी विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक–दमक से अपने जीवन को कैसे होम कर रहे है। इस उपन्यास की नायिका गुड्डों के जीवन में संगर्ष है असुरक्षा का भय, अतीत के प्रति मोह, अक्खरता अंग्रेजी का हिन्दुस्तानीपन, निराशा, उदासी व तनाव को उत्पन्न करते है। गुड्डो की पुत्र घुटन का शिकार, बेटियों की परिवार के टूटने पर निराशा में सत्रस्त हो जाती है। पश्चिमी समाज में जीवनयापन एक जुआ है जिसमें भारतीयों को नौकरी, शिक्षा भाषा व परिवार सम्बन्धी समस्याओं का सामना करता है। इस उपन्यास की राधिका नस्लवाद के कारण हीन भावना की शिकार है, आधुनिकता जब उसे ठोकर मारती है, तो अपनी गलती के एहसास होता है। अंत में उसकी दुःखद गाथा बलात्कार का शिकार हो जाती है। सुषमा बेदी का उपन्यास 'हवन' निश्चय ही अपनी समस्त अस्मिता को गवाँकर अगली पीढ़ी के लिए होम करती हुई पुरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है जिसमें प्रत्यक्ष रूप मे प्रवासियों का संगर्ष का संपुटन मिलता है।

भारतीय पश्चिमी समाज की चकाचौंध से आकर्षित होता है। किन्तु उस के पीछे का परिश्रम वहीं जाने से ही दिखाई देता है। भारतीय लोग विदेश पहुँचते पर अल्प–शिक्षा और अंग्रेजी के अल्प ज्ञान के कारण ऊँची नौकरियां प्राप्त नहीं कर पाते। 'हवन' उपन्यास की नायिका गुड्डो एक संगर्ष शील जीवन व्यतीत कर रही है। जब गुड्डो ने अपनी बहन पिंकी के जान–पहचान के एक हिंदुस्तानी ने अंडरग्रॉउंड ट्रैन स्टेशन के प्लेट फॉर्म पर एक अखबार–मैगज़ीन सिगरेट और कैनी आदि बेचने का स्टॉल लगाया था तथा उसे एक सेल्सपर्सन की जरुरत थी। गुड्डो को यह काम उचित लगा स्टॉल सुबह से लेकर रात बारह–एक बजे तक खुला रहता था। मन तो विरोध तो कर रहा था कि अख़बार बेचने का काम इतने बड़े अफसर की बीवी करेगी पर हाथ में धेला तक तो था नहीं। शहर में आने–जाने का किराया तक तो वह पिंकी से लाती थी। गुड्डो ने शुरू कर दिया काम''।[1]

असुरक्षा शब्द सदियों से मनुष्य साथ जुड़ा आ रहा है चाहे शिक्षित, चाहे अशिक्षित, आश्चर्य की बात है कि विवेच्य उपन्यास मे गुड्डो असुरक्षा का भय से त्रस्त रहती है, क्योंकि उसने वहा कि गुंडागर्दी को अपनी आँखे से देखा है। 'ट्रियन अभी–अभी गुजारी थी। फिर से डरावना सन्नाटा छा गया था। कुछ हरकत सी हुई तो गुड्डो ने खिड़की की ओर आँखे उठायी खिडकी पर बड़े हाथ में पिस्तल ठीक गुड्डो ने देखा एक लम्बा सा आदमी कानो में इतने ही क्रूर और जानलेवा शब्द पड़े ''पुट ऑल यूअर मनी इन दा विंडो।''[2] गुड्डो का जिस्म दिमाग एकदम सुन्नहा गया। घबराहट में उसने दराज़ खोली और जो कुछ भी था खिड़की पर निकालकर रख दिया। उसे पता नहीं लगा कि उसके साथ कितना बड़ा हादसा हो गया। गुड्डो को नौकरी के लिए बहुत ठोकरें खानी पड़ी। उसे अंग्रेजी का हिंदुस्तानीपन भी अखरता है। भाषा का दोगलापन मन की कचोटता क्योंकि उसे दूसरे की नकल करनी पढ़ रही है।

भारत से ऊंचे शिक्षा हासिल करके युवक–युवतियाँ विदेशी जाने पर सपने पूरे करने केलिए भाग दौड़ करते है। बिना वर्क परमिट के जब काम नहीं मिलता तो डॉक्टर, इन्जीनियर तक वेटर की नौकरी करते देखे

जा सकते है। अरुण अपनी कहानी जब राजू और गुड्डो को सुनाता है तो उनके रौंगड़े खड़े हो जाते है। ''दिवाली थी न कपड़े तो बढ़िया पहनने ही थे मैं इंजीनीरिंग ख़त्म करके यहाँ तीन महीना के लिए ही आया था। विजिटर वीसा पर जिस रिश्तेदार के यहाँ टिका था, उनकी सिफारिश पर एक हिंदुस्तानी रेस्टारेंट में वेटर की नौकरी मिल गई। पैसा भी मिलते थे, और खाना रेस्टारेंट में मुफ्त हो जाता था। एक दिन इम्मिग्रेशन वालो ने रेस्टारेंट पर छाप मारा और हम सब पकड़कर जैलो में डाला दिये गये'' ।[3]

विदेशी में रहकर हिंदी भाषा तथा साहित्य में अहम योगदान देने वाले साहित्यकारों में उषा जी भी एक है। अपना जीवन साहित्य के प्रति पूर्ण समर्पण कर देने वाली इन हिंदी सेविका को मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। इन्होंने कथा साहित्य में खोते हुए भारतीय मूल्यों को पनः स्थापित कर पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए आह्वान किया है। इन्होने आज के जीवन की मुख्य समस्याए जैसे ऊब छटपटाहट, संत्रास, और अकेलेपन को पहचाना तथा सटीक चित्रण भी किया। जैसे 'पचपन खम्भे लाल दिवारी', रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा उपन्यास तथा जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि कहानी संग्रह प्रमुख है। इनके कथा साहित्य में भारतीय नारी दुविधा, दिशा हीनता, कुंठा, निराशा, अतृप्ति, असुरक्षा बोध आदि को सार्थक अभिव्यक्ति मिली इसके अतिरिक्त युवा वर्ग के जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याएं तथा एकाकीपन एवं वृद्धावस्था से जूझ रहे वृद्धों की समस्याओं का अंकन इनके साहित्य में है।

'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास अकेली स्त्री के अनुभवों की नहीं आधुनिक समाज के बदलते रिश्ते की प्रकृति से तालमेल न बैठा पाने वाले अनेक व्यक्तियों और सम्बन्धों की बारीकी से पड़ताल करता है। एक असामान्य पिता की सामान्य सन्तानों के सथा असहज संबंधो की कथा है।

''राधिका'श की माता की मृत्यु के उपरांत उसके पिता ने कहा कि विद्या और मैं विवाह करने जा रहे हैं, राधिका ने चौंककर पापा की ओर देखा। क्षणांश मे उसके ऊपर से एक तूफ़ान गुजर गया।''[4] राधिका अपने पिता के इस फैसले को सहन नहीं कर पाती और उसका मन उस विवाह की चर्चा पर आक्रोशित हो उठा। ''राधिका भक से जल उठी, जो आप चाहते है, वही हमेशा क्यों हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है? मैं आपकी बेटी हूँ यह ठीक है पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ, और मैं जो चाहूंगी वही करूंगी।''[5]

राधिका फाईन आर्ट्स में डिग्री लेने के लिए डैन नामक पत्रिकार के साथ संबंध बनाकर अमेरिका चली जाती है, किन्तु उनके संबंध बनाकर अधिक दिन तक नहीं टिका पाते, फिर भारत आकर वह अपने परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अक्षय और मनीष से मिलती है। किंतु वह दोनों मे जीवन साथी के गुण ना पाकर उसने विवाह नहीं करती। राधिका की निराश, घुटन, एकाकीपन, संत्रास और कुंठा उसे सामान्य युवती की स्थिति में रहने नहीं देते।

उषा प्रियंवदा एक सजग, भावुक एवं संवेदशील कथाकार है। जिन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश को जिया है। लेखिका ने यथार्थ के धरातल पर शोषित एवं पीड़ित नारी, आक्रोशित युवा, प्रवासियों की पीड़ा, उनके धरातल पर अत्यंत सजगता एवं संवेनशील के साथ प्रस्तुत किया।

प्रवासी साहित्य भले ही विदेशो में लिखा जा रहा है, लेकिन इनकी जड़े भारत में निहित है। पाश्चात्य संस्कृति में रहते हुए भी प्रवासी साहित्यकार भारतीयता के विविध रंगो को प्रस्तुत करते है। प्रवासी साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी में जहां भारतीयता का रंग दिखाई देता है, वहीं आधुनिक प्रवासी साहित्यकारों मे पाश्चात्य

संस्कृति के दर्शन होते है। प्रवासी साहित्य में विदेशी संस्कृति में अपने अस्तित्व को बचाए रखने का द्वंद्व दिखाई देता है। प्रवासी लेखन के माध्यम से प्रवास मे रहने वाले लोगों और विदेशी संस्कृति के प्रति हमारी गलतफमिया दूर हो जाती हैं। प्रवास में रहने पर भी उनको वह सम्मान नहीं मिलता, जिसका वे अपेक्षा करते है। प्रवासी लेखकों प्रवास के दौरान अपनी पीड़ा, द्वंद्व, अस्तिव बोध को अपनी लेखनी से उजागर किया है। अपने अनुभवों और अपनी समस्याओ को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि एक नई दुनिया का पता और उसकी आतंरिक गतिविधियो की सूचना इन कथाकारों की कहानियों और उपन्यासों से पाठकों को मिलती है। इन कथाकारों की रचनाशीलता ने हिंदी साहित्य का परिदृश्य और विस्तृत किया है। आधुनिक साहित्य के अंतर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य के नाम से एक नए युग का प्रारम्भ हुआ। आज हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोले जाने वाली पांच भाषाओ में है तो इसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता है, जो भारत से दूसरे देशों में जाकर बसने के बावजूद हिंदी को अपनाए हुए है। इन देशों में रचा जा रहा साहित्य, उस देश के परिवेश से ही हमारा परिचय नहीं करता, वरना उनकी भाषा से शब्द भी ग्रहण कर रहा है। फलस्वरूप हिंदी के भी एक नया स्वरूप विकसित हो रहा है, और उस हिंदी मे लिखे गए साहित्य का एक अलग स्वाद है।

संदर्भ सूचि :-

1. सुषमा बेदी, हवन, अभीरूचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली 1996 – पृ. 47–48
2. सुषमा बेदी, हवन, अभीरूचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली 1996 – पृ. 16
3. सुषमा बेदी, हवन, अभिरुचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली 1996– पृ. 41
4. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, पृ. 37

5 उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, पृ. 43

डॉ सुमित्रा कोतपल्ली

सहायक अध्यापक हिंदी

प्राच्या भाषा विभाग

सर सी आर रेड्डी कॉलेज, एलुरु कोड 534002

Ph. 8500804521

E-mail : drsumitra1526@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 135-139
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मनुष्य जीवन का यथार्थ भावांकन : देह की कीमत

डॉ. संगीता चौहान
बाकरोल – ३८८३१५, जि–आणंद, गुजरात।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादडपि गरीयसी।'

उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार – 'व्यक्ति को संसार में लाने वाली जननी और व्यक्ति जिसमें पलता–बढ़ता है वह जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक गौरवपूर्ण है।' मनुष्य के जीवन में माँ एवं जन्मभूमि रूपी माँ की असीम अहमियत होती है। इन दोनों के प्रति जिस मनुष्य के मन में आदर–सम्मान न हो उस मनुष्य का जीवन निरर्थक माना जाएगा।

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी साहित्य नामक एक अलग ही अंदाज वाला साहित्य अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, जो प्रबुद्ध पाठकों द्वारा विमर्श की माँग कर रहा है। भारतीय मूल के लेखक जब किसी कारणवश विदेश में बसने को विवश होते हैं या बस जाते हैं तब उन्हें अपनी जन्मभूमि की यादें विचलित करती हैं। वह यादें जब किसी रचनाकार द्वारा लिखित रूप धारण कर लेती हैं, तब उसे 'प्रवासी साहित्य' के नाम से पहचाना जाता है। कहानी, उपन्यास, काव्य– इन तीन विधाओं में अधिकतर प्रवासी साहित्य आबद्ध है।

कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा का नाम प्रवासी साहित्यकारों में बहुत चर्चित है। पंजाब की मिट्टी में जन्मे, पले–बढ़े तेजेन्द्र जी ब्रिटेन के परिवेश में अपने को ढालकर भी अपनी जन्मभूमि से दिल से कभी दूर नहीं हुए हैं। उनका जन्म 21 अक्टूबर, 1952 में जगरांव (पंजाब) में हुआ। अब तक उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं – 'काला सागर', 'ढिबरी टाईट' तथा 'देह की कीमत'। उन्होंने कई कहानियों का उड़िया, पंजाबी, मराठी एवं गुजराती में अनुवाद किया है। अपनी कहानियों के विषय में तेजेन्द्र जी का स्पष्ट रूप से मानना है कि – 'मेरी कहानियाँ शुरू से ही हिन्दी कहानियों के पिरे–पिराये ढर्रे से अलग जमीन पर लिखी गई हैं।....मैं शायद उन गिने–चुने लेखकों में शामिल हूँ जिनके लेखन में आज का समाज जगह पाता है।'[१]

तेजेन्द्र जी की उपर्युक्त बातों को स्पष्ट रूप से ग्रहण करना हो तो जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का कथन सहायक सिद्ध होगा। उनके कथनानुसार – 'व्यक्तिगत जीवन में पत्नी का कैंसर से पीड़ित होकर साथ छोड़ जाना एक त्रासद अनुभव संसार का निर्माण करता है। 'देह की कीमत' और 'कैंसर' जैसी कहानियाँ इसी अनुभव संसार की देन हैं। लेकिन इन कहानियों की उपलब्धि मात्र यह नहीं है कि वे कुछ व्यक्तिगत अनुभवों को पेश करती हैं। आर्थिक और सामाजिक विषमता या विदूपता के जिस परिप्रेक्ष्य को लेखक ने अपनाया है, वही इन कहानियों को उल्लेखनीय बना देता है।'[२]

श्री तेजेन्द्र शर्मा द्वारा रचित 'देह की कीमत' कहानी संग्रह का शीर्षक इतना रुचिकर है कि कोई भी

पाठक उसे एक बार पढ़ने लगे तो कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ पढ़ने के लिए बाध्य हो जाये। प्रत्येक कहानी में से यह निष्कर्ष अवश्य निकलता है कि मनुष्य देह की कीमत क्या है? संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य को देहरूपी सौगात जो कुदरत के द्वारा मिली हुई है उसका वह अच्छा इस्तेमाल करे या बुरा इस्तेमाल करे यह निर्णय प्रत्येक मनुष्य का निजी निर्णय होता है। इसी बात को तेजेन्द्र जी ने 'देह की कीमत' कहानी संग्रह की प्रत्येक कहानी में उजागर किया है।

इस संग्रह की प्रथम कहानी 'देह की कीमत' में सजीव देह नहीं बल्कि निर्जीव देह की वजह से एक परिवार और कुछ लोगों को कितना परेशान होना पड़ता है उसका मार्मिक वर्णन किया गया है। साथ ही लेखक ने यह बात भी बताई है कि भोगविलासी जीवन के लिए विदेश का अवैध प्रवास कितना खतरनाक होता है। कहानी की शुरुआत में परमजीत कौर नामक स्त्री को अस्थिकलश के सामने दुःखी बैठी दिखाया गया है। वह अस्थिकलश उसके पति हरदीप का था जो अवैध तरीके से जापान गया था और दुर्घटना में मौत को प्यारा हो गया था। हरदीप की लाश उसके परिवार वालों के पास नहीं पहुँच सकी उसका कारण था – 'जिंदा इंसान का हवाई जहाज़ का किराया कम लगता है। परन्तु लाश को जापान से भारत भेजना बहुत महँगा सौदा बन जाता है। किसी प्रोफेशनल से लाश पर लेप चढ़वाना, ताबूत का इंतजाम, सरकारी लाल फीताशाही और हवाई जहाज का किराया!'[३] हरदीप के सभी दोस्त मिलकर उसकी श्रद्धांजलि के रूप में तीन लाख रुपये इकट्ठे कर लेते हैं और हरदीप का अंतिम संस्कार जापान में ही करके अस्थिकलश और तीन लाख रुपये परमजीत के नाम भेज देते हैं। वैभवी जीवन जीने की लालसा ने एक व्यक्ति की देह को ही नष्ट कर दिया यह कहानी का मूल सार है।

'मलबे की मालकिन' कहानी में एक नारी देह द्वारा ही अन्य नारी देह की उपेक्षा एवं तिरस्कार का हृदयस्पर्शी चित्रण कहानीकार ने किया है। इस कहानी की नायिका मध्यमवर्गीय अमिता है जिसे यादव परिवार की बहू बनने पर उस परिवार के कायदे कानून के तहत एक स्त्री को किस प्रकार शारीरिक एवं मानसिक कष्ट दिया जाता है उसका वर्णन है। पुत्री के जन्म को अभिशाप मानने वाला यादव परिवार नीलिमा का जन्म होते ही हतप्रभ बन गया था। जैसे अमिताके शब्दों में– 'मेरी सास के आँसू वर्षाऋतु के बरसाती नालों को मात देने में व्यस्त थे। मेरा अपना पति तो पुत्री – जन्म के दो दिन बाद घर लौटा। ..... ससुर जी की तो नाक ही कट गई थी।'[४]

अमिता को ससुराल से आदेश मिल गया कि वह अपनी मनहूस सूरत और मनहूस बेटी को लेकर उस परिवार से चली जाए। अमिता अपने पुराने अध्यापक का सहारा पाकर अखबार के दफ्तर में काम करने लगती है। उसका नया नाम 'प्रियदर्शिनी' प्रसिद्ध हो गया। उन दोनों की मुलाकात एक सभ्य पुरुष समीर से होती है। उसके व्यवहार को परखने के बाद प्रियदर्शिनी उसे अपने दामाद के रूप में चुनती है लेकिन उसे एक बार फिर हताशा घेर लेती है जब उसे मालूम चलता है कि समीर नीलिमा से नहीं बल्कि उससे प्यार करता है। कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में नारी देह की क्या कीमत है यह बताने का सफल प्रयास किया है।

'कैंसर' कहानी में लेखक ने कैंसर नामक रोग की भयावहता को तो बताया ही है; साथ ही यह रोग मनुष्य – देह को कैसे क्षत–विक्षत कर देता है वह पूनम नामक नायिका को हुए स्तन–कैंसर तथा उसके इलाज के

लिए उठाये गये कदम के द्वारा बताया गया है। पूनम का पति नरेन जो कि चमत्कार में कभी विश्वास नहीं करता था, वह पूनम स्वस्थ हो जाए इसलिए कर्म के सिद्धान्त को त्यागकर पूरी तरह से अंधश्रद्धा को समर्पित हो जाता है। पूनम अपने पति की बदलती मानसिकता का जिम्मेदार स्वयं को मानती है। पूनम का यह कथन यह सिद्ध करता है कि किसी स्त्री को यदि ब्रैस्ट कैंसर हो तो उसके इलाज के चलते उसके मन पर क्या गुजरती है तथा लोग उसे किस निगाह से देखते हैं– ''वैसे, यह भी कोई जीवन है जी? पराये मर्दों के सामने नंगा होना! पता नहीं कहाँ–कहाँ हाथ लगाते हैं। बेकार हो गई जिन्दगी तो! नरेन! किसी से भी मेरी बीमारी और ऑपरेशन के बारे में बात मत किया करो। लोग अजीब सी निगाह से छाती को घूरते हैं।'[५]

'मुझे शक्ति दो' कहानी में एक ऐसे दंपति की कहानी है जिनका जीवन एवं परिवार अभावों में गुजर रहा है। रमेश नाथ एक लेखक हैं जो हमेशा पति–पत्नी के बीच दूसरे पात्र का निर्माण करके कहानियाँ लिखने में माहिर हैं। उनका वास्तविक जीवन भी उसकी कहानियों से मिलता–जुलता है। लेकिन एक बार वह एक दुःस्वप्न देखता है कि उसकी पत्नी अपना आपा खो बैठती है और उससे मुक्ति माँगती है ताकि वह भी रमेशनाथ जैसा अभद्र जीवन जीकर दिखाये। उस स्वप्न से रमेशनाथ को ऐसी कहानियाँ और ऐसे जीवन से दूर हो जाने की प्रेरणा मिलती है।

'रेत का घरौंदा' कहानी पुरुषों की स्वार्थवृत्ति को उजागर करती है। साथ ही तलाकशुदा नारी के बारे में पुरुष वर्ग क्या सोच रखता है उसे भी प्रस्तुत किया गया है। दीपा का पति नेल्सन अपनी माँ के बहकावे में आकर दीपा से तलाक लेता है। दीपा की आकस्मिक मुलाकात नरेन से होती है और उसकी पत्नी शिवांगी की वह खास सखी बन जाती है। शिवांगी को कैंसर होने की वजह से उसकी मृत्यु हो जाती है तब नरेन और दीपा घर संसार बसा लेते हैं। लेकिन नरेन दीपा को वह प्यार नहीं दे पाता जैसा वह शिवांगी से करता था। वह जीवन भर यही तर्क करता है कि उसका प्रेम केवल शिवांगी के लिए है। दूसरी ओर दीपा उसके लिए केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम बन जाती है। शिवांगी के न रहने से नरेन दिल से जीना भूलकर दिमाग से अपना जीवन जीने लगता है। दिल और दिमाग के कार्यों का विश्लेषण करते हुए वह कहता है– 'दिल का काम है सिर्फ धड़कना .... सोचना नहीं भावना और तर्क दिमाग के ही दो रूप हैं। हर व्यक्ति दिमाग से ही सोचता है और जीता है। किसी के दिमाग में भावनाएँ तर्क शक्ति पर हावी हो जाती हैं तो वह इंसान भावुक बन जाता है, तर्क शक्ति को तिलांजलि दे देता है। जबकि किसी के दिमाग में तर्कशक्ति भावनाओं से अधिक बलशाली हो जाती है, तो भावुकता उस व्यक्ति का साथ छोड़ जाती है और वह अपने जीवन का संचालन तर्क से करता है। दिल से जीना केवल कमजोर आदमियों और शायरों की कोरी बकवास है।'[६] दीपा अपना जीवन दिल से जीना चाहती है लेकिन नरेन अपना तर्क उसके ऊपर थोप देता है कि "मेरे पास जितना प्यार था, वह सब शिवांगी पर खर्च कर चुका हूँ। अब कुछ नहीं बचा है मेरे पास। प्यार का स्रोत सूख चुका है।"[७] दीपा को यह एहसास हो जाता है कि वह केवल सपने देखकर श्रेत का घरौदाश बना सकती है जिसे हवा के झोंकों से प्रतिपल टूटकर बिखर जाना है।

'वह एक दिन' कहानी में अभिनव अपने स्वभाव के कारण अपना वैवाहिक जीवन बर्बाद करता है। साथ ही अकेलेपन में शराब को अपना सहारा बनाकर अपनी देह को बर्बाद करने के रास्ते पर जा रहा है उसका हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। 'कोष्टक' कहानी की कामिनी भी अपनी कुंवारी देह को विवाहित और उससे

उम्र में बड़े नरेन को समर्पित करके कोई झिझक का अनुभव नहीं करती। उसके इस प्रकार के निर्णय लेने के पीछे स्वयं नरेन ही जिम्मेदार था।

'किराये का नरक' कहानी में एक निम्नवर्गीय पुरुष पात्र अपनी उच्चवर्गीय पत्नी से इस प्रकार अपमानित होता है कि उससे बदला लेने के लिए जो षड्यंत्र रचता है उससे उसका ही जीवन बर्बाद हो जाता है। उसके द्वारा कही गई बात से किसी भी व्यक्ति का दिल दहल सकता है – 'एड्स! जैसे मुझे एक साधन मिल गया था तृप्ति से बदला लेने का। समझती क्या है अपने आप को। इस सुन्दर शरीर पर ही अभिमान है ना इसे ? मैं इस शरीर को ही खत्म कर दूँगा।....पहले अपने आपको एड्सग्रस्त बनाऊँगा और फिर....हा... हा...हा.... तृप्ति, अब मुझसे बुरा कोई न होगा।'[८] उसके एड्सग्रस्त हो जाने से तृप्ति का कुछ नहीं बिगड़ा – लेकिन उसका जीवन नारकीय बन गया।

'श्वेत–श्याम' कहानी में विलासी जीवन एवं वासना से युक्त मन व्यक्ति के देह की कीमत कैसे घटा देते हैं उसका भाववाही चित्रण हुआ है। 'तुम क्यों मुस्कुराए' कहानी व्यक्ति के जीवन में ईर्ष्या भाव की क्या भूमिका है वह स्पष्ट करती है। 'अपराध बोध का प्रेत' कहानी में नाम कमाने के लिए व्यक्ति की सोच किस कदर गिर जाती है उसका वर्णन नरेन अपनी पत्नी सुरभि जो कि कैंसरग्रस्त है उसके प्रति किए गए कथन से स्पष्ट होता है। जैसे– 'मुझे माफ कर दो सुरभि। मैं सोच रहा था तुम मर जाओगी तो तुम्हारी सारी कहानियाँ और कविताएँ अपने नाम से छपवाऊँगा। मुझे माफ कर दो।'[९] 'चरमराहट' कहानी में व्यक्ति के जीवन में धर्म का क्या स्थान है, क्या महत्त्व है उसको उजागर किया गया है। धर्म मनुष्य के जीवन में जो जटिलताएँ उत्पन्न करता है वह बहुत ही प्रभावशाली होता है।

श्री तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों को पढ़ कर चिंतन–मनन करने पर यह निचोड़ निकलता है कि तेजेन्द्र जी मनुष्य के मनोभावों चाहें वह नारी हो या पुरुष, चाहे निम्नवर्गीय हो या उच्चवर्गीय – को अच्छी तरह से समझकर अपनी कहानियों के पात्रों का निर्माण करने में सफल हुए हैं। उनकी कहानी पढ़ने के बाद पाठक स्वयं निष्कर्ष निकाल सकता है कि यदि इस पात्र ने योग्य फैसला लिया होता तो उसका जीवन बरबाद न हुआ होता। अपने 'देह की कीमत' अगर वह समझता तो एक अच्छे जीवन की राह खुद बना सकता। अपने इस कहानी संग्रह के माध्यम से श्री तेजेन्द्र शर्मा जैसे प्रत्येक मनुष्य को यह उपदेश देना चाहते हैं कि – 'तुम खुद को इतना कमजोर मत बनाओ कि यह बुराई तुमसे ज्यादा–ताकतवर हो जाए। यह शरीर, जो बड़ी–से–बड़ी जंग लड़ सकता है, अक्सर अपनी कमजोरियों से हार जाता है।'[१०] मनुष्य को अपने देह की कीमत स्वयं ही समझकर एक अच्छा जीवन जीना चाहिए। यही इस कहानी संग्रह का प्रमुख उद्देश्य है, प्रमुख संदेश है।

निष्कर्षत :–

श्री तेजेन्द्र शर्मा का उपर्युक्त कहानी संग्रह पाठक वर्ग को देह की कीमत बताने के साथ ही मनुष्य की अमूल्य देह की सुरक्षा किस प्रकार हो उसकी चर्चा भी विस्तार से करता है।

संदर्भ सूची :–

१. रचना समय, तेजेन्द्र शर्मा विशेषांक, संपादक – हरि भटनागर, पृ. १६

२. देह की कीमत, तेजेन्द्र शर्मा, फ्लैप से।

3. वही, पृ. १६
४. वही, पृ. २४
५. वही, पृ. ४०
६. वही, पृ. ५२
७. वही, पृ. ५३
८. वही, पृ. ६१
९. वही, पृ. ११८
१०. वही, पृ. ६१

संपर्क सूत्र : ३२–ए सोहमनगर सोसायटी, अंबा माताजी मंदिर के पीछे, लांभवेल–बाकरोल रोड़, बाकरोल – ३८८३१५, जि–आणंद, गुजरात।
मो : ७६९८२०९८१३
ईमेल : sangitamnsp15@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 140-144
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'मोरचे' उपन्यास : सुषम बेदी की कलम से

डॉ. देव्यानी महिड़ा
विभागाध्यक्षा, एम.पी.आर्टस एण्ड एम.एच.कॉमर्स कॉलेज फॉर विमेन, रायपुर दरवाजा, अहमदाबाद, गुजरात

''प्रवासी लिखते हैं भारत के हिन्दी साहित्य को भारत के लेखकों से भी बेहतर।
उतारते हैं अपनी अनुभूतियों को कैनवास के कागज पर।।'' —सुशील कुमार शर्मा

हिन्दी शब्द 'प्रवासन' की तुलना में 'डायस्पोरा' शब्द प्राचीन है यह शब्द मूलतः ग्रीक भाषा का है। डायस्पोरा या Diaspora को ग्रीक भाषा के Diaspora शब्द से लिया गया है। संधि–विच्छेद करने पर यह शब्द इस प्रकार है – Dia और sperien। जिसका अर्थ 'बीजों को बोना, छितराना या बिखेरना, फैलाना आदि है।

मूलतः इस शब्द का प्रयोग ई. पू. ५८६ में यहूदियों के 'बेबीलोनिया से निष्कासन के संदर्भ में किया गया था। आधुनिक काल में यह शब्द यहूदी निष्कासन, प्रवासन और विस्थापन तक ही सीमित नहीं रहा है। आज इस शब्द का प्रयोग विभिन्न देशों के मानव समूहों के विस्थापन, प्रवासन और पुनर्वसन के संसार को रेखांकित करने के लिए किया जाता है।

अनेक भारतीय ऐसे हैं, जो भारत से इतर देशों में हिन्दी रचना व विकास के काम में लगे हुए हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तो हैं ही, अनेक सामान्य जन भी हैं जो नियमित लेखन व अध्यापन से विदेश में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे हैं।

अमरीका में सुदर्शन प्रियदर्शिनी, अनिल प्रभाकुमार, सुधा ओम ढींगरा, रेनू राजवंशी गुप्ता, पद्मा सक्सेना, प्रतिभा सक्सेना, नीना पाल, उषा राजे सक्सेना आदि महिला कथाकार सक्रिय हैं। इन्हीं नामों में एक नाम सुषम बेदी का है, जो कथा साहित्य में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं, वे अमरीका के न्यूयोर्क शहर में रहती थीं। १९८९ से २००६ तक वे कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हिन्दी और उर्दू प्रोग्राम के डायरेक्टर के पद पर कार्यरत रहीं। उनके कुल सात उपन्यास और एक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। तीस वर्षों के लंबे प्रवास के दौरान सुषम बेदी ने भारतीयों के जीवन को बड़ी नजदीकी से देखा और परखा है।

सुषम बेदी का जीवन परिचय :–

जन्म :– सुषम बेदी का जन्म १ जुलाई १९४५ को फिरोज़पुर, पंजाब में हुआ था।

शिक्षा :–

इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली से १९६४ में बी.ए., १९६६ में एम.ए. और १९६८ में दिल्ली यूनिवर्सिटी से एम.फिल्. की डिग्री तथा १९८० में पंजाब यूनिवर्सिटी से पीएच.डी. की उपाधि।

कार्यक्षेत्र :-

हिन्दी के समकालीन कथा और उपन्यास साहित्य में सुषम बेदी एक जाना–माना नाम है। उनकी पहली कहानी १६७८ में प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'कहानी' में प्रकाशित हुई और १६८४ से उनकी कहानियाँ नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आंदोलन का सुंदर चित्रण हुआ है।

रंगमंच, आकाशवाणी और दूरदर्शन की अभिनेत्री सुषम बेदी ने कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली (१६६६–७२) तथा पंजाब युनिवर्सिटी, चंदीगढ़ (१६७४–७५) में अध्यापन किया। दिल्ली दूरदर्शन और रेडियो पर नाटकों तथा दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में १६६२ से १६७२ तक काम किया। लखनऊ रेडियो से बचपन में जुड़ी रहीं (१६५७–१६६० तक)। १६७६ में वे संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जा बसीं और १६८५ से कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्युयोर्क में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर हैं। कंप्यूटर द्वारा भाषा शिक्षण के क्षेत्र में भी वे काम कर रही हैं। उनकी अनेक रचनाओं का अंग्रेज़ी तथा उर्दू में अनुवाद हुआ है। उन्होंने भाषा शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक पुस्तकों की रचना की है।

प्रमुख कृतियाँ :-

उपन्यास : हवन (१६८६), लौटना (१६६४), कतरा दर कतरा (१६६४), इतर (१६६८), गाथा अमरबेल की (१६६६), नवाभूम की रसकथा (२००२), मोरचे (२००६), मैंने नाता तोड़ा (२००६), पानी केरा बुदबुदा (२०१६)।

कहानी संग्रह – चिड़िया और चील (१६६५), सड़क की लय और अन्य कहानियाँ, तीसरी आँख (२०१५), यादगारी कहानियाँ (२०१४)।

निबंध संग्रह– हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण (२०१२)

आत्मकथा : आरोह–अवरोह (२०१५)

कविता संग्रह : शब्दों की खिड़कियाँ (२००६), इतिहास से बातचीत (२०१६)

आलोचनात्मक कृतियाँ : हिन्दी नाट्य प्रयोग के संदर्भ में (१६८४)

अन्य : भाषा शिक्षण से जुड़ी विविध सामग्री अंग्रेजी में प्रकाशित।

एकेडेमिया :-

सुषम बेदी अपनी सांस्कृतिक आलोचना और अकादमिक कार्यों में पहचान, प्रामाणिकता और परिवर्तन के सवालों की खोज में शामिल थीं और ये विषय उनके कथा लेखन में भी प्रतिबिंबित होते हैं। वह आठ प्रमुख हिंदी भाषा के उपन्यासों के साथ–साथ हिंदी लघु कथाओं और कविताओं के संग्रह की लेखिका थीं। इनका व्यापक रूप से अनुवाद किया गया है और ये दक्षिण एशियाई प्रवासी अनुभव पर अकादमिक शोध प्रबंधों और बहस का विषय रहे हैं।

वे हिन्दी भाषा के शैक्षणिक अनुसंधान में भी शामिल रहीं और उन्होंने हिन्दी में मौलिक पढ़ने और सुनने की समझ संबंधी सामग्री विकसित की। इनमें से कई सामग्रियाँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। उनकी 'भाषा कक्षा में प्रामाणिक सामग्रियों का उपयोग रूहिन्दी में एक मामला' लेख को दक्षिण एशियाई भाषाओं के शिक्षण और अधिग्रहण (पेंसिल्वेनिया प्रेस विश्वविद्यालय) के संकलन में शामिल किया गया था।

१६६० से १६६१ तक उन्होंने बीबीसी के साप्ताहिक कार्यक्रम 'लेटर्स फ्रॉम अब्रॉड' में योगदान दिया,

जिसमें उन्होंने न्यूयोर्क में जीवन के बारे में दिन–प्रतिदिन के मुद्दों पर चर्चा की।

कथा लेखन :–

उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास 'हवन' (१६८६) है, जिसका डेविड रुबिन द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद किया गया था और हेनीमैन इंटरनेशनल द्वारा 1993 में 'द फायर सैक्रिफाइस' शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया था। उनके उपन्यासों और लघु कथाओं में अक्सर महिला नायक शामिल होती हैं जो बातचीत की प्रक्रिया में होती हैं। नई पहचानें जो न तो पूरी तरह से पुरानी हैं और न ही नई हैं, अक्सर अपने जीवन की अशुद्धियों में पहचान और ताकत ढूंढती हैं। सुषम बेदी जी की कथा का ध्यान बातचीत और परिवर्तनकारी प्रक्रिया, सांस्कृतिक हानि के दर्द और त्रासदी पर केंद्रित है।इस प्रकार उनके कार्य दक्षिण एशियाई प्रवासी और अप्रवासी अनुभव में पूरी तरह से स्थित हैं।

अभिनय :–

सुषम बेदी जी ट्रू क्राइम : न्यूयोर्क सिटी (सुषम बेदी जी के रूप में श्रेय), [१, थर्ड वॉच और लॉ एंड ऑर्डर : स्पेशल विक्टिम्स यूनिटऔर द गुरु (२००२) और एबीसीडी (१६६६) जैसी फिल्मों में दिखाई दीं।

पुरस्कार और मान्यता :–

२००७ में उन्हें हिंदी भाषा और साहित्य में उनके योगदान के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा १,००००० रुपये से सम्मानित किया गया था।

जनवरी २००६ में उन्हें हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

निधन :–

सुषम बेदी का निधन २५ मार्च २०२० को हुआ था।

सुषम बेदी : 'मोरचे' उपन्यास :–

'मोरचे' २००६ में प्रकाशित सुषम बेदी का सातवाँ एवं तनु नामक एक नारी के शोषण पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास के बारे में डॉ. उमा मेहता का मंतव्य है कि – ''स्त्री जीवन की न खत्म होने वाली अनगिनत समस्याओं और संघर्ष का प्रतीक है– 'मोरचे' उपन्यास! स्त्री चाहे पढ़ी–लिखी हो या अनपढ़, चाहे वह सुंदर हो या कुरूप, देश में हो या विदेश में पुरुष की पाशविकता का शिकार वह होती रहती है। स्त्री कौन–कौन–सी दिशाओं से खुद को बचाती फिरेगी? कहीं भी तो वह सुरक्षित नहीं है। न घर में, न घर से बाहर! उसे हरकोण से चौकन्ना और सावधान रहना पड़ता है, न जाने कौन–सी दिशा से घातक प्रहार हो जाए और उसके वजूद को ही मटियामेट कर दे! उसे हर मोरचे पर तैनात रहना है, सतर्क रहना है। अपनी लड़ाई खुद लड़नी है।''[१]

पति द्वारा शारीरिक और मानसिक रूप से शोषित तनु को अपना जीवन लक्ष्यहीन लगता है। जब वह खुद अपने बारे में सोचती है तब वह 'निराशा' में डूब जाती है। लेखिका कहती है – 'एक प्रकार की उदासी' उसके भीतर बैठती जा रही थी। जैसे 'अवसाद' की एक धुन उसे भीतर ही खाने लगी थी। मन उलझा रहता था। सब कुछ बहुत बेमानी, बेमतलब! जिंदगी में कुछ नहीं रह गया था। कोई दिशा नहीं थी जिस ओर उसे जाना था। 'जिंदगी' बिना उद्देश्य अपनी धुरी पर घूमे जा रही थी। जीवन रस निचुड़कर जैसे 'निःद्देश्य' रह गया

था।''[२] तनु कितने ही मोरचों से घिकर लगातार जूझती रहती है। एक हिंसक पति के चक्कर में फँसी तनु न तो रिश्ते के बाहर निकल पाती है, न ही उसके बीच रहने के काबिल है। विदेशी भूमि के अजनबी परिवेश में गिरती, ठोकरे खाती और सही रास्ते तलाशती तनु की 'मोरचे' बेजोड़ कृति है।

पापा की मृत्यु से तनु को बहुत सदमा पहुँचता है। माँ पर तीन बच्चों की जिम्मेदारी है। तनु अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए भारत में रुक जाती है और माँ अमरीका चली जाती है। तनु के पति का नाम 'अनुज' है। अनुज का सपना अमरीका जाने का है अतः वह तनु से प्रेम करता है ताकि उसी के जरिए वह अपना सपना पूरा कर सके। वह तनु से विवाह कर अमरीका पहुँचता है और फिर वह दो बेटों की माँ बन जाती है। शादी के बाद अनुज का तनु को हमेशा मारना, पीटना, गालियाँ देना उसके दैनिक क्रम में है। डॉ. उमा मेहता ने तनु के चरित्र के विषय में कहा कि– '' 'मोरचे' उपन्यास की नायिका तनु के माध्यम से सुषम बेदी जी स्त्रियों को प्रत्येक मोरचे पर अपनी जिजीविषा न खोकर उत्साह व आत्मविश्वास से जीने की राह दिखाती है। स्त्रियों को आत्मनिर्भर बन पुराने और खोखले मूल्य की बेड़ियाँ तोड़नी होंगी। अपनी शादी को बचाए रखना मात्र स्त्री का ही कर्त्तव्य नहीं है। अपने हिस्से की खुशी उसे खुद चुननी होगी। छल, कपट, विश्वासघात और षड्यंत्र के खिलाफ आवाज़ उठानी होगी। हर मोरचे पर अपने स्वाभिमान को बरकरार रखने के लिए तैनात रहना होगा। पस्त होना, रो–धोकर बैठे रहना जिंदगी नहीं है। दुगुने विश्वास से खुद भी ऊपर उठना होगा और हमारे समाज की दूसरी औरतों को भी प्रेरित करना होगा।''[३]

अनुज के शोषण का पता तनु की माँ को लगता है किन्तु अपने बच्चों की खातिर तनु घर छोड़ने को तैयार नहीं है। अनेक स्त्रियों के साथ अनुज का संबंध है। वह तनु को 'तलाक' देना चाहता है, इसलिए वह उसे पागल तक साबित करने के लिए तैयार है। तनु पर वह झूठा इल्जाम लगाता है। तनु यह इल्जाम सहन नहीं कर पाती। अनुज अपने बच्चों की कस्टड़ी को लेकर केस जीत जाता है। पति द्वारा तनु पीड़ित थी, अब उसकी यह हालत थी कि अपने अकेलेपन को भरने के लिए उसे किसी–न–किसी पुरुष का साथ चाहिए था। इसी कारण बाद में सुन्दर तनु की मुलाकात रजीनो से होती है और उसके साथ भी वह शारीरिक संबंध स्थापित करती है। वह उसके साथ जिन्दगी व्यतीत करने का फैसला करती है। अब पराए पुरुष का साथ उसे सुखद लगता था। उसकी माँ को जब उसकी हालत का पता चलता है तो वह उसे बहुत समझाती है, किंतु तनु माँ की एक भी बात सुनने को तैयार नहीं होती। वह माँ को ही गलत दर्शाकर अपनी 'असामाजिकता' को व्यक्त करती है। वह कहती है – 'बस यही तो मुसीबत है! आपको जरा–जरा सी बात में बदनामी का डर लगा रहता है। आई हैव सफर्ड इनफ! अब और नहीं सुनूँगी आपकी बात। आपने तो खुद अपनी जिंदगी नर्क की है। मेरी भी करना चाहती हैं। पर सुन लीजिए। इस देश के 'रीति–रिवाज' अलग हैं। मैं आदमियों से मिलूँगी। 'डेट' करूँगी तभी कोई सही पति खोजने की उम्मीद रख सकती हूँ।'[४] विदेश हो या भारत नारी पतिव्रता ही होनी चाहिए, चाहे पुरुष हो या नहीं। नारी की पवित्रता, नैतिकता शील के प्रश्न सदैव उठाए जाते हैं।

अनुज को नीचा दिखाने के लिए तनु डॉ. गोल्ड बर्ग से शारीरिक संबंध बनाती है। उसे यह लगता है कि इस रिश्ते द्वारा उसने अनुज पर विजय प्राप्त कर ली है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति के साथ अप्रिय व्यवहार जब होता है तब वह दूसरे व्यक्ति को नीचा दिखाने का प्रयास करता है। अपने अनिश्चित भविष्य के बारे में सोचकर यह ऐसा बर्ताव करता है। अपनों को वह दुःख देकर स्वयं सुकून महसूस करता है। 'लौटते

हुए हवाई जहाज में तनु खुद को कोसती रहती थी। कितनी पागल थी जो यूँ ही सोचे–समझे बिना खुद को दूसरे पुरुष के हवाले कर दिया। फिर भी उसे पछतावे की अनुभूति नहीं थी। कभी मौका मिला तो वह अनुज को बतलाएगी कि तुम्हें दूसरी औरतें मिल सकती हैं तो मुझे भी दूसरा आदमी मिल सकता है। अब मैं तुमको बदसूरत लगने लगी हूँ, जबकि डॉ. गोल्डबर्ग ने कितनी बार उसे 'इंडियन ब्यूटी' कहकर पुकारा था।''[५]

सुषम बेदी के कथा साहित्य की नायिकाएँ शिक्षित और विद्रोही हैं,किन्तु अपने पति के सामने लाचार हैं। सुषम बेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को दृष्टि समक्ष रखकर कमल किशोर गोयनका ने लिखा है कि – 'अमेरिका में कहानी और उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति में महिला लेखिकाओं का वर्चस्व है। संभवतः इसका कारण यह है कि प्रवासी भारतीय महिलाएँ जिस प्रकार स्वदेश, परदेश तथा दो भिन्न संस्कृतियों के द्वंद्व में जीती घर गृहस्थी को संचालित करती है वह उनमे अनुभवों एवं संवेदनाओं को कथा एवं पात्रों में पिरोकर अभिव्यक्त करती रही हैं।'[६]

निष्कर्षतः सुषम बेदी का उपन्यास 'मोरचे' प्रवासी समाज की स्थितियों को आधार बनाकर लिखा गया है। अपने अनुभवों को आधार बनाकर प्रवासी समाज की समस्याओं को व्यक्त करने के लिए वहाँ के जीवन का यथार्थ चित्रण सुषम बेदी जी के द्वारा किया गया है। इतना ही नहीं, सिर्फ सामाजिक समस्याएँ ही नहीं अपितु आर्थिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक समस्याओं की तह में उतरकर उन्हें उजागर किया है, जिससे भारतीय पूर्ण रूप से अनजान हैं।

संदर्भ सूची :–

१. अनुसंधान, त्रैमासिक शोध पत्रिका, संपादक : डॉ. शगुफ़्ता नियाज, अंक–जुलाई–दिसम्बर, २०१६, पृ. २५

२. मोरचे, सुषम बेदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृ. १०४

३. अनुसंधान, त्रैमासिक शोध पत्रिका, संपादक : डॉ. शगुफ़्ता नियाज, अंक–जुलाई–दिसम्बर, २०१६, पृ. ३१

४. वही, पृ. १५२

५. वही, पृ. १४२

६. कमल किशोर गोयनका, प्रवासी साहित्य जोहान्सवर्ग से आगे, पृ. ४२

संपर्क सूत्र :

मो : 8490825391

ईमेल : gohildp199@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 145-150

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Tennessee William'sa street Card Named Desire as an Expressionaist Play

Sonia Priyadarshini R,
Assistant Professor, PG Dept. of English, CHSDST Theresa's College for Women(A), Eluru
Ch. Sudha Rani,
Student-MA English, CHSDST Theresa's College for Women(A), Eluru
K.Durga Jhansi Rani
Student-MA English, CHSDST Theresa's College for Women(A), Eluru

ABSTRACT :-

The play represents a personal compromise for 'Tennessee Williams' work "A streetcar named desire" is an outcome of his personal struggle. Tennessee Williams one of the most significant pioneers of American drama. He drew his inspiration from his own family members. He is one of the most influential American playwright after the II world war.He wrote many award winning poetic plays. He is known as "the theatre poet in prose". His themes are based on human frustration in which sex and violence underlie an atmosphere of romantic gentility.Expressionism is one of the dramatic technique which represents the reality of inner life.As an American dramatist Tennessee Williams uses expressionistic technique in a masterly manner.In order to represent inner reality of life he uses this technique. The clash between north and south are one of the major themes of William's.A street car named desire is a play written by the very famous playwright Tennessee Williams, which follows the peripatetic of fragile and fading southern belle-blanche dubois to her eventual mental disintegration and metaphorical death. It explores and addresses a variety of themes and issues such as toxic masculinity, loss of empathy, the American dream, non-conformity reality and desire it is set against the backdrop of a new post. World War II America and has implicit references to the antebellum (pre American civil-war of 1861-65) southern society.

Key words :- American drama, Expressionism, Disintegration, American dream.

INTRODUCTION :-

Expressionism and all other unconventionaltheatre techniques have only one valid goal:a closer

approach to the truth.When a piece employs techniques it is not-or certainly should to find a closer angle of approach, amorenot be-trying to evade its responsibility to deal with reality or to interpret experience; intends or should at least intend to find a closer angle of approach, a moe penetrating and vid expression of things as they are or atleast….. truth, life reality is something organic that the poetic imagination it can only represent or suggest in essence through transformation, transmutation into forms other than those existing simply in its appearance (Williams, 2007, PP. 9-10)

Expressionism as an art from was a movement, which began in Germany bolero World. It is revolt against 'realism'. by distorting objects and breaking up time sequence enabling the dramatist to depict 'inner reality, me dramatist to depict 'inner reality, the soul of psyche of people. The emphasis Suss iron the external to the inner reality. Strindberg was the first dramatist to write expressionistic novels. These play wrights who revolted against realism shared Nietzsche contempt for "constant spying on reality' and lying in the dust before triviality. The warned who were neither satisfied with habitual forms of realism nor contented with the basic aims, which motivated it, men who rebelled against its preordained concern with are appearances and hated the technical clichés through which it spoke.

The play wrights, who for convenience were later, to be labeled “Expressionists” want to do more than contemplate the surface of things. They sought for deeper conflicts the those granted by the good old external "situations" of the "well-made plays" even as treat by the realists. They looked for a freer means of presentation and a wider range of narrativ than their restricted formula afforded. They wanted to see not the surface alone, but be death the surface too. It was Stanislavski who said "realism ends where the super conscious begins, and the superconscious was the object of their quest. They hoped to enjoy some thing of that sense of omniscience, which is the usual province of the novelist, to exercise hi freedom in selecting one character, through which to see events, and to write with a point view, which was impossible when, the fourth wall" was removed and a mere "slice of life revealed. They wanted to look within their characters, treat them subjectively, tap the streams of consciousness if need be, penetrate into their innermost beings, and lay bar their dreams, their inhibitions, and the hidden workings of their minds, which could not b included in the external observation of the camera. In short, They sought the eye of the X ray instead of the camera.

In pursuing their aims, they did not want to concentrate on one event, but on a series events pivotal, revelatory moments, moments which marched bravely into the essence (the event crucial moments of crisis rather than half hours of preparation. It. however, the individualized characters they did so with an interest, which was cantered in a se pursries of events rather than a single and arbitrary quandary.

As their concern frequently was not the outer world at all but the inner life of the mind an spirit, they availed themselves of the discoveries and the language of the newer psychosis's particularly the psychoanalysts and psychiatrists who had appeared since of the century.

In the purely technical matters of playmaking these insurgent dramatists condemn in the customary form of the realistic play that pretended to realism to the manner in which the "Well-made plays" were padded just to fill, give characters, and comic relief, which were as artificial as they were unimposing. Usually built around one "big scene" or "situation", these plays had life, its pace, its confusion, its mad, unfaltering onrush-and gave, to the kaleidoscopic sequence of events or the true complexities of character. Sionists saw them, they took into account only what man said, never what we and were, accordingly eternally preoccupied with surface and appearance. The needs of that new centre of conflict these insurgent playwrights had found, for they were not satisfied with the old sources of action. They, like their me, la stumbled upon new ones. They did not want to present mankind grappling with outside forces. Rather they sought to dramatize man's struggle with himself. And for this the old dialogue was patently inadequate.

In their search for freedom the Expressionists turned, consciously or unconsciously, to the model the Elizabethans afforded. They had marched to their points and their conclusions with superb freedom. No Unities had stood in their way, nor had they bowed to any of the academic niceties, which sapped the vitality of the French Classicists. Their stage was the world and their scripts were nomads traveling at will to its farthest corners. Undoubtedly the Expressionists were as much influenced by the motion pictures as they were by the novelties, the psychoanalysts.

Though the playwrights using its technique have won a common title, they have but rarely been consolidated into a group or school, in spite of certain similarities in methods of "attack" and, above all, in the common desire for experimentation which has characterized their work the world over, the protest of the Expressionists has been largely individual.

The 1947 play 'A Streetcar Named Desire' is a modern domestic tragedy written by the esteemed southern gothic writer Tennessee Williams. It presents a myriad of distinctive characters which serve not only to allegorise the various issues and themes explored in the play but also to provide a unique perspective showing that one person's hell is another's heaven; how Elysian Fields (the small town or avenue where this play is set) at first glance may seem like a tolerant paradise but hides a sinister truth about families plagued by domestic violence and a lack of sensitivity. The playwright, Tennessee Williams effectively presents the themes of the gentle antebellum south, its contrasting counterpart the post-world war II America, the masculine and the effeminate and nonconformity in his play and these themes are instrumental in affecting the characters of the play and how they shape their Character

of the play and how they shape their world. Williams dramatically presents these contrasting characters to show that all characters in the play to an extent live in their own illusion to conform to and sharp the world around them yet hypocritically judge blanche for being detached from reality and essentially attempting to do the same. Tennessee Williams presents this irony dramatically through the constructs of the more sensitive, non conformist individuals like Blanche Dubois and Allan Gray and those individuals who have now become a part of the new harsh community of post war America: Stella Kowalski and Stanley Kowalski.

Elysian Fields in Streetcar presents a unique community within New Orleans known for its "raffish charm" and "easy intermingling of races". It is a reference to a resting place for Greek heroes after their deaths which is ironic since the protagonist of the play is an antihero. It therefore indicates that Elysian fields with its "tender blue" sky and "faint redolence's of bananas and coffee" will also be Blanche's destruction. The juxtaposition of the bright tones with the "weathered grey" houses further implies that Elysian fields may be a paradise for the ideal Greek hero (traditionally characterized as a brave and skilled warrior who died on the battlefield) a lot like the construct of Stanley who takes extreme pride in the role he played during the war, but it is not a paradise for the vulnerable, sensitive individuals like Blanche who refuse to conform to the harsh society of these 'heroes". Elysian fields is a community created by the new post war America; a world shaped from the blood and death which characterised the war and therefore is shaped into a paradise for the crude and harsh.

It is representative of the beautiful facade of the "turquoise" sky which attenuates the "atmosphere of decay" indicating the decay and rot which festers within the seemingly perfect and inclusive society of Elysian Fields.

On the other hand, a contrasting argument could suggest that Elysian Fields does not represent the decay in society but rather the American dream and practicality embodied by the working class society of post war America. Williams presents Elysian Fields as an all inclusive society where immigrants feel at home implying that it is not the community of Elysian Fields which forces the Blanche (the Antebellum South) to conform but Blanche who tries to shape the lifestyle and raffish charm of elysian fields to fit the aristocratic southern society of her past which justifies the destructive impact of elysian fields on blanches incongruity to elysian fields was made evident from the beginning of the play foreshadowing the outcome of her attempt to shape elysian fields to fit her moulds blanche Dubois unique construct is dramatically presented by Williams through the theme of reality and illusion. Blanche at times is presented as a pathological liar which is simply a way for her to cope with her inability to fit in and escape the truth of her reality which makes her extremely vulnerable.

This is perhaps and indication that Williams saw himself in blanche as he himself had a tendency

to lie are nothing but illusions she forces herself to believe in because she cannot stand the light of the truth and finds the dark of her lies "comforting". This is further implied when Blanche is likened to white moth who cannot help but be attracted to flame (light) even though it knows that flame will eventually burn it. Blanche craves a reality where she can touch the light, find sensitivity in a post-WWII world where the truth of reality is too harsh for her to accept. This indicates that Blanche's detachment from reality for which she was punished and ousted, is symptomatic of the society's brutality.

Her illusions shape her fantastical world where she is still an aristocratic southern belle living in a courtly society southern society with sensitive sensibilities and being invited on “ a cruise of the Caribbean”. Blanche shapes the world around her so that she can escape the truth of her peripatetic or loss of fortune, sordid past and create a new life and beginning for herself at Elysian Fields so that she can "breathe quietly again". This is why her metaphorical death caused by Elysian Fields's inability to accept her evokes feelings of pathos as her only fault was her inability to accept the insensitivity embodied by Elysian Fields. Williams himself claims that he had "only one major theme for [his] work, which is the destructive power of society on the sensitive non-conformist individual" which further solidifies the fact that Tennessee Williams created pathos (an atmosphere of profound melancholy) to highlight the bigotry of the society and Blanche's tragic attempt at shaping a world for her self.

It is ironic and hypocritical that Blanche like all the other residents of Elysian Fields was essentially an immigrant who had left her past behind to start a new life yet she was the only one who was eventually ousted from the society for the fornications of her past. It also reflects the double standards of the male dominated society of Elysian Fields. Blanche was not the submissive and meek woman who condoned domestic violence like Stella was; she refused to accept the brutality embodied by Stanley and the post war America and so was punished for it because she interfered with the status quo of the society shaped by men like Stanley in the play. She fought against the aggression, loss of sensitivity, absence of intellectual affinity and profound brutality represented by Stanley. This categorises the sensitive souins against tire north and its vulnerability after its defeat. The antebellum south was later taken advantage of in its weakened state just like how Blanche was raped by Stanley when she was unsuccessful in taking Stella away from Stanley's world and into a world shaped from her illusions.

Blanche romanticises the antebellum south and the delicate sensitivities it represented. However in doing so she again deludes herself into believing that the old south was perfect and embodied all the beauty and softness which was missing in post-war America. The southern society at

its core was racist and intolerant so much so that they even ousted Blanche despite her former status and fortune. Blanche however clung to the fantasy of the southern belle even when that society itself deserted her, this shows Blanche's desperation to cling on to the gentility of the south as well as her vulnerability entering the harsh new America. While Blanche saw the old south as her heaven because of its morphed, romanticised image in her mind; The old south was hell for her former husband Allan Gray who committed suicide because of the cruel southern society (embodied by Blanche) and its failure to accept Gray as a homosexual. Blanche cruelly told Gray that "you disgust me" and triggered his suicide, it portrayed how Blanche (the image of the soft southern society) was Gray's last hope at finding acceptance but she too callously turned her back on him when he needed her friendship and approval the most. This further elaborates how Blanche's and Allan's reality were one and the same feet extremely different because while Blanche)believed the beautiful illusion of the sensitive south, jay saw the cruel, oppressive rot and decay which illed and festered the whole society. The extremely legatine counterpart to Blanches' excessively positive view of the affluent old south, n conclusion, Tennessee Williams successfully resented his characters in an effective manner to Dortray the theme of society's impact on incongruity mid non conformity within a community and also to)resent the hypocritical male dominated society's nobility to accept individuals carving out a place for themselves in a harsh world to protect their vulnerability.

To conclude Williams plays are influenced by expressionism.He is one of the pioneer in the use of this technique in the American theatre. He wants to convey a strong message through the actions and symbols rather than dialogues which is expressionism. Through his master piece he consolidated his bleak poetics and demonstrated his critical and revolutionary capacity.

REFERENCE :-

1. STEPHEN FENDER "American Literature in context", General Editor MAN.
2. ANDREW HOOK"American Literature in context" , General Editor MAN.
3. MARSHALL WALKER "The literature of the united states of America" Macmillan, Oxford, 1983.
4. HELENA GRICE, Candida Hepworth "Beginning ethnic American literature" Manchester Univ. Press. New York. 2001
5. Abram,M.H "A glossary of literacy term's"(Publishedby Macmillan India limitedNew Delhi 1978)
6. A Street Car named desire(published by penguin Books ltd.Middlesex.England 1959)

Soniarepudi4@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 151-154

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी भारतीय युवाओं पर सिनेमा साहित्य का प्रभाव

कर्री पृथ्वी

शोधार्थी, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम – ५३०००३

सिनेमा एक विशेष शृंगारिक और सांस्कृतिक धारणा है, जो समाज में अपने विचारों, विचारधारा, रंगमंच, और विवेचना को प्रकट करता है। इसका प्रभाव सिनेमा के विभिन्न पहलुओं को अलग–अलग रूपों में दिखाई देता है। इस लेख में, हम देखेंगे कि प्रवासी भारतीय युवाओं पर सिनेमा का प्रभाव कैसे होता है और उनके जीवन में कैसे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रवासी साहित्य एक ऐसा साहित्यिक शृंखला है जो विदेश में निवास करने वाले भारतीय लेखकों द्वारा रचा जाता है। यह साहित्य उन लोगों के अनुभवों, विचारों, भावनाओं और जीवन के मामूले मोड़ों को दर्शाता है जो विदेश में रहकर अपने भारतीय मूलों से जुड़े रहते हैं।प्रवासी साहित्य में शामिल होने वाली रचनाएँ कहानियां, काव्य, उपन्यास, निबंध, पत्रिकाएं, और आत्मकथा शामिल होती हैं। इस साहित्य के माध्यम से प्रवासी लेखक विदेशी देश में अपने जीवन, समस्याओं, संघर्षों, आनंद और संवाद को व्यक्त करते हैं। वे अपने विदेश में बिताए वक्त के अनुभवों और सांस्कृतिक भाषाओं के माध्यम से पढ़कर भारतीय भावनाओं को समझने और साझा करने का प्रयास करते हैं। प्रवासी साहित्य एक महत्वपूर्ण साधना है जो भारतीय संस्कृति, भाषा, और धारोहर को विदेश में जीवंत रखने में मदद करती है। इसके माध्यम से विदेश में रहने वाले भारतीय लेखक अपने प्रेम और सांस्कृतिक जुड़ाव को जगाते हैं और भारतीय समृद्धि और विविधता को विश्व के साथ साझा करते हैं।

प्रवासी साहित्य की विशेषता यह है कि यह अक्सर दोनों भाषाओं, अर्थात् मूल भाषा और विदेशी भाषा, का मिश्रण करता है। लेखक या कवि के अनुभव, अनुसंधान और भावनाएं उस देश की संस्कृति, विचारधारा, रिवाज़ और सामाजिक संरचना को अपने साहित्य में प्रकट करते हैं। प्रवासी साहित्य विभिन्न रूपों में प्रस्तुत हो सकता है, जैसे कि कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध। इसके माध्यम से लेखक अपने दर्शकों को भारत के सांस्कृतिक विविधता के साथ वाकिफ कराते हैं और उन्हें विदेशी दृष्टिकोण से भारतीय समाज को समझने में मदद करते हैं। एक उदाहरण के रूप में, जैसे कि विदेश में निवास करने वाले भारतीय लेखक अपनी कविता में विदेशी दृष्टिकोण से भारत की स्थिति, राजनीति, आर्थिक विकास, समाज और भाषा के विषय में अपने अनुभवों को व्यक्त करते हैं और उसमें भारतीय संस्कृति की महत्ता को बताते हैं। प्रवासी साहित्य का मुख्य उद्देश्य अपने मूल देश और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को विदेशी भूमि में बनाए रखना होता है। यह साहित्य उस कवि या लेखक के विचारों का प्रतिबिम्ब करता है जो विदेश में अपने देश के प्रति भावनाएं और भावुकता को साझा करना चाहते हैं। इसके माध्यम से वे अपने संदेश और कल्पनाओं को अपने देशवासियों और अन्य प्रवासी

भारतीयों तक पहुंचाते हैं।

प्रवासी भारतीय युवाओं का प्रस्तावना एक सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक दृष्टिकोण से हो सकता है, जो इन युवाओं के देश से दूर रहने के कारण विशेष होता है।

यहां कुछ महत्वपूर्ण प्रस्तावनाएं हैं :–

1. **नौकरी और आजीविका :–** विदेश में व्यापार, औद्योगिक विकास, अनुसंधान और तकनीकी क्षेत्रों में उन्नति और समृद्धि के अवसर बढ़ते जा रहे हैं, जो भारतीय युवाओं को विदेश जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

2. **उच्च शिक्षा :–** विदेश में उच्च शिक्षा के कुछ विश्वविद्यालय विश्वस्तरीय शिक्षा और विशेषज्ञता के क्षेत्र में अपने को विकसित करने के लिए लाभकारी होते हैं।

3. **विविधता और अनुभव :–** विदेश जाने से भारतीय युवा विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, और लोगों से भी अपनी अनुभूतियों को बढ़ावा देते हैं जो उन्हें समृद्धि और विविधता की अनूठी अनुभूति प्रदान करती है।

4. **संबंध और देशभक्ति :–** भारतीय युवा अपने देश के साथ संबंध बनाए रखते हैं और प्रवासी भारतीय युवा इस देश को विदेश में अधिक प्रसिद्ध करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. **समाज सेवा :–** कई प्रवासी भारतीय युवा विदेश में अपने समुदाय के उत्थान और समर्थन के लिए काम करते हैं। उन्हें विदेशी देश में समाज सेवा, सामाजिक संस्थाओं, या अन्य क्षेत्रों में सक्रिय होने का मौका मिलता है।

इन सभी प्रतिबिंबों से प्रकट होता है कि प्रवासी भारतीय युवा विदेश में अपने जीवन का एक नया अध्याय लिखने के लिए उत्साहित होते हैं। ये युवा अपनी सफलता, अनुभव, और संघर्षों की कहानियों के माध्यम से भारत को विदेश में प्रतिनिधित्व करते हैं और देशवासियों के बीच संबंध बनाने और देशभक्ति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीय युवाओं के लिए सिनेमा एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम है जो उन्हें अपनी भारतीय संस्कृति को अभिव्यक्त करने में मदद करता है। भारतीय भाषाएं, कला, और परंपराएं सिनेमा के माध्यम से जीवंत होती हैं, जो युवाओं के लिए गर्व का विषय बनती हैं। साथ ही, सिनेमा में दिखाई गई कहानियां और कल्चर उन्हें अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक अच्छा माध्यम प्रदान करते हैं। भारतीय सिनेमा के विभिन्न रंगमंच और अभिनय का प्रभाव प्रवासी भारतीय युवाओं के मनोभाव पर भी पड़ता है। बॉलीवुड फिल्में विशेष रूप से भावुकता भरी होती हैं, जो युवाओं के जीवन में सहायक होती हैं। उन्हें प्रेरित करती हैं और उन्हें अपने सपनों की पूर्ति के लिए प्रेरित करती हैं। सिनेमा के माध्यम से, प्रवासी भारतीय युवा समाजशास्त्रीय मुद्दों पर विचार करते हैं और समाज में होने वाले बदलावों को समझते हैं। वे फिल्मों के रूप में समाज के परिवर्तन के सभी पहलुओं से परिचित होते हैं, जो उन्हें आत्मविश्वास और जागरूक बनाता है।

सिनेमा एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो युवाओं को समाज में होने वाले मुद्दों के प्रति जागरूक करता है। फिल्मों के माध्यम से वे समाज में बदलाव का अनुभव करते हैं और उन्हें समाज के निर्माण में सहायता करने के लिए प्रेरित करता है। सिनेमा प्रवासी भारतीय युवाओं के लिए मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो उन्हें जीवन के सारे तनाव और दबावों से राहत प्रदान करता है। युवाओं को फिल्में देखकर रोमांस का अनुभव होता है और उन्हें सामान्य जीवन से दूर ले जाती हैं। सिनेमा प्रवासी भारतीय युवाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उन्हें विभिन्न पहलुओं में प्रेरित करता है। इसका प्रभाव सांस्कृतिक

अभिव्यक्ति, सामाजिक संदेश, रोमांस और मनोरंजन के साथ–साथ समाजशास्त्रीय परिवर्तन पर भी पड़ता है। इसलिए, सिनेमा न केवल उन्हें मनोरंजन का स्रोत प्रदान करता है, बल्कि उन्हें एक अच्छे नागरिक के रूप में विकसित करता है।प्रवासी भारतीय युवा अपने संघर्षों, सफलता, और विचारों को साझा करते हुए एक सकारात्मक समुदाय का हिस्सा बनते हैं जो विदेश में अपने देश के लिए गर्व से खड़ा है। भारतीय सिनेमा साहित्य एक विशेष साहित्यिक विधा है, जो भारतीय सिनेमा के विषय में लिखा जाता है। यह साहित्य फिल्म उद्योग, फिल्मों के निर्माताओं, निर्देशकों, अभिनेताओं, लेखकों, गायकों, और अन्य संबंधित कलाकारों के बारे में हो सकता है।

भारतीय सिनेमा साहित्य के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं :–

1. **फिल्म इतिहास :–** भारतीय सिनेमा साहित्य में फिल्म उद्योग का इतिहास और उसकी विकास के बारे में जानकारी दी जाती है। यह इस साहित्य को फिल्म बनाने और फिल्म उद्योग में काम करने वाले लोगों के लिए महत्वपूर्ण है।
2. **फिल्मों के विश्लेषण :–** साहित्य में फिल्मों के विश्लेषण, रेटिंग और समीक्षा शामिल होते हैं। यह फिल्म दर्शकों के लिए फिल्मों के बारे में विचारों को समझने में मदद करता है।
3. **फिल्मों के लेखक और निर्माता :–** भारतीय सिनेमा साहित्य में फिल्मों के लेखकों, निर्माताओं और निर्देशकों के बारे में जानकारी दी जाती है। इससे लोग उनके काम और योगदान को समझ सकते हैं।
4. **फिल्म के संदर्भ में साहित्यिक अध्ययन :–** भारतीय सिनेमा साहित्य में फिल्मों के नाटक, कहानी, कला, संगीत, दृश्य प्रभाव, और सामाजिक संदेशों के संदर्भ में साहित्यिक अध्ययन भी होता है।
5. **फिल्मों के प्रभाव :–** भारतीय सिनेमा साहित्य फिल्मों के समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, और विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव के बारे में भी विचार करता है।
6. **सिनेमा के तकनीकी पहलुओं का संदर्भ :–** साहित्य में फिल्म निर्माण के तकनीकी पहलुओं का संदर्भ भी दिया जाता है, जैसे कि कैमरा तकनीक, संपादन, संगीत निर्माण, और स्पेशल इफेक्ट्स।

भारतीय सिनेमा साहित्य भारतीय सिनेमा के विकास और विविधता को समझने में मदद करता है और फिल्म बनाने वाले लोगों और फिल्म दर्शकों के बीच सम्बंधों को समृद्ध करता है।

निष्कर्ष :–

सिनेमा साहित्य प्रवासी भारतीय युवाओं के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है।

वे निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं :–

1. **सांस्कृतिक संवेदनशीलता :–** सिनेमा साहित्य के माध्यम से प्रवासी भारतीय युवा अपनी संस्कृति के प्रति संवेदनशील बनते हैं। उन्हें अपनी भाषा, भूमि, और संस्कृति को लेकर गर्व होता है और वे इसे बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।
2. **राष्ट्रीय भावना :–** सिनेमा साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का संचार होता है। वे अपने देश के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित होते हैं और उन्हें अपने देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।
3. **सामाजिक जागरूकता :–** सिनेमा साहित्य के माध्यम से प्रवासी भारतीय युवा समाज के मुद्दों के प्रति जागरूक होते हैं। वे समाज में हो रहे बदलावों को समझते हैं और उन्हें सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए

प्रेरित होते हैं।

4. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा :–** सिनेमा साहित्य के द्वारा उन्हें स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा मिलती है। वे अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं और अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए निर्धारित होते हैं।

5. **भावनात्मक विकसित करना :–** सिनेमा साहित्य के माध्यम से उन्हें भावनात्मक रूप से विकसित करने का मौका मिलता है। फिल्मों के किरदार और कहानियां उन्हें अपने भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें आत्मसात करती हैं।

इसके माध्यम से वे संस्कृतिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय भावना, समाजिक जागरूकता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। सिनेमा साहित्य के द्वारा उन्हें भावनात्मक रूप से विकसित किया जाता है और वे अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित होते हैं। इसलिए, सिनेमा साहित्य न केवल मनोरंजन का स्रोत है, बल्कि एक उत्कृष्ट साहित्यिक माध्यम भी है जो युवाओं को समर्थन, समाज के मुद्दों के प्रति जागरूकता, और भावनात्मक विकास में सहायता करता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. "The Impact of Cinema on Youth : A Sociological Study" – ललिता सिंह राजपूत।
2. "Indian Cinema and Its Impact on Society" – रामेश्वर जाधव।
3. "Cinematic Impact: Influence and Social Change" – कुमार संजय।
4. "The Role of Cinema in Indian Society" – नितिन सोनकर।
5. "Youth and Cinema: The Impact of Films on Indian Youth" – आभा बोसे।
6. "Indian Youth and Electoral Politics: An Emerging Engagement" & Sanjay

मोबाईल : 8008317899,

ई–मेल : karramunna7@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 155-158

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री संवेदना (नदी उपन्यास)

के. जे. जानकी, हिंदी विभागाध्यक्ष,
रेणुका, प्राध्यापक
श्रीनिवास, प्राध्यापक
के. बि. यन. कालेज, विजयवाडा।

प्रवास शब्द का अर्थ :

प्रवास शब्द का अर्थ है विदेश गमन या विदेश यात्रा। दूसरे देशों में रहने वाले व्यक्ति को हम प्रवासी कहते है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य :–

दूसरे देशों में बसे लेखकों के द्वारा लिखे जाने वाले साहित्य को हम प्रवासी साहित्य की संज्ञा देते है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के बारे अनेक लेखक अपना मत इस तरह प्रकट किया।

उदाहरण :

मृदुला गर्ग :– "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाय उसे हिन्दी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए।"

डॉ. रामदरश मिश्र :– "प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को नई जमीन दी है हमारे साहित्य को दायर दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"

डॉ. कमल किशोर गोयनका :– "हिन्दी के प्रवासी साहित्य का रुप–रंग उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिन्दी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भाव बोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है, जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करना है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत तथा स्वदेश पर देश की द्वंद पर टिकी है, तथा बार–बार हिन्दू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्त होती है।"

डॉ. शैलजा :– "भारत के बाहर लिखे जाने वाले साहित्य को भारतीय आलोचकों ने प्रवासी साहित्य का नाम दिया है। पर प्रवासी साहित्य शब्द भारत से बाहर रचे जा रहे सारे साहित्य को पूरी तरह से व्याख्यायित नही करता। हर देश की जीवन शैली राजनैतिक स्थितियाँ सामाजिक संदर्भ अलग अलग होता है, अतः वहाँ का साहित्य भी अलग ही होता है। यदि हम विदेशों में रचे जा रहे हिंदी साहित्य की सही विवेचना करना चाहते है तो हमे इस साहित्य को देशों के आधार पर ही देखना चाहिये जैसे कनेडा का हिंदी साहित्य, अमेरिका का हिंदी साहित्य, इंग्लैंड का हिंदी साहित्य आदि। इसे यदि हम एक शीर्षक के अंतर्गत रखना चाहते है तो इसे

भारतीय हिंदी साहित्य कहना अधिक उचित होगा।"

डॉ. सुधा ओम ढींगर :– "विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है"।

आज हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श की भांति प्रवासी साहित्य भी अपनी जड़े मजबूत करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। भूमडलीकरण के कारण विश्व के अनेक देश अपनी–अपनी सीमाओं को पार करके आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में आगे हो रहे हैं इसी तरह साहित्य में भी परिवर्तन आने लगे। विदेश में रहने भारतीय संतति अपने अनुभवों संवेदनाओं भारतभूमि के प्रति अपने ममत्व, पीड़ा अपने देशवासियों को दिखाने का प्रयत्न किया उसमें सफलता भी पायी।

हिन्दी के कई रचनाकारों ने आजादी के बाद विदेशी भूमि पर कदम रखे। उसमें प्रमुख हैं अज्ञेय, प्रभाकर, मचावे, निर्मल वर्मा, महेद भल्ला, उषा प्रियंवदा, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, नरेश भारती, इंदु कांत शकुल, कमलदत्त आदि। प्रवासी भारतीय महिला साहित्य रचनाकरों में उषा प्रियंवदा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अंग्रेजी तथा हिन्दी की बहुश्रुत्तता तथा देश–विदेश का अनुभव उनकी निधि है। उषा प्रियंवदा जी प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य कर रही थी उसी समय उन्हें अमेरिका में कुल्बाइट की छात्रवृत्ति मिली। वही से उनकी विदेशी जीवन यात्रा आरंभ हुई। जब अमेरिका के इंडियन विश्वविद्यालय में तुलनात्मक साहित्यिक होने के कारण उषा जी को अमेरिका में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता था। इस संवेदनाओं को वे "नदी" उपन्यास के द्वारा प्रस्तुत करती हैं।

हिन्दी साहित्य एक महान् सागर के समान है जिसकी विशालता का निर्धारण करण असंभव है। प्रत्येक क्षण सागर रुपी इस साहित्य की विशालता भी बढ़ती ही जा रही है। भारत देश में पुराण काल से सुनने वाला नाद है "नारि तू नारायणी हो" लेकिन हर जगह उनका शोषण होता ही रहता है। इसके खिलाफ संघर्ष भी निरंतर चलता रहता है। नारी को हर रोज संघर्ष करने से ही जीत प्राप्त होता है उनके प्रति देखने का नजरिया बदलने का मौक़ा भी मिलता है।

नदी उपन्यास की नायिका गंगा, उनके पति नाम डॉ. गगनेन्द सिन्हा उसके दो बेटियाँ झरना और सपना। इस छोटे परिवार से गंगा खुश थी। बेटे के जन्म से गंगा की खुशी का ठिकाना न था वह स्वयं उसका नाम रखती है "भविष्य"। भविष्य की देखभाल अच्छी तरह से करती है लेकिन वे लुकेमिया की शिकार बनता है। लुकेमिया से भविष्य का मृत्य हो जाता है। इसके उत्तरदायी माने जाने वाली गंगा को सजा भी मिलती है। पति गगनेन्द अपने बेटे भविष्य की बिमारी के लिए उसे बेघर और बेस घर करके बिना बताएं वहाँ का घर अर्जुन सिंह को बेचकर अपने बेटियों के साथ भारत लौट जाते है। इससे गंगा के जीवन में सघर्ष आरंभ होता। ऐसी स्थिति में विदेश में गंगा अकेली अपने जीने की राह तलाशती है। उसके पास अमेरिका रहने के लिए आवश्यक पासपोर्ट के कागजात, डॉलर कुछ भी नहीं बचते। गंगा को अर्जुन सिंह ने ही आश्रय देता है। कुछ दिन गंगा वहाँ अपनी जीवन बिताती है और अर्जुन सिंह की सहायता लेती है अपनी मर्जी से अस्पताल में नौकरी के लिए आवेदन पत्र देती है और उसकी मुलाकात एरिक एरिकस से होती है। एरिक ने ही उसकी बेटे भविष्य का इलाज किया था किंतु बालल्युकिमिया ग्रस्त भविष्य को वह नहीं बचा सका था। एरिक अपना सम्पूर्ण जीवन केंसर रिसर्च और उपचार में अर्पित करना चाहता है। अर्जुन सिंह अनेक प्रकार के प्रलोभनों द्वारा गंगा को बंधे रखना चाहते हैं लेकिन गंगा मुक्त रहना चाहती है, अर्जुन सिंह अपने काम से डॉ. गगनेन्द्र को याद दिलाता है, डॉ. सिंह, गंगा

को कटपुतली मानते है हर काम में पाबंदी लगता है, इस व्यवहार से ऊब चुके गंगा अर्जुन सिंह का घर छोड़कर चली जाती है। जाते वक्त उन्हें डाक का डिब्बा देखती है। उस डिब्बे में उसे ग्रीन कार्ड मिलता है। हर्ष की एक लहर उसके पूरे शरीर को झकझोर करता है।

गंगा ना तो भारत जाती है और न अर्जुन सिंह के पास जाना चाहती है इसलिए वह अपनी पड़ौसन मरिया की कहने पर एक फ्लाट देखती है। जहां रूम मेठ के रुप में एरिक से मुलाकात होती है। गंगा, एरिक कुछ दिनों साथ में रहते हुए एक दूसरे के करीब आ जाते हैं, गंगा सोचती है कि एरिक के साथ ही अपना सारा जीवन बिताना चाहती है, और ये भी सोचती है कि डॉ. सिंह और अर्जुन सिंह और एरिक मे कितनी भिन्नता है। एरिक गंगा को भारत लौट जाने को कहता है तब स्वाभिमानी गंगा एरिक से कहती है "नहीं एरिक—कुछ भी हो मैं उनसे समझौता नहीं करूँगी। उन्होंने मुझे बहुत रौंदा, बहुत कुचला और अंत में फट चिथड़े की तरह कूड़े—कचरे की तरह घर से निकालकर फेंक दिया। मैं सम्मान से जीना चाहती हूँ भले ही मुझे झाडू लगाने का काम करना पड़े"।

गंगा त्रासदी से भरे अपने जीवन से मुक्त चाहती है पति के द्वारा मिली प्रताड़ना एवं अर्जुन सिंह के धोखों से उसका जीवन बर्बादी की कमर पर आ जाता है और ऐसे में एकमात्र एरिक ही था जिससे उसे सच्चा प्रेम मिला था। और गंगा एरिक के साथ ही रहना चाहती हैं किन्तु रह नहीं पाती क्योंकि एरिक के जीवन का एकमात्र लक्ष्य कैंसर का उपचार खोजना था। एरिक और गंगा एक साथ अपने अपने देश के लिए निकलते हैं किन्तु गंगा एरिक का पता नहीं ले पाती है। गंगा भारत आने पर उसके बेटियों और सास—ससुर के पास आकर उसकी सामाजिक अधिकार को पुनः प्राप्त करना चाहती है जिसकी वह विवाहित स्त्री के हकदार हैं किन्तु पति गगनेन्द दूसरे शहर में अन्य स्त्री के साथ जीवन बिताता हुए पत्नी गंगा से प्रतिशोध लेता है। इस प्रतिशोध का कोई सामाजिक और नैतिक आधार नहीं है। वह अपने अध्वदी स्वभाव से पत्नी को नष्ट कर देना चाहता है। गंगा इन परिस्थितियों में अपने भावी जीवन की स्थिति से समझौता करने के लिए बाध्य है। गंगा भारतीय पारंपरिक कुटुंब व्यवस्था से स्वयं को अलगकर अपने गर्भ में पल रहे एरिक के शिशु को बचाकर उसे जन्म देने के लिए अमेरिका परिवेश में लौट जाती है। क्योंकि इस मोड़ पर उसका निर्दिष्ट जीवन विदेश परिवेश में ही संभव है। यह सामाजिक और पारिवारिक परिवेशगत की विरोधाभ्यास है। विदेश में गंगा एरिक की बच्चे को जन्म देती है और प्रवीण की बहन की सलाह से उसे निस्संतान केयरिन बस्बी को देती हैं।

प्रवीण दंपति के साथ रह कर गंगा जीवन का नया अध्याय शुरु करती है। स्त्री जीवन के अन्धेरों में छिपे हुए प्रेम प्रसंग की परिणितियों उनके जीवन को तहस—नहस कर देता है। गंगा और प्रवीण दोनों अपनी गोपनीय प्रेम संबंधो को एक दूसरे से साझा करते हैं। दोनों का ही जीवन इन स्थितियों में गोपनिय ढंग से ही दूसरी मोड़ ले लेता है। किंतु पुरुष अपने संबंधो को मुक्त और स्वछन्द रुप में निर्वाह करने का हकदार बन जाता है। प्रवीण अपना सब कुछ अपने बेटे यशवंत के नाम कर देते हैं और खेत का एक टुकड़ा मात्र ही गंगा को मिलता है। गंगा उसी खेती की आय से अपना गुजर करती है। वह अपने अस्तित्व को स्वेच्छा और स्वाभिमान से अपना शेष जीवन वही बिताने का संकल्प करती है। अंततः गंगा के जीवन में एक नया मोड़ आता है और उसका और एरिक का पुत्र रटीवेन सन अचानक उसके पास आता है और उसे माँ कहकर बुलाता है। वह एक रात अपनी माँ गंगा के साथ रहता है और दोनों एक—दूसरे से अपना दुःख—सुख बांटते है। और स्टीवेन अपनी कैसर के

बारे में बताता है कि उसे भी भविष्य की तरह लयुकिमिया हो गया था किंतु उसे उसके पिता एरिक सनने बचा लिया और अब वह बिलकुल स्वस्थ हैं। स्टीवेन गंगा से कहा तुम्हारे जीवन के बारे मैं बताओ तो गंगा अपने उलझन भरे त्रासद जीवन के बारे मैं इस तरह बताती है।

मुझे तो रिस्तों में घाट ही हुआ गगन बिहारी ने भी छोड़ दिया। बेटियाँ अलग कर दी और प्रवीण जी? ने फले उनकी पत्नी की सेवा की, और फिर वर्षों उनकी पत्नी को कैंसर था। और उन्हें स्वयं लकवा लगा गया था। न पहले पति से कुछ मिला। न प्रवीण जी से, उन्होने अपना नया बिल बनवाया ही नहीं।

नदी उपन्यास में विदेश में स्त्री जीवन के आत्म संघर्ष का सशक्त निरूपण है। वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों मोर्चों पर स्त्री अपने अस्तिरत्त्व की रक्षा और स्वाभिमान्यपूर्ण जीवन के अधिकार के लड़ाई लड़ती है। स्त्री के संघर्ष का एक मोर्च अहंकारी पुरुष के अन्यायपूर्ण उत्पीड़न के खिलाफ है। 'नदी' उपन्यास में गंगा का जीवन में भी उत्पीड़ित जीवन प्रवाह का प्रतीक है जो आत्मसंघर्ष, उत्पीड़न, खेदों, अभावों और अविश्वसनियों के पथ मैं उतार–चदवों से होकर ही गुजारती है।

गंगा के बहाने स्त्री जीवन के कद्–कठोर यथार्थ का मार्मिक चित्रण किया है। इसके साथ साथ द्विभाषीय राष्ट्र जैसे भारत और अमेरिकीय जीवन शैली की विरोधी संस्कृतियों की टकराहट भी इसमें स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. उषा प्रियवंदा – नदी उपन्यास, पृष्ठ –22, 38, 66

M. : 9295452820

janaki197575@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 159-166
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Man vs Nature--Ecological Concerns in Amitav Ghosh's The Hungry Tide

Dr. R. Madhavi
Assoc.Prof, English, Ch S.D. St Theresa's College for Women, Eluru.

Abstract :-

Concern for the co-existence of man and nature has been a topic much debated and discussed by writers. Indian English writers and their Western counterparts have shown man either as a rapacious entity trying to take advantage of Mother nature, or a victim of the vagaries of an uncertain terrain that threatens to destroy life.Amitav Ghosh stands out as an extraordinary writer who brings out the need for a delicate balance between man and nature if there can be peaceful co-existence.He portrays the complicated struggle of the settlers of the Sundarbans facing the double problem of evacuation orders by Government forces and the hostile and shifting landscape which they made their home. The added threat of wild animals made their lives all the more challenging. The author's manner of interweaving history, fact and fiction to create a story that throws light on the oppressed and exploited poorand the uncertain life of the settlers in a harsh terrain is successfully done. This paper makes an attempt to examine how Amitav Ghosh attempts to discuss historical happenings, environmental issues and diverse social issues divisively.He makes use of a historical event to take up the larger question of social transformation.His portrayal of the Sudarbans is that of a microcosm of environmental issues and the disillusionment of societies that rise from partitions faced the world over and.

Key words :- Environment, Sundarbans, coexistence, settlers, social issues.

Margaret Atwood's dystopian novel Oryx and Crake pictures a world blighted by inhumane corporate and scientific practice. The reckless behaviour of human-kind has been shown as the result of this havoc wreaked in the world owing to man's mindlessness of his environment. Like her many writers have tried to bring out the struggle for existence between nature and man where man is posited as the being who is indifferent. On the other hand, the conflict between an intrepid character vs indifferent environment 'the wild', offers suspenseful and tense backgrounds for stories where the unpredictability of nature is what arouses the man vs nature conflict. The survival film 127 hours is a

compelling one where the lead character is found stuck in a hostile environment. Herman Melville's "Moby Dick" is another example of this relationship between man and nature, man being driven by an overwhelming need to overcome nature.

Conflicts and relationship with nature brings characters face to face with the awesome power of Mother Nature. The manner in which characters respond to nature reflects upon their inner strengths, weaknesses, values, fears and motivations. In literary texts where nature is portrayed as a powerful force, characters are depicted as beings forced to confront things which are beyond their control caused by the natural world around them represented by wild animals and dangerous places, storms, diseases and plagues. In the novel Their Eyes are Watching God by Zora Neale Hurston,Janie's husband Tea Cake is bitten by a rabid dog in the middle of a hurricane induced flood in Everglade. The disease rabies and the hurricane become forces of nature in the novel, which eventually causes Tea Cake to be shot by Janie in self-defence.

Writers have also been depicting environmental concerns in literature to help stir debate and meaningful discourses leading to necessary change. Environment disasters, destruction of life and livelihoods, displacement of man and beast, destruction of hearts and homes are the concerns of writers as they examine man's relationship to nature. Literature has become a vehicle to express environmental concerns that affect the country and world. In India, a land blessed with diverse ecosystem ranging from mountains to plains, from plateaus to the Sundarbans, from deserts to ocean fronts, ecological concerns have been reflected by a number of writers in their works. The very word "Eco criticism" which appeared in 1978 began to be used in the critical field only after 1989 when it began to be used as the study of nature in writing. The credit for introducing the term goes to William Rueckert whose essay "Literature and Ecology, An Experiment in Eco criticism" discussed the term.

Contemporary writers chronicle the manner in which human beings destroy the environment they are in contact with. Arundhati Roy's "The God of Small Things" (1997) reflects upon the pollution that chokes up rivers like Meenachal which is clogged by industrial and human wastes. On the other hand, Aravind Adiga's "The White Tiger" (2008) discusses his anguish for rivers dumped with pesticides, carrion and corpses that defile the ecosystem along with the people living on its banks.The beautiful Meenachal river which looked a sense of tranquillityand beauty of Rahel's childhood becomes a squelching weary drain choked by weeds in her adulthood. The effluents from factories and people residing on its banks are the culprits that cause the damage. Roy points out at the impact of man-made urbanization on nature like a true environmentalist."Bronze winged lily trotters walked across--slow sludging green ribbon lawn that ferried feted garbage to the sea and smelled of shit, pesticides bought with World Bank Loans." Roy's description of the polluted surrounding of the river in her novel God

of Small Things only shows the disregard man has for nature and his foolishness in not working for its cause.

Kiran Desai is another novelist who is conscious of environmental issues. In her novel The Inheritance of Lossthe mountains, forests, mists and water provide a suitable back drop interweaving the lives of the people of Kalimpong to the foothills of the Himalayas. She highlights the impact of turbulence in man's relationship with man through depicting the Gorkha disturbance that in turn impacts nature. This movement of one kind of people against another leaves a trail of destruction on the environment which ought to be set right if man's life should be balanced. Desai advocates the significance of a kind of mutual respect between man and his kind and man and nature if life should have balance and sustainability. The love that the judge has for his dog Mutt is a reminder to readers that love should be shown to nature in such a range if people needed to live with solace and freedom from social, political and racial strife. The need for mankind to curtail hatred and violence of this "messy world" is reiterated subtly through her book.

Bhabani Bhattacharya's So Many Hungershighlights the relationship between man and nature gone wrong. The harsh realities of an unforgiving landscape that wreaks havoc in man's lives is brought out brilliantly and picturesquely. Man, and Nature are shown in their terrible and gruesome aspects, both feeding rapaciously on the weak and helpless. Greedy men like Laxminathan and Bose destroy the weak peasants just as the famine destroys the Bengali people. The tragic impact of the notorious Bengal famine of 1943 takes on a symbolic turn in the pages of his novel written in 1947."The empty stomach was due to no blight of nature, no failure of crops. It was man made scarcity, for the harvest had been fair." (1947:103). Bhattacharya juxtaposes man and nature as forces that can bend the human spirit.

Amitav Ghosh is a modern Indian English writerwhose novels are driven by his conviction to voice his opinion about heartfelt issues that he feels need to be addressed. He has been known to be a writer who voices his opinion on various issues such as politics, wars, the state of lives of people, the economy of countries, the environment, the unhygienic conditions that are prevalent in the country.

Whether he writes a book on boundaries between nations, a travelogue or a book on scientific discoveries, Ghosh primarily has a message to convey which he hopes would change the lives of people for the better. In both his works of fiction and non-fiction Ghosh has advocated the need to preserve an ecological balance with nature and has pointed out the madness existing in men as they destroy nature. In his book, The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable, Ghosh points out that changes in climate and the destruction man has created leading to it has no place in literary texts. Natural hazards or the ill effects of weather are described only in fantasy or science

fiction. Even authors fail to depict the disastrous impact adverse environmental conditions can cause on mankind. Ghosh reiterates the need for writers to focus on the connection between nature and human behaviour and see how harmonious co-existence can be struck between the two.

Ghosh's writings display his concern and convictions about various pressing problems affecting the country and universe. His novels and non-fiction display his environmental concerns and ecological consciousness. The Glass Palace (2000), The Hungry Tide (2005), Sea of Poppies (2008), River of Smoke (2011), A Flood of Fire (2012) are his works of fiction that touch upon crucial aspects of the environment that he is troubled about. His novel The Hungry Tide has won critical acclaim and the Sahitya Academic Award with national and international recognition. Set in the mangroves of West Bengal, the novel depicts the interface between man, beast and nature is an evocative natural setting.

The novel interweaves politics, social life, environmental issues, myths, and religious beliefs into the lives of the thousands of local fishermen who eke their livelihood from the waters of the Hoogly and Megna. Kanai Dutta, a Delhi based business man meets Piya Roy, a marine biologist whose aim to study river dolphins leads her to the tides of the Sunderbans. She seeks to locate dolphins in the Garjontola pool with the help of Kanai Dutta and Fokir, a local fisherman.

The Sunderbans measuring thousands of square kilometresare preserved by the government of India as a tiger reservation area. Anyone who dares to venture into this labyrinth of land and water will never return. This is the belief of settlers of this everchanging landscape. Man becomes a victim of both nature and beasts here. The conversation of the tigers, the silent killers, reflects the Western thought process of saving the endangered species of animals without concern for the human lives grappling for existence. Into this compatibility of man vs beast and nature is brought in the tragedy of political conflict of 1970 leading to the relocation of political refugees to these swamps. These refugee settlers make Morichjhapi an island in the Sundarbans their home and get accustomed to the submerging and re-emerging lands and the malevolent forms of wild animals. They try to battle for their existence in a fickle landscape that makes their daily existence perilous and unpredictable. Here water is the culprit that "tears away entire promontories and peninsula; at other times it throws up new shelves and sandbars where there were none before" (Ghosh 2009,p:7).

The author refers to a dark stage of Indian History referred to as the Morichjhapi Massacre where hundreds of Bengali Dalits were killed or evicted from the legally protected reserve forest land, Morichjhapi an island in the Sundarbans in 1979. In this gruesome incident a number of people died due to gunfire by police and Communist goondas, blockade and subsequent starvation, death, and disease. Nirmal's diary entries bring to life the struggle of man against man. The plight of Fokir's mother, Kusum, is another chilling instance of the true reality of the Sundarbans. The lives of the

victims throws light on the fact that rootlessness and deprivation of a home can bring misery to human life in these changing sands. As a young girl she went away to trace her trafficked mother and landed in Dhanbad. Her story gives voice to the lives of the many tide people who were dislocated from the Bangladesh swamps. Their villages were burnt and when they crossed the border they had nowhere to go.Somehow they could not forget their homeland. “But no matter how we tried, we couldn’t settle there: rivers ran in our heads, the tides were in our blood.”

These thoughts of the refugees reveal the attachment they had for their homes and mother nature. Nirmal’s journal is filled with the history of how John Hamilton, a rich colonial merchant was seized with a desire to reclaim the Sunderbans from the tigers and tide. It was the vision of this colonial exploiter to make the place habitable. He dreamt of building a society free from the bondages of caste, creed and religion.Ghosh points out at that despite there being acts of trying to settle in the Sundarbans,something that people have been trying to do, repeated failure to do so reflected upon the very violation of nature repeatedly.

The author attempts to give the history of this “beautiful forest” the Sundarbans. “There are some who believe the word to be derived from the name of a common species of Mangrove—the Sundari tree, Heriteria minor. But the word’s origin is no easier to account for thenas isits present prevalence, for in the record books of the Mughal emperors this region is named not in reference to a tree but to a tide – bhati. To the inhabitants of the islands this land is known as bhatir desh—the tide country – except that bhati is not just the “tide” but one tide. In particular, the ebb tide the Bhatia: it is in falling that the water gives birth to the forest” (98-99). Kanai the protagonist of the novel finds out that the river on which the islands thrive, the Ganges has steeped into the psyche of people living along the thousands of islands as a magical goddess which has descended from heaven. Lord Shiva,in order totame her,tied her to “his ash smeared locks.” It is in the final stage of the rivers journey that the braid comes loose into a “vast knotted tangle”. Here the river “throws off its bindings and separates into hundreds, may be thousands, of tangled strands” (p.6).

Such mythological beliefs are rife in the minds of settlers of this tide country. Mythology plays a pivotal role in etching into people’s mind the holiness that underlies the formation of the Sunderbans – “a terrain where boundaries between land and water are always mutating, always unpredictable ...the water stretches to the far edges of the landscape and the forest dwindles into a distant rumour of land, echoing back from the horizon. In the language of the place, such a confluence is spoken of as a mohana – an oddly seductive word wrapped in many layers of beguilement”(p.6). Such is the attraction that these thousands of acres that keep disappearing and appearing have for humanity. A universe unto itself, this land has no attractive plants, wild life, flowers or birds. Its

foliage is threatening and hostile as are the animals that thrive here. "At no moment can human beings have any doubt of the terrain's hostility to their presence, of its cunning and resourcefulness, of its determination to destroy or expel them"[(7)]. Many people thrive here exposed to the dangers lurking, killed by the crocodiles, tigers and snakes. Yet them come repeatedly to make this place their home.

The island of Morichjhapi features significantly in the novel. It is here that a history of clashes is recorded where man and beast have struggled for existence. Nirmal, whose notebook is found by Kanai, records the growth of the land the Marxist way where refuges who hailed from central India marched all the way to these shifting swamps for refuge. The land, however, is being taken over by the government as protected forestland. With the police laying siege on this island, the refuges who are termed squatters are forced to go into hiding. Kusum, who had developed a Women's Union to help widows in Lusibari and also the Babadon Trust which provided health care to the locals of the islands, works to help the refugees who are displaced. The refuges, thus,have to face a losing battle with the police, the wild animals and the unsafe territory that they live in.

In to this land of uncertain livelihood where man and beast vie for existence, comes Piyali the cetologist, whose aim is to observe the dolphins in the Garjontola pool. It is with the help of Fokir the local fisherman, that she is able to shoot the activities of the dolphins while learning about the mythical existence by Bonbibi, the goddess who protected the island inmates.She learns too, of the crocodiles and tigers that live there surviving on animal and human beings for their existence. She fully believes in the conservation efforts being a cetologist. The notebook of Nirmal, Kanai'suncle describes the Sundarbans beautifully and practically calling them the ragged fringe of India's sari. Kanai is a translator and knowledge of the local language gives him superiority over othersas his word choice clearly shows that he prioritizes the spoken word and not the gestures used by the locals. He already knows the dangers of the landscape of the Sunderbans. His aunt Nilima,who was popular with the locals informs him about the tides that keep changing and thereby become a strong influence in the lives of the peoplehere.

Horen is another character, whose life illustrates the tough life people face in the tide country. A fisherman who married early, he had to tend for his three children. His teenage daughter Kusum is forced into prostitution owing to poverty. He and his fellow men live in houses built on stilts to prevent them from being blown away during the frequent cyclones that lash these areas. "Badhs"or the high mud and silt embankments are built around Lusibari, to prevent damage during high tide. The life of Horen and Fokir illustrate the unpredictable lives of people here. Even scientific beliefs must be cast aside and new ways of understanding,such as the belief in superstitions and myths,must be discovered by new comers to these islands. Horen and other residents represent the displaced families

evacuated to make room for wild-life conservation. Even within their homes, the natural world gains access. They are forced to live in close co-existence with mosquitoes,snakes,crocodiles and tigers. Unions like the Women'sUnion reiterated stories of women struggling to survive. They also had to watch out for men around them who could be as threatening as the animals themselves.

The people in the tide country find much solace in the story of Bonbibi as this made them confident that there was a power that could control the natural word. It was she who protected Dukhey from a tiger. Such stories of local spirits form a part of the psyche of the people rooted in them owing to their fear of the harsh landscape they lived in.The stage performance of these stories is a way for them to connect to their history and their way of life in this country. Yet the whole village stood helpless as a tiger stalked and killed Kusum's father.This illustrates the fact that humans living here were not able to gain an upper hand over nature. No Bonbibi's could save them. Some of them even started thinking ahead and with modernity. Moyna is one such character who sees no future in this natural world and prefers the next generation to take up human centric pursuits that would improve their lives. She represents the modern phase of change that is inevitable in this land. While Fokir represents the knowledge acquired through gaining insights into the natural order, Piya and Moyna represent the limited knowledge of formal education.

Piya'squest for sighting the Orcaella dolphins represents a non-threatening aspect of man's association with the natural world. The sighting tracks of wild animals by theresidents of the Sunderbans on the other hand is threatening. Fokir's recognition of the tracks of the tiger and yet hismaintenanceof equanimity reveals the fact that people here are used to living in close proximity with danger. "The destitution of the tide country was such to remind them of the terrible famine that had devastated Bengal in 1942 – except that in Lusibari hunger and catastrophe were a way of life" (79). Early settlers of the beautiful sandy shores were drawn by the promise of free farm lands, but many died of drowning, crocodiles and estuarine sharks. Women got used to exchanging their bright red marital dresses to the white saris denoting widowhood. It had become a custom that menfolk who went fishing rarely returned.

The Hungry Tide, therefore is an interface between man and nature where man emerges as the creature blessed with intellect and emotions – intellect to attempt to live with a disastrous ecology and emotional enough to make this dangerous landscape his home. The author introduces old myth and modern thinking laced with logic to represent the depth of life inherent in man and his attempts to coexist with the fauna of the Sundarbans. The diversity of God's creations and the challenges faced not only by individuals but communities, governments and leaders are brought out. Ghosh remarkably puts forth his concerns for man's coexistence with nature. He combines myths, narrative, tales and

recounting of the past in a smooth narrative that builds into a microcosm of human existence in a background filled withcontrasts and changes. Piya seems to succeed in building a bridge between the old and the new in the end by establishing a research foundation in the name of 'Fokir' to study the Irrawaddy dolphins. Through this Ghosh seems to reduce the distancingcaused byculture by social status, language and beliefs, by portraying a future where people can come together and live in harmony.

References :-

1. Atwood Margaret. Oryx and Crake, Hachette Digital,2009.
2. Bhattacharya Bhabani.So Many Hungers, Jaico Publications, Bombay,1964.
3. Ghosh,Amitav.The HungryTide, New Delhi: Harper Collins, 2006.
4. -------------. The Great Derangement, Climate Change and the Unthinkable, Penguin Publications, New Delhi, 2013.
5. Dhawan K.(ed).Introduction to the Novels of Amitav Ghosh, Prestige Books, Delhi 1999.
6. Roy, Arundathi.God of Small Things, Random House, 1977.

Author
Dr R.Madhavi is an Assoc Prof and H.O.D. of the English Department of
Ch S.D.St Theresa's College, Eluru,

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 167-169
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी कहानियों में विषय वैविध्य

डॉ. मद्दाला जयलक्ष्मी
Head of The Department, P.B. Siddhartha Collage of Arts and Science, Vijaywada, AP

'न तो प्रवास कोई नई स्थिति है ना ही प्रवासी साहित्य कोई नई खोज है। लेकिन बीसवीं शताब्दी में भारतीय मूल के लोगों ने एक देश में नहीं बल्कि लगभग संसार के हर कोने में जिस अस्मिता को जगाया है और जो पहचान स्थापित की है, वह इससे पहले संभव न थी। आज का भारतीय प्रवासी पहले के प्रवासी से भिन्न है। प्रवास के इस युग में तकनीकि और विज्ञान ने दूरियों को कम करने के साथ–साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के रास्ते को प्रशस्त भी किया है। आज प्रवासी भारतीय के लिए भारत दूर होते हुए पास भी है। प्रवास देश की संस्कृति से भी उसका जीवंत संबंध बना हुआ है।' प्रख्यात साहित्यकार असगर वजाहत का यह कथन आज के संदर्भ में प्रवास और प्रवासी को बहुत अच्छी तरह से व्यक्त करता है।

कहानीकार का संवेदन संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करता है। वह उसी में जीता है। सांस लेता है। प्रवासी लेखक अपने घर–परिवार, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल और परिवेश में चला जाता है। वहां उसके नए संस्कार बनते हैं, नए दृष्टिकोण बनते हैं। माहौल बदल जाने से बहुत सी पेचींदगियां आ जाती है। उसकी मान्यताएं बदलने लग जाती हैं, यहीं द्वंद्व प्रवासी लेखकों की रचनाओं में दिखाई देता है और साहित्य सृजन का कारण बनता है। किसी के लिए भी अपने परिवार, शहर, देश वहां की भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज को छोड़ना आसान नहीं होता। पर कई बार विवशता में और कई बार अपनी इच्छा से ऐसा करना जरूरी हो जाता है। ऐसा करना कोई बुरी बात भी नहीं है। लेकिन भारतीय कहीं भी जाएं वे अपनी भारतीय सोच और अवधारणाओं से अलग नहीं हो पाते हैं। लेकिन मनःस्थिति उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस दृष्टि से उषाराजे सक्सेना के कहानी संग्रह 'प्रवास में' की सभी दस कहानियां महत्वपूर्ण है। 'प्रवास में', 'यात्रा में', 'शुकराना', 'अभिशप्त; और 'समर्पिता' इस संग्रह की महत्वपूर्ण कहानियां हैं। इस संग्रह की प्रतिनिधि कहानी 'प्रवास में' एक अलग तरह की कहानी है।

इस कहानी में लेखिका ने नायक 'शशांक' के माध्यम से ऐसे भारतीयों की क्षुद्रताओं को उजागर करने का प्रयास किया है जो हर स्थिति को अपने ही चश्में से देखते हैं और जो स्वयं तो दोहरे मानदंड रखते हैं परंतु दोष हमेशा अन्य को देते हैं। शशांक के शब्दों में ''सच कहूं तो हमारे अपने लोग दोगली मान्यता रखते हैं। फिर जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद करते हैं। दशकों यहां रहने के बावजूद इस देश को पराया समझते हैं रती भर भी इस समाज के साथ तालमेल बिठाने का यत्न नहीं करते और असुरक्षित दोयम दर्जे का नागरिक कहते नहीं थकते हैं। क्यों?....वैसे पुरुष वर्ग के मन में अंग्रेज लड़कियों से हम बिस्तर होने की लालसा रहती है, लेकिन

विवाह इंडियन वर्जिन से ही देश में जाकर करेंगे।'' यह कहानी इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि एक ऐसे सच से रूबरू कराती है जिसे हम आसानी से स्वीकार नहीं करते। केवल भारतीय होना सदैव निर्दोष होने की गारंटी नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता तो हमारा देश अपराध विहीन होता। किसी अन्य में कमियां ढूंढना, हमेशा दूसरों को दोष देकर उनकी कमियां ढूंढकर महान नहीं बना जा सकता।

एक और कहानीकार हैं सुधा ओम ढींगरा और इनकी कहानी है 'सूरज क्यों निकलता है'। यह एक बेहद चर्चित कहानी है। इस कहानी को किसी देश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। इस कहानी के मुख्य पात्र 'जेम्स' और 'पीटर' विश्व में कहीं भी पाए जा सकते हैं जिन्हें अपने शौक या कहें 'ऐब' पूरे करने के लिए भीख मांगने में भी कोई ग्लानि नहीं है वे इसे अपन अधिकार समझते हैं– ''यार पैसे के साथ–साथ लोगों के दिल भी छोटे हो गए हैं। इंसानियत तो रही नहीं। चिलचिलाती धूप में भीख मांगते रहे। किसी को दया नहीं आई।'' ये वक्तव्य ऐसे हट्टे–कट्टे दो युवाओं का है जो कुछ भी काम करके आसानी से जीविकोपार्जन कर सकते हैं। पर वे दो वक्त की रोटी के लिए मरना–खपना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें पता है कि बिना काम किए उनकी जरूरतें पूरी हो सकती है। तभी वे कहते हैं, ''हमारे शरीर बहुत नाजुक हैं, हम इन शरीरों को ऐसे ही रखेगें, जैसे ये रहना चाहते हैं कोई काम नहीं करेंगे।''

'सूरज क्यों निकलता है' कहानी में पुरुष पात्र ही नहीं स्त्री पात्र भी भोगवादी संस्कृति के शिकार हैं। सरकार द्वारा मिलने वाली आर्थिक सुरक्षा और घर का संस्कार विहीन वातावरण उन्हें किस हद तक ले जाता है, ''मां के स्वभाव रहन–सहन और आदतों का परिणाम यह निकला कि बेटियां मां के नक्शे कदमों पर चलती हुई, रोज पुरुष बदलती है और तीन–तीन बच्चों की अविवाहिता माएं बनकर सरकारी भत्ता ले रही हैं।'' इस स्थिति को किसी भी दशा में उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इसे पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा। सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'टोरनेडो' एक भिन्न धरातल पर लिखी गई कहानी है। इस कहानी में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति की तुलना की गई है। भारतीय संस्कृति जिसे त्याग कहती है। पाश्चात्य संस्कृति के लिए वह 'असामान्य' है तभी तो जैनेफर कहती है, मिसिज शंकर एबनार्मल हैं।'' वंदना को यह बात बिल्कुल बुरी नहीं लगती। वह मुस्करा जाती हैं, ''अमरीकी लोग, प्रीति की आंतरिक समाधि को कहां समझ सकते हैं? जहां शारीरिक इच्छा गौण हो जाती है, दैहिक सुख के आगे वे सोच ही नहीं पाते?.....ब्योम उससे अलग कब था? वह व्योम ही तो हो चुकी थी। कभी–कभी वंदना सोचती, शायद श्याम भी मीरा में ऐसे ही समाए होंगे। आंतरिक समन्वय प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित कर देता है, उसकी लौ पूरा बदन प्रेममय कर देती है, फिर बाहरी सुख की इच्छा नहीं रहती।''

वंदना के संस्कार ऐसे हैं कि वह अपनी बेटी सोनल के साथ–साथ जैनेफर की बेटी क्रिस्टी को भी उसकी मां की अनुपस्थिति में प्यार दुलार के साथ–साथ भारतीय संस्कार भी देती है। क्रिस्टी अपनी मां और उसके प्रेमी के लब को बिना सूचना दिए छोड़कर चली जाती है क्योंकि 'केलब' क्रिस्टी पर अपनी कुदृष्टि रखता था।

वंदना के संस्कारों का ही फल था कि क्रिस्टी को पाश्चात्य संस्कृति से अधिक भारतीय संस्कृति आकर्षित करती है इसीलिए घर छोड़ने के बाद किए ईमेल में वह वंदना को 'यशोदा मां' कहकर संबोधित करती है। 'टोरनेडो' कहानी में लेखिका ने भारतीय संस्कृति की स्थापना की है। सुधा ओम ढ़ींगरा एक सजग भारतीय होने

के नाते भारतीय संस्कृति से भली–भांति परिचित हैं। उनका लगाव भी भारतीय संस्कृति से उनकी कहानी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

विदेशों में जाकर बसना भारतीय युवा वर्ग को जितना आकर्षक लगता है असल में उतना होता नहीं है। नए देश में जाकर रहने के कई खतरें भी हैं। वहां जाकर केवल अर्थ लाभ ही नहीं होता असुरक्षा भी मिलती है। कई बार तो स्थिति ऐसी हो जाती है कि ''आधी छोड़ साजी को धाबे, आधी मिलै न साजी पावे'' इस स्थिति पर तेजेन्द्र शर्मा की एक बहुत महत्वपूर्ण कहानी है 'ढिबरी टाइट'। इस कहानी के नायक गुरमीत को विदेश जाना स्वर्ग लोक में जाने जैसा आकर्षक लगता था। तभी तो वह कुछ भी करके विदेश पहुंचाना चाहता था। इस आकर्षण के पीछे कई कारण छिपे रहते हैं। सबसे महत्वपूर्ण धन लालसा होता है। ''ट्रैवल एजेंट तो सपनों के सौदागर होते हैं। विदेश के रंगीन सपने बेचते हैं कि सपने खरीदने के लिए इंसान घर–बार भी बेचने को तैयार हो जाए।'' कुछ ऐसे ही सपने पूरे करने की गुरमीत ने ठान ली थी और आखिर वह कुवैत चला ही गया पर उसने पाया क्या? अपनी पत्नी डेढ़ वर्ष की बेटी और नवजात बेटा खोकर स्वयं अवसाद में चला गया। पर वह दोष किसे दे ''दर्द तो उसने स्वयं ही मोल लिया था। अच्छा खासा घर था, खेती बाड़ी थी, इस सब को छोड़कर गया ही क्यों वह? अधिक पाने की चाह में जो कुछ था वह भी लुट गया। मनुष्य संतुष्ट क्यों नहीं रह पाता?

कुछ–कुछ यही स्थिति संयुक्त अरब अमीरात के लेखक अशोक कुमार श्रीवास्तव की कहानी 'मृगतृष्णा' में भी दिखाई देती है। कैसे लोग कुछ पैसे कमाने की चाह लेकर विदेश आते हैं? और फरेबी लोगों के जाल में फंस जाते हैं। किस तरह वे शोषण झेलते हैं और बच निकलने का कोई मार्ग भी नहीं सूझता। विदेश जाने के आकर्षण के चलते वे किन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर रहे हैं यह भी नहीं देखते। इसी कारण वे कितनी अप्रिय स्थितियों में फंस जाते हैं। जिनसे बच निकलने का मार्ग भी उन्हें नहीं सूझता और वे उन्हीं स्थितियों से समझौता करने की कोशिश करने लगते हैं जैसे ''अब बिना मेहनत के तो कुछ नहीं मिलता, मैंने रुपए का गणित समझाकर उसे दिलासा देने की कोशिश की। इसी गणित में तो हम सब फंसे हुए हैं अन्यथा और क्या रखा है यहां...?'' (मृगतृष्णा) तेजेन्द्र शर्मा की एक कहानी 'दीवार थी दीवार नहीं थी' भी एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में नौकरानियों का शोषण, नागरिकता दिलाने के लिए अवैध विवाह, जाली दस्तावेजों के सहारे अमेरिका, इंग्लैण्ड जाना, अवैध संपत्ति निर्माण जैसे कई मुद्दे चित्रित हैं।

कृष्ण बिहारी की कहानी 'जड़ों से कटने पर' में दिखाया गया है कि जब तक सब ठीक चल रहा है विदेश में रहकर तब तक उसे अहसास भी नहीं होता कि, वह एक पल में किसी झूठे आरोप में फंसने पर कितना असुरक्षित हो सकता है? कितना अकेला भी? इस कहानी के नायक के शब्दों में ''पहली बार अहसास हुआ कि देश के अंदर आदमी की अपनी और जड़ों की ताकत होती है। वह दूसरे देश में कोई औकात नहीं रखती।''

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रवासी लेखकों में विषय वैविध्य है। अनुभवों की नवीनता है। प्रामाणिकता है। इनके लेखन में केवल भारतीय सरोकार ही नहीं हैं वे हमें उस समाज की समस्याओं से भी परिचित कराते हैं जहां वे रह रहे हैं। मनुष्य सब कुछ करके नहीं सीख सकता क्योंकि उसका जीवन बहुत छोटा है इसीलिए वह दूसरों के अनुभव से भी सीखता है। साहित्य इसके लिए एक सशक्त माध्यम है।

Mob. No. 9347337074

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 170-175
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ

प्रो. सविता गेडाम
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शास. जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.)

शोध सारांश :-

प्रवासी साहित्य के बारे में चर्चा करने से पहले उसके मूल अर्थ में जाना जरूरी है। प्रवासी साहित्य का अर्थ है कि जो भी भारतीय अपने देश को छोड़ कर प्रवास अर्थात दूसरे देश जाते है, एवं वहाँ निवास करते हुए अपनी भाषा एवं संस्कृति से जुड़े रहकर अपनी मातृभाषा में रचना करते है, उस साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। हिन्दी साहित्य का इतिहास सागर की तरह विशाल है। सागर में जैसे बहुत सारी नदियों का संगम होता है, वैसे ही विविध विमर्श के साथ हिन्दी साहित्य एक नया रूप धारण करता है। आज तक प्रवासी साहित्य एक नए विमर्श के साथ हिन्दी साहित्य क्षेत्र में पदार्पण किया है। लगभग डेढ़ सौ वर्षो के बाद प्रवासी साहित्य अपना स्थान सुदृढ़ कर पाया है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में मूल संवेदनाएँ छूट रही है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्ही संवेदनाओ को दिखाने की कोशिश किए है। संवेदना विभिन्न प्रकार की होती है जैसे कि दुःख की संवेदना, सामाजिक संवेदना, आर्थिक संवेदना, धार्मिक संवेदना एवं सांस्कृतिक संवेदना आदि। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने विदेश में रहकर अपने इतिहास, संस्कृति एवं सभ्यता को आज भी जीवंत रखा है।

साहित्य के विशाल वटवृक्ष की अनेक समृद्ध और सशक्त शाखाओं में से एक शाखा प्रवासी साहित्य की भी है, जो दिन–प्रतिदिन अपनी रचनाधर्मिता से हिन्दी साहित्य को सघन बनाने के साथ साथ पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू–भाग से जुड़े लोगो की स्थिति से अवगत कराने का कार्य कर रही है। प्रवासी हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य में जुड़ती एक नवीन विधा एवं चेतना है, जो प्रवासियों के मनोविज्ञान एवं संवेदनाओ में जुड़ी है जो न केवल एक नई विचारधारा है बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है जिसे अपनी जगह बनाने में पर्याप्त समय लगा है।

भारतीय प्रवासियों के अधिकारों की लड़ाई महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से आरंभ किया। हिन्दी साहित्य में मॉरिशस में रचित हिन्दी साहित्य की अलग पहचान है। इसके पुराधाओं में मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत का नाम सर्वोपरि है। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओ कविता, कथा साहित्य आदि की रचनाओं से प्रवासी साहित्य को समृद्ध किया है। इनका 'लाल पसीना' चर्चित उपन्यास है। इसमें भारतवंशियों की वेदनाओ व संवेदनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण है। बंगाल के प्रसिकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के ये सुंदर शब्द बरबस ही उभर आते है– ''एक वटवृक्ष को जानने के लिए केवल उस मिट्टी को ही जानना काफी नही है जिसमें यह पनपता है

बल्कि इसकी दूरस्थ अधिभूमि में इसकी बढ़ती विशालता को जानना भी जरूरी है तभी इसकी वास्तविक जिजीविषा को समझ सकते है। वटवृक्ष की शीतल छाया भी अपनी जन्मभूमि से बहुत आगे तक आती है ..... भारत परदेशो में भी जी सकता है और बढ़ सकता है राजनीति का भारत नही, बल्कि आदर्श भारत।

टैगोर ने इस अंतर को राजनीतिक बनाम आदर्श के रूप में परिभाषित किया है। एक प्रवासी भारतीय अपने राष्ट्र–रूप भारत के प्रति निष्ठावान नहीं हो सकता क्योंकि उसे भारतीय नागरिक नहीं बनना है। हालांकि उसमें भारत के लिए अपनत्व और आत्मीयता का भाव जरूर पनपता है क्योंकि वह खुद को कहीं न कहीं अपने पूर्वोजों के जन्म स्थान से और भारतीय उपमहाद्वीप की महान सभ्यताओं से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

प्रवासी साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है फिर भी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदनात्मक रचनाधर्मिता से साहित्य के क्षेत्र में जड़े जमा चुका है। भारत से दूर अन्य देशों में बसे भारतीयों के अथक प्रयासों से आज प्रवासी साहित्य समृद्ध और सशक्त बन पाया है।

हमारे भारत वर्ष का एक अलग एवं अनोखा इतिहास रहा है। इसकी सभ्यता एवं संस्कृति सिर्फ भारत वर्ष में नही पूरी दुनिया में व्याप्त है। यह विश्व की प्राचीनतम एवं अधिक समृद्ध संस्कृति है। 'वसुवैध कुटुम्बकम' भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। भारत के अनेक लोग विश्व के अलग अलग देशों में बसे है वह सिर्फ आर्थिक रूप से एक दूसरे के साथ संबंध नहीं रखते है। वह आर्थिक के साथ–साथ सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे के साथ संबंध बनाए है। प्रवासी साहित्यकारों को बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि प्रवास की पीड़ा, अपनी धरती के प्रति प्रेम, अपनी भाषा एवं संस्कृति के लिए संघर्ष, नए देश एवं नई जमीन के लिए संघर्ष आदि। इतने कष्ट झेलने के बावजूद भी प्रवासी साहित्यकार अपनी संस्कृति एवं मातृभूमि की भूले नहीं है। इसी संबंध में विक्रम विश्वविद्यालय की शोध अध्यक्षा स्वर्णलता खन्ना कहती है कि– ''साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते है।

साहित्य की अभिव्यक्ति यदि विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा, इसलिए विदेश में बैठे हिन्दी साहित्यकारों ने अपने लेखन का माध्यम हिन्दी चुना, क्योंकि इसके माध्यम से पीछे छूट चुके देश से आंतरिक संबंध को बनाए रखना चाहते थे। प्रवासी भारतीयों को दो संस्कृति का सम्मिश्रण करने में नए संस्कार नई सोच, नए विचार, नये दृष्टिकोण से देखना पड़ता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में आज हम सब परिवार एवं समाज से दूर होते जा रहे है। संस्कृति के माध्यम से इसी संबंध को जोडे रखने का काम प्रवासी साहित्यकार कर रहे है। आज अनेको प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचना के माध्यम से मानवीय संवेदना को आज की पीढ़ी के अंदर उजागर करने की कोशिश की है। प्रवासी साहित्य की प्रमुख लेखिका डॉ. सुदर्शना प्रियदर्शिनी की कहानी 'अखबारवाला' में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। 'अखबारवाला' एक छोटी कहानी है। परंतु इसका चित्रण अत्यंत मार्मिक ढंग से लेखिका ने किया है।

इस कहानी में नायिका जया भारतीय संस्कार संस्कृति, भावुकता एवं संवेदनशीलता को लेकर विदेश में रहती है। वहां की संस्कृति एवं परिवेश से वह परेशान हो जाती है। वह लोगों से मिलना चाहती है। जया के एक पडोसी है जो हमेशा अखबार उठाने आते है, एक दिन सुबह उनका निधन हो जाता है। परंतु चारों ओर सन्नाटा है उसके आसपास दो अंग्रेजी आदमी खड़े है एवं शव ले जाने वाली गाड़ी थी। जया उस अंग्रेजी आदमी से पूछने का आग्रह करती है परन्तु उसको कुछ मालुम नहीं था। जया विचलित हो जाती है, कारण भारत में

मृत्यु का संस्कार अत्यंत अच्छे ढंग से किया जाता है। इसके संबंध में लेखिका कहती है कि– ''चारों तरफ सन्नाटा था। एक व्यक्ति नहीं था आसपास आने जाने वाले भी फ्यूनरल वैन को देख कर रास्ता बदल रहे थे। कहीं किसी खिड़की से कोई चेहरा नहीं झाँका। किसी आंगन में बंधा कुत्ता तक नहीं भौका ..... ।

जन्म एवं मृत्यु मानव जीवन का परम सत्य है। कहा जाता है कि मृत्यु हो जाने पर व्यक्ति का अंतिम संस्कार अच्छे से होने पर उसकी आत्मा को मुक्ति मिलती है। भारतीय लोगों की सोच है कि आत्मा को मुक्ति मिलने पर ही तो उसे पुनर्जन्म प्राप्त होता है।

भारतीय भले ही अपनी मजबूरी के कारण विदेश में रहते है परन्तु संस्कार तो भारतीय है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि विदेश में मृत्यु हो जाने पर उसको व्यक्तिगत मामला कह के उस बात को टाल देते है परन्तु एक भारतीय की मानवीय संवेदना है कि अपरिचित पड़ोसी की मृत्यु की खबर सुन कर घंटे भर भूखे–प्यासे वहां बैठे रहते है।

तेजेन्द्र शर्मा की 'देह की कीमत' कहानी अप्रवासी भारतीयों के जीवन पर लिखी हुई है। इस कहानी का नायक हरदीप सिंह अपनी शादी के पांच महीने बाद ही भारत से अवैध तरीके से जापान में पैसा कमाने के लिए चला जाता है लेकिन वहां उसकी तबीयत अधिक खराब होने के कारण उसकी वही पर मृत्यु हो जाती है। इसके बाद उसके अन्य साथी उसकी लाश को भारत भेजने के लिए तीन लाख रूपये जमा करते है किंतु अंत में उसकी पत्नी पम्मी की सहायता करने के उद्देश्य से हरदीप का अंतिम संस्कार जापान में ही करवाया जाता है उसके बाद अस्थि–कलश के साथ तीन लाख का चेक पत्नी परमजीत कौर के नाम से भेजा जाता है। पम्मी उस चेक को हाथ में लेकर मन में सोचती है, यह मेरे मृत पति के देह की कीमत है अथवा उसके साथ शादी के बाद बिताए पांच महीनों की कीमत। उसके पति की मृत्यु उसके समूचे जीवन को तहस–नहस कर देती है। जीने की कोई वजह न होने पर भी वह जीवित होने को विवश है वह सोचती है– ''एक ही घटना आपके समूचे जीवन को कैसे तहस–नहस कर देती है। जिजीविषा बहुत ही निर्दयी वस्तु होती है। इन्सान को जीवित रहने के लिए मजबूर करती रहती है। वरना क्या आज पम्मी के पास जीने का कोई बहाना है।'' पम्मी की सास को अपने बेटे की मृत्यु से ज्यादा दुःख इस बात का होता है कि उसके बेटे के रूपए उसे न मिलकर उसकी पत्नी को मिल रहे थे। यह कहानी प्रवासी जीवन में रहकर पढ़ी जाने पर मन को बहुत व्यथित और विचलित कर देने वाली अति संवेदनशील कहानी की श्रेणी में आती है। मानवीय संवेदनाए आज के समय में समाप्त होते जा रही है इसका चित्रण डॉ. तेजेन्द्र शर्मा ने इस कहानी में किया है।

'लाल पसीना' मॉरीशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखित अभिमन्यु अनंत का महाकाव्यात्मक उपन्यास है, जिसमें प्रवासी मजदूरों की कारूणिक कथा और उनके संघर्षो की वीरगाथा है, जहाँ अमानवीय यातनाएँ और असहनीय वेदनाएँ हैं, शोषण–दलन, उत्पीडन, अनाचार और अत्याचार हैं और आश्चर्य तो इस बात का है कि यह सब मजदूरों को मिल रहा है, घनघोर परिश्रम और खून पसीना एक करने के बाद भी लाल पसीना प्रवासी भारतीय मजदूरों की दारूण कथा है, जिन्हे फ्रांसीसी और ब्रिटिश उपनिवेशवादी उन्हे स्वर्णिम भविष्य का सपना दिखाकर भारत से ले गये थे, जिन्होंने पथरीली भूमि को तोड़कर गन्ने की खेती के योग्य बनाया। पत्थर को सोने में बदला और उसका प्रतिदान क्या मिला? इसी की कहानी है – 'लाल पसीना' इस उपन्यास में मानवीय संवदेनाओं के हास की गाथा को लेखक ने बखूबी चित्रित किया है।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को पुराने पीढ़ी के लोग ज्यादा महत्व देते है। नए पीढ़ी के बच्चे इस बात को काल्पनिक कह कर टाल देते है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतने मात्र में लोंगों के ऊपर पड़ा है कि सही गलत का फरक भी वह नहीं जान पा रहे है। भारतीय संस्कृति जैसे लोप होते जा रहा है। सुषमा वेदी की कहानी 'चिड़िया और चिल' में इसका चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी में नायिका चिड़िया को उसके माता–पिता अच्छी संस्कार, अच्छा परिवेश, अच्छा भविष्य देना चाहते हैं। परन्तु जैसे चिड़िया बड़ी होती जाती है, उसके ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। और वह स्वछन्द हो कर जीना चाहती है। खुलेपन से जीना चाहती है। माता–पिता के संस्कार को वह भूलना चाहती है। घर में सिर्फ पैसों के लिए संतान बनके रहना चाहती है। जब उसके मम्मी पैसे देने में मना कर देती है, तो चिड़िया बहुत कुछ बातें उनको सुनाने लगती है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि– ''ठीक है रख लो संभाल कर चिता पर रख कर साथ ले जाना जीते ही मुझे डिप्राइव करके सुख मिलता है तो लो ..... मैं भी तुम दोनों के मरने का इंतजार कर लुंगी ... माँ–बाप पता नहीं किस बात का बदला लेते हैं ... ट्रस्ट को पैसा देंगे अपनी औलाद को नहीं .....।'' इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है की पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज नए पीढ़ियों के अन्दर संवेदना कम होती जा रही है। अपने परिवार एवं समाज के प्रति कर्तव्य से लोग विमुख होते जा रहे है।

आज हमें यह देखने को मिलता है की जो पुराने पीढ़ी के लोग है वह भारतीय संस्कृति को जोड़ के रखना चाहते है। परन्तु आज के नए पीढ़ी के बच्चे वह सब जानने के लिए भी इनकार कर देते है। परन्तु इन प्रवासी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति को जोड़ के रखा है। सुषमा वेदी के और एक कहानी 'झाड' में हमे यह देखने को मिलता है कि कहानी का नायक सैम बानार्जी जिसका असली नाम समीर है। वह भारतीयता को ख़तम करना चाहता है। अपने आपको अमेरिकियाना बोलता रहता है। अपने माता–पिता के संस्कार को मानना नहीं चाहता है। बल्कि वह अपने माता–पिता को अमेरिकियाना जैसे बनने को कहता है। परन्तु उसकी माता उससे हिंदी सिखने के लिए मजबूर करती है। इस सम्बन्ध में लेखिका माँ एवं बच्चे की संवाद से यह स्पष्ट करते है कि– ''नानी से हिंदी सिख लो।''

''नो आई डोंट वांट टू लर्न हिंदी।

''तुझे मालूम है, हिंदी हमारी नैशनल लैंग्वेज है।''

''नों माइंड ....., आई वाज बोर्न हियर।''

इस बात से यह स्पष्ट होता है कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतने मात्र में बढ़ चूका है कि आज के बच्चे अपने मातृभाषा को भी भूलने लगे है। भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता को भी खत्म कर रहे है। अपने देश के प्रति प्रेम, अपने माता–पिता के वात्सल्य प्रेम को भी भूलते जा रहे है।

भारतीय संस्कृति में पली–बढ़ी नारी कभी अपने संस्कृति को नहीं भूलेगी। अपने जीवन भर भी विदेश में रहे परन्तु अपने संस्कार, परम्परा, रीती–रिवाज को नहीं भूलती है। जितना भी कष्ट सहने को पड़े परन्तु वह कभी अपने पति के प्रति जो कर्तव्य है उससे विमुख नहीं होती है। ज़किया जुबैरी की कहानी 'बस एक कदम में' इसका सही चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी की नायिका शैली खाना बनाने के बाद हमेशा अपने पति का इंतजार करती है। आज तक भी कभी अपने पति से यह जानने की कोशिश नहीं करती है कि उनके पगार कितना है। शैली के पति घनश्याम हर रोज घर भी नहीं आते है। फिर भी शैली यह जाने की कोशिश नहीं

करती है कि वह कहाँ रहता है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि –''शैली को खाना बनाने, परोसने और खिलाने में विशेष आनंद की अनुभूति होती है। शायद इसलिए उसको हमेशा घनश्याम का इंतजार रहता था। जब मेज पर उसका छोटा सा परिवार भोजन के लिए बैठता वह सबके लिए गरमा–गरम फुलर हुए फल्के बना कर परोसती है। भारतीय संस्कार में पली–बढ़ी लड़की ... संस्कारों को समझती ....।''

इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह दिखाने की कोशिश किए है कि चाहे हम जितने भी हमारे कर्तव्य से विमुख हो जाए परन्तु भारतीय संस्कार एवं धर्म हमें सभी क्षेत्र में जुड़े रखने में सहायता करता है। प्रवास जाने का दो कारण रहता है। एक है अच्छी नौकरी के तलाश में और दूसरा अच्छी पढाई करने के लिए। पर जब विदेश में धीरे–धीरे रहने लगते है वहां की संस्कृति में ढल जाते है। जब बच्चे जन्म लेते है तो वे विदेशी संस्कृति को अपनाते है। अपने मूल संस्कृति का ज्ञान उन्हें नहीं रहता है। इसी सम्बन्ध में प्रवासी साहित्यकार इल्ला प्रसाद 'कुंठा' कहानी के माध्यम से भारतीय प्रवासियों बच्चों के जीवन शैली के ऊपर लिखती है कि –''यहाँ अमेरिका में बच्चें माँ–बाप की एकदम नहीं सुनते। सेहत का ख्याल भी नहीं रखते। केवल पिज्जा और मैकडोनाल्ड के सैंडविच खाते है। ऊपर सेल ऐसे हैं कि कुछ बोले तो 911 कॉल करके पुलिस बुला लेते हैं।'' इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि– विदेशी शैली बच्चों को ऐसा बना दिया है कि जो खाना माता–पिता को स्वादिष्ट नहीं लगता है वह खाना बच्चों को बहुत रूचिकर लगता है। और वह कुछ नहीं कर सकते है। ऊपर से उनको यह डर लगा रहता है कि कहीं बच्चा पुलिस को न बुलाले। विदेश में रहने के कारण प्रवासी भारतीयों को न चाहते हुए भी अपने जीवन शैली को परिवर्तन करना पड़ता है।

अतः प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य में हमे प्रवासी भारतीयों के विभिन्न प्रकार के समस्याएँ, कष्ट, पीड़ा एवं संवेदना देखने को मिलता है। उन साहित्यकारों के साहित्य में संस्कृति एवं परम्परा को लेकर जो संघर्ष है, वह हमे ज्यादा देखने को मिलती है। प्रवासी साहित्यकारों का साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। जिसमें भारतीय संस्कृति, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याएँ, नारी का आत्मनिर्भरशीलता, मानवीय संवेदना आदि हर एक पहलु का चित्रण हमें देखने को मिलता है। भारतीयों की सांस्कृतिक संवेदना को हम चाह कर भी बाँध नहीं सकते है। वह स्वयं भारतीयों के पास आ जाता है। वे दूर रह कर भी अपने संस्कृति को साथ लेकर चल रहे है। पाश्चात्य संस्कृति में लिव इन रिलेशनशिप, प्रेम विवाह, प्रेम संपर्क में विच्छेद, पुनर्विवाह आदि को आसानी से ग्रहण कर लेते है। परन्तु भारतीय संस्कृति में यह सब चीज को इतने जल्दी नहीं अपनाते है। जिसके लिए प्रवासी साहित्यकारों को दोनों संस्कृति के टकराव में द्वंद्व पैदा होने लगता है। फिर भी नइ साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति का लोप होने नहीं दिए है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को बचाने के साथ–साथ अपने मातृभाषा हिंदी को भी अंतराष्ट्रीयता प्रदान कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य संवेदना के विविध संदर्भ – डॉ. प्रतिभा मुदलियार पृ.सं.108, 109
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी – डॉ. सुरेन्द्र गंभीर पृ. सं. 61
3. अख़बार वाला (उत्तरायण – कहानी संग्रह) – सुदर्शना प्रियदर्शिनी पृ. सं. 3
4. देह की कीमत (देह की कीमत–कहानी संग्रह) – तेजेन्द्र शर्मा पृ. सं. 11

5. प्रवासी भारतीयों की व्यथा कथा – डॉ. शगुफ्ता नियाज़ पृ. सं. 10, 11
6. चिड़िया और चिल (चिड़िया और चिल –कहानी संग्रह) सुषमा वेदी, पृ. सं. 69
7. झाड़ (चिड़िया और चिल –कहानी संग्रह) सुषमा वेदी, पृ. सं. 132
8. बस एक कदम (सांकल – कहानी संग्रह) जकिया जुबैरी, पृ. सं. 61
9. कुंठा (उसी स्त्री का नाम – कहानी संग्रह) – इल्ला प्रसाद पृ. सं. 90

प्रो. सविता गेडाम
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास. जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.)
मो. नं. 9826704899
Email : savitagedam10@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 176-179
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उषा प्रियंवदा की कहानियों में चित्रित नारी संवेदना

सुजाता. नुन्ना
शोधार्थिनी, हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टनम।

सार :–

'एक कोई दूसरा' कहानी मानसिक चिंतन के धरातल पर लिखी गई है। धनी परिवार की लाड़ली व बाह्य सुंदरता को महत्व देने वाली महिला जिस प्रकार सामाजिक वातारण से प्रभावित होकर अपने आप को बदलने में हुई मानसिक तनाव व संघर्ष का चित्रण है। अपनी पारिवारिक परिस्थितियों से विचलित युवती के मन में उत्पन्न डर व अविश्वास, सामाजिक परिस्थितियों से सामंजस्य बनाने में कमजोर और निरुत्साह बनाते है – इसका चित्रण 'झूठा दर्पण' कहानी में दर्शाया गया है। 'कोई नहीं' कहानी अकेली जिंदगी बिताने वाली स्त्री की मानसिक व्यथा का मार्मिक वर्णन करने वाली है।

बीज शब्द :– नारी संवेदना, परिवार, समाज, वैवाहिक जीवन, विदेश।

उषा प्रियंवदा की 'एक कोई दूसरा' कहानी संग्रह में मानसिक चिन्तन की विचारोत्तेजक कहानी है – 'एक कोई दूसरा।' इस कहानी में युवती का नाम रानी है। जैसा नाम वैसा व्यवहार। धनी परिवार की पढी–लिखी औरत है। खबसूरत हैं। हमेशा सजधज कर रहती है। अपने आस–पास मंडराने वालों से प्रशंसाएँ सुनने की इच्छा रखती है। घर में किसी चीज की कमी नहीं हैं। भैया और भाभियों की लाड़ली है। समय को खुशी, उल्लास और पूरी तरह जीने का मन रखती है। रानी कहती है कि 'मैं बुरी नहीं हूँ, केवल पूरी तरह जीने का प्रयत्न कर रही हूँ। मुझे किसी भी प्रकार की आर्थिक चिन्ता नहीं, मेरे लिए उपयुक्त वर की तलाश जारी है। यदि इस अन्तराल को मैं हँसी–खुशी से ज़िन्दगी को बिलकुल सीरियसली न लेकर बिता रही हूँ तो कुछ बुरा नहीं कर रही।'[1]

एम.ए की पढ़ाई के बाद वह रिसर्च में नाम लिखवाती हैं। लेकिन उसमें पढ़ने की कोई शौक नहीं है, केवल विश्वविद्यालय से जुड़े रहना इसका मतलब है। अपने दोस्तों के साथ सैर–सपाट करना, पार्टी करना उसको अच्छा लगता है। दोस्त स्त्री हो या पुरुष उसे फरक नहीं पड़ता। उसे थीसेस लिखने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

डॉ. कुमार सीधा–सादा आदमी है। उनकी कोमलता आस–पास वालों को नज़र आती हैं। अच्छे व्यक्तित्व वाले हैं। केब्रिड्ज का डॉक्टर होने का जरासा भी घमंड़ नहीं रखता है। इनके द्वारा प्रशंसा पाने वाली अपनी सहेली स्यामा के प्रति मन में ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है। अपनी सुंदरता पर प्रशंसाएँ सुनने की आदत उसे घमंडी बना दी है। अब वह डॉक्टर कुमार के मुंह से अपनी प्रशंसा करवाना चाहती है। इसके लिए एक ही रास्ता है, वह थीसस लिखना। वह सोचती है कि– 'अचानक मुझे यह क्या हो गया?' अब मैं इस बात पर तुली हुई थी

कि मैं ऐसा अध्याय लिखूँगी, जो कि श्यामा के लिखे अध्याय से उत्तम ही हो।....'[2]

थीसस का एक अध्याय लिखने का निश्चय कर लेती है। लिखते–लिखते कुछ दिन बीत जाते हैं। अपने थीसेस का अध्याय लेकर डॉ. कुमार के घर पहुँचती है। पहले की तरह सजधज कर जाते से झिझकती है और सीधा–सादा तैयार होकर चली जाती है। डॉ. कुमार और उनकी पत्नी की सादगी व उन दोनों के बीच का प्रेम देखकर वह प्रेरित होती है। कई बार अपने थीसस सही करवाने उनके घर जाती है। केवल शारीरिक यानी बाह्य सौंदर्य पर गर्व करने वाली रानी अब केवल आंतरिक सौंदर्य पर ध्यान देने लगी हैं। बचपन से मिली हुई सुख–सुविधाओं का महत्व कम होने लगा है। वह समझती है कि धन–दौलत, बड़े मोटरकार आदि से व्यक्ति को सुख नहीं मिलता है।

अपने परिवार और डॉ. कुमार के परिवार में तुलना करते हुए सोचती हैं कि – 'मेरे परिवार में सभी लोग अधिक–से–अधिक धनोपार्जन में व्यस्त थे। हमारी भाषा और मान्यताओं से डॉक्टर कुमार की भाषा और मान्यताएँ कितनी भिन्न थीं! अपनी सुन्दर युवती पत्नी को नैनीताल में छोड़ मँझले भैया और अधिक धन एकत्र करने में व्यस्त थे। उन्होंने कभी भाभी की उदासी नहीं देखी। व्यवसाय के काम से वह महीनों विदेश में रहते। जब आते तब भाभी पर अनेक बहुमूल्य उपहारों की वर्षा कर देते। पर जो कुछ मिसेज़ कुमार को मिला होगा, उससे मँझली भाभी निःसन्देह वंचित रही थीं।'[3]

अपने लिए आये हुए रिश्ते को लेकर वह खुश नहीं है। क्योकि वह पहली वाली रानी नहीं है। महंगी साड़ियाँ, जेवर पहनने वाली, अपनी सुंदरता पर गर्व करने वाली नहीं है। साधारण युवती लगती है– दिखने में व विचार में। वह रिश्ते को मना कर देती हैं और थीसस लिखने में मग्न हो जाती है। दूसरी ओर डॉ. कुमार की तबीयत कमजोर होती जाती है। डॉ. कुमार अस्पताल में भर्ती होने की खबर सुनकर वह उनसे मिलने जाती है तो डॉ. कुमार उसके हाथों में एक किताब देता है। उसके समर्पण में लिखा होता है कि– 'उस दूसरी को'। यहाँ दूसरी का मतलब रानी की ही है। अतः कहानी के आरंभ की रानी अपने आप को बदलते हुए अपने अंदर की असली रानी को बाहर लाकर दूसरा रूप दिखायी है।' एक कोई दूसरा और कोई नहीं–रानी ही है।

'झूठा दर्पण' कहानी की युवती अमृता पढ़ी लिखी है। किन्तु उसमें समस्याओं से समना करने का विश्वास नहीं है। वह अपनी परिवार की समस्याओं को समाज में भी देखने की आदत डाली है। अपनी माता–पिता की वैवाहिक जीवन को देखकर उसे विवाह के प्रति अरुचि उत्पन्न हुई हैं। अमृता की सहेली मीरा विवाह करने का सलाह देती है तो, अमृता कहती है कि –"ऐसे सम्बन्धों पर मेरी आस्था नहीं रही, मीरा! विवाह बहुत कुछ माँगता है, मुझमें न कोई चाव बचा है, न अरमान। ऐसे ही रहती आई हूँ ऐसे ही रहूँगी। अब इस आयु में मुझसे दुल्हन नहीं बना जाएगा।'[4]

अमृता के माता–पिता अलग हो जाते हैं। किन्तु कानूनन तलाक नहीं लिये हैं। कारण है – अमृता का विवाह। इस कारण अमृता अपने आप को दोषी मानती है। पिता इस उम्र में भी सुंदर सेक्रेटरियों को चुनते हैं। माता अपनी डाक्टर पुत्र की अचानक मृत्यु को स्वीकार नहीं कर पा रही है। लेकिन माता–पिता दोनों एक से बढ़कर एक हैं। अमृता चिंतित होकर सोचती है कि– 'यदि वह न होती तो ममी पहले ही डैडी से अलग हो जातीं और जीवन के छिन्न सूत्रों को उसी प्रकार सँवार लेतीं। अब तो उनका जीवन हर प्रकार से रिक्त हो गया था।'[5]

अमृत अपनी साथी मीरा के साथ रहती है। मीरा का पति यतींद्र कॉलेज में फ्रेंच पढ़ाते हैं। अमृता भी

उनके यहाँ फ्रेंच सीख रही है। मीरा की दोनों बेटियों को बहुत प्यार करती हैं। मीरा और यतींद्र प्रेम विवाह करते हैं। तब मीरा को यतींद्र में कोई कमी दिखाई नहीं दी। धीरे–धीरे समय बीतता गया, दो बच्चों की माँ बनी तो उसे यतींद्र की कमाई कम लगने लगी है। दोनों के बीच में कभी–कभी जगडे होते है तो, अमृता उन्हें देखकर विवाह में, और पति–पत्नि के रिस्ते में विश्वास नहीं रखती है। लेकिन यतींद्र के व्यवहार में कोई कमी दिखाई नही देती है।

माता–पिता के व्दारा तय किये गये रिश्ते को हाँ करती है। क्यों कि अपने लिए रिश्ते को चुनने में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। लड़के (कुँवर) का चेहरा भी नहीं देखती है। क्यों कि वह अपने सामने विवाह के प्रति अविश्वास का एक झूठा दर्पण रखी हैं। वह जो कुछ भी उस नजरिये से देखती है तो झूठा ही दिखता है।

अमृता के दिल में प्रेम है। परन्तु पहचानने का कोई रास्ता नहीं है। अपने माता–पिता को लेकर बहुत चिंतित होती है। मानसिक रूप से व्याकुल रहती है। यति के व्यवहार से प्रभावित होती हैं, किन्तु मन की भावना को समझ नहीं पाती है। यति के स्पर्श को छोटे बच्चे की तरह महसूस करती है। वह रिश्तों को देखने के लिए मन के सामने जो दर्पण रखी है, उस में केवल अविश्वास और झूठा ही दिखाई देती है। पहली बार जब कुँवर को स्पष्ट रुप से देखती है और उनके स्पर्श में प्रेम की अनुभूती होती है तो वह कुँवर के साथ विवाह के लिए मन से तैयार होती है। विवाह और रिस्तों के प्रति अपने विचार बदलने का पहला कदम बढ़ाती हैं।

अपने भविष्य को विदेश में देखने वाले युवक से प्यार में विफल हुई युवती की मार्मिक संघर्ष का सजीव चित्रण है – 'कोई नहीं' कहानी। इस कहानी में युवक अक्षय यूनिवर्सिटी में पढ़ते समय एक युवती से प्यार करता है। अक्षय के मन से विदेश जाने की इच्छा इतना प्रभल है कि उन के प्यार को कमजोर कर देती है। वह विदेश चला जाता है।

अनके प्यार को वह भूल नहीं पाती हैं। सात साल बाद अक्षय उनसे मिलने आता है तो वह उसी अवस्था में रहती है, जिस अवस्था में वह उसे छोड़कर चला गया। वह अपने जीवन से समझौता कर लेती है। कॉलेज में पढ़ाती है। अपने पुराने घर में अकेली रहती है। उसके किए कोई नही है। पर्व व त्योहार के समय सजी हुई औरतों को देखकर अपने जीवन के प्रति निराश होती है। अपने मन को समझाती है कि मेरे लिए 'कोई नहीं'।

अक्षय अचानक उनके सामने खडे होता है तो वह पूछती है कि 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मैंने सुना था तुम कहीं विदेश में थे!'[6] और अक्षय के प्रश्नों का सीधा समाधान देती है। अक्षय अपने बारे में सब कुछ बताता हैं किन्तु वह कुछ नहीं कहती है। वह समझती है कि अब वह अक्षय से प्यार नहीं करती है। उन्हें अकेली रहने की आदत पड़ गई है।

दोनों मिलकर यूनिवर्सिटी में बिताये पलों को याद करते हैं। अक्षय के बातों से पता चलता है कि वह विदेश में भी एक युवती से प्यार करता है परन्तु केरियर के लिए बड़े अफसर की बेटी से शादी कर लेता है। वह अपनी वैवाहिक जीवन में खुश नहीं है। अपनी इस व्यथा को अक्षय व्यक्त करता है तो युवती को अक्षय के प्रति कोई चिंता नहीं होती बल्कि विदेशी युवती में अपनी छवि देखती है। उस युवती के प्रति चिंतित होती है। कुछ देर के बाद अक्षय लौट जाता है तो वह कहना चाहती है कि – 'अक्षय, तुम मेरे कोई नहीं हो,'[7] लेकिन नहीं कहती। कयोंकि वह जानती है कि 'कहने की कोई आवश्यकता नहीं।'

निष्कर्ष :-

उषा प्रियंवदा की कहानियों की हर एक स्त्री पढ़ी–लिखी है। फिर भी वे जीवन मेंमानसिक रूप से संघर्ष कर रही हैं। कारण है– सामाजिक व पारिवारिक वातवरण। समाज में हर व्यक्ति धन की सीढियों से ऊपर चढना तथा नाम बढ़ाना अपना कर्तव्य मानकर देश छोड़ रहे हैं। विदेश को अपना रहे हैं और प्रैक्टिकल बन रहे हैं। भारतीय परिवारिक जीवन की महत्ता पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। दिल को छोड़कर दिमाग से काम कर रहे हैं। इन सभी परिस्थितियों का वार हो रही हैं कुछ महिलाएँ। उन महिलाओं के संघर्षमय जीवन का चित्रण हमें उषा प्रियंवदा जी की कहानियों में देख सकते हैं।

संदर्भ सूची :-

1. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–12
2. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–13
3. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–16
4. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–30
5. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–30
6. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–38
7. उषा प्रियंवदा, एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2015, पृष्ट संख्या–44

टी डी आर – एच यू बी– 2023 एस 895

(TDR-HUB-2023S895)

sujatha.nunna83@gmail.com

9989965796

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 180-184
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन

डॉ. ए. रामकृष्ण
संस्कृत अध्यापकः, सर्सीआर्आर्कलाशाल, एलूरुजिल्ला।
सहभागि–A.SESHA VENKATA LAKSHMI LAVANYA

उषा प्रियंवदा का जन्म २४ दिसम्बर, १६३० को कानपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने उच्च शिक्षा इलाहबाद विश्वविद्यालय में हासिल की। अंग्रेजी की अध्येता रहीं उषा प्रियंवदा जी की लेखनी से हिंदी साहित्य कोश हमेशा समृद्ध होता रहा। उषा प्रियंवदा की गणना उन कथाकारों में होती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को पहचाना और व्यक्त किया है उषा प्रियंवदा जी हिन्दी की उन कथाकारों में से एक हैं, जिनके उल्लेख के बिना हिन्दी साहित्य का इतिहास पूरा नहीं होता है। वे आज की एक सशक्त कहानी लेखिका हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है तो दूसरी ओर उसमें विचित्र प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादात्म्य का अनुभव करता है। तीन साल दिल्ली में लेडी श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापन के बाद फुल ब्राइट स्कालर शिप पर अमरीका प्रस्थान किया, जहाँ ब्लू मिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन किया। संप्रति विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडीसन में दक्षिण एशियाई विभाग में प्रोफेसर के पद से अवकाश प्राप्त किया। उषा प्रियंवदा के विचारों में प्रवासी चिंतन का प्रभाव फिराक गोरखपुरी, हरिवंश राय बच्चन तथा धर्मवीर भारती द्वारा मिला जिसके कारण धीरे–धीरे अमरीका के कई विदेशी लेखकों को जैसे टी एस इलियट अर्नेस्ट एवं वर्जीनिया बुल्फ का विशेष प्रभाव पड़ा। इसके साथ–साथ फुल ब्राईट स्कॉलर प्रोग्राम के अंतर्गत अमेरीका गयी थी। जब इन्होंने प्रवासी भारतीयों के व्यक्तित्व को देखा तो उनमें प्रवासी साहित्य को लिखने की प्रेरणा मिली। इसके साथ–साथ जीवन के कई प्रकार के विकल्प और सन्तुष्टि को पाने के लिए एक निश्चित भविष्य की भूमिका तैयार की।

उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व को विकसित करने में कानपुर शहर की संस्कृति और सभ्यता का विशेष योगदान रहा उनका बचपन कानपुर में गुजरा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद चली गयीं। इसके अलावा इलाहाबाद वि. वि. के अंग्रेजी विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रही जो कि मौलिक चिंतन के लिए बहुत ही सार्थक और उपयोगी था। प्रवासी चिंतन उनके विचारों में तब आया जब उनके जीवन में चारों ओर अंग्रेजी का इसके अलावा इलाहाबाद वि. वि. के अंग्रेजी विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रही जो कि मौलिक चिंतन के लिए बहुत ही सार्थक और उपयोगी था। प्रवासी चिंतन उनके विचारों में तब आया जब उनके जीवन में चारों ओर अंग्रेजी का प्रवेश जुड़ा था। उषा प्रियंवदा दोनों भाषाओं में लेखन का कार्य करती रहीं हिन्दी और

अंग्रेजी भाषा में प्रवासी संस्कृति और सभ्यता उनके व्यक्तित्व के स्वरूप का विकसित करने में अपनी अहम् भूमिका निभाता है। उषा प्रियंवदा के साथ साहित्य में प्रवासी जीवन की समग्रता और वैचारिक साक्ष्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व में चेतना और संचेतना का आभास होता है इसके अलावा विद्रोह और आक्रोश के बिन्दु स्पष्ट नजर आते हैं। परन्तु मेरा दृष्टिकोण फिर भी सीमित रहा। लेखिका ने उथल–पुथल और विरोधी दशाओं पर अपने लेख लिखे जिसमें जीवन की आशाएँ और आकांक्षाएं थीं कहीं–कहीं जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विडम्बनाएँ थीं और सांसारिक विसंगतियाँ लेखिका ने अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए कई ऐसे सृजन कार्य किये जो व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं उनके ऊपर ननिहाल पक्ष का काफी प्रभाव रहा जिसमें उन्हें नया परिवेश, मानसिक परिपक्वता और गम्भीर पुस्तकों का अध्ययन कर नयी भाव भूमिका सृजन किया। व्यक्तित्व के विकास में नये–नये विषय नयी–नयी पुस्तकें पत्र और पत्रिकाएँ कल्पना परिपक्वता और समृद्धता इन सभी ने उनके जीवन को झकझोर दिया परन्तु धीरे–धीरे सामाजिक प्रतिबंध कम होने लगे थे। आयु बढ़ने के साथ पढ़ने के लिए तथा संगीत सीखने के लिए कोई अंकुश नहीं था और अपने बौद्धिक क्षमता को विकसित करने के लिए अन्तर्दृष्टि तथा संवेदन शीलता की अहम भूमिका थी।

कथा साहित्य का परिचय :–

ऊषा प्रियंवदा जी के कथा साहित्य में परिवारों के बड़े ही अनुभूति प्रवण चित्र हैं और आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थ बोध का परिचय दिया है। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं :–

कहानी संग्रह :–

1. जिंदगी और गुलाब के फूल।
2. एक कोई दूसरा।
3. मेरी प्रिय कहानियाँ।

उपन्यास :–

1. पचपन खम्भे लाल दीवारें।
2. रूकोगी नहीं राधिका।
3. शेष यात्रा।
4. अंतर्वशी।

सम्मान एवं पुरस्कार :–

2007 में केंन्द्रीय हिंदी संस्थान द्वारा पद्मभूषण, डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार से सम्मानित की गई।

उषा प्रियंवदा ने अपनी लेखन शैली में भिन्न–भिन्न कहानियों का संपादन किया, जिनमें उनकी प्रमुख कहानियों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों में समाज की समसामयिक समस्याओं की गहराई में उतरकर अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उनकी नब्ज टटोलते हुए व्यक्ति के जीवन से जुड़ी समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने नारी जीवन में आने वाले परिवर्तनों को बखूबी परखा है। उषा प्रियंवदा ने आजादी से पहले और आजादी के बाद महिलाओं के दृष्टिकोण में आये परिवर्तना को बारीकी के साथ पाठकों

के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके इस व्यापक दृष्टिकोण को पाठकों ने स्वीकारा है।

उषा प्रियंवदा ने स्त्री की इच्छा, कामना और त्वरित निर्णय लेने से जुड़े प्रश्नों को विभिन्न दृष्टिकोणों से अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उन्होंने इसे स्त्री और पुरुष पात्रों के माध्यम से उठाया है। इनकी कहानियों में स्त्री स्वतंत्रता के मानदंड विभिन्न रूपों में परिलक्षित होते हैं। छुट्टी का दिन और पूर्ति कहानियों में चित्रित नायिका को देखकर लगता है कि क्या अपने पैरों पर खडें हो जाने और परिवार वालों से रिश्ता तोड़कर स्वतंत्र जीवन मात्र से ही स्त्री सशक्त हो पाएगी?

वस्तुतः इन दोनों कहानियों में स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी जीवन के अकेलेपन से पीड़ित है। धन कमा लेने मात्र से अकेलेपन को दूर नहीं किया जा सकता है छुट्टी का दिन की माया को अकेलेपन से भागने पर मुक्ति नहीं मिलती और इस स्थिति के लिए वह स्वयं को ही दोषी ठहराती है। प्रस्तुत कहानी में उषा प्रियंवदा का यह दृष्टिकोण बेहद प्रभावित करता है कि जीवन में अर्थोपार्जन भी वर्तमान परिवेश में जीवन यापन के लिए जरूरी है। लेकिन अकेलेपन से मुक्ति मिले बिना सुकून की आशा नहीं की जा सकती। "सागर पार का संगीत" में एक स्त्री की अकेलेपन से मुक्ति पाने की चेष्टा है। चांदनी में बर्फ पर कहानी में दो संस्कारों की टकराहट है जिसमें विदेशी पत्नी अपने प्रेमी के साथ निस्संकोच जाती है किन्तु भारतीय नारी अपने प्रेमी का निमंत्रण अस्वीकार कर देती है। पिंघलती हुई बर्फ में यह भाव जब कोई तीसरा बीच में आता है तो ईर्ष्या कितना भयानक रूप धारण कर लेती है जो उस आने वाले की हत्या करके ही समाप्त होती है। इस प्रकार इस संग्रह में नारी की टूटन और बिखराव का चित्रण है जो बदलते हुए परिवेश में नए बन रहे सम्बन्धों का परिणाम है। उषा प्रियंवदा ने विविध भावों को मार्मिकता और सहजता के साथ प्रस्तुत किया है और कहीं भी कृत्रिमता नहीं आने पायी। भारतीय और विदेशी परिवेश में टकराहट उत्पन्न करती हुई ये कहानियाँ लिखी गई हैं। उन्होंने स्वीकार किया है.... 'इस संग्रह में प्रायः वे सभी कहानियाँ हैं जो भारतीय मन और विदेशी परिवेश का द्वन्द्व सामने रखती हैं। नए परिवेश और संस्कारों के बनने बिगड़ने को कथा रूप देती हैं, प्रामाणिक और निर्भीक अनुभूतियों को पहली बार साहस और तटस्थता से स्वीकृति देती हैं।'

सम्बन्ध कहानी की श्यामला मानसिक अव्यवस्था की शिकार है। घर से दूर विदेश में बसी श्यामला न तो अपने परिवार वालों या दाम्पत्य बंधन में बँधना चाहती है और न ही इनसे दूर रहकर सुखी ही रह पाती है। माँ–बाप और बहन उससे इसी कारण असंतुष्ट हैं। श्यामला लौटकर भारत भी नहीं आना चाहती है। उसने अपनी नौकरी के लिए बहुत कुछ किया था। वह कहती है, एक निरुपाय, बेसहारा कर दिया तो सबके लिए जितना हो सका, जैसे जिया अब भी क्यों बोझ ढोया जाए। एक भावुक कर्तव्य के वश पर अब क्यों वे सब उसे अपनी जिन्दगी नहीं जीने देते जैसे भी वह चाहे।

विदेशी परिवेश में मानसिक द्वन्द्व का कारण भारतीय परिवेश के संस्कारों और परंपराओं को उस समाज में खोजना है। इसी के परिणाम स्वरूप निर्मित धारणा ही व्यक्ति के संस्कारों की टकराहट का हेतु बनती है। अप्रवासी भारतीयों की इस जैसी समस्याओं का मार्मिक चित्रण हमें उषा प्रियंवदा की कहानियों में दिखाई देता है चाँदनी में बर्फ पर में एक ऐसे युवक का चित्रण किया गया है जो अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने माता–पिता और प्रेमिका कल्याणी को छोड़कर विदेश जाकर मीरा नाम की विदेशी लड़की से विवाह कर लेता है मीरा स्वच्छंद विचारों वाली आधुनिक स्त्री है। हेम से विवाह के पहले उसके कई पुरुष मित्रों से संबंध रहे हैं।

मित्रों के साथ स्केटिंग करना, घर पर शोर मचाना हेम को पसंद नहीं है। वह चाहता है कि मीरा भारतीय नारी की तरह झगड़, चिल्लाए और उस पर अधिकार जताए, पर मीरा ऐसा कुछ भी नहीं करती है वह अपनी मर्जी से स्वच्छंद जीवन जीती है।

विदेश में कल्याणी को अविनाश की पत्नी के रूप में देखकर हेम उसे पाने के लिए पुनः लालायित हो उठता है वह चाहता है कि कल्याणी उससे यूँ ही मिलती रहे, परन्तु कल्याणी अपने भारतीय संस्कारों के कारण हेम के निवेदन को अस्वीकार कर देती है। उषा प्रियंवदा ने प्रस्तुत कहानी में कल्याणी और मीरा दो स्त्रियों के माध्यम से पूर्वी व पश्चिमी संस्कारों के अंतर को बड़ी बारीकी से प्रभावी रूप में दिखाया है उषा जी की यह कहानी उन भारतीय युवाओं की गाथा है जो स्वयं की उन्नति के लिए विदेशी संस्कारों वाली लड़की से विवाह तो कर लेते हैं पर उनकी स्वच्छंदता को वे बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं उनकी अपेक्षा रहती है वह आदर्श भारतीय नारी के गुणों का निर्वाह करे, परन्तु ऐसा न होने पर संबंधों की डोर ढीली पड़ जाती है और संस्कारों की टकराहट उत्पन्न होती है।[2]

'कितना बड़ी बात' की नायिका किरण विवाहिता और दो बच्चों की माँ होते हुए भी विदेशी समाज की देखा–देखी मैक्स नामक पुरुष से संबंध रखती है। वह चाहती है कि मैक्स केवल उसका होकर रहे पर पश्चिमी संस्कारों में पलामैक्स किरण को छोड़कर वारिया से शादी कर लेता है। विदेश में एक ही से बंधकर रहने की परंपरा बहुत ही कम है। यह हमें स्वदेश में ही देखने को मिलता है। भारतीय परंपरा के अनुसार विवाहित का परस्त्री–पुरुष से संबंध अनैतिक माना गया है। पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण के कारण ही विदेशों में रहने वाले भारतीयों का व्यवहार विकृत होता जा रहा है।

'एक कोई' दूसरा कहानी संग्रह नारी के अकेलेपन की पीड़ा और बदलते हुए आधुनिक परिवेश में पति–पत्नी के सम्बंधों को चित्रित करता है। अधिकतर कहानियाँ विदेशी भूमि पर लिखी गई हैं। विदेश में रहने के उपरान्त वहाँ के जीवन के अनुभव से एक कोई दूसरा प्रेम आंतरिक अनुभूति को चित्रित करता है। इसमें काम की भावना से ऊपर उठकर प्रेम के पवित्र भाव को मित्रता के सम्बन्ध में रूपायित किया है।

'एक कोई दूसरा' कहानी में अक्षय और नमिता की असफल प्रेम कहानी है जो चिरकाल के बाद जब दोनों मिलते हैं तब भी अतीत को जगाने में विफल हो जाते हैं। कहानी के अंत में जब वे एक दूजे से अलग होते हैं तो इस पर संकेत है दोनों बच्चे भटक गए हैं। दो शिशु डरेडरे हुए अंधेरे में सिसकते हुए।' कहानी में नमिता के जीवन की रिक्तता उसकी उदासी, जिस सूक्ष्मता के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति पा गई हैं उसके कारण एक सफल व प्रभावपूर्ण कहानी बन गई है। डॉ. मदान ने इसे उनकी कहानी कला की सर्वोत्तम उपलब्धि माना है।[3]

उषा प्रियंवदा लम्बे समय से अमेरिका वासिनी है। वहाँ बड़ी संख्या में बसे भारतीय परिवारों की जीवन शैली, पारिवारिक संरचना और सांस्कृतिक बनावट पर अमेरिकी जीवन और सोच का गहरा प्रभाव पड़ा है। उषा प्रियंवदा की पिछले दौर की रचनाओं पर उनके प्रवासी जीवन और मानसिकता पर प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, इनकी मछलियाँ, सागर पार का संगीत, प्रतिध्वनियां, पुनरावृत्ति, ऐसी ही कहानियाँ है। उषा प्रियंवदा की देशी और विदेशी काल की कहानियों को सहज रूप से अलगाया जा सकता हैं। जिंदगी और गुलाब के फूल, वापसी, प्रश्न और उत्तर जैसी तथ्यात्मक कहानियाँ जहाँ ठेठ भारतीय बनत के मध्यम वर्गीय परिवारों की देशज

प्रकृति से पाठक को रुबरु कराती है, वहां प्रवासी जीवन के अनुभव विदेशी समाज और वातावरण के बीच बसे परिवारों की भौतिक स्थिति और मानसिकता के बारे में उनकी पारखी नजर और गहरी पैठ पाठक को बड़े सहज ढंग से अनुभव में साझेदार बना लेती है।

सन्दर्भ सूचि :–

1. सागर पार का संगीत, पृ. 263
2. उषा प्रियंवदा, सम्पूर्ण कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2015. पृ. 142
3. कोई नहीं, पृ. 257

चरवाणि– 9441347143

ईमैल–dr.ramakrishna99@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 185-192

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य और महानुभाव साहित्य का विवेचन

साहिल महाजन
शोधार्थी, गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर।

भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृतियों को अपने में समाहित कर अपनी शक्ति को बढ़ाया है। यह संस्कृति महासागर के समान है जिसमें अनेक नदियां आकर विलीन होती रही है। इसमें एकीकरण और समन्वय की अपार ताकत है। सत्य, अहिंसा, सद्भाव, मानवता, नैतिकता, त्याग, दयालुता, परोपकार, सहनशीलता आदि गुण इसे महान् बनाते है। इस संस्कृति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्शों की स्थापना की है। सभी प्राणियों पर दया, सभी धर्मों का आदर करते हुए यह संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है। यह आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण धर्म परायण संस्कृति है।

प्रवासी साहित्य का संबंध प्रवासी भारतीयों के साथ हैं। किसी दूसरे देश में रहने वाले लोगों के द्वारा प्रवास के दौरान आने वाली समस्याओं को, अपने आस पास की घटनाओं को लिख कर इस साहित्य का निर्माण किया गया। इन प्रवासी लोगों के द्वारा अपनी परम्पराओं का, मान्यताओं का, सामाजिक, पारिवारिक और राजनैतिक जीवन का लेखन कार्य प्रारंभ किया गया। प्रवासी लोगों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। एक श्रेणी में वे लोग आते हैं जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फ़िजी, मारीशस, गुआना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गए थे। दूसरी श्रेणी में जो 80 के दशक में खाड़ी देशों में गये अशिक्षित–अर्द्ध शिक्षित, कुशल अथवा अर्द्ध कुशल मजदूर आते हैं तीसरी श्रेणी में 80–90 के दशक में गये सुशिक्षित मध्य वर्गीय लोग हैं जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया।

प्रवास' शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वास' का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है और 'प्र' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना तथा अपने देश अथवा घर से बाहर रहना। डॉ. सुधा ओम ढींगरा के शब्दों में विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रत्येक देश के साहित्य की भिन्नता परिवेश, जीवन मूल्य, मानसिकता और सामाजिक सरोकारों से होता है। प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य है।

प्रवास शब्द का अर्थ है, विदेश गमन या विदेश यात्रा। जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है। प्रवासी ऐसे लोगों का एक बड़ा समूह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गए हैं।

प्रवासी साहित्य का उद्भव और विकास भारतीय प्रवासी नाम से हुआ है। जिसका हिंदी रूपांतरण है

इंडियन डायस्पोरा जिसका अर्थ है। वह बिखरी हुई आबादी जो विशेषकर अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों में जा बसी है। मृदुला गर्ग प्रवासी साहित्य के बारे में कहती हैं कि प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्य धारा में स्थान दिया जाए। डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है कि "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"

डॉ. शैलजा के मतानुसार "भारत के बाहर लिखे जाने वाले साहित्य को भारतीय आलोचकों ने 'प्रवासी साहित्य' का नाम दिया है। पर 'प्रवासी साहित्य' शब्द भारत से बाहर रचे जा रहे सारे साहित्य को पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं करता। हर देश की जीवन शैली, राजनैतिक स्थितियां, सामाजिक संदर्भ अलग–अलग होते हैं। अतः वहां का साहित्य भी अलग ही होता है। यदि हम विदेशों में रचे जा रहे हिंदी साहित्य की सही विवेचना करना चाहते हैं तो हमें इस साहित्य को देशों के आधार पर ही देखना चाहिए जैसे, 'कनाडा का हिंदी साहित्य', 'अमेरीका का हिंदी साहित्य', 'इंग्लैंड का हिंदी साहित्य' आदि। इसे यदि हम एक शीर्षक के अंतर्गत रखना चाहते हैं तो इसे 'भारतीय हिंदी साहित्य' कहना अधिक उचित होगा।

डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार "हिंदी के प्रवासी साहित्य का रूप–रंग उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भाव बोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचौनी का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करना है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत तथा स्वदेश परदेश की द्वंद्व पर टिकी है तथा बार–बार हिंदू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।"

अमेरिका में रहने वाले प्रवासी हिंदी रचनाकार देवी नागरानी प्रवासी हिंदी साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखती हैं कि "हिंदी का जो साहित्य है विश्व में हिंदी की अंतरराष्ट्रीयता को बुलंदी के साथ स्थापित कर रहा है इस बात में कोई शंका नहीं। चाहे वह मॉरीशस का हिंदी साहित्य हो या अमेरिका का सूरीनाम हो या इंग्लैंड का। हिंदी साहित्य की हर धारा उसी में मिलकर एक राष्ट्रीय भाषा हिंदी की सरिता बनकर बहेगी तभी वह सैलाब अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर अपना स्थान पा सकेगा। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी के अंतरराष्ट्रीयकरण का सबसे सशक्त मार्ग है।"

डॉ. कृष्ण कुमार ने विदेशी प्रवासी साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है :–

1. स्थानीय परिवेश एवं वातावरण का उल्लेख।
2. स्थानीय सामाजिक मूल्यों एवं रिश्तों के समीकरणों की प्रस्तुति।
3. देश–विदेश के जीवन–मानव मूल्यों का चित्रण।
4. देश–विदेश परिवेश जनित भिन्नताओं का चित्रण।
5. परिवार, परिजन, प्रियजन देश विछोह की पीड़ा का चित्रण।
6. स्थानीय संस्कृति संस्कारों की झलक।

हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के योगदान को हम नकार नहीं सकते बल्कि उनके द्वारा लिखे गए साहित्य में हमें एक अलग प्रकार की संवेदना प्रकट होती है। क्योंकि उनका मन तो भारतीय होता है पर प्रवास में निवास करने की वजह से उन्हें अलग–अलग चीजों को ग्रहण करना पड़ता है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं में एक बेचैनी और अकुलाहट को बखूबी महसूस किया जा सकता

है। फिर भी ऐसी परिस्थितियों में भी वे रचनाओं का सृजन करते हुए देखे जा रहे हैं।

भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे हैं और वही रहते हुए वे लोग हिंदी को, हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं। ऐसा ही एक नाम है उषाराजे सक्सेना का। जिन्होंने इंग्लैंड को अपना साहित्यिक कर्मभूमि बनाया है। इनके साहित्य में भारत और भारतीय संस्कृति एवं भाषा के प्रति अधिक बल दिखाई देता है। वहीं प्रवासी हिंदी साहित्य को आगे बढ़ाने में तथा उन्हें विकसित करने में मॉरीशस की भूमिका बहुत भी महत्वपूर्ण रही है क्योंकि वहां के लोग अपने सांस्कृतिक विरासत के रूप में हिंदी भाषा एवं साहित्य को स्थापित करने के साथ–साथ विकसित भी किया है। वहां पर हिंदी साहित्य में लेखन कार्य को बखूबी देखा जा सकता है।

अतः देखा जा सकता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य न केवल पूरी दुनिया में अपना स्थान बनाया है बल्कि अपनी पहचान भी बना चुका है। प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है। जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता है। आज हिंदी पूरे विश्व की भाषा बनती जा रही है। प्रवासी साहित्यकारों की वजह से आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान भी बना रही है।

अब बात करते हैं महानुभाव साहित्य की महानुभावीय साहित्य यद्यपि भारत में ही निर्मित हुआ है किं तु महनुभाव सम्प्रदाय के संस्थापक और संचालक भगवान श्री चक्रधर जी हैं। श्री चक्रधर स्वामी जी ने दिनांक 20 अगस्त 1221 में गुजरात प्रदेश के भड़ोच नामक गाँव में अवतार धारण किया था। इनके पिता का नाम विशाल देव और माता का नाम मालहनी देवी था। विशालदेव गुजरात के राजा के प्रधान थे। भगवान श्री चक्रधर स्वामी जी ने जीवों का उद्धार करने के लिए और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का निश्चय कर के अपने घर का त्याग किया और महाराष्ट्र में आ गये। महाराष्ट्र के रिद्धि पुर में निवास करने वाले पूर्ण–परब्रह्मावतार श्री गोविंद प्रभु महाराज जी को निमित्त मान कर ज्ञान शक्ति का स्वीकार किया।

यहाँ से श्री चक्रधर स्वामी जी ने अपना अवतार कार्य आरंभ किया और महानुभावीय साहित्य का निर्माण आरंभ हुआ। श्री चक्रधर स्वामी जी ने 12 वर्ष मौन अवस्था को धारण किया और सालबर्डी के जंगलों में निवास किया। एक बार कुछ शिकारियों में शर्त लग जाती है कि जिस शिकारी के कुत्ते इस खरगोश को पकड़ लेंगे वह विजयी हो जाएगा। शिकारियों ने खरगोश के पीछे कुत्तों को छोड़ दिया। खरगोश भागते भागते अपने प्राण को बचाने के लिए वहां पर समाधिस्थ भगवान श्री चक्रधर स्वामी जी के जानु विभाग के नीचे छुप कर बैठ गया और इस घटना से महानुभावीय साहित्य का सृजन हुआ! भगवान श्री चक्रधर स्वामी जी अपने मौनव्रत का भंग करते हुए मराठी भाषा में बोले "हांगां ऐथ शरण आलेया काई मरण असे" अर्थात हमारी शरण में आने के बाद क्या कोई दुःखी हो सकता है? अर्थात नही हो सकता है इस के पश्चात स्वामी श्री चक्रधर जी के पास शिष्य परिवार ने आना शुरू कर दिया! आचार्य श्री नागदेव, महिमभट्ट, दादोस, बाईसा, महादाईसा, सारंग पण्डित, नाथोबास, दायम्बा आदि मुख्य शिष्यों में से थे। श्री चक्रधर स्वामी जी अपने शिष्यों को नैतिक जीवनचर्या परक उपदेश प्रदान किया करते थे और कहीं कहीं पर ब्रह्मांडके गूढ़ रहस्यों का व्याख्यान करते और कभी कभी दर्शन शास्त्रों के सिद्धांतों का व्याख्यान किया करते थे।

इन्हीं सिद्धान्तों को ब्रह्मविद्या शास्त्र कहा जाता है। जिन सिद्धान्तों का उपदेश द्वापरयुग में भगवान श्री कृष्ण महाराज ने संस्कृत के माध्यम से किया उन्हीं सिद्धान्तों का वर्णन भगवान श्री चक्रधर स्वामी नई ने मराठी

भाषा के माध्यम से किया। ये सम्पूर्ण साहित्य एक गाँव से दूसरे गांव जाते समय निरूपित किया गया इसीलिए प्रवासी साहित्य के अंतर्गत इस विषय को ग्रहण किया गया है। महानुभाव साहित्य का साहित्य भंडार में महत्वपूर्ण स्थान है और सर्व साधारण जनता भी महानुभाव पंथ को आदर और श्रद्धा से देखने लगी है। महामहिम माहिम भट्ट जैसे चरित्रकार नरेंद्र व भास्कर भट्ट जैसे महाकवि भीष्माचार्य जैसे दार्शनिक और सारंगधर पुज देकर जैसे प्रकांड टीकाकारों की सुरम्य तथा सारगर्भित रचनायों का अध्ययन करके साहित्यकारों की लेखनियां प्रशंसा करते नही थकती। मराठी साहित्य के किसी भी विषय पर लिखे ग्रन्थों में महानुभाव साहित्य का किसी न किसी रुप में उल्लेख आना इसलिए अनिवार्य हो गया है कि महानुभाव विद्वानों ने कोई भी विषय पर अछूता नही रहने दिया है।

हिन्दी साहित्यकारों को यह जानकर विस्मय होगा कि न केवल मराठी भाषा का ही गद्य–पद्य पंथीय साहित्य सर्वप्रथम लिखा गया है, अपितु हिन्दी भाषा का भी सबसे पहिला भक्ति काव्य लिखने वाले गायनाचार्य महानुभाव कवि दामोदर पंडित थे। इस पंथ की धार्मिक पुस्तकों का इतिहास मराठी भाषा की प्रारंभिक अवस्था का इतिहास है जो आठ सौ वर्ष पुराना है।

जयकृष्णी पंथ पंचावतारों को मानता है, यह तो सर्वविदित है। इन पंचावतारों में से तीसरे अवतार श्री चक्रपाणि महाराज जी ने फलटन में अवतार धारण किया था। द्वारका में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत पालन करके साधु वेष में विचरते हुए अज्ञानी जीवों का उद्धार कार्य करते रहे। इन्होंने ही अपने देह का त्याग करके भडोच में भीमदेव राजा के प्रधानमंत्री विशालदेव के सुपुत्र हरिपालदेव के मृतदेह को स्वीकार किया। वहां से भी गृह का त्याग करके महाराष्ट्र में प्रस्थान किया और रिद्धपुर में जाकर श्री गोविंद प्रभु से ज्ञान शक्ति का स्वीकार किया इसी अवसर पर श्री गोविंद प्रभु जी ने आपका नाम चक्रधर रखा। इस प्रकार ज्ञान शक्ति का स्वीकार करने के पश्चात महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटकादि प्रदेशों में आप कई साल एकाकी घुमते रहे। इस अवस्था में दामोदरादि कई भक्तों को ज्ञान और भक्ति का दातृत्व किया। अन्त में शक संवत इ. स. 1274 में महाराष्ट्र से उत्तरापंथ की ओर प्रयान किया।

अब महानुभाव साहित्य की तरफ एक दृष्टि डालते है!

आद्य ग्रन्थ लीला चरित्र :–

स्वामी श्री चक्रधर के चले जाने के पश्चात् भक्तजन बहुत ही दुःखी हुए। श्री नागदेव जी जिन्हें पंथ का आचार्य बनाया था, उनके दुःख का तो कोई अन्त ही नही था। स्वामी के वियोग में दुखित हो विलाप करते हुए आचार्य भानखेड़ी नाम जंगल में कही दिन तक अचेत अवस्था में पड़े रहे। प्राण–ज्योति बुझने ही वाली थी ऐसे समय में श्रीगोविन्द प्रभु महाराज से स्मृति प्राप्त करके महादाईसा वहां पहुंची और उनके प्राणों को आधार दिया। समय व्यतीत होने पर आचार्य का वियोग कुछ कम हुआ! सभी भक्त श्री गोविंद प्रभु के सानिध्य में निवास करने लगे। अब श्री नागदेव आचार्य ज्ञानोपदेश भी करने लगे। श्रीनागदेव आचार्य स्वयं चिन्तन में तल्लीन रहा करते थे। एक दिन मौका पा कर महिम भट्ट ने उनसे विनयपूर्वक पूछा, "आचार्य आपको मैं रात–दिन किसी चिंतन में तल्लीन देखता हूं। अतः कहिये कि आप सतत क्या चिन्तन मनन करते रहते हैं? तब आचार्य ने कहा, "मुझे स्वामी ने कहा था कि हमारी और अन्य अवतारों की लीलाओं का स्मरण करना। स्वामी जी के इस कथन के अनुसार मैने उनकी स्वयं देखी हुई लीलाओं को तथा मेरी अनुपस्थिति में हुई लीलाओं को औरों से पूछ–पूछ कर

आत्मसात किया। इसी प्रकार समय–समय पर प्रसंगानुसार बताई हुई भगवान् श्री कृष्णचंद्र की और क्रमशः सभी अवतारों की लीलाओं को कंठस्थ किया। उन सबका मैं चिन्तन मनन करता हूं। यह सुनकर महिमभट्ट ने कहा "आचार्य, आपने स्वामी का सानिध्य प्राप्त किया, उनकी लीलाओं को देखा और सुना है। अब आप उनका मनन चिन्तन करते है किन्तु वह अभागी जीव जिनको स्वामी का सन्निधान प्राप्त नहीं हुआ, और जो नूतन अधिकारी आने वाले हैं, उनकी क्या व्यवस्था है? उनको यह सम्पूर्ण साहित्य प्राप्त हो उसकी कोई व्यवस्था करनी बहुत जरूरी है। मेरा विचार है कि आप उन सब लीलाओं को तथा वचनों को बतलाते चलें। और मैं लिखता चलूं। इस प्रकार इस साहित्य के लिपिबद्ध हो जाने पर आगे इस मार्ग में आने वाले साधकों को महान् लाभ प्राप्त होगा।" श्री आचार्य जी ने यह योजन अत्यंत पसंद की। और कहा कि "मैं वह सब बताता हूं, तुम लिखो, "परन्तु इसको अधिकृत रुप लाने के लिए जहां–जहां स्वामी गये, जिन–जिन भक्तों के सामने जो लिलायें हुई, उन उन से पूछकर उनके अनुभव लिखो अनन्तर मेरे साथ विमर्श करो।" माहिम भट्ट ने आचार्य की आज्ञा को शिरोधार्य किया और लीला चरित्र के लेखन को प्रारम्भ किया। यह लेखन कार्य 6 महिने तक चलता रहा। इसके पश्चात माहिम भट्ट जी ने उन सभी स्थानों का पर्यटन किया और स्वामी से सम्बन्धित भक्तों के अनुभवों को इकट्ठा कर साहित्य को लिपिबद्ध किया।

शक संवत् 1196 इ. स. 1274 में स्वामी श्री चक्रधर ने महाराष्ट्र से उत्तरापंथ की ओर प्रस्थान किया। नागदेव जी इत्यादि भक्तों का एक वर्ष का काल स्वामी के वियोग व्यतीत हो गया। 6 महीने तक माहिम भट्ट आचार्य के पास लेखन कार्य करते रहे तथा 6 महीने तक लीलाओं की शोधनी काकार्य करते रहे। इसके पश्चात एक वर्ष इस ग्रन्थ को पक्का करने में लगा, यदि यह माना जाये तो लीला चरित्र ग्रन्थ, शक संवत् 1199 इ.स. 1277 में लिखकर पूर्ण हुआ, यह मानना पड़ेगा।

लीला चरित्र का संस्कृति करण :–

केशवव्यास सूरी नामक एक विद्वत रत्न आचार्य श्री नागदेवाचार्य जी के शिष्य थे। वह महान् विद्वान, अमीर, सुस्वरुप और तरुण थे। गृहस्थ धर्म को स्वीकार करने के कुछ समय पश्चात् इन्होंने सन्यास ले लिया था। इनका संन्यास लेने का समाचार सुनकर इनके बड़े भाई और ससुर इन्हें वापिस घर ले गये। अनन्तर उनसे बड़े –बड़े विद्वानों को बुलाकर बिना पत्नी की सम्मति से संन्यास लेना योग्य है या नहीं, इस विषय में शास्त्रार्थ कराया। कई दिन तक यह शास्त्र चर्चा चलती रही, किन्तु विद्वान मंडली इनको परास्त नही कर सकी। अन्त में पति–पत्नी को एक कमरे में रख कर इन्हें संन्यास त्याग के लिए विवश कराने का प्रयत्न किया, किन्तु वह भी प्रयत्न सफल ना हो सका। आखिर पत्नी ने यहां तक कह दिया कि, अब ये पूर्ण योगी हो चुके हैं। मैं इनके योगी व्रत को भंग कर स्वयं पाप भागिनी नहीं बनना चाहती। इसके बाद इन्हें मुक्त कर दिया गया। जब इन्हें वापिस घर ले गये थे तब यह दिन में जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठकर लीला चरित्र में आई श्री चक्रधर स्वामी जी की लीलाओं को संस्कृत भाषा में पद्यानुवाद किया करते थे। अनन्तर जब फिर से श्री आचार्य जी के सानिध्य में आये तो उन्होंने वह ग्रन्थ श्री आचार्य जी को दिखाया। उसे देखकर आचार्य जी ने अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि तुमने जो भगवान् की अमोघ लीलाओं को संस्कृत में श्लोक बद्ध किया है यह तो आपने वाक् पुष्पों से ईश्वरार्चना ही की है। इस संस्कृत लीला–प्रबन्ध का नाम "रत्नमालास्तोत्रम्" रखा गया जो अभी उपलब्ध है।

सूत्रपाठादि ग्रन्थों का निर्माण :–

आचार्य जी को "रत्नमालास्तोत्रम्" के निर्माण करने से प्रसन्न देखकर केशिराज व्यास ने कहा आचार्य! इसी प्रकार स्वामी के उद्धरणादि प्रकरणों को संस्कृत में अनुवाद करुं क्या? तब आचार्य ने कहा, " केशवदेव संस्कृत भाषा कठिन है।" इससे सामान्य जनता की अत्यंत हानी होगी। वृद्ध महिलायें धर्म से और शास्त्र से वंचित रह जायेगी। भगवान् ने सामान्य जीवों को ध्यान में रखकर ही मराठी भाषा को अपनाया है। इसलिए इन ग्रंथों को संस्कृत में बनाना उचित नही होगा। तब केशिराज व्यास ने कहा 'आचार्य! भगवान् के उपदिष्ट वचनों की श्रृंखला लगाऊं?

तब आचार्य जी ने कहा, यह करना उचित है, किन्तु यह कार्य मेरी सम्मति से ही करना।' फिर केशव व्यास ने उद्धरणादि 12 प्रकरणों का अन्वय लगाया। वे इस प्रकार है– अन्यव्यावृति, युगधर्म, विद्या मार्ग, संहार, संसरण, महावाक्य, निर्वचन, उद्धरण, असतिपरी, अचार, विचार और दृष्टांत। दृष्टांत और दृष्टांतिक और उनका संक्षिप्त स्वरूप 'लापनिक' तैयार किया। इन सबका उगम स्थान लीला चरित्र है। इन पर भाष्य, महाभाष्य, प्रमेय आदि सैकड़ो ग्रन्थ तैयार किये गये। इनके अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत के दृष्टांत स्तोत्रम् दृष्टांत नामावली स्तोत्रम् भी लिखा और मराठी में 'मूर्तिप्रकाश' नाम का ओवी छंद बद्ध ग्रन्थ की भी रचना की।

सप्त महाकाव्य ग्रन्थ :–

आचार्य श्री नागदेव जी के बहुत विद्वान शिष्य थे। जिन्होंने बड़े महत्व के ग्रन्थ संपदा का निर्माण किया। श्री भास्कर भट्ट बोरीकर महानुभाव पंथ के द्वितीय आचार्य थे। इन्होंने संस्कृत और मराठी इन दोनों भाषाओं में ग्रंथों की रचनाये की। इनका एक शिशुपाल वध और दूसरा उद्धवगीता महाकाव्य है। ये रस, उपमा, उत्प्रेक्षादि अलंकार और ध्वनि आदि से परिपूर्ण होने से पढ़ने वाले के मन को मुग्ध कर देते है।

रुक्मिणी–स्वयंवर–पंडित नरेंद्रकृत :–

श्री आचार्य के प्रमुख शिष्यों में एक महान कवि नरेन्द्र थे। ये देवगिरी के राजा रामदेव के सभा पंडित थे। आपने एक समय रुक्मिणी–स्वयंवर नाम का महावाक्य रचकर राजदरबार में पढ़ा। काव्य इतना सुरस, सुन्दर और साहित्य संपदा से ओत प्रोत था कि वह सुनकर राजा रामदेव मुग्ध हो गया। राजा ने कहा, "पण्डित जी आप इस ग्रन्थ के अन्त में कर्ता के रुप में मेरा नाम डालो तो मैं आपकी इसकी ओवी की संख्या जितनी सुवर्ण मुद्रायें प्रधान करूंगा।" नरेन्द्र जी ने कहा, "राजन धन के लोभ से मैं अपनी कृति बेचना नही चाहता।" इससे कवि कुल कलंकित हो जाएगा। तब राजा ने कहा कि यह ग्रन्थ मेरे संग्रह में ही रहेगा। तब नरेन्द्र ने कहा, "अच्छा आप इस ग्रंथ को अपने संग्रह में रखिये, परन्तु इसका कुछ संशोधन करना है वह करके प्रातः काल मैं आपको यह ग्रन्थ दे दूंगा। परन्तु राजा के इस व्यवहार का नरेन्द्र जी के मन को बड़ा आघात पहुंचा। नरेन्द्र जी तीन भाई थे। तीनों ने मिलकर रात में बारी–बारी से इसकी प्रति लिपि तैयार करने का प्रयत्न किया। रात भर में 879 ओवियां लिख पाये थे। प्रातः ही राज कर्मचारी उनसे वह ग्रन्थ छीनकर ले गये। 1800 ओवियों के सम्पूर्ण ग्रन्थ में से 789 ओवियों से अपूर्ण प्रतियों को लेकर आप विरक्त होकर उसी समय आचार्य के पास आये और संन्यास ले लिया। अधिक समय तक जीवित न रहने के कारण यह ग्रन्थ पूर्ण न हो सका। आज यह ग्रन्थ प्रकाशित है और मराठी भाषा के बी. ए, एम. ए अध्ययन के लिए नियत है।

वच्छाहरण–पण्डित दामोदर व्यास :–

वच्छाहरण काव्य ब्रह्म देव ने चुराये हुए वच्छाहरण की भागवत कथा को लेकर आचार्य ने एक प्रमुख शिष्य पण्डित दामोदर व्यास ने रचा। वह भी एक अत्यंत उत्कृष्ट काव्य है। महानुभाव पंथ के प्रसिद्ध सप्त काव्यों में इसका स्थान है। ये चारों महाकाव्य एक समय में दोयाचार साल के हेर दृ फेर से रचे गये हैं। भास्कर भट्ट, नरेन्द्र व्यास, और पण्डित दामोदर, तथा केशव व्यास सूरी महान विद्वान थे।

इन चार महाकाव्यों के अतिरिक्त ओर तीन मुख्य महाकाव्य भी है। एक सह्याद्री वर्णन जो तपस्विनी हीराईसा के शिष्य श्री रावलोव्यास ने रचा है। इसमें श्री दत्तात्रेय महाराज जी के शयन स्थान और सह्याद्री पर्वत और श्री दत्तात्रेय महाराज की लीलाएं अंकित की गयी हैं। दूसरा ज्ञान प्रबोध ग्रन्थ है। यह गुर्जर शिवव्यास के शिष्य पंडित विश्वनाथ जी ने लिखा है। यह गीता के 13वें अध्याय के ज्ञान के लक्षण वाले कुछ श्लोकों को लेकर बना हुआ है।

तीसरा ग्रन्थ ऋद्धपुर वर्णन है। यह अचल मालोबास के शिष्य श्री नरोबास बाहलीये ने रचा है। ज्ञान प्रबोध और ऋद्धपुर वर्णन समकालीन ग्रन्थ है। इस प्रकार ये सप्त महाकाव्य हैं।

भाष्य–महा भाष्यादि ग्रन्थ :–

सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी ने कोई स्वतंत्र ग्रंथ नही लिखा परन्तु उन्होंने समय–समय पर अपने भक्तों को उपदेश दिया, तत्वज्ञान समझाया। उनके वे तत्वज्ञान परक व आचार परक ज्ञान लीला चरित्र में संकलित हैं। वह ज्ञान परक वचन इधर–उधर बिखरे पड़े थे। उन सभी वचनों को एकत्रित कर श्री केशिराज व्यास ने आचार्य श्री नागदेव की सम्मति से अन्वय लगाया और उन्हें ग्रन्थ रुप प्रदान किया। यह श्रुति ग्रन्थ सुत्रपाठ के नाम से प्रसिद्ध है। साथ में ही दृष्टांतों का अन्वय लगाया और दृष्टांति को की रचना भी की। इस सूत्रपाठ पर महत्त्व की सिद्धांत प्रतिपादक टिप्पणियां लिखी गई, जो आगे भाषा लिखते समय श्री शिवव्यास जी और सिद्धान्ते हरिव्यास को सिद्धांत मार्ग स्थापन करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई। कुछ काल के पश्चात सूत्रपाठ के वचनों का अर्थ करने में बहुत सी मत–भिन्नता निर्माण हुई। यह देखकर श्री अचल मुरारी व्यास को बहुत खेद हुआ। उनका विचार था कि महानुभावीय वाङ्मय का संशोधन किया जाये परन्तु उनमे कुछ कठिनाईयों के कारण यह कार्य पूर्ण नही हो सका। आखिर उस कार्य को करने का श्री शिवव्यास जी के लिए संदेश रखकर अपने नश्वर देह का त्याग कर दिया। आचार्य शिवव्यास जी इस आज्ञा के आगे नत मस्तक होकर कार्य में जुट गये। प्राचीन आचार्यों के संशोधन पत्रों को एकत्रित किया गया और उनका सूक्ष्म निरीक्षण किया गया। उस समय के विद्यमान मत भिन्नता रखने वाले आचार्यों से विचार–विमर्श कियागे और उपाध्य शाखा के प्रतिभा संपन्न, ब्रह्मविद्या शास्त्र के अच्छे ज्ञानी और अपने नाम के अनुसार यथार्थ सिद्धान्त मत के समर्थक श्री सिद्धान्ते हरिव्यास को सहयोगी बनाकर कुछ अन्य विद्यमान आचार्यों के लेखों को एकत्रित करके ऐसे 22 प्रमाण पुरुषों का प्रमाण मानकर और इन दोनों के मतानुसार भाष्य तैयार किया। जो पंथ में 90–95 प्रतिशत को मान्य हुआ। आज भी इस भाष्य को पंथ में स्वामी के वचनों के समान मान्यता प्राप्त है। इस भाष्य पर अनेक विवरणात्मक महा भाष्य तैयार हुये।

स्मृति स्थल – वृद्धचार इत्यादि ग्रन्थ :–

श्री कवीश्वर व्यास के शिष्य परशराम व्यास जी ने लीला चरित्र के अनुसार श्री नागदेव आचार्य से संबंध रखने वाली सात सौ आख्यायिकों का एक ग्रन्थ लिखा, जिसका नाम स्मृति स्थल रखा गया। इसी प्रकार श्री धारा

शिवकर व्यास ने श्री नागदेव आचार्य के श्री बाईदेव व्यास, श्री केशव व्यास सूरी, श्री कवीश्वर भास्कर भट्ट, श्री पण्डित दामोदर व्यास, श्री आनेराज व्यास उपाध्य कुल की कमलांबा इनके संबंध का 125 आख्यायिकों का वृद्धाचार नाम का ग्रन्थ लिखा परन्तु ये दोनों ग्रन्थ आज मूल रुप में उपलब्ध नहीं। इस समय स्मृति स्थल एक 261 आख्यायिकों का और वृद्धाचार 23 आख्यायिकों का मिलता है। जो अधिक प्रमाण माना जाता है। यह ऐतिहासिक सामग्री है।

अन्य ग्रन्थ तथा कविताएं :-

उपर बतायें हुए ग्रन्थों के अतिरिक्त तत्वज्ञान परक ग्रन्थ महाभारत, भागवतादि के आधार पर लिखे काव्य, कई कवियों के रुक्मिणी–स्वयंवर, द्रौपदी–स्वयंवर और हंसाबा–स्वयंवर और छोटे–मोटे ग्रन्थ, स्तोत्र, आरतियाँ, पोवाडे, धवले, आदि अनेक विध रचना महानुभावों ने की। सबसे उत्तम बात तो यह है कि आज की नव पीढी ने महानुभाव साहित्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज महानुभाव साहित्य मराठी, हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू भाषा में प्रकाशित हो चुका है। मराठी भाषा में महानुभावों के साहित्य को सुरक्षित रखने के लिए लिपि का भी निर्माण किया गया। श्री परशराम व्यास के अन्नतर स्वामी के वचनों के अर्थों में और सिद्धांतों में मतभिन्नता बढ़ रही थी यह मतभिन्नता तीव्रता से बढ़ रही थी। इन मतान्तरों से अपने ग्रन्थ बचे रहें, उनका मिश्रण न हो जाये इससे सबसे पहले सह्याद्री वर्णन महावाक्य के निर्माता श्रीरवलोव्यास ने सकल लिपि का निर्माण किया। इसके पश्चात बहुत सी लिपियों का निर्माण हुआ।

इस प्रकार महानुभाव साहित्य भास्कर के समान सभी साहित्यों को प्रकाशित करते हुए, अन्य सभी शास्रों के सिद्धांतों को अपने में समेटे हुए है। बस इन साहित्यों की देख–रेख और अभ्यास अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रवासी साहित्य भाव और विचार, साहित्य संचय, नई दिल्ली, 2017
2. पाठ समुदाय, शिवराज महानुभाव, महानुभाव आश्रम वंबोरी, महाराष्ट्र।
3. महानुभाव पंथ आणित्यांचेवाङ्गमय, डॉतुळपुले, सदाशिव कृष्ण, व्हीनस प्रकाशन, शनिवार पेठ पुणे, प्र आ अगस्त 1976
4. महानुभावांचा इतिहास, कोलपकर मुरलीधर, प्रका० प्रभाकर बाबा सन्यासी,द्वि० आ० ई० सन 2005 शके 1927, न्यू स्नेहा आफसे, टिळक नगर, लातूर।
5. स्मृति स्थळ संपा० वामन नारायण देश पांडे, व्हीनस प्रकाशन, सदाशिव पेठ पुणे तृ० आ० 1 फरवरी 1986

संचालक, मंदिर जय कृष्णियां अमृतसर, पंजाब।

मो. 9404144386

sagarmuni2222@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 193-198

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तेजेन्द्र शर्मा

श्रीमति यू वारिजा

शोधार्थी, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टनम्, आध्र प्रदेश

जीवन परिचय :-

भारतीय मूल के ब्रिटिश हिन्दी लेखक तेजेन्द्र शर्मा जी 21 अक्टूबर 1952 को एक साधारण परिवार में रेलवे के क्वाटर में उनका जन्म पंजाब के जरगांव में हुआ। उनके पिता वहाँ के सहायक स्टेशन मास्टर के पद पर कार्यरत थे। बाद 1960 में उनके पिता का तबादला दिल्ली होने के कारण पंजाबी भाषी तेजेन्द्र शर्मा जी की स्कूली शिक्षा मुगल क्षेत्र के सरकारी स्कूल में हुई। तेजेन्द्र शर्मा जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी. ए. ऑनर्स अंग्रेजी एवं एम. ए. अंग्रेजी कम्प्यूटर कार्य में डिप्लोमा हासिल किया।

नौकरी :-

तेजेन्द्र शर्मा जी काफी समय तक भारत के एयर इंडिया में काम करने के बाद 1998 में ब्रिटेन में जाकर बस गए। उन्होने दूरदर्शन और आकाशवाणी के साथ–साथ कुछ समय तक बी. बी. सी. लंदन में भी काम किया। तेजेन्द्र शर्मा जी को भारत में कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। जिसमें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का डॉ. मोटूरी सत्यनारायण सम्मान (2011), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान (2013), हरियाणा साहित्य अकादमी सम्मान (2012), मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग का निर्मल वर्मा सम्मान (2017) महाराष्ट्र साहित्य अकादमी सम्मान (1995), भारतीय उच्चायोग लंदन का हरिवंश राय बच्चन सम्मान (2008) प्रमुख है।

प्रमुख कृतियां :-

तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियों में मनोविज्ञान का खूबसूरत मिश्रण हमें देखने को मिलता है। वे अपने चरित्रों के आसपास के वातावरण और बाहरी व्यक्तित्व को भी अपनी कहानियों में उतना ही महत्व देते हैं जितना की उसके भावों कों। हिन्दी कहानी को नया थीम और परिवेश देते हुए कहानियों के माध्यम से पाठकों को एक नये अनुभव संसार में ले जाते है।

तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियों का संग्रह :-

तू चलता चल (रिश्तों की डोर क्यों टूट रही है) में आधुनिकता, धार्मिकता, जीवन–जाँच से ओत–प्रोत कहानियाँ देखने को मिलती है।

शर्मा जी द्वारा लिखित कहानियों के अलावा कविता एवं ग़ज़ल संग्रह भी उपलब्ध है।

अंग्रेजी की पुस्तकें और अनुवादित कृतियाँ के अलावा तेजेन्द्र शर्मा जी के लेखन पर उपलब्ध आलोचना

ग्रंथ भी हमें कहीं–कहीं दृष्टिगोचर होते हैं।

शोधकार्य :–

तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वरा अब तक दो पी. एच. डी और दस एम. फिल की डिग्रियां प्रदान की गई है।

विशेष :–

तेजेन्द्र शर्मा जी द्वारा लिखित कहानियों में से कुछ कहानियों को विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है।

पुरस्कार :–

तेजेन्द्र शर्मा जी भारतीय उच्चायोग लंदन द्वारा हरिवंशराय बच्चन सम्मान 2008 में, केन्द्रीय हिन्दी स्थान सम्मान 2011 में, प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान 2013 में, मेम्बर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर की उपाधि 2017 में और 2018 में एन. आर. आई. ऑफ दि ईयर सम्मान से विभूषित किया गया है।

काला सागर :–

तेजेन्द्र शर्मा जी काला सागर कहानी में एक अनुभवी, कर्मठ एवं स्पष्टवादी एयरलाईन्स की नौकरी करने वाले विमल महाजन के व्यक्तित्व को दर्शाता है। जो कि कठिन परिस्थितियों का भी समझदारी एवं सूझ–बूझ के साथ–साथ कोमल भावनाओं का आदर करते हुए समस्या का समाधान करते है। तेजेन्द्र शर्मा जी द्वारा लिखित कहानी काला सागर एयरलाईन्स की नौकरी करने वालों की मनोवैज्ञानिक भावनाओं और उनके जीवन की शैली एवं उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित कहानी है। पूरी कहानी काला सागर मुख्य पात्र के इर्द–गिर्द घूमते हुए उनकी मानसिकता, उनकी मनोबल, मुख्य पात्र के धैर्य–साहस की कहानी है।

इस कहानी से हमें कठिन परिस्थितियों का सामना करना सीख सकते है। साथ ही मुफ्त में मिलने पर लोगों की मानसिकता का परिचय भी कराया गया है। काला सागर कहानी में मिसेंज वाडेकर जैसे पात्रों के द्वारा एक माँ की मानसिक स्थिति एवं मातृ प्रेम का अच्छा अनुभव कराया गया है।

वहीं दूसरी ओर शीला देशमुख के पिता जैसे स्वार्थी लोगों की मानसिकता का भी स्पष्ट चित्र काला सागर कहानी में देखा जा सकता है। जो वर्तमान समय के प्रवासी लोगों की प्रवृत्ति कही जा सकती है।

काला सागर कहानी का मुख्य पात्र विमल महाजन पंजाब के लुधियाना जिला गाँव जगरांव में जन्मे 30 वर्ष एयरलाईन्स की नौकरी करने वाले एक संवेदनशील, स्पष्टवादिता और मनोवैज्ञानिक व्यक्ति की कहानी है। जो चार–पाँच वर्ष में रिटायर होने वाले थे। उनके परिवार में उनकी पत्नी और तीन बच्चों के साथ–साथ दो–दो बच्चों के नाना की कहानी है।

विमल महाजन दफतर से छुट्टी लेकर आराम करना चाहते थे। इस वजह से उन्होंने उस दिन देर से उठा और चाय पीकर समाचार–पत्र लेकर बैठ गए लेकिन उनको उसमे रूचि नहीं आ रही थी क्योंकि समाचार –पत्र पढ़ने पर उनको उनके बचपन के दिनों एवं उनके गांव जगरांव की याद आती है जहाँ उनका जन्म हुआ था। वे कहते हैं कि– हिन्दुस्तान की दो माहन विभूतियों ने जन्म लिया है – एक थे लाला लाजपत राय और दूसरा! यह कहकर अपनी ओर देखकर हँस देते है।

विमल महाजन एक विमान परिचारक की हैसियत से नौकरी शुरू की थी परंतु आज अपनी मेहनत एवं

ईमानदारी के बल पर उच्च पद पर आसीन है। उनकी एक और विशेषता उनकी स्पष्टवादिता थी जिसके कारण वे कभी प्रशंसा तो कभी आलोचना के पात्र भी बनते थे।

इस कहानी में एक एयरलाईन्स की विमान 091 जो माट्रियल से लंदन जाते समय दुर्घटनाग्रस्त होकर अटलांटिक महासागर में गिर जाती है जिसकी सूचना विमल महाजन को उनका सहायक देता है। उस समय विमान में रहने वालो एवं उनकी स्थिति का समाचार लोगों तक पहुँचने पर उनकी मानसिकता का अच्छा चित्र काला सागर कहानी में पाठकों की आँखों में चित्रित किया गया है।

तेजेन्द्र शर्मा जी इस कहानी में सभी वर्गो के लोगों का नवजात शिशु से लेकर 70 वर्षो के बुजुर्ग तक के लोगों का संपूर्ण वर्णन इस काला सागर की विमान दुर्घटना में किया है और उन सभी लोगों को एयर लाईन्स क्रू–यूनिट द्वारा दिये जाने वाले मुआवजा के लिए प्रवासी लोगों की मानसिकता का स्पष्ट चित्र दिखाया है।

इस प्रकार यह काला सागर कहानी एक छोटी सी विमान दुर्घटना को लेकर प्रवासी लोंगों की मानसिकता, उनका स्वभाव और उनकी आलोचना का स्पष्टीकरण इस कहानी के माध्यम से कराया गया है।

काला सागर कहानी आधुनिक काल की प्रवासी मानसिकता का चित्र उकेरती है।

टेलिफोन लाईन :–

तेजेन्द्र शर्मा जी की इस कहानी में लंदन में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के व्यवहार एवं उनकी समस्याओं को इस कहानी में दर्शाया गया है। टेलीफोन लाईन कहानी के सभी पात्र एवं सभी के चरित्र–चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है। जैसे टेलीफोन लाईन कहानी में स्कूली छात्र से लेकर जीवन के मध्यावस्था तक के समय का जवन वृत्त दिखता है। साथ ही यौवनावस्था के समय की यादों एवं प्रेम का चित्र भी दिखता है। जिसमें जीवन की जिम्मेदारियाँ भी उनके पात्रों में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

टेलीफोन लाईन कहानी में सभी धर्मो एवं जात–पात के लोगों के व्यक्तित्व को दिखाने का प्रयत्न किया गया। दो अलग–अलग धर्मो के लोगों के मिलकर जीवन बिताने वाले अनवर जो सभी धर्मो का समान रूप से सम्मान करता है और सभी के साथ सरल व्यवहार करात है। ऐसे अनवर के जीवन और उसके यादों के इर्द–गिर्द घूमने वाली कहानी है।

टेलिफोन लाईन कहानी एक टेलिफोन काल से शुरू होती है और टेलिफोन काल से ही अंत भी होती है। इस कहानी में तेजेन्द्र शर्मा जी पूरी कहानी एक प्रवासी व्यक्तित्व की यादों को लेकर रची गई कहानी है।

टेलिफोन लाईन कहानी में लेखक तेजेन्द्र शर्मा जी द्वारा कहा जाता है कि पाँच मिनट का इंतजार तुमको इतना लम्बा लगा? यहाँ तो एक जिंदगी ही निकल गई। फोन बजता रहा – और कहानी शुरू होती है। अनवर और पिंकी की कहानी जो उनके एक और मित्र अवतार के आने पर अनवर की जिंदगी ही बदल जाती है और वह यादों के सहारे जीवन बिताता रहता है। उसी समय श्रीवास्तव जी एक और बडें उम्र के व्यक्ति उसी शहर मझियाण और झंग जिन्हे जुड़वा शहर समझा जाता है के होने के कारण उनसे फोन पर 40 से 45 मिनट तक बाते कर अपना गम भुलाता रहता है।

तेजेन्द्र शर्मा जी इस प्रकार अनवर की कहानी में एक दिन अचानक किसी स्त्री के फोन कॉल के द्वारा अनवर की जिंदगी में एक और मोड से हमें परिचित कराते हुए उनके स्कूली मित्र से जो कि अपने जीवन में सब कुछ खोकर केवल अपनी दो बेटियों के साथ भारत में अपना जीवन व्यतीत करती है का परिचय कराते है।

टेलिफोन लाईन कहानी में अनवर की सहेली उसे फोन कर उसके स्कूल की यादों को ताजा करतें हुए उसके जीवन में एक नया प्रस्ताव रखती हैं और कहती है कि हम लोगों का जीवन तो हम जी चुके हैं किन्तु मुझें अपने बच्चों की चिंता हैं जिसे तुम्हारी मदद से मैं दूर कर सकती हूँ। ऐसा सुनकर अनवर सोच में पड़ जाता है और फोन बनता रहता है— वह उठाता नहीं है। लगातार फोन के बजने पर वह जब दूसरी बार उठाता है तो उसकी सहेली उससे कहती है कि वह उसकी बडी लड़की से शादी कर लें क्योंकि उसकी जिंदगी विदेशो में रहने से संवर जाएगी और जिसके लिए उसे अन्य कोई और प्रवासी व्यक्ति से परिचय नहीं है। यह सुनकर अनवर अवाक रह जाता है।

तेजेन्द्र शर्मा जी द्वारा टेलिफोन लाईन कहानी के माध्यम से प्रवासी लोगों की मानसिकता एवं उस समय उनकी स्वाभाविकता एवं वर्ग—भेद और धर्म—भेद को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्य किया गया है। साथ ही टेलिफोन लाईन कहानी में एक व्यक्ति के भारतीय मूल्यों और प्रवासी मूल्यों के अंतऱ द्वंद्व का भी स्पष्ट चित्र इस कहानी में देखने को मिलता है।

उड़ान :—

तेजेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित उड़ान कहानी एक एयर होस्टेस का जीवन उसकी महत्वाकांक्षाओं और उसके भविष्य की कल्पना की कहानी है। जो एक मध्यम वर्ग के परिवार में जन्मी एक क्लर्क के बेटी की कहानी है। जिसके परिवार में माता—पिता के साथ दो भाई—बहन की कहानी है। यह लड़की वीनू अपनी ही सहेली अनू की बहन मधु पुरी साहब की बेटी—जो एक एयर होस्टेस के पद पर कार्य करती है के जीवन और उसकी कल्पनाओं से प्रभावित होकर अपने जीवन में भी उसी प्रकार की कल्पना करती है की कहानी है।

एक मध्यम वर्ग की लड़की की उच्चाकाक्षाओं का परिचय इस कहानी में देखने को मिलता है। जो कि अपनी ही सहेली की सफलता से प्रेरित होकर आशाओं की कल्पना कर अपने जीवन में लक्ष्य बनाती है। जब वीनू अपने लक्ष्य के बारे में अपनी सहेली नीलम से बताती है तो उसे कहती हैं कि तू पहने बी. ए. तो पार कर लें फिर उस नौकरी पर जाना।

तेजेन्द्र शर्मा जी की यह कहानी वीनू की वापसी से शुरू होती है जो नौकरी के लिए दिल्ली से मुंबई जाती है और वापस मुंबई से दिल्ली आते समय अपनी वापसी की यात्रा के दौरान सोचने लगती है कि किस तरह अपने परिवार वालों के सामने जाएं।

ट्रेन का सफर करते हुए वीनू कल्पना करती है कि जब वह पहली बार अपनी नौकरी के लिए मुंबई आती है तो मुंबई की संदरता लग रहा है जैसे— मुंबई रात की बाहों में बिजली की तरह चमक रहा था। जुगनुओं की कतारों जैसी बत्तियाँ दिख रही थी। वह यादों मे खो जाती है। फिर उसकी कल्पना टूटती है तो देखती हैं कि गाड़ी आगे—ही—आगे भाग रही है और उसे पीछे छोड़े जा रही है।

उड़ान कहानी मे तेजेन्द्र शर्मा जी एक नव—यौवना लड़की की कल्पनाओं के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वीनू को उसका मित्र राजू नीले रंग के कपड़ों में बहुत ही आकर्षक लगता है और थोड़ी देर में फिर उसे उसके जीवन का अमूल्य समय एयर होस्टेस की जिंदगी की याद आती है और अपनी सहेली नीलम के बारे में सोचती है कि उन दिनों नीलम उसकी खूब मदद करती थी तो वीनू कहती कि— नीलू इतनी अच्छी न बनो की मैं अपने आप को छोटी महसूस करने लगूँ। यह सोचकर रोने लगती है।

इस कहानी की मुख्य पात्रा को जब पहली बार फ्लाईट में दुबई से मस्कट गल्फ एयरलाईन्स 382 सीटों की जंबो–जेट टैनी के रूप में जाना था तब उसे पूरा वातावरण बनावटी लगता है और वह कहती है कि – मैं सोचती कितना कृत्रिम हूँ यहां का वातावरण! बनावटी–ही–बनावटी है। यह सोचती है और गाड़ी रूक जाती है और उसकी सोच टूट जाती है।

तेजेन्द्र शर्मा जी इस कहानी में एक नव–यौवना की कल्पना शक्ति के बारे में बताते हुए कहते हैं कि जब पहली बार ट्रेनिंग पूर्ण होने के बार पूरा यूरोप के लिए अकेले विमान में एयर होस्टेस की हैसियत से जाना पड़ता है तो वह बहुत ही भयभीत हो जाती है और डरते–डरते जाने के लिए तैयार हो जाती है। जब वह धैर्य करके निकलती है तो उसके सामने एक व्यक्ति आता है और वीनू को एक पत्र देकर कहता है कि – होस्टस का चयन आवश्यक्ता से अधिक हो गया है। आपको एयरलाईन्स की सेवा से मुक्त किया जाता है। बस और क्या था वीनू की सारी दुनिया ही हिल जाती है।

उड़ान कहानी में एक मध्यम वर्गीय लडकी की उच्चाकाक्षाओं का परिचय कराया जाता है जिसमें वीनू मुंबई की चमक–धमक से अपने जीवन में चमक लाने की सोचती है किन्तु जब उसे मालूम होता है कि उसकी नौकरी छूट जाती है तो फिर सोच में पड़ जाती है कि किस तरह वापस घर जाकर अपने परिवार वालों के सामने खड़ी हो पाएगी।

एक क्लर्क की बेटी वीनू अर्थात् मध्यम वर्ग की लड़की की आकांक्षा किस तरह की होती है इस कहानी में दृष्टिगोचर होता है। साथ ही जब वे सपटे टूटने लगते है तो कैसी स्थिति में उस लड़की की मनोदशा का चित्रण स्पष्ट रूप से दिखता है और वह किस प्रकार की दुविधा का सामना करती है और उस स्थिति में वीनू की मानसिकता का स्पष्ट चित्र परिलक्षित होता है।

तेजेन्द्र शर्मा जी आधुनिक कालीन कहानीकारों में प्रवासी साहित्यकारों की सूची में आने वाले सर्वश्रेष्ठ कहानीकार है। इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता, संवेदनशील भावनाएँ, कर्मठता, कोमलता और जीवन की यथार्थता जैसे गुण उनके पात्रों में देखने को मिलता है।

तेजेन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक हैं। जिनकी प्रतिभा का परिचय हमें उनकी कहानियों से मिलता है क्योंकि उनकी सभी कहानियों में हमें अलग–अलग प्रकार के पात्रों का परिचय मिलता है। शर्मा जी की कहानियों में किस्सागोई एवं मनोविज्ञान का खूबसूरत मिश्रण होता है। वे अपने चरित्रों के आसपास के वातातरण और बाहरी व्यक्तित्व को भी उतना ही महत्स देते है जितना कि उसके भावों और मनोविज्ञान को देते है।

तेजेन्द्र शर्मा जी ने हिन्दी कहानी को नये थीम और परिवेश प्रदान किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से वे पाठकों को एक नये अनुभव संसार में ले जाते है।

तेजेन्द्र शर्मा जी इस चमक–दमक वाले पश्चिमी देशों के आम आदमी के जीवन से हमारा परिचय करवाते हैं और वे हमारी उगली पकड़कर उस नये संसार में हमें ले जाते है लेकिन वहाँ छोड़ नहीं देते हैं।

शर्मा जी हमें पूरी तरह झकझोर देते हैं और एक नये संसार की सच्चाईयों से हमारा परिचय कराते है। अंत में यहीं कहा जा सकता है कि तेजेन्द्र शर्मा जी लम्बें समय तक एयर इंडिया में काम करने के बावजूद भी ब्रिटेन में बस गये हैं और प्रवासी साहित्यकार के रूप में आज भी भारतीय साहित्य की सेवा में रत है।

इस प्रकार तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियों से हमें उनकी भारतीयता के प्रति सोच और प्रवासी भारतीयों की जीवन शैली और उनकी भावनाओं और उनकी कठिनाईयों का स्पष्ट चित्र उनकी कहानियों में हमे देखने को मिलता है। तेजेन्द्र शर्मा जी आधुनिक काल के प्रवासी साहित्यकारों की श्रेणी के मेंबर ऑफ ब्रिटिश एंपायर उपाधी से सुशोभित साहित्यकार है।

दूरभाष – 8790952412
ईमेल varijabhasuru@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 199-202
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Re-Examning the Traditional Existing Social Sistation and Identity of Women in Indian Literature – An Overview

Dr. D. Fathima Rani
Associate Professor, C.H.S.D St. Theresa's (A) College For Women, Eluru

Gender equality is a human right, but our word faces a persistent gap in access to opportunities and decision making power for women and men. Empowerment is a process that gives a person freedom in decision making. It's a multidimensional process which should enable individuals or group of individuals to realize their full identity and powers in all spheres of life with women increasingly becoming independent economically men are being forced to take up new responsibilities which were earlier considered "women's work". Far more than international women's year the economic situation and basic necessity have forced both men and women to reexamine traditional existing social situations.

The writers used their past experiences of tragedy and hardship as a stepping stool for growth by turning the pain in to what now their writings. For most writer's majority of their work come from their own experiences. The great deal of Indian women works regarded the dilemmas many Indian women faced during that time such as prejudice and discrimination. Globally no country has fully attained gender equality. The word gender describes the socially constructed roles and responsibilities that societies consider appreciate for men and women. Women's empowerment is a critical aspect of achieving gender equality which includes the women and her ability to effect change. Gender equality means that men and women have equal power and equal opportunities for financial independence, education and personal development.

Today, empowerment has become one of the most central concerns of 21st century. Empowerment of women has become a well-known subject on many occasions. In India since old times women empowerment is dependent on many different variables that include geographical location, educations, social status and age. Indian women writers gave a new vented their deep feelings. Contemporary writers like AMita Desai, Manju Kapur, Shashi Deshpande, Shoba De, Jumpa Lahari,

Arundhai Roy, Chitra Benejee Divakaruni have challenged the society for metamorphosis of women's status. Since the growth of civilization changes. The women go through transformation as a result Indian women dare to work and dare to play better role than remaining mere spectators within their four walls.

As Patricia Meyer speaks remarks a major development in modern Indian fiction is the growth of a feminist or women centered approach that seeks to project and interpret experience, from the point of a feminine consciousness and sensibility. Many Indian women novelist have explored female subjectivity in order to establish an identity. Women's presentation is more assertive more liberated and more articulated in the writer's expression than the woman of the past is. The last three decades has seen the emergence of prominent feminist in Indian literature moved from traditional portrayals of enduring self sacrificing women, female characters were searching for identity defined in terms of their victim status. The new woman was a feminist ideal that emerged in the late 19th century and had a profound influence on feminist well in to the 20th century.

In 1894 Irish writer Sarah Grand used the term 'New woman to refer to independent women seeking radical change further the term is popularized by British-American writer Henry James, who used to describe the growth in the number of feminist, educated, independent career women in Europe and the United States. So the independence was not simply a matter of the mind but it's an expanded women's ability to engage with a broader more active world'. Women writers belonging to the marginalized communities often criticized how women were always legally and economically dependent on their men folk with regard to education, legal rights and property, sexual and marital partners the new woman stepped in to new position of freedom of choice. The emergence of education and career oppurtunities for woman in 21 st century survives an economic independence, maintaining social responsibility. It is clear in the novels of modern novelists present the woman's challenge to the patriarchal society. Writers are tireless in bringing the values of new woman who are highly individualistic, calculative and self esteemed. Who cut across the conservative morality, they portrayed them in a very bold and courageous and never submissive.

The women protagonists were liberal and unconventional. A challenge of 21 st century writes the status of women in India has been subject to many great changes over the past few millenniums. In spite of various measures, women have not been fully occupying highest positions; we still witness dowry deaths domestic violence and exploitation of women. Globalization has presented new challenges for the realization of the goal of women's equality. The feminist writings of new women were not new to the twentieth century.

Throughout the 1800's these growing forces of industrialization and urbanization have seriously

altered the condition of Indian women in particular and globally in general. A modern civilization demanded a complex technical, specialized education. The 21 st century women spurred by her own condition and inspired by the people who publicly voiced her inner, secret thoughts, she became a part of the feminist revolt. As swami Vivekananda quotes: There is no chance for the welfare of the world unless the condition of women is improved. As empowerment is multi-dimensional process which enables person's identity. Women in India are participating in areas such as education, sports, politics, media, art and culture service sector and science and technology. But due to the deep rooted Indian mentality women are still victimized, humiliated, tortured and exploited. Even after seven decades of independence Indian women in Indian society are still subjected to discrimination in all fields to name few social economic and educational. Since India is positioned as the 29th rank among 146 countries across the globe on the basis ofgender inequality index. One wishes for a day where the hurdles set women free and empowered.

The realm of Indian English novel Shoba De is a gifted novelist with extraordinary abilities to discuss sensitive aspects. The novels of Shoba De have presented new women with changed roles. She portrayed women who were independent not existing as injured part oflife but as a victory. She supports rebellion women who revolt for their prestige, place, identity and honor.

Indian fiction in English has been enriched by several talented women novelists including Kamala Markandaya, Amita Desai, Nayanatara sahyagal. These women writers have written about Indian women and their struggle, suffering and exploring moral strength and their struggle with challenges in creating their own identity. Shoba De an eminent Indian novelist who often known as Jackie Collins is a copy writer, freelancer writer and columnist is known for her notable writings like starry nights, socialite evenings, sultry days, sisters, small betrayals, second thoughts, surviving men, spouse etc. A gifted writer, novelist, poet professor, a short strong author. Chitra Banerjee is indeed an award winning author whose works have been published in more than 50 magazines. Her major novels include "The mistress of spices, sister of my heart, Queen of my dreams, one amazing thing, places of illusions.

A major development in modern Indian fiction is the growth ofa feminist or women centered approach, that seeks to project and interpret experience from the point of a feminine consciousness and sensibility. Women writers have explored female subjectivity of womanhood developed society. One of the best novelists Shashi Deshpande has been displaying the themes of silence, gender, differences, passive sufferings and familiar relationships into much deeper realms, the role of fury and destiny play as main themes around which Deshpande weaves her tale. Her women characters are with traditional approaches trying to the family and profession to maintain the virtues of Indian culture. As her narration shifts through her feminine consciousness, her women occupy central stage like

traditional women, the women who are bolder more self-reliant and rebellions as well the women and who sympathises with women. Society must take initiative to create a climate in which there is no gender discrimination and women have full opportunities of self-decision making and participating in the social, political and economic sphere with a sense of equality.

The image of women in fictions has undergone a change during the last four decades. Women writers have moved away from traditional portrayals of enduring self sacrificing women toward conflicted female characters searching for identity, recent writers depict both the diversity of women and the diversity within each woman. The novels emerging in the twenty-first century furnish examples of a whole range of attitudes towards the imposition of tradition, some offering an analysis of the family structure. They reinterpret mythology by using new symbols in conclusion. The work of Indian women writers is significant in making society aware of women's demands and in providing a medium self-expression and thus re-writing the history of India.

However, the feminist writings were of crucial interest to the post-colonial discourse. It was necessary for the women to oppose the male dominance over them under the patriarchal influence to women. We observe that women contributed to define the borders ofcommunity, class and race. We observe that women continued to define the borders of the community, class and race.

References :-

1. http://www.Indiacelebrating.com/essay/socialissues/women-empowerment/24nov'16
2. Rushdie Salman, "The Art of critical appreciations of Indian Novelists, starred reviews, London 2008.
3. "Shoba De, Penguin script new chapter" The Times of India 9 April 2010. Retrieved 9 september 2012.

fathimarani091@gmail.com

8106733546

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 203-205
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Geographical Diasporas : An overview of the Research Areas of Migration

Kajal
Assistant Professor, Dept. of Geography, In Mahila Mahavidyalaya, Jhojhu Kalan, Charkhi Dadri.

Abstract :-

The term Diaspora comes from the Ancient Greek word meaning "To scatter about". And that's exactly what the people of a diaspora do: they scatter from their homeland to places across the globe, spreading their culture as they go. Migration on a global scale has created diaspora communities across the world. Whenever they live in the world, the people of a diaspora all share a common home, which may be far away from where they live. From a geographical perspective, diaspora is about global flows of people and the connections that they make between places.The research area is still understudied, characterised by rapid changes and shifts, and shaped by the Changing structural conditions of migration. In this article, I provide an overview of the developing research area through a review of the existing literature on migration.

Keywords :- Diaspora, migration, geographic boundaries, spreading culture, to scatter about.

Introduction :-

The terms Diaspora refers to a group of people who have dispersed across many geographical boundaries, wherever they are in the world, and whatever cultural differences they have.Diaspora communities all have a shared understanding that there is another place called home that is far from where they live.Although they will have dispersed from a common homeland, people who identify with a particular diaspora may have diasporic connections to other places around the globe. In this sense, we should think of a diaspora as a network. The diaspora can be the result of both forced and voluntary migrations. Diaspora space Create a global network with transnational connections and flows. This connectivity enables diasporic cultures to flow between places located across the diaspora network. For many geographers, diaspora is about routes as well as roots. A network of routes helps us understand that diasporas create dynamic places that are consistently changing. Diaspora connections that stretch across borders have an energy and vitality that can generate new cultural forms that can

disrupt mainstream national cultures. New cultures create new economies. One should not betray our interest in new cultural landscapes—cultures generate money, and this wealth has significant political implications.

Objective :-

1. To promote and maintain the rich Indian culture and interests on foreign lands.
2. To raise the social, economic, and political status of India in other countries.

Methodology :-

Secondary data has been used in the present research work.

Contribution of Indian Diaspora :-

Diaspora are symbols of a nation's pride and represent their country internationally.

1. They help build a country's value internationally through their huge success stories. The diaspora's ability to spread Indian soft power and lobby for India's national interests and contribute economically to India's growth is now well-recognised.
2. One of the greatest economic contributions of the Indian diaspora has been in the form of remittances. According to a World Bank report, India received approximately 87 Billion dollars in remittances in 2021, with the USA being the biggest source, accounting for 20% of these funds.

Migration :-

"Migration," on its own, is a much more general term: the movement of human groups across territory, whether for cultural, seasonal (as in the case of nomadic groups), or political reasons. Although it is not nearly as contested a term as diaspora and transnationalism, it is worth mentioning here because it is a prominent category in the literature, particularly around population geography, refugees, and the rural-to-urban shift (Lawson, 2000). Noting that migration focuses on groups is also indicative of the scale at which diasporic experiences are often studied by migration scholars and population geographers alike. This is not to say that individual experiences are unimportant, but that the entire set of experiences under the term diaspora is fundamentally related to group identity. Relatedly, a growing field of mobilities research "includes detailed studies of embodied, material, and politicised mobilities, often through the development of innovative and mobile methodologies" (Blunt, 2007, pp. 684-685). Although it is relatively new, the notion that different kinds of movement, both within and across borders, can constitute an epistemic whole might be useful in the ways diasporas are theorised.

Differences within diasporas :-

An important, but often overlooked, focus in diaspora studies is "how the diaspora experience is embedded in the complexities of class, race, gender, generation, and other social divisions" (Jazeel,

2006). That is, there is a tendency to essentialize diasporic identities, especially upon arrival in host countries. Indeed, it is this outwardly unified representation of identity that can establish and/or maintain a diaspora community's political power when interfacing with the majority local population. The problem inside this turn, however, is the contestations over what is considered the 'pure' form of culture or language among a people that are often divided along class, ethnic, or language lines in their country of origin. Within groups, this may be expressed as a struggle for 'authenticity, while factors such as race and class distinctions are imposed from the outside by the majority culture (Blunt, 2003; Ghosh & Wang, 2003; Jazeel, 2006; White, 2003; Yeh, 2005).

Conclusion :-

This review of diaspora in the geography literature began by clarifying specific characteristics inherent in diaspora, and it will end similarly. Through defining terms and pulling out major themes, clusters in the literature, and theoretical constructs, different approaches to diaspora in the literature were examined. Concepts that help to define the distinct contours of diaspora from a geographical perspective include such concepts as homeland, geographies of Empire and its effect on (post)colonial migration, the real and imagined territorializing of places and identities, new spaces of citizenship as an outgrowth of population migration, and how hybridity and difference are characteristics that define people and processes associated with diaspora. In highlighting these themes, the purpose was to tease out how each has been presented in geographical criticism and analysis. More significantly, it is evident that the literature in geography is in deep conversation with other disciplines.

Reference :-

1. Rios, M., & Adiv, N. (2010). Geographies of Diaspora : A Review. Davis, CA: UC Davis Center for Regional Change.
2. Alinejad, D. (2011). Mapping homelands through virtual spaces : Transnational embodiment and Iranian diaspora Bloggers. Global Networks, 11(1), 43-62. https://doi.org/10.1111/j.1471-0374.2010.00306.x
3. Anderson, B. R. (2006). Imagined communities : Reflections on the Origin and spread of nationalism (Rev. ed.). London, UK: Verso.
4. Demmers, J. (2002). Diaspora and conflict : Locality, long-distanceNationalism, and delocalisation of conflict Dynamics. Javnost, 9(1), 85-96. https://doi.org/10.1080/13183222.2002.11008795
5. King, R. & Christou, A. (2008). Cultural geographies of counter-Diasporic migration : The second generation returns 'Home'.
6. Gamlen, A. (2014). 'Diaspora Institution and diaspora governance MR value 48 number S1: S180-$217.
7. https://www.humptynerd.com
8. https://www.voyubulary.com

Mob.no.9050193158, E-mail id – kajalchauhan3158@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 206-209

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अर्चना पैन्यूली की कहानियों का विश्लेषण

प्रो. जे विजया भारती

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश।

प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में डेनमार्क में स्थित अर्चना पैन्यूली ने एक सशक्त लेखिका के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई हैं। 17 मई 1963 को कानपुर उत्तर प्रदेश में जन्मी अर्चना पैन्यूली की शिक्षा दीक्षा देहरादून में हुई। गढ़वाल विश्वविद्यालय से इन्होंने अपनी एम एस सी एवं बी एड की शिक्षा पूर्ण की। विवाहोपरांत मुंबई में माध्यमिक स्कूलों में अध्यापन आरंभ किया और राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में उनके लेख एवं कहानियों का छपना आरंभ हुआ। 1997 अर्चना पैन्यूली अपने परिवार के साथ भारत से डेनमार्क विस्थापित हुई। वहां इन्होंने दानिश भाषा का भी ज्ञान प्राप्त किया। अर्चना जी प्रमुखतरू भारतीय प्रवासी एवं स्कैंडिनेवियन देशों में बसे भारतीय समुदाय पर ही कहानियां उपन्यास एवं लेख लिखती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय पात्रों के साथ–साथ यूरोपीय पात्र भी सहज रूप से विद्यमान हैं।

परिवर्तन, वेयर डू आई बिलॉन्ग, पॉल की तीर्थ यात्रा, कैराली मसाज पार्लर उनके उपन्यास है हाईवे E47, कितनी मॉएं हैं मेरी, प्रवासी साहित्य श्रृंखला इनकी कहानी संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त अर्चना जी ने डेनिश लेखकों की कृतियां हिंदी में अनूदित की हैं। अपना उपन्यास वेयर डू आई बिलॉन्ग हिंदी भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनूदित हुई है। हिंदी साहित्य में इनकी सेवाओं के लिए इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

अर्चना पैन्यूली के द्वारा रचित 'कितनी मांएं है मेरी' कहानी संग्रह की प्रत्येक कहानी रोचक एवं मर्मस्पर्शी है। ये जहां भारतीय संस्कृति की गरिमा को उच्चाटित करती हुई दिखाई देती हैं वहीं विदेशी संस्कृति को भी स्वीकार करती हुई एवं उसका समर्थन करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। इस संग्रह में मां के कई रूपों का दर्शन होता है। मां की ममता, वात्सल्य और उस की विडंबना आदि का चित्रण इनकी कहानियों में अत्यंत प्रभाव पूर्ण बन पड़ी हैं। मात्र मनुष्य जाति में ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों में भी मातृत्व का एहसास कितना गहरा होता है इसका वर्णन इनकी कहानियों में द्रष्टव्य है।

'कितनी मॉएं है मेरी' कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'बेघर' की कुसुम दो बच्चों की मां होती हुई भी पूर्ण रूप से मातृत्व का आनंद नहीं उठा पाती। सुभाष के साथ प्रेम विवाह करने के बावजूद अपनी सास के साथ न बन पाने के कारण हमेशा घर में तनावग्रस्त वातावरण हुआ करता था। उसी वक्त पीटर अब्दुल कलाम का इंटरव्यू लेने[1] डेनमार्क से भारत आता है कुसुम पर्यटन विभाग की अधिकारी[2] होने के कारण पीटर के साथ कई बार मुलाकात होती रहती तभी वह सुभाष से तलाक लेकर पीटर से विवाह कर विदेश चली जाती है। तब उनका बेटा राहुल 5 वर्ष का था। कभी कभार राहुल से फोन पर बात किया करती थी। छुट्टियों में अपने पास ले जाती

थी। पीटर और कुसुम की एक बेटी होती है मीता। इधर सुभाष भी दूसरी शादी कर लेता है। उनके दो बच्चे हुए एक बेटा और एक बेटी।

राहुल न ही लता को मां का दर्जा दे पा रहा था और न ही पीटर को पिता का। अपने सौतेले भाई बहन से भी वह स्नेह का भाव नहीं रख पा रहा था। उसकी प्रकृति कुछ हिंसक हो चली थी। वह चौदह वर्ष का हो गया है। इस बार छुट्टियों में जब अपनी मां के पास गया तो घर बदल गया था और वह किसी और व्यक्ति के साथ रहने लगी थी। राहुल बहुत विचलित हो गया और एक संदर्भ में अपनी मां से कहा कि, 'मैं आपका करेक्टर बिलकुल ही नहीं जान पा रहा हूँ।'[३] तब वह जो कुछ भी अपने साथ घटा, बेटे से कहने लगी। 'तेरे पापा और मेरे बीच तेरी दादी थी.......। तेरी दादी ने हमारे दांपत्य में विष घोला। वह एक ऐसी मां थी,जो अपने बेटे की ताकत नहीं कमजोरी थी।'[४] और 'पीटर और मेरी जिंदगी के शानदार सफर में अचानक दूसरी औरत इसाबेला आ गई और हमारी शादीशुदा जिंदगी में दरार पड़ गई। मैं टूट ही गई थी। मैं पीटर और अपनी शादी को दूसरा मौका देती, उससे पहले ही इसाबेला प्रेग्नेंट हो चुकी थी।'[५]

भारतीय परिवेश में पले–बढ़े राहुल को विदेश में जो अपने सामने घट रहा था वह स्वीकार्य नहीं था। मैक्स का रहन–सहन, उसके बोलने का ढंग उसे असह्य लगने लगा। छुट्टियॉ खत्म होने से पहले ही वह भारत वापस चला आया। एयरपोर्ट से घर ले जाते समय पिता ने बहुत सारी शर्तें रखीं तो उसे लगा कि यहां भी उसका कोई घर नहीं रहा वह 'बेघर' होगया है। तब वह नानी के घर जाने की बात कहता है तो सुभाष खुशी–खुशी उसे बस में चढ़ा देता है। अंत में दादी और नानी मिलकर निर्णय लेते हैं कि राहुल का पालन पोषण वे दोनों मिलकर करेंगी।

कुसुम को अपनी पहली शादी को ही थोड़ा और समय देकर देखना चाहिए था। वहाँ बस सासू माँ से मनमुटाव थे। कोई दूसरी औरत तो कारण नहीं थी। राहुल बेघर नहीं होता। मानसिक तनाव से ग्रस्त नहीं होता। अपने माता–पिता के साथ एक खुशहाल जीवन बिताता।

'एक छोटी सी चाह' की इवा एक ऐसी मां है,जो अपनी दत्त पुत्री को खुश देखने के लिए हर संभव प्रयास रत है। स्वाति जब सात वर्ष की थी, डेनमार्क के इवा और जॉन दंपती ने चेन्नई के सेवालय से उसे गोद लिया था।[६] जैसे–जैसे स्वाति का उम्र बढ़ रहा था वैसे वैसे उसके दिमाग में एक ऐसा सवाल उठने लगा था वर्ण भेद का क्योंकि उसके माता–पिता गोरे थे[७] और स्वाति क रंग सांवला था। उसका मन विकल हो रहा था जिसके कारण वह अपने माता–पिता से सही ढंग से बात भी नहीं कर पा रही थी। उन्हें अपने माता–पिता स्वीकार नहीं कर पा रही थी। उसे जन्म देने वाले माता–पिता के बारे में जानना चाह रही थी।[८] उसका नाम स्वाति रखने वाले का नाम जानना चाह रही थी। स्वाति का अर्थ जानना चाह रही थी।[९] यह सब देख कर इवा बहुत परेशान हो कर यह सोचने लगी थी की उसको पालने में कोई कमी रह गई हो। जॉन भी स्वाति को समझाने का प्रयत्न करता है। फिर भी उसका किशोरी मन समझ नहीं पा रहा था।

इवा स्वाति से चेन्नई जाने की बात करती हैं तो स्वाति बहुत खुश होकर मान जाती है। अपने बचपन के 7 साल जहाँ गुजरे थे उस सेवालय को और वहां के लोगों को देखने व मिलने के लिए वह बहुत व्याकुल हो रही थी। चेन्नई के शानदार होटल से सेवालय के लिए कार में निकले। कार तंग गलियों से गुजरते हुए सेवालय पहुँची। स्वाति ने जब वहां स्थित बच्चों का पहनावा, रहन–सहन, कमरे, टायलेट देखा, तो वह अपने

आप को भाग्यशाली समझने लगी[१०] जिसे इतने अच्छे और सगे से भी अधिक प्यार करने वाले माता–पिता मिले।

गर्भ से जन्म न देने पर भी अपनी दत्त पुत्री पर सारा प्यार न्योछावर करने वाली इवा को एक आदर्श मां के रूप में दर्शाया गया है। स्वाति का व्यवहार उन्हें क्षुब्ध करने पर भी उसकी मनःस्थिति को जानकर इवा और जॉन ने उसके पक्ष में निर्णय लिया और स्वयं स्वाति को सत्यता से परिचित कराया।

'आई एम प्राउड ऑफ यू माँ' की रमा प्राकृतिक तरीके से गर्भधारण नहीं कर पा रही थी तो आई यू आई, उसके बाद आई वी एफ के द्वारा संतान प्राप्ति के लिए कई बार प्रयत्न कर हार गए।[११] अब उनके सामने दो ही रास्ते थे एक सरोगेसी के लिए जाए या किसी को एडॉप्ट करें।[१२] रमा और पराग को अपने बच्चे की चाहत थी। जेठ–जेठानी को परेशान व निराश देख मानसी उनके बच्चे की सरोगेट मदर बनने केलिए तैयार हो जाती है।[१३] अनुराग और मानसी देहरादून में अपने माता–पिता के साथ सम्मिलित परिवार में रहते थे। उनकी दो बेटियां थी 7 और 5 साल के उम्र की। पराग और रमा दिल्ली में रहते थे इसलिए मानसी को सेरोगेट मदर बनने के लिए देहरादून से दिल्ली जाना पड़ा। डिलीवरी होने तक राम ने मानसी को देहरादून नहीं जाने दिया।[१४] आरव का जन्म होते ही राम के मन में शंकाएं उत्पन्न होने लगी, और जल्द ही मानसी को देहरादून भेजने की सोचने लगी। 1 महीने तक ही उसे अपने पास रहने दिया फिर देहरादून भेज दी।[१५]

आरव जब 5 साल का था तो पराग को डेनमार्क में एक नौकरी का ऑफर मिला। वे डेनमार्क चले गए।[१६] छुट्टियों में आरव जब भी आता था तो दादा–दादी,चाचा चाची एवं बहनों से बड़ा ही प्यार पाता था। अब वह 17 वर्ष का हो गया है। अचानक भारत से अनुराग का फोन आता है यह कहते हुए की मानसी कैंसर ग्रस्त हो गई है और उसे लिवर ट्रांसप्लांटेशन की आवश्यकता है।[१७] लिवर डोनर प्राप्त नहीं हो पा रहा था। डॉक्टर का कहना है की मानसी को यह बीमारी शल्य चिकित्सा के समय जो इंफेक्शन हुआ था उसी के कारण यह कैंसर में बदल गया है। आरव अपनी सरोगेट मदर के लिए अपना लीवर दान देने के लिए तैयार हो जाता है और भारत जाने की बात कहता है। रमा उसे मना कर देती है तो आरव अपनी मां से कहता है कि 'मां मैं तुम्हारा ही बच्चा हूँ। देखो एकदम तुम्हारी शक्ल का हूँ। मगर चाची ने जो हमारे लिए किया है उसे भूलना नहीं चाहिए। चाची ने ही हमें इस माँ–बेटे के अनोखे बंधन में बांधा है।' [१८]

आरव माता–पिता के साथ भारत रवाना हो जाता है। मानसी से जब यह बात कही जाती है कि आरव उसे लिवर दान देने आया है वह मना कर देती है और कहती हैं कि 'मैं अपने लिए तुम्हारा जीवन दांव पर नहीं लगा सकती। मैंने इसलिए तुम्हें पैदा नहीं किया।'[१९] और दो–तीन लोग मानसी को लीवर देने के लिए तैयार हो तो गए थे पर अंत में शल्य चिकित्सा के टेबल पर रमा चढ़ी थी। इस कहानी में एक जैविक मां का डर और बच्चे पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की लालसा मनुष्यता को ही किस प्रकार भुला देता है, इसका चित्रण है और एक सरोगेट मां उस बच्चे की भलाई के लिए कितनी तत्पर है यह भी बताया गया है। सत्रह वर्ष के आरव का धैर्य और सूझ बूझ के साथ निर्णय लेना, अपनी मां को भी समझा पाना एक समझदार युवा का सशक्त उदाहरण है। पर अंत में रमा का अपनी देवरानी को लीवर दान देने का निर्णय अत्यंत प्रशंसनीय है। अतः यह कहानी आदर्श मानवीय रिश्तों का द्योतक है।

यह आलेख अर्चना जी की मात्र तीन कहानियों का विश्लेषण है जिसमें विभिन्न प्रकार की माँओं का चित्रण है। विदेश में स्थित अर्चना जी की कहानियाँ भारतीयता को ओढ़े हुए है। उनकी भाषा सरल, सुबोध एवं शैली

प्रभावोत्पादक है। बहुत ही रोचकता से इन्होंने अपनी कहानियों को गढ़ा है। विज्ञान संबंधी विषयों की भी चर्चा इन्होंने सविस्तार किया है।

संदर्भ :–

१. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – २१

२. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – २१

३. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – २६

४. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – २६

५. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – २६

६. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – ४२

७. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – ३८

८. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – ३७

९. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – ३७

१०. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या – ४६

११. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५३

१२. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५३

१३ कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५४

१४. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५४

१५ कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५६

१६ कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५७

१७. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ५३

१८. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ६३

१९. कितनी माँएं हैं मेरी – अर्चना पैन्यूली, पृष्ठ संख्या– ६३

मोबाइल नंबर– 9247515269

ई–मेल आइडी – bharathi.jeldi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 210-213
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियों का विश्लेषण

काकर मूत्यालराव
शोधार्थी, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम–530003

तेजेंद्र शर्मा का जन्म 21 अक्टूबर, 1952 को पंजाब के शहर जगराँव के रेलवे क्वार्टरों में हुआ। पिता वहाँ के सहायक स्टेशन मास्टर थे। पिता का स्थानांतरण दिल्ली हुई। इसी कारण पंजाबी भाषी तेजेन्द्र शर्मा की स्कूली पढ़ाई दिल्ली के अंधा मुग़ल क्षेत्र के सरकारी स्कूल में हुई। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) अँग्रेज़ी एवं एम.ए. अँग्रेज़ी, कम्प्यूटर कार्य में डिप्लोमा किया था। वे हिंदी और अंग्रेजी के ज्ञाता थे। कहानी और कविता विधाओं के द्वारा अपनी रचनाओं को जनता तक पहुंचा रहे हैं। वे इंग्लैंड (युनेटेड किंगडम) में रहते हैं।

प्रवासी साहित्य की प्रधान विधा कहानी है। प्रमुख प्रवासी साहित्यकार राकेश शंकर भारती, हरिशंकर आदेश, जकिया जुबेरी, अर्चना पैन्यूली, रेखा राजवंशी, तेजेन्द्र शर्मा, उषा प्रियवंदा, रामदेव धुरंधर आदि अमरीका, ब्रिटेन, केनेडा, मारिशस आदि देशों में हिंदी कथा साहित्य के सृजन में महत्वपूर्ण जगह बनाई है। इसमें से प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा समकालीन हिंदी प्रवासी लेखकों में से अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहे है।

तेजेंद्र शर्मा के कथावस्तु ज्यादातर स्वयं उनके द्वारा किए जाने वाले स्वानुभव है। लंदन में रहकर मानव मूल्यों से संबंधित ऐसे पारिवारिक सांप्रदायिक तनाव का विश्लेषण अपनी कहानियों के द्वारा आम जनता तक पहुंचा हे हैं। उनके द्वारा रचित कहानियाँ कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में रखा गया है। तेजेंद्र शर्मा द्वारा कई कहानियाँ, कविताएं लिखीं गई, अनेक सम्मान भी प्राप्त हुए। कई संपादन कार्य संभाल रहे हैं। उनकी कहानियों की विशिष्टता का कारण सिर्फ उनका प्रवासी परिवेश से युक्त होना है। उनकी कहानियों का मुख्य स्वर विदेशों में बस रहे या बसने वाले संघर्षरत भारतीयों का जीवन सफर है। विदेशों में रहने वाले लोगों का पारिवारिक जीवन का यथार्थ तथा उनके रोजमर्रा की समस्याओं एवं मानसिक अंतर्द्वंद्व का चित्रण उनकी कहानियों में मिलता है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में आर्थिक, सामाजिक, भावात्मक एवं सांस्कृतिक आदि स्तर पर आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष झेल रहे पहली पीढ़ी के आम प्रवासी भारतीयों का जीवन अभिव्यक्त हुआ है।

कहानी संग्रह : काला सागर, ढिबरी टाईट, देह की कीमत, यह क्या हो गया!, बेघर आँखें, सीधी रेखा की परतें, कब्र का मुनाफा, दीवार में रास्ता, मेरी प्रिय कथाएँ, प्रतिनिधि कहानियाँ।

कविता संग्रह : ये घर तुम्हारा है, मैं कवि हूँ इस देश का ....

तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ प्रमुख विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल हैं वे :–

– कहानी क़ब्र का मुनाफ़ा मुंबई विश्वविद्यालय की बी.ए. के पाठ्यक्रम में शामिल हैं।
– कहानी अभिशप्त चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के एम.ए. हिन्दी के पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

– कहानी 'पासपोर्ट का रंग' चेन्नई के महाविद्यालयों एवं गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोयडा के एम.ए. हिन्दी के पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

– कहानी 'कोख का किराया' कलकत्ता विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

– बेघर आँखें : गोवा विश्वविद्यालय में शामिल हैं।

संपादन कार्य :-

समुद्र पार रचना संसार (21 प्रवासी लेखकों की कहानियों का संकलन), यहाँ से वहाँ तक (ब्रिटेन के कवियों का कविता संग्रह), ब्रिटेन में उर्दू कलम, समुद्र पार हिंदी गजल, प्रवासी संसार कथा विशेषांक, सृजन – संदर्भ पत्रिका (प्रवासी साहित्य विशेषांक), देशांतर (दिल्ली हिंदी अकादमी द्वारा प्रकाशित प्रवासी कहानी संग्रह)

पुरस्कार : ढिबरी टाइट के लिये महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार–1995 तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों से दिया गया है।

– भारतीय उच्चायोग, लन्दन द्वारा डॉ. हरिवंशराय बच्चन सम्मान (2008)

– केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का डॉ. मोटुरी सत्यनारायण सम्मान – 2011

– हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी सम्मान – 2012

– यू.पी. हिन्दी संस्थान का प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान 2013

– ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय द्वारा एम.बी.ई. (मेम्बर ऑफ़ ब्रिटिश एम्पायर) की उपाधि 2017

– मध्य प्रदेश सरकार का निर्मल वर्मा सम्मान –2017

– टाइम्स ऑफ़ इण्डिया समूह एवं आई.सी.आई.सी.आई बैंक द्वारा एन.आर.आई ऑफ़ दि ईयर 2018 सम्मान।

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में से कुछ कहानियों का विश्लेषण रू तेजेन्द्र शर्मा की कई कहानियाँ हिन्दी कथा–जगत में सर्वथा नवीन वातवरण, देशकाल एवं परिघटना के लिए अवतरित हुई है। उनकी कहानियों में से चरमराहट, कैंसर, काला सागर, कब्र का मुनाफा कहानियों के विश्लेषण निम्नलिखित है –

चरमराहट : यह कहानी प्रवासी भारतीयों के जीवन में घरेलू संप्रदायिक तनाव के परिणाम स्वरूप होने वाले संघर्ष और उससे भी अधिक भावनात्मक तथा संवेदनात्मक अभिव्यक्त प्रदान करती है। इस कहानी में सऊदी अरब के जेद्दाह शहर में रहने वाले आई. एम. तिवारी की कहानी है। छोटी सी उम्र में सांप्रदायिक दंगे की अमानवीयता देखने के बाद तिवारी को धर्म द्वारा संचालित नाम से चिढ़ हो जाती है और वह नास्तिक बनकर अपना नाम बदलकर आई. एम. हिदुस्तानी कर लेता है।

हिंदुस्तानी के आत्मसंघर्ष को व्यक्त करते हुए तेजेन्द्र शर्मा लिखते है– "वह केवल हिंदुस्तानी बने रहना चाहते थे किंतु नौकरी ने उसे हिन्दू बनाकर ही दम लिया।''(1) अपनी प्रकृति से नास्तिक होने के कारण नौकरी पाने के लिए उसे जन्मना धर्म हिन्दू धर्म का सहारा लेना पड़ता है। हिंदुस्तानी के आत्मसंघर्ष को व्यक्त करते हुए तेजेन्द्र शर्मा लिखते है– "वह केवल हिंदुस्तानी बना रहना चाहता था किंतु नौकरी ने उसे हिन्दू बनाकर ही दम लिया।'' हिंदुस्तानी का परिचय विभेदीकरण एवं स्तरीकरण के रुप में मुस्लिम, गैर–मुस्लिम विभेद, सउदी–गैर–सउदी विभेद, गैर–मुस्लिम में रंग आधारित विभेद आदि से होता है। सउदी अरब में मुतब्बा के कठोर शासन से प्रवासियों के रोजमर्रा के जीवन का तनाव सर्वथा अलग अनुभव बोध है। धर्म को तार्किक रूप के अस्वीकृत करनेवाला

हिंदुस्तानी धार्मिकता की आँधी से संचालित घटनाओं के भंवर में घसीट लिया जाता है। बाबरी विध्वंस से फैले तनाव की तरंगें सीमा पार कर पूरी दुनिया के भारतीयों को अपने दायरे में समेट लेती है। 'हिंदुस्तानी' शब्द भारतीयता के स्थान पर हिन्दू धर्म और हिन्दू सभ्यता का प्रतीक बना दिया गया है।' जीवन भर की साधना धूल–धूसरित हो जाती है– "सारे माहौल को देखकर हिंदुस्तानी को महसूस हुआ कि केवल एक ढांचा ही नहीं चरमराया बल्कि उसके साथ बहुत कुछ चरमरा गया हैं। लोगों का विश्वास, प्यार, भाईचारा, समाज की नींव सब चरमरा गया है।"[2]

कैंसर : तेजेन्द्र शर्मा की इस कहानी ब्रेस्ट कैंसर से पीड़ित स्त्री एवं उसके पति के मानसिक तनाव एवं अंतर्द्वद्व की कहानी है। रेडिकल मैक्सोटोमी अर्थात स्तन काटकर निकालना एकसर्जिकल प्रक्रिया है। अपनी पत्नी से बेइन्तहा मुहब्बत करने के बाद भी नरेन का मन भी इस दुविधा से जूझता रहता है कि एक छाती न रहने के बाद क्या वह पूनम को उतना प्यार कर पाएगा वहीं दूसरी ओर पूनम इस ग्लानि बोध में पिसती है कि उसके पति की प्रिय वस्तु उसका गोलदार स्तन उससे सदा के लिए बिछड़ जाएगी। स्पष्ट है कि अगर कैंसर इलाज योग्य भी हो तब भी कैंसर पीड़ित व्यक्ति को जीवन एवं संबंधों में फैल रहे तनाव, घुटन और बेबसी के कैंसर से लड़ना पड़ता है। डाक्टरी इलाज पूनम की छाती सपाट कर देते हैं और आपरेशन की लम्बी प्रक्रिया से गुजरते नरेन और पूनम की तार्किकता और आत्मविश्वास घिस–घिसकर चिथड़े हो जाते हैं। प्यार को खाने का डर व्यक्ति की तर्कशक्ति को पंगु बना देता है। देवी–देवताओं में विश्वास नहीं रखने के बावजूद नरेन पूरी श्रद्धा से ताबीज बांधता है, किसी सिर हिलाती देवी के सामने घुटने के बल बैठकर ईसाइयों के साथ प्रार्थना करता है। इन सब के पीछे उसकी एक ही ख्वाहिश है कि कहीं कोई चमत्कार हो जाए और डॉक्टरी रिपोर्ट झूठ निकल जाए। इस प्रकार कैंसर से लड़ने की प्रक्रिया में लोग नए तरह के कैंसर का शिकार होते चले जाते हैं, जिससे उन्हें जीवन भर जूझना पड़ता है।

काला सागर : यह कहानी विमान दुर्घटना पर आधारित कहानी है।इस में अनेक परस्पर विरोधी संवेदनाओं को समेटे हुए हैं। एक ओर आतंकवादी हमले से अपनों को खोए लोगों की संतप्त व्यथा है तो दूसरी ओर भावना विहीन रिश्तेदार भी हैं, जो अपनों की मौत का भी यथासंभव उठाने में लगे हुए हैं। लाशों कीपहचान के लिए लंदन पहुंचे रिश्तेदारों में कोई इंपोर्टेड टीवी खरीदने की धुन में है तो कोई मुफ्त की शराब उड़ाने में इस कहानी में रिश्तों एवं भावनाओं का बिखराव सामान्य पारिवारिक कलह से कई गुना अधिक विषादमय, नग्न और विद्रूप है। यहाँ अपनों की मौत का दुख भी भौतिकता एवं लोभ के संवरण से दब चुका है। इसी कड़ी में 'देह की कीमत' कहानी को रख सकते है, जहां जापान के अवैध प्रवास के दौरान मृत बेटे को मिले तीन लाख के चेक पर सभी रिश्तेदार आँखें गड़ाए रहते हैं। 'काला सागर' कहानी में जो रिश्तों की भावनाहीनता अनेक परिवारों के मध्य की गई है वही श्देह की कीमत में एक परिवार की कहानी बन गई है। लेखक के विमान परिचालन के वास्तविक अनुभव ने कहानी के वातावरण की बिलकुल संजीदा और जीवंत कर दिया है।

कब्र का मुनाफा : यह कहानी मृत्यु बोध को केंद्र में रखकर लिखी गई है। पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था ने आंखों पर भौतिकता का आवरण डालकर जीवन के अनिवार्य एवं अवश्यंभावी सत्य मृत्यु को बाजार के लिए एक प्रोडैक्ट बना दिया है। हमारी मानसिकता ने लाश को भी बुर्जुआ और गैर बुर्जुआ के मुताबिक बांटी गई है। खलील और नजीम मियां भी खुद के और अपने बेगमों के लिए कब्र बुक करवाकर निश्चित हो जाते हैं कि मरने

के बाद उनकी लाशें फाइव स्टार कब्रों में दफनाई जाएगी। अपनी बेगमों के विरोध के बाद जब वे बुकिंग रद्द करते हैं तो उन्हें पता चलता है कि बाजार के उतार चढ़ाव के साथ कब्र की कीमतें बढ़ती–घटती है। अमीर लोग गरीबों के साथ दफन नहीं होना चाहते बल्कि अपने लिए फाइव स्टार कब्र की बुकिंग कर रहे हैं। आदरपूर्वक अंतिम संस्कार के लिए पूर्वजों द्वारा ईजाद की गई प्रथाएँ प्रॉपर्टी डीलरों के लिए रियल एस्टेट का धंधा बन गई है। विदेशों में आर्थिक रूप से सक्षम और सफल पारिवारिक जीवन गुजार रहे भारतीयों के लिए भी सांस्कृतिक और नस्लीय अलगाव के अंतर को पाट पाना आसान नहीं होता।

हाथ से फिसलती जमीन : यह कहानी एक ऐसे प्रवासी भारतीय नरेन की कहानी है जो जैकी से प्रेम–विवाह कर अपना भरा–पूरा परिवार बसा चुका है, परंतु इसके बावजूद अपनी चमड़ी का रंग अलग होने के कारण वह अपने ही बच्चों से भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाता। परिवार में वह धीरे–धीरे अपनी गोरी पत्नी और गोरे बच्चों से अलग होतख चला जाता है। नरेन का पाकी रंग जो कभी जैकी के लिए आकर्षण का कारण था, वही रंग उसे बार– बार याद दिलाते हैं कि वह अपने परिवार से अलग दिखता है। यही चमड़ी का रंग जीवन के लंबे सफर के बाद उसे परिवारहीन कर देते हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विषयों के आधार पर तेजेंद्र शर्मा की कहानियों की विशिष्टता का कारण है उनका नवीन अनुभव संसार और उसे समझने की उनकी अपनी व्यक्तिगत दृष्टि, परिचालन की व्यवसायिक सेवा, लंदन प्रवास, लंदन में रेलवे की नौकरी, कैंसर पीड़ित पत्नी का जीवन संघर्ष आदि व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक अनुभवों ने न सिर्फ नई कथावस्तु प्रदान की है, बल्कि कहानियों के वातावरण को अत्यंत जीवंत बना दिया है। उनकी कहानियां सहज और आपबीती गाथा जैसी लगती है। हालांकि ''हाथ से निकलती जमीन'' कहानी में जो कुंठा और व्यर्थताबोध है वह नोस्टेलिज़ीया की ओर ले जाने वाला प्रतीत होता है, जहां लंदन में घर बसा लेने के बावजूद श्याम वर्ण के कारण व्यक्ति अपने ही परिवार के सदस्यों से जुड़ नहीं पाता है। अपने कथावस्तु ज्यादातर स्वयं उनके द्वारा किए जाने वाले स्वानुभव है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. तेजेन्द्र शर्मा, "देह की कीमत" वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ. सं. 121.
2. तेजेन्द्र शर्मा, देह कीकीमत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007. पृ. सं. 121.
3. शर्मा तेजेंद्र, "काला सागर", वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 19901
4. शर्मा तेजेन्द्र, "बेघर आँखें", अरु प्रकाशन, 2007
5. शर्मा तेजेन्द्र, "दीवार में रास्ता", वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2012
6. शर्मा तेजेन्द्र, "दस प्रतिनिधि कहानियाँ", किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014
7. शर्मा तेजेन्द्र, "देह की कीमत", वाणी प्रकाशन, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 20071

मोबाइल : 8978647321,

ई–मेल: kmrteachingseries@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 214-219
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विस्थापन का खट्टा–मीठा पारितोष : 'वाकिंग पार्टनर'

डॉ. अनु पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री आई.जे.पटेल बी. एड. कॉलेज, मोगरी – 388345, आनंद, गुजरात।

विस्थापन की वृत्ति प्रकृति प्रदत्त हर जीवों में देखी जा सकती है। फिर चाहे इसका मूल कारण आस–पास के भौगोलिक परिवेश में बदलाव हो, अथवा जीविका की जद्दोजहद। इतिहास में जहाँ इस वृत्ति के साक्ष्य भली–भांति परिलक्षित होते हैं वहीं दूसरी ओर विज्ञानं इससे सम्बंधित तर्कों की वैज्ञानिक दृष्टि से पुष्टि भी करता है। जीव चाहे जलचर हो, नभचर हो या थल पर निवास करने वाले, आजीविका की तलास में वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित होते रहे हैं। मनुष्य भी इस वृत्ति से अछूता नहीं रहा है। जंगलों में रहने वाला मानव जब कृषि की ओर अग्रसर हुआ तो जल की अधिक आवश्यकता और उपजाऊ मृदा आदि की तलास में नदियों की ओर पलायित हुआ। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप कहीं उसकी जीवन शैली में उत्थान हुआ तो कहीं तो कहीं पतन। उनके विचारों में कभी नवीनता आयी, वैचारिक दृष्टि से उत्थान हुआ तो कहीं उनके अपने सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, व्यवस्था आदि में उत्थान और कहीं ह्रास हुआ। विस्थापित होने वाले लोगों ने या तो स्वयं को नई व्यवस्था के अनुरूप ढाल लिया, या तो अपने अनुरूप व्यवस्था को ढाला या फिर एक मिली–जुली संस्कृति का निर्माण किया।

मानव के विस्थापन के मूल में एक अच्छे जीवन शैली की भी महत्वकांक्षा रही है। लोगों में अंतर प्रांतीय अथवा अंतर्देशीय विस्थापन दोनों काफी संख्या में देखे जा सकते हैं। अपनी मातृभूमि से दूर जा बसे लोगों में से कुछ मनचाही तरक्की हासिल कर अपने सपनों को पूरा करने में सफल होते हैं तो कुछ असफल। उनके अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभव होते हैं। तरक्की की इस होड़ में व्यक्ति मात्र अपने मूल स्थान से पलायित नहीं होता बल्कि कई बार उसके अपने विचारों, मान्यताओं, सभ्यता और संस्कृति आदि में भी काफी बदलाव आ जाते हैं। इसे बौद्धिक पलायन कहना सही होगा।

प्रवासी हिंदी साहित्य की धारा में ऐसे कई उदहारण दृष्टव्य होते हैं। विस्थापित लेखकों के अपने खट्टे–मीठे अनुभव उनके अपने रचना संसार के पात्रों की सृष्टि तथा कथानक में रचे–बसे रहते है। गोरखपुर उत्तर प्रदेश में जन्मी तथा विगत तीन दसक से इंग्लैंड में प्रवासी भारतीय के रूप में जीवनयापन करने वाली लेखिका श्रीमती 'उषा राजे सक्सेना' की रचनाएँ भी इससे अछूति नहीं हैं। उनकी रचनाओं में प्रवासियों को महत्वकांक्षा, बदलते मूल्यों, सोच, अपनी संस्कृति और सभ्यता से लगाव तथा उनसे विमुखता आदि भली–भांति परिलक्षित होती है। उनका 'वाकिंग पार्टनर' नामक कहानी संग्रह ऐसे ही कई विस्थापितों के मर्म को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

इस संग्रह की ‘रुखसाना’ कहानी की पात्र रूखसाना पाकिस्तान के एक ऐसे परिवार से आती है जो रोजगार की तलास में ब्रिटेन आ बसते हैं, परन्तु उनकी सोच पर वहां के परिवेश, संस्कृति आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अपनी दकियानूसी सोच से वे निजाद नहीं पाते हैं। उनकी जातिगत और धार्मिक कट्टरपन से युक्त सोच थी कि – ”... लड़कियाँ सिर्फ जनानियाँ होती हैं। वे दुनिया में सिर्फ अपने मर्दों की खिदमत और औलाद पैदा करने के लिए आई होती हैं। उन्हें दुनिया के किसी और मरहले से कोई मतलब नहीं होना चाहिए। उनका खाविन्द उनका खुदा होता है जो उनकी जरूरतें पूरी करता है।“[१] रूखसाना के पिता बर्तानिया के स्कूलों को हिकारत की नजर से देखते थे। ब्रिटेन की कानून व्यवस्था की बंदिशों का ही परिणाम था की रूखसाना पढ़ लिख सकी और उसमें अपने दम पर जीने पाने का आत्मविश्वास तथा उपर्युक्त दकियानूसी सोच के प्रतिकार का साहस पनपा। मीरपुर में जब रूखसाना की फूफी का अनपढ़ और जाहिल बेटा यानि उसका मंगेतर मंगनी की रात उस पर दरिंदगी करने का प्रयास करता है, तो वह रातो–रात सब कुछ छोड़ ब्रिटेन आने का निर्णय लेती है। बिना किसी को बताये वह पराये देश में अपने बूते अपनी पढाई पूरी करने तथा कुछ करने का साहस करती हैं। जाया उससे कहती है– ”रूखसाना..... तुमने अपनी पढाई के लिए इतना बड़ा कदम सिर्फ अपने बल–बूते पर उठाया तो फिर तुम्हारी पढाई भला आगे कैसे नहीं जारी रहेगी। अब तो दुनिया की कोई ताकत, तुम्हें तुम्हारे नेक फैसले बदलने को मजबूर नहीं कर सकती।“[२] रूखसाना का यह अदम्य साहस, आत्मविश्वास उसके परिवार के विस्थापन के कारण, एक खुले विचारों वाले प्रोग्रेसिव माहौल में परवरिश का नतीजा था। वह अपने समाज की दकियानुसी सोच का प्रतिकार करती है।

वाकिंग पार्टनर कहानी संग्रह कहानी की अगली कहानी ‘वजूद’ कुमार मंगलम तथा वैजन्ती नामक पात्र के दाम्पत्य जीवन में आये बदलाव के इर्द गिर्द घूमती है। ब्रिटेन में अपने व्यवसायिक परिवेश के कारण पति कुमार मंगलम में अपनी संस्कृति और विचारों को लेकर आये बदलाव जिसके कारण पर–स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाने के बाद भी पश्चाताप के भाव की गैरमौजूदगी तथा सहज भाव वैजन्ती को अति विचलित कर देती है। अपने पारिवारिक दायित्यों निष्ठा के साथ निभाती वैजन्ती किसी आम भारतीय स्त्री की ही भांति पति का यह कृत्य उसे असहज बना देता है द्य वह कहती है– ”कुमार, जिस सहजता से तुम यह बात कह रहे हो, वह मेरे लिए उतनी ही गहरी और गंभीर है। बिना मन के मिले तन का आदान–प्रदान नहीं हो सकता है।“[३] उसे पति की भूल से ज्यादा उसे कोई भूल न मानना अधिक सालता है। उसे यह एहसास होता है कि कुमार की भूल के लिए वह स्वयं को क्यों प्रताड़ित कर रही है। वह अपने आप से कहती है– ”ओह ! वैजन्ती, और कब तक ‘नाइव’ रहोगी, कब तक यह पलायनवादी सिद्धांत अपनाए रहोगी! ...... यू स्टूपिड वोमन, पुल अप योर सॉक्स .... अब वह घर में बैठी सिर्फ इंतजार नहीं करेगी“[४]। वह स्वयं कुछ करते हुए आत्मनिर्भर बनने का निश्चय करती है। पति की भूल उसमें ऐसा रोष पैदा कर देती है कि वह कुछ भी कर गुजरने के लिए तत्पर हो जाती है।

सामान्य तौर पर देखा जाता है की व्यक्ति कितना भी पढ़ लिख ले, परन्तु कई बार आजीवन अपने परिवेश के कारण उत्पन्न होने वाली विचारधारा को नहीं बदल पाता। मसलन कई बार तो ऐसा दोहरा मापदंड भी देखा जाता है कि स्वयं सामाजिक दायरों, बंधनों को तोड़कर वैवाहिक बंधन में बंधने वाले जोड़े अपने बच्चों से इसके विपरीत अपेक्षा रखते हैं। ‘क्लिक’ कहानी के सभी पात्र बहुत ही प्रोग्रेसिव विचारधारा रखते हैं। नायिका ‘तान्या

दीवान' के माता पिता वैसे तो उसके पर्सनल स्पेस की बहुत ही क़द्र करते हैं, किंतु तान्या के विवाह को लेकर उनकी चिंता और प्रतिक्रिया किसी अन्य सामान्य माता–पिता की ही तरह होती है। तान्या इस सन्दर्भ में कहती है – "मम्मी वैसे खुले विचारों की है पर वह उस पीढ़ी से सम्बन्ध रखती हैं जो चाहे कितना भी आधुनिक हो जाये फिर भी लड़की की शादी जैसी परंपरा के अधिकार भरे जकड़न के सम्मोहन से मुक्त नहीं हो पाता है।"[५] परन्तु इतना हैं की तान्या के माता–पिता के विचार तान्या की पसंद को किसी धर्म, जाती, क्षेत्र, वर्ण, काला–गोरा आदि के बंधनों में जकड़ कर नहीं रखते। उनके खुले विचारों का ही परिणाम था कि तान्या बतौर एक आईटी कंसलटेंट पूर्ण आजादी के साथ अपने व्यवसायिक जीवन में बुलंदियों को हासिल करती है। ऐशली के साथ कुछ समय तक लिवइन रिलेशनशिप में रहती है और बाद में आवश्यकता महसूस होने पर 'तुहिन' के साथ अपने माता–पिता की सहमती से शादी करती है। किसी और देश में विस्थापित होने का परितोष ही है कि तान्या और उसके परिवार को अपने अत्यंत ही खुले विचारों के साथ बिना किसी सामाजिक दबाव के जीवन जीने का मौका मिला। 'मेरे अपने' कहानी की 'एला' अपने पिता के डिसिप्लिन और पाबंदियों से ऊब कर घर छोड़ देती है। पहले वह एक वेट्रेस के रूप में काम करते हुए अपना स्वयं का व्यवसाय प्राम्भ करती है तथा नयी उचाईयों को छूती है। वह मर्चेंट एंड मिल्स में पार्टनर बनती है। पिता से पुनः मिलने पर मन की पूरी भड़ास उसके समक्ष रख देती है किन्तु साथ ही उसे यह भी एहसास होता है कि सात सालों तक दूर रहने के बावजूद भी उसके मन में अपने पिता के लिए बहुत ही प्रेम है। अंततः वह 'मिर्ची' नामक एक हंगेरियन युवक से विवाह कर स्वतंत्र तथा अपने अनुसार जीवन जीती है।

इस कहानी संग्रह की अगली कहानी 'वाकिंग पार्टनर' एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो हर रोज सुबह 'रिफत' से मिलती है, उनके बीच संवाद भी होता है परन्तु वे कभी एक दुसरे से परिचय नहीं होता है। वे दोनों एक अच्छे वाकिंग पार्टनर मात्र हैं। रिफत के अनुसार वह स्त्री "शायद यूरो कल्चर से प्रभावित होने की वजह से, वे निर्लिप्त–सी, सम्बन्ध बढ़ाने की जरूरत नहीं समझती है। .....हाँ ....कभी कभार वे रिफत को अच्छा श्रोता पा, बदलते हुए मूल्यों तथा सामाजिक विसंगतियों की बातें नपे–तुले शब्दों में करती हैं।"[६] बाद में रिफत को अपने मित्र तथा बहन शाहीन के माध्यम से ज्ञात होता है कि उस स्त्री के पति बीमारी की वजह से लन्दन के एक अस्पताल में लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर हैं। किसी समय में जहानाबाद का जमीदार रहा ये परिवार आज आर्थिक तंगी के दौर में होने के कारण अवांछनीय रोजगार से जुड़ने के लिए विवश हो गया है। पिता के इलाज के लिए उस स्त्री को दोनों बेटियां 'जरीना' और 'करीना' हाई प्रोफाइल कॉल गर्ल्स बन जाती हैं जो प्राइवेट पार्टियों में अपने डांस के माध्यम से पैसा कमाती हैं। विस्थापन उनके लिए मुसीबत लेकर आता है। रिफत की बहन शाहीन अपने जीवन में अकेलेपन से जूझ रही है। टेलीफोन पर हुयी शादी के पश्चात शाहीन जब लन्दन आती है तब बहुत दीनों तक उसे ज्ञात नहीं हो पाता है कि उसके घर में रहने वाली गोरी औरत उसकी मकान मालकिन नहीं बल्कि उसके पति की दूसरी बीवी है। उसे देर से यह बात समझ आती है कि उसके पति ने उससे मात्र विवाह इस लिए किया था ताकि वह उसके घर और सौतन के बच्चों की देख–भाल करे। अपनी दूसरी बीवी के साथ उसका पति दूसरी जगह रहने लगता है तथा उसे शाहीन और उसके मानसिक तौर पर कमजोर बच्चे की कोई परवाह नहीं है। रिफत जब एम.बी.ए. करने लन्दन आयी तो मामू नामक युवक भी उसके साथ था जो जूलिया के साथ दोस्ती के उपरांत उसके लिव इन रिलेशन में रहता है। उसके साथ ब्रेकअप के बाद, वीजा ख़त्म होने

पर, मुल्क वापस लौटने के खौफ के चलते अपने से दोगुनी और चार बच्चों की माँ एक स्काटिस औरत से विवाह कर लेता है। रिफत स्वयं व्यावसायिक तौर पर लन्दन में सफलता हासिल करती है। शादी के बंधन में विश्वास न करने वाली रिफत का अपने मुल्क से मोह भंग हो जाता है। वह कहती है– "क्या रखा है मुल्क में सिवाय अम्मी के।......शादी के बंधन की जरूरत उसे अभी तक महसूस नहीं हुई। जब अकेलापन खलेगा या ममता जोर मारेगी तो मुल्क जाकर अपनी पसंद से अनीस खाला के लड़के या और अच्छे–भले लड़के के साथ ब्याह करके उसे यहाँ ले आएगी। ......वह अम्मी और रिश्तेदारों की पकड़ से हजारों मील दूर बैठी अपनी आजादी को कामगर बना रही है।"[७] रिफत आजाद खयाल लड़की है जो अपने पुरुष मित्र के साथ लिव इन रिलेशन में तो है, परन्तु जब बात विवाह की आती है तब वह अपने देश के नौजवान से ही विवाह का ख्याल रखती है। कहीं न कहीं अपने मुल्क और समाज से पूर्ण–रूपेण मोह भंग नहीं रख पाती है।

'महत्वकांक्षी मयंक' कहानी 'मयंक' नामक एक ऐसे युवक की कहानी है जो किसी आम प्रवासी की ही भांति विदेश जाकर सफलता की बुलंदियों को हासिल करने की महत्वकांक्षा रखता है। उसके अन्य मित्र वहां बसने के लिए परमानेंट वीसा हासिल करने के उद्देश्य से उसे किसी ब्रिटिश–बोर्न या अंग्रेज लड़की से शादी की सलाह देते हैं। इस सलाह से असहमत मयंक किसी अंग्रेज लड़की से शादी न करने का निर्णय करता है। हिन्दू समाज की लड़की 'अंजलि' से उसका मेल–मिलाप अंतत विवाह का रूप लेता है। लन्दन में पली–बढ़ी अंजलि खुले विचारों की तो थी परन्तु अपनी 'बा' से मिले संस्कारों के कारण भारतीय मूल्यों से विमुख नहीं हुई थी और भारतीय संस्कृति को बेहद ही पसंद करती थी। वेजेज क्लर्क की नौकरी छुटने से हतास मयंक अंजलि से अपने बच्चे को अबोर्ट करने की बात करता है। सुलझे विचारों वाली अंजलि उसे हतासा और निरासा से बाहर निकालती है तथा चुटकियों में इस समस्या का समाधान देती है। मकान में पेइंग गेस्ट रखने के साथ–साथ स्टाल लगाने की न सिर्फ युगत देती है बल्कि पति मयंक के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर उस व्यवसाय को स्थापित करने में पति मयंक का भरपूर साथ भी देती है। धीरे–धीरे उनके व्यवसाय इतना बड़ा हो जाता है की वे विदेशों में भी अपना कारोबार स्थापित करते हैं। विदेश में रहते हुए भी अपनी संस्कृति से जुड़े मूल्यों का पालन उनकी सफलता का रहस्य था, इस बात से मयंक अनभिज्ञ था किन्तु अंजलि नहीं। अपनी सफलता के चरम पर मयंक अति महत्वकांक्षी हो गया। अंजलि – "मयंक के तौर–तरीके और आचार–विचार में आ रहे तेज परिवर्तन से बेचैन हो उठी। उसे भविष्य में आने वाले किसी संकट का आभास हो रहा है। मयंक का व्यापर और धन के प्रति मोह बढ़ता ही जा रहा है। ऐसी भी धन की क्या लालसा कि मनुष्य अपने धर्म, संस्कृति और भाषा–संस्कार को ही बलाए ताख रख दे।"[८] अंजलि की सारी चिंता पुत्री अनन्या जो अब किशोरी हो चुकी थी, उसको आया डैनियाला से मिल रहे संस्कारों को लेकर थी। बढ़ते व्यवसाय के चलते तरह–तरह के लोगों के उसके घर–परिवार में बढ़ रहे घुसपैठ से जहाँ अंजलि चिंचित थी वहीँ मयंक बेहद बेपरवाह। जब कार्टर के द्वारा अनन्या की अभद्र तस्वीरें और विडियो बनाने का प्रयास किया जाता है तब मयंक एक जिम्मेदार पिता की तरह उसके प्रयास को असफल करते हुए अपनी बेटी को बचाता है और अंजलि की सूझ–बुझ की मन ही मन तारीफ करता है। इस कहानी के मूल पात्र अपने चारित्रिक एवं वैचारिक विस्थापन को नकार देते हैं और अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े रहते है।

'दर्द का रिश्ता' कहानी की नायिका 'मंजरी' का बचपन में ही पिता की मृत्युपरांत तेरहवी के दिन ही चचेरे

भाई और उसके मित्र द्वारा अवांछित कर्म के चलते उसके जीवन का अमन—चैन लुट गया था। उसे और उसकी माँ को कानपुर आने के उपरांत समाज—सुधारक लाला दीनदयाल गुप्ता के घर शरण मिली। उन्होंने मन—ही—मन मंजरी को अपनी बहु बनाने की ठान ली। गुप्ता जी के बेटे 'मिहिर' के लन्दन से लौटने के उपरांत, मंजरी से विवाह के प्रस्ताव पर वह मंजरी से अपनी अनजान बीमारी की बात करता है किन्तु मंजरी बड़ी ही सहजता से उसे गौड़ मानते हुए आजीवन उसका साथ निभाने की बात करती है। मिहिर द्वारा इंग्लैंड के परिवेश का जिक्र अंजलि को वहां विस्थापित होने के लिए तथा उसे ही अपनी कर्म भूमि बनाने के लिए लालायित कर देता है। यथा "सच कहूँ तो इंग्लैंड एक विचित्र देश है। एक ओर जहाँ वह अतिभौतिकवादी है वहीं दूसरी ओर अत्यंत उदार, कर्तव्यनिष्ठ और श्रेष्ठ सेवाभाव को समर्पित भी है। ....फिर तो इंग्लैंड मेरी मनपसंद जगह है। ....मैं अपना जीवन दीन—दुखियों की सेवा को समर्पित करना चाहती हूँ। यहाँ मैं पर—कटे पंछी—सा असहाय महसूस करती हूँ। मुझे कोई कुछ करने ही नहीं देता है, लड़की हूँ न ! ....."[९] विवाहोपरांत इंग्लैंड लौटने पर उन्हें ज्ञात होता है कि मिहिर को एड्स है। सख्तजान मंजरी रोने—धोने की बजाय मिहिर का उसके अंतिम समय तक साथ निभाने का निर्णय लेती है। मंजरी को विस्थापन जहाँ एक ओर एक दुखद दाम्पत्य जीवन देता है वहीं दूसरी ओर अपनी कर्मभूमि के रूप में एक स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करता है।

'मजहब' कहानी 'जेबा' नामक एक ऐसी लड़की की कहानी है जो एक ऐसे परिवार से आती है जहाँ मजहब और उसके अच्छे—बुरे पहलुओं को बिना किसी तर्क के सर्वोपरि माना जाता है। जेबा पाकिस्तान के मीरपुर से विस्थापित हुए बेहद ही रूढ़िवादी एवं अपरिवर्तनवादी दम्पति की बेटी है। उसका पिता जफ़र गोरों से सख्त नफरत करता है। जूही के प्रयासों से उसे स्कूल में बेहद स्वस्थ एवं प्रगिशील वातावरण मिलता है जिससे उसका संपूर्ण विकास प्रारंभ होता है। कुछ समय बाद जेबा के व्यवहार में नकारात्मक बदलाव दिखाई देने लगते हैं जिससे जूही के साथ—साथ अन्य शिक्षक भी चिंतित हो उठते हैं। जेबा की माँ से वार्तालाप से जूही को ज्ञात होता है कि पाकितान से आई जेबा की दादी के कारण परिवार का वातावरण बदल गया है जिसका असर जेबा के तेवर और व्यवहार पर भी पड़ रहा है। जेबा का जूही से यह पूछना की वह हिन्दू है या मुसलमान इस बात को और पुख्ता कर देता है कि जेबा के मानस में सांप्रदायिक भावना के बीज बोये जा रहे हैं और "भोली—भाली जेबा नस्ली और मजहबी बातों का अर्थ और सन्दर्भ न समझते हुए भी उसके भंवर में फंसती जा रही थी। विष के बीज कितनी जल्दी अंकुरित हो जाते हैं। वह जेबा के बदलते रवैये से समझ सकती थी।"[१०]

जूही के हिन्दू होने के बारे में जानकर जेबा का उसके प्रति रवैया भी बदलने लगता है। परन्तु जूही द्वारा सिंचित किये गए अच्छाई के बीज और प्रदत्त स्वस्थ वातावरण एक दिन रंग लाते हैं। जब जेबा खेलते हुए गिर पड़ती है तब उस हालत में अपनी टूटी हुई हड्डी के दर्द को भुलाकर जूही से अपनी बेरुखी और नाराजगी के सन्दर्भ में उससे लिपटकर रोते हुए कहती है— "आई नो मिस यह खुदा का कुफ्र मुझ पर गिरा है। मैंने फूफी—अम्मा की बुरी बातों पर यकीं जो किया की आप गन्दी हैं, गोरे गंदे हैं। यू आर दी बेस्ट।.........." जूही ने उसे प्यार और ममता से सहलाते हुए कहा, "मैं नाराज कहाँ हूँ जेबा, मैं तो तुमसे बेहद प्यार करती हूँ।......खुदा हम पे मेहर करता है कुफ्र नहीं। बुरा वो होता है जो दूसरों को बुरा कहता है।"[११] इस कहानी में पाकिस्तानी परिवार के मजहबी लीक पर चलने वाली सोच को इंग्लैंड का उन्मुक्त वातावरण तनिक भी नहीं बदल पाता है वहीं दूसरी ओर उनकी बेटी जेबा में उस परिवेश के चलते स्वस्थ सोच के बीज अंकुरित होते हैं।

विस्थापन व्यक्ति के भौतिक उत्थान में ही सहायक मात्र नहीं होता है अपितु एक जगह से दूसरी जगह पर जाकर बसने वाले लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता और सोच को भी अपने साथ ले जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप एक मिली–जुली संस्कृति का निर्माण भी होता है। विस्थापन वैचारिक स्तर पर भी लोगों के उत्थान और पतन दोनों का कारण बनता है। प्रवासी हिंदी साहित्य इसका पुख्ता प्रमाण हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

सन्दर्भ-सूची :-

1. उषा राजे सक्सेना, वाकिंग पार्टनर, पृष्ठ. १६
2. वही, पृष्ठ. १७
3. वही, पृष्ठ. १८
4. वही, पृष्ठ. २३
5. वही, पृष्ठ. २५
6. वही, पृष्ठ. ४४
7. वही, पृष्ठ. ५१
8. वही, पृष्ठ. ६०–६१
9. वही, पृष्ठ. ८५
10. वही, पृष्ठ. १०८
11. वही, पृष्ठ. ११०

मोबाइल : 9376101020

ईमेल : dranutripathi84@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 220-230

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Indian Diasporic Women Writers – A Study

Dr. D. Rajani Deivasahayam
ASSOCIATE PROFESSOR IN ENGLISH
CH. S. D. ST. THERESA'S COLLEGE FOR WOMEN (A), ELURU, ANDHRA PRADESH-534003

Abstract :-

Diaspora plays a significant role in literature, especially in Indian Writing in English. Literature from the Indian diaspora functions as a substitute for the homeland on a global platform, and it traverses across historical periods and geographies. It explores questions of representation, and delves into the experiences of dislocation, marginalization, and acculturation that are usually associated with migration to a foreign land. Indian writers of the modern diaspora can be divided into two different classes. When these writers portrayed immigrant characters in their novels, they examined the themes of displacement, alienation, assimilation, conflict and cultural adaptation. This paper focusses on the East-West clash between tradition and modernity and the drive behind the writings of acclaimed writers such as Anita Desai, Anita Nair, Jhumpa Lahiri, Meera Sayal, Anitha Rau, Chitra Banerjee Divakaruni, Anjana Appachana and Kiran Desai. The theme that guides to self-discovery with a denial of the traditions of the country of origin is a recurrent one among migrant writings of almost all the diasporic writers.

Key words :- displacement, alienation, assimilation, conflict, cultural adaptation, globalization.

Diaspora people find themselves restricting, expanding, mixing and matching their new and old homes, their new and old lives and identities. It is study of what is taken with one, of what is left behind and of what is transformed. Diaspora is taken from the Greek word which means "scattering" and it refers to the dispersion of people from their homeland to foreign countries. Hence, the diaspora belongs to a scattered population with a common origin in a smaller geographical area. It means migration of a specific population across cultural domain where the uprooted people feel nostalgic about their homeland. It does not mean that they have no home; but having home on an alien land becomes a means of suffering for them. Therefore, they see and feel the difference of living at home and abroad. The simple and single definition of the term is not possible because the concerned field

of diaspora is changing its paradigms with respect to the changing modes of technologies in the digital age. Diaspora literature, can be taken as the works that are written by authors who live outside their native land.

Diaspora' is a journey that negotiates a physical detachment from, and a psychological attachment towards, the homeland. The term 'diaspora' was originally used to describe the dispersion of Jews from Babylon in the 6th Century BC, and later was used to refer to all migrants who left their homeland to go to another country for various reasons. Though the people consciously chose to migrate to other places for material purposes, they are psychologically connected to the home and live with the feeling that they are away from 'home'.

Indian immigrants are spread around the world and form an integral part of the global diaspora. The job market that has opened up as a result of globalization has made the potential of Indians more visible and functional. There have also been social and cultural exchanges. It is in this context that the literatures emerging from the diasporic people assume significance. The literature of the Indian diaspora is a body of writing produced by people who identify themselves as being of Indian origin, but also belonging to foreign lands.

But diaspora literature may also be defined by its contents, regardless of where it was written. For example, in the Bible, in the book of Genesis from chapters 37 to 50, the story of Joseph (Gen 37-50) can be called as the best example for "diaspora story" because although its final form was written within the land of Israel, it describes how Joseph learns to survive outside his homeland. Diaspora Literature involves an idea of a homeland, a place from where the displacement occurs and narratives of harsh journeys undertaken on account of economic compulsions.

Diaspora plays a significant role in literature, especially in Indian Writing in English. Literature from the Indian diaspora functions as a substitute for the homeland on a global platform, and it traverses across historical periods and geographies. It explores questions of representation, and delves into the experiences of dislocation, marginalization, and acculturation that are usually associated with migration to a foreign land. Simultaneously, it probes into the very idea of a 'home', and into the notion of belonging. It also draws upon a variety of perspectives from literary and digital cultures to evaluate issues such as gender, politics, generational conflict, race, class, and transnational encounters. An intersectional web of exploration is carried out through these texts, with authors questioning the very basis of their cultural identities.

Diaspora literature in English is largely associated with writers like V.S. Naipaul, Anita Desai, Jhumpa Lahiri, Bharati Mukherjee, Rohinton Mistry, Kiran Desai, Meena Alexander, Salman Rushdie, and also with the more recent Benyamin, Deepak Unnikrishnan and many more. "Being in diaspora

means living in a cross-cultural context, in which change, fusion, and expansion are inevitable…those aware of the complexities…produced a number of voices in recent years that echoed through the medium of literature" (Writing Diaspora: South Asian Women, Culture and Ethnicity, Yasmin Hussain, 2005). Literature is one of the most prominent mediums through which migrant experiences are transmitted from one generation to the next. Literary texts carry a perception of history that links them to the past, whilst also carrying an insight into the future. This creates transnational identities. Diaspora writing in novels, short stories, travel stories, poems, and prose is not new to postcolonial literature. The desire for "homeland" or "root", a strange and unusual attachment to their traditions, religion, and language gave birth to the so-called diaspora literature. For the past ten years, Indian diaspora writers have become the focus of their prominent works. The Indian diaspora is the second-largest diaspora in the world. The diaspora population is approximately 25 million, and they settle in all famous areas in the world.

Indian Diaspora can be classified into two kinds :-

1. Forced Migration to Africa, Fiji or the Caribbean on account of slavery or indentured labour in the 18th or 19th century.
2. Voluntary Migration to U.S.A., U.K., Germany, France or other European countries for professional or academic purposes.

The first Diaspora consisted of underprivileged and subaltern classes who are forced to go to an alien land for a living and it gives a way for them to diasporic settlement. As, in the past, the return to Homeland was an impossible task due to lack of proper means of transportation, economic deficiency, and vast distances so the physical distance became a psychological alienation leading to the diasporic imagination of the authors also.

But the second Diaspora was the result of man's choice and inclination towards the material gains, professional and business interests. It is particularly the representation of the privileged and access to contemporary advanced technology and communication. Thus one can say that V S Naipaul is the founding father of old diaspora and Salman Rushdie can be called as the representative of Modern Diaspora. V S Naipaul remarkably portrays the search for the roots in his 'A House for Mr. Biswas: "to have lived without even attempting to lay claim to one's portion of the earth; to have lived and died as one has been born, unnecessary and accommodated. (Naipaul,14) similarly Mohan Biswas's peregrination over the next 35 years, he was to be a wanderer with no place to call his own'(ibid. 40).

Indian writers of the modern diaspora can be divided into two different classes. One category includes those who have spent part of their lives in India and brought their heritage assets abroad. The other category refers to those who grew up outside of India. They just dream of their own country as

an outsider. The writers in the first group had actual displacements, while those in the second group found themselves uprooted. Both groups of writers have created a great deal of English literature. When these writers portrayed immigrant characters in their novels, they examined the themes of displacement, alienation, assimilation, conflict and cultural adaptation.

Most of the major novels of South Asia are replete with the diasporic consciousness which is nothing but the witness of all the happenings of social realities, longings and feeling of belongingness. Train to Pakistan, The Dark Dancer, Azadi, Ice Candy Man, A Bend in the Ganges, Twice Born, Midnight's Children, Sunlight on a Broken Column, Twice Dead, The Rope and Ashes and Petals and many more novels are abounded in the same tragic tale of suffering due to trials and tribulations emerging from different angles. Most of the novels written by South Asian writers are written in the background of post-colonial times and the same South Asian countries were under the colonial rules of the English. The long struggle for independence and the after effects of partition had been the theme of most of the South Asian novelists.

The study of diaspora in contemporary times has become multi-directional. Scholars usually try to see the basic roots to distinguish the concept of diaspora with respect to various cultural and geographical aspects, Now-a-days, the uprooted communities do not feel nostalgic about their homeland, because they are acquainted with digital means of communication. Hence the concept of 'Return to the Motherland' has to be studied with new dimensions. Further, scholars can see the politics of globalization where the world has turned into a small village. Therefore, the study of diaspora has become complex having a lot of potential within it.

The Diaspora is a process of people migrating frequently from one place to another for various reasons. Migrations have resulted in building up a diasporic community which shares a common sense of rootlessness, pain and agony of homelessness in a new land. Cultural interactions paved the way to establish multi-cultural societies. All diasporic discourses are shaded by the ideology of post-colonialism. In the present global scenario, many people migrate in search of employment, business and trade. All diasporic communities established outside their birth territories feel that their own native land always has some claim on their loyalty and emotion. This occurs through language, religion and custom. The diasporic people often find themselves managing across cultural identities. They have to create various cultural, ethnic and political identities to meet the challenges from their native lands and their adopted homelands. The way in which the diasporic people manage their identities is determined by political, social, professional and class factors. They suffer from identity crisis when they migrate from one territory to another place.

Diasporic identities are manifold, heterogeneous and subject to persistent change. While they

attempt to adopt themselves to their various experiences, they simultaneously work to find their identity. In doing so, they compromise with multiple and altering identities in the formation of transcultural identity. Diasporic discourse compels us to contemplate about fundamentals of nation and nationalism, while determining the affinities of citizens and nation state. Another aspect of diasporic discourse is the search for selfhood in the world between two cultures that of homeland and embraced land. The notion of 'home' often plays a cardinal function in Diaspora communities. In migrating from one nation to another, the migrant quests for setting up home in a new land. But they are unable to identify the new place as their home. Instead, they find their home elsewhere, back across the boundary and they always wish to come back.

Diaspora and its impact give rise to corresponding attitudes to the literature. The immigrant or expatriate writers produce literature which reflect the thrust areas such as family, sexuality, nationalism etc which can be judged in terms of Western concept of what is genuine and what is false. There are many Indian women writers living in the USA, Canada, Britain and other parts of the globe. Some are afresh immigrants, while others such as Jhumpa Lahiri are second generation immigrants. These expatriate writers pen about their footing in cross cultural contrast.

The East-West clash between tradition and modernity is the drive behind the writings of acclaimed writers such as Anita Desai, Anita Nair, Jhumpa Lahiri, Meera Sayal, Anitha Rau, Chitra Banerjee Divakaruni, Anjana Appachana and Kiran Desai. The theme that guides to self-discovery with a denial of the traditions of the country of origin is a recurrent one among migrant writings of almost all the diasporic writers.

The Indian diasporic writers have roots in India. But they present image of various geographical areas of the Indian Diaspora: from the South Pacific to South America, from the Indian Islands of Mauritius and Singapore to the cities and suburbs of London, New York, Johannesburg, and Toronto. The people of Indian Diaspora share a diasporic consciousness generated by a complex network of historical connections, spiritual affinities and unifying racial memories and that their shared sensibility is manifested in the cultural productions of the Indian diasporic communities around the globe. Indian diaspora can be applied to ample number of writers including major international writers such as V.S.Naipaul and Salman Rushdhie and other accomplished emerging writers.

Nobel Laureate V.S. Naipaul has themes like homelessness, spiritual isolation and perpetual exile in his works. His creative talent has been shaped by continuous perception of rootlessness, and displacement in his writings. Naipaul's A House for Mr. Biswas (1961) focuses on the protagonist's desperate flight to have a house of his own: a symbolic act of a person's needs to develop an authentic identity. Mohan Biswas, the protagonist, is a universal figure transcending boundaries of time and

place. It's a text that replaces India and then recreates it within the confines of the human home. He writes about the usual temporariness of diasporas - pathos blending with metaphoric function of space. V.S. Naipaul continues to be the yardstick by which the literature of the old diaspora is judged. Rushdie's Satanic Verses (1988) created great controversy and violent protest where he explores the theme of migration through the parallel lives of Gibreel Farishta and Saladin Chamcha. As a Diaspora writer, Rushdie transcends mere geographical and physical migration with that of spiritual alienation and rootlessness.

Most of the immigrant writers are nostalgic of their homeland and make creative writing an important medium Mention may be made of expatriate writers like Salman Rushdhie, Amitav Ghosh, Vikram Seth, Vissanji, Bharti Mukherjee, Chitra Banerjee Divakarani, Rohinton Mistry, Shashi Tharoor, Anita Desai, Jhumpa Lahiri, Kiran Desai, Meerasyal, Amit chaudhury, Meena Alexander, Sunetra Gupa, Gita Mehtha, Suniti Namjoshi, Shani Mootoo, Anurag Mathur, Amulya Malladi, Vineela Vijayaraghavan, Anita Rau Badami, Abraham Varghese and Peter Nazareth. Most of the women writers have contributed the perspective of gender along with the themes of ethnicity, migrancy and post-coloniality languages and religious traditions.

One needs to mention briefly about the stories and themes of certain diasporic writers. The Indian diaspora creates a new multiple reality a kaleidoscopic pattern which is typical and yet unique. A new woman emerged in almost all nations.

Anita Desai is a notable diasporic female Indian writer, born in Dehradun and immigrated to England and America, respectively. Her novels depict immigrants searching for their identities in a foreign land. It also includes the perspectives of young immigrants, their continuous discrimination, east-west cultural divisions, disappointment, and loneliness that immigrants encounter in a post-colonial setting. The subject of Anita Desai's novels is all about solitude and alienation. She usually dealt with private lives of people in general and women in particular. Clear Light of the Day shows the importance of home and family. Tara and Bim are two sisters who differ in their attitudes and temperaments. Tara marries Bakul who is employed in diplomatic service abroad. There, they feel alien and return to India for reassurance of cultural identity. Bim sacrifices love and marriage and motherhood for life-long care of her aged aunt and retarded brother. In Custody explores the problem of alienation of an educated college teacher from his roots and culture. Baumgartner's Bombay (1988) is about looking at India from foreign perspective. Bye-Bye Blackbird (1985) deals with the migration of the Indians to England and disillusionment they often experience there. Dev comes to England to pursue his studies but he finds it very difficult to adjust with the alien surroundings. He is unable to bear the silence and emptiness of London. He feels trapped and racially conscious England questioning

his choice of becoming "Macaulay's Bastard". However, he asserts that he was there to interpret India to them. Adit is a romantic admirer of England in the beginning but later he is drawn back to India the country which he called dirty and lazy. Sarah, an English girl married to Adit also faces identity crisis. She is romantically in love with India but when her husband expressed the desire that their child should be born in India, she felt shocked and surprised. She felt the sense of being uprooted. She accompanies her husband to India bidding goodbye to England. Anita Desai is also concerned with larger diasporic issues like inner alienation and uprootedness rather than mere geographical displacement.

Though Kamala has become a British citizen, her writings are anti-colonist and anti-imperialist. Her Some Inner Fury focuses on cultural difficulties involved in an interracial relationship that develops between Mira and Richard Marlowe, an English man. Her novel The Nowhere Man (1972) deals with the sufferings of the first-generation immigrants in England. The protagonist of the novel Srinivas leaves his native land to settle in England but eventually, he finds that he belongs nowhere. Through flashback technique, she recounts Srinivas's past life in India juxtaposing it against his present sufferings in England. The novel deals with the issues of diasporic angst, psychological and physical displacement and hyphenated identity often experienced by the immigrants in an alien country.

Bharati Mukherjee an American resident, is a diasporic fiction writer who holds the fact that migratory experiences have enriched expatriate literary writings. In fact, her experience as an expatriate forms the main source of her writings. Her works also deal with the issues of identity, the notion of belonging, the feeling of alienation and rootlessness, migrations, dislocations and relocations. The main focus in her writings is to depict the situation of Indian immigrants in North America, with a special focus on changes affecting South Asian women in a new environment. Jasmine (1989) is a story about a young Indian woman in the United States who alters her identity multiple times while attempting to adapt to the American way of life. The novel demonstrates that, while diasporas must work to build outside space, they must also struggle to preserve domestic space, though not as much as they must struggle to preserve their diasporic space. As an immigrant, Bharati Mukherjee faced the same problem to adapt to the traditions, culture, and society of a foreign country represented by the lifestyles of the two protagonists Jasmine and Dimple. Her first novel The Tiger's Daughter (1971) narrates the story of Tara who gets married to an American and returns to India briefly but finds that she is unable to connect herself to her motherland. She fails to adjust with the things once she loved and admired in the past; she feels like an alien in her own city Calcutta. At last, she returns to the USA the land of her choice. 'The Stories of Darkness' (1985) present the experiences of Indian immigrants in the USA. The Middleman and Other Stories (1988) focuses on the problems of immigrants from

various countries that form the major part of American society. The novelist creates a vivid and complex tale of dislocation and transformation that take place in the amalgamation of two cultures. Leave it to Me (1997) is the story of a female child abandoned by a hippie mother from California. The girl child who becomes a young woman goes in search of her roots and true parentage. The revenge story is interwoven with the question of identity presented through twin motifs of Kali and Electra. Here the novelist explores the hyphenated individual's dilemma in the multi-ethnic USA.

Kiran Desai who migrated to the US at the age of 14 along with her mother Anita Desai earned quite a remarkable acclaim with her debut novel Hullabaloo in the Guava Orchard (1999). Kiran, in spite of her split residential situations, feels at home in India. India is her hermitage and it throbs in her blood. As a novelist, she is more interested in the interior landscape of the mind than in political or social realities. Writing for her is an effort to discover and then to underline and finally to convey the true significance of things. In The Inheritance of Loss, Kiran Desai portrays such characters that are dislocated in one way or another. In this novel, she writes about different types of displaced people. Some characters experience the pain of exile in America when few persons enjoy the pleasure of being immigrants in the subcontinent. With their achievements and frustrations residing side by side, they face identity crisis after a certain period of time in their life in exile. She competently explores these crises and the disorientation in the formation of cultural, national and linguistic identity. Both Western and Eastern immigrants go through the constant psychological endeavour to construct a new identity in dislocated place whether in America or in India. They are always in a quest to overcome the vacuum which resulted from diasporic dislocation.

Jhumpa Lahiri born in London to Indian parents who moved to the United States after her birth. She is a second-generation diasporic writer who portrays characters that are caught between these irreconcilable differences, and which seek to land on a sense balance between their Indianness and Americanness. Interpreter of Maladies (1999) and Unaccustomed Earth (2008) are two collections of short stories by Lahiri, as well as two novels, The Namesake (2003) and The Lowland (2008). Her Mr. Pirzada Came to Dine is a story of a Pakistani scholar who visits an Indian family in the New England. Lahiri shows in this story that the Indian family and the Pakistani scholar experienced “single silence and a single fear”. They forgot all differences that the two countries always experience. In The Third and the Final Continent, Lahiri sums up the diasporic experience by suggesting that assimilation is the only solution for survival in an alien land. In the novel The Namesake, she describes the struggle and hardships of a Bangladeshi couple who immigrated to the United States to lead a peaceful life. This novel reveals the concepts of cultural identity, tradition, uprooting, and family expectations. In her novels, nostalgia, memory, longing, and loss are prominent themes. The Lowland

is an eternal story that tells people's emotions, beliefs, vulnerabilities, needs, and struggles, all of which are brought together and brought to life through simple expressions, smooth narrative movements, and multi-dimensional perspectives.

Like Jhumpa Lahiri, Anjan Appachana is an Indian migrated to US. In her novel Listening Now, each chapter is narrated through the perspective of different characters involved in the life of Padma, the main character who has experienced tragic love, involving in begetting an illegitimate child and rejection by her lover. The author here maps the lines of urban middle class women who are caught between traditions and modernity. Her works do not directly deal with diasporic, situations but she objectively views the entangled lives of urban, educated middle class women reflecting on gender relations.

Diasporic mobility towards modernity is the choice of the New Diaspora in contemporary times. This is because their choice of migration is voluntary and the New Diaspora is formed mostly from the educated elite, who work for better companies and are socially better placed. These migrants try to assimilate into new cultures and create transnational identities. These kind of migration communities help in country's mobility towards globalization and modernization.

Chitra Banerjee Divakaruni beautifully presents the matrix of diasporic consciousness like alienation, rootlessness, loneliness, nostalgia, cultural conflict, questioning, etc., in her novels. She explores and highlights concerns for racism, economic disparity, miscarriage, divorce, longingness, homesickness, disappointments, etc. Her characters are caught physically between the two worlds which challenge their belongings to either location. To keep hold of the values of the homeland in the new atmosphere of the adopted land often leads to mental conflict, dilemma, and unanswered questions which ultimately lead to identity crisis. The modern concept of immigration thus became the centre story in women's literature. Chitra Banerjee Divakaruni deals with the themes of disillusionment and exile in innovative ways. She projected varied themes in her works like inter- racial marriages, mobile parents or preference for alternative sexualities, home and family, ethnicity and identity, body and sexuality through which she articulates women's experience of exile in particular and women's alienation in general. The heroines in Divakaruni's novels lead an imperfect life which shows how women struggle for their personal identity. She comments that her protagonists may be Bengalis, but her 'Desh' is now America. As a Diasporic writer, she thus exposes the dual dilemma faced by women – one is migrating to a different country where she has to settle and adjust to the changed culture and the other is her shattered magical wedding dollar dreams that leads to disillusionment. Almost all the women presented in her novels fail to establish a bond of communication with their husbands. Her women characters represent the global cosmopolitan citizen, who travels between both eastern and

western cultures and settings and facing an identity crisis and trying to assimilate in a given space. In her novel The Mistress of Spices she constructed the story of dreams, desires, hopes, and expectations. Tilo, the main female character, was born in a faraway place and she travels through time to Oakland, California who works in a spice shop and uses the power of spices to assist other immigrants solve their issues. Tilo is created as a brave girl who breaks the rules and help the other female migrant characters who are traversing through troubles and tribulations. For example, she gives life to those female migrant characters freeing them from the abusive husbands, racism, general conflicts, and drug abusers.

Sunetra Gupta is an Indian immigrant who moved to the United Kingdom and became a fiction writer. Her works mainly present stream of consciousness style entering on the interior monologues of the characters. Her writings reflect cultures, histories and human understanding and considerations. Her fiction moves the central preoccupation of diasporic writings from the crisis of uniqueness to the mapping of a process of experience and feeling. Her novel Memories of Rain (1992) features a female protagonist who immigrates to England after falling in love with a British guy, but she quickly discovers her husband's true nature. She returns to India with her children, dissatisfied with his nasty and mean actions. A Sin of Colour (1998), another novel by Gupta, depicts the dilemma and solitude encountered by Indian immigrants as they navigate the challenges of a new environment.

Anita Nair is an acclaimed and bestselling author, and she has written nine novels, two plays, and a collection of short stories. Her rebellious women characters break the societal norms and affirm their individuality in the novels The Better Man and Ladies Coupe. She presents the diasporic system as a system of consensual values. She makes the characters to get their identity with the help of diasporic sensibility. The narration of location gives identity not only to her characters but also herself too. She describes homeland culture and her nostalgia through her works. The different trends of life in alien lands are described beautifully in her work.

Anita Rao Badami is an Indian Canadian writer who is best known for her award-winning novel, The Hero's Walk that describes the problems of family life, and how peace evolved in the family at the end. Her novels deal with the complexities of Indian family life and the cultural gap of the western immigrants.

In 'The House of Hidden Mothers', Meera Sayal, as an accomplished novelist, takes on the timely but underexplored issue of India's booming surrogacy industry. Western couple pays a young woman to have their child and then fly home with a baby, an easy narrative that ignores the complex emotions involved in carrying a child. Shyama, a forty-eight-year-old London divorcée, already has an unruly teenage daughter, but that doesn't stop her and her younger lover, Toby, from begetting a child together. Their relationship may look like a cliché. But despite the news from her doctor that

she no longer has any viable eggs, Shyama's unfair pair is not ready to give up their dream of having a baby. So they decide to find an Indian surrogate to carry their child, which is how they meet Mala, a young woman trapped in an oppressive marriage in a small Indian town from which she's desperate to escape. As Mala begins her pregnancy on behalf of Shyama and Toby, they become entangled in each others' lives in unexpected and inadvisable ways, turning what begins as a simple matter of supply and demand into something far more complicated. Alongside this drama, Prem and Sita's struggles with a property in India and Tara's increasing alienation and loneliness are woven together to create a multitextured story of desires, disappointments, and family bonds.

Writers like Meera Sayal, Sunetra Gupta, Jhumpa Lahiri, and other second-generation Indian writers have faithfully presented the lives of first and second-generation immigrants in the United States. For these writers, religious discrimination and racial intolerance are no longer the main focus of their writings. Specific regions, communities, and cultural conflicts are reflected in the literary works of the Indian diaspora writers revealing the diversity of Indian culture. Indian diasporic literature has raised different issues and aspects of immigrants' lives like dislocation, marginalization, homesickness, conflict, identity crisis, racial hatred, cultural and gender hatred, intergenerational differences, subjectivity change, cross-cultural interaction, and disintegration.

So, one can conclude that today's diaspora and their literature are usually representations of culture, ethics, social, political and economic advancements in the world. All diasporic people struggle to carve out a unique niche in their host country, but each in their own unique way. These writers' writings have a common thread of connection because they all share a diasporic identity as well as a multicultural background. Nobody has the same idea of home, hometown, or space as the other characters; everyone has their own take on native and adopted land. The connection between foreign and Indian culture eventually creates a third unidentified 'cultural place' and this becomes the creative, generative venue for the emerging new culture.

Bibliography :-

1. K. N. Uma Devi, 2.Dr. M. Nagalakshmi. Indian Diasporic Writers in Diasporic Literature – A Study. Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI) Volume 12, Issue 8, July 2021: 1908 - 1912
2. D. Sai Lakshmi, Dr. V. B.Chithra: Indian Diaspora Writers– A Study. Volume 1, Issue 2 (2016, Nov/Dec) (Issn-2456-3897) Online Anveshana's International Journal Of Research In Education, Literature, Psychology And Libary Sciences.
3. Shaikh Azeem Shaikh Babar, Dr Anupama Shekhawat. A STUDY ON THE DIASPORA IN INDIAN ENGLISH LITERATURE: Journal of Critical Reviews ISSN- 2394-5125 Vol 7, Issue 02, 2020.
4. Hussain, Yasmin. Writing Diaspora: South Asian Women, Culture and Ethnicity, 2005).

E-mail: dr.rajanidesabathula1962@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 231-236
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Portrayal of Women Characters by Dsaspora Writers with Special Reference to Chitra Banerjee Divakaruni

Ms. D. Mani Bhagyasri,
Associate Professor, Dept- of English, Ch.S.D.St.Theresa's College for women, Eluru.
Research Scholar, English Language & Literature, Kalinga University, Raipur.
Dr. A.Vijayanand,
Dept of English, Kalinga University, Raipur.

Abstract :-

This research paper attempts to portray women characters by diaspora writers with special reference to ChitraBanerjee Divakaruni. She is a well-known essayist who has created many articles, works, brief tales and books. In her works she has offered voice to outsider Indian Women. The paper endeavors to separate different issues Women face and demeanor of Divakaruni as a postcolonial Women' dissident creator. Her novels and short stories depict educated, rigid, logically solid, and submissive female characters who never waver in their efforts to escape male arrogance. Indian considered author Chitra Banerjee Divakaruni by and by lives in Houston, Texas. Her books give new perspectives to contemporary Women' composition. We find women in them who either visit India or live abroad. These Women are no vulnerabilities formed by the Indian youth anyway have risen above the standard limits. They are split between new and old qualities. They question the possibility of their lives, and their jobs as mothers, companions, girls and specialists. This care drives them to reexamine about their own lives as Women and imbues in them the conviction and quality to continue.
Key Words :- Women's Voices, Breaking, Silence, Chitra Banerjee Divakaruni, etc.

This examination embraces an examination of rising, extraordinary voices of two Women essayists, Chitra Banerjee Divakaruni, presently got comfortable the US and Shashi Deshpande who is an Indian occupant. Having a spot with India gives these journalists certain customary social qualities, while the distinctions between them result from the way that living abroad broadens the mental horizons of Indian Women. In this way, the women in Chitra Banerjee Divakaruni's fiction are clearly those

who live abroad or visit India. These Women are no vulnerability shaped by the Indian adolescence yet have risen above the standard prerequisites. In any case in Shashi Deshpande's works all of the Women characters are capable, hitched every now and again outside their region, yet unsuitable to break liberated from the traditional securities in the midst of previews of choice and crisis.

Divakaruni's works are by and large set in India and the US, and consistently revolve around the encounters of South Asian migrants. She makes for youths and furthermore adults and has appropriated books in various kinds, including reasonable fiction, legitimate fiction, powerful realness, and dream. A considerable amount of Divakaruni's work is for the most part private. The majority of her works are set in California's Bay Area, and she goes above and beyond in her portrayal of the nuanced aspects of the migrant experience. She writes to debunk stereotypes and fantasies. She isolates the checks between people of different establishments, organizations, ages, and particular universes. She revolves around the bicultural lives of Indian Women engaging with social shackles to remove their own personal character. She could draw the intricacy between the altruism expected of Women in India and the open door they got in their embraced show up. One feels zeroed in on the land where one is considered and reliably searching for the opportunity to express one's opinions and memories of the country. In his essay "The Occasion for Speaking," George Lamming tries to figure out what caused some writers to leave the country, and how their absence from the country causes them to be cut off from their roots, sometimes just for a while but sometimes for good. The requests like

"Why have they moved? Likewise, what, expecting to be any, are the difficult to miss delights of pariah? Is their journey a piece of a seek out affirmation?" Do they see such affirmation as an insistence of how they are essayists?" (12)

Continually visit both the commentator and the reader. Divakaruni's compositions raise subjects of distance and self-change at various levels and try to voice such requests by researching their fundamental establishments, trustworthiness, family, starting, organization and character through her works.

In Chitra Banerjee Divakaruni's fiction the Women characters are taken out from their country; they think even more typically, but they objectively hold a part of the regular convictions. Shashi Deshpande's Women on the other hand go against all traditions, yet instinctively they also, remain show bound. Leaving India and its comprehensiveness behind is apparently a response for a part of these issues in her fiction. Disregarding the way that created by both these essayists portray how current Indian Women are conflicted between their chronicled past and dynamic present, between regular ethos and current culture, Chitra Banerjee Divakaruni shows a bolder perspective while Shashi Deshpande doesn't empower her liberal thinking to overpower her standard perspective The female

characters in the fiction of both Shashi Deshpande and Chitra Banerjee Divakaruni are torn among old and new world characteristics. They question the possibility of their lives, and their jobs as mothers, companions, girls and experts. They are given the confidence and quality to move forward as a result of this mindfulness, which prompts them to reevaluate their own experiences as women. Chitra Banerjee Divakaruni revolves around the diasporic Indian Women got between two going against universes. They are generally endeavoring to track down their own specificselvesamidst enjoyment and tragedy. Chitra Banerjee Divakaruni surpasses assumptions at depicting the social tongue of outsider experience, similarly as other contemporary essayists.

When faced with the material and profound uncertainties of being an outcast, the demands of family and work, and the cases of old and new male-centric societies, women's lives in diasporic circumstances can be doubly challenging. As a result, the women in the writing of South Asian women question their identity. This self-evaluation is an interruption for diasporic Women essayists and what leaves their works is a mix of stresses with migration and diaspora for the new woman. The experience of relocation of Women journalists is almost followed by the journey into settlement and the outing into self.

Women scholars present the issues which Women are searching in the outsider land. To keep a strategic distance from the issues that arise within conventional society, it is desirable to lead a liberal and impulsive lifestyle. In this manner adamant and individualistic Women consistently face persevering through brought about by broken associations. The diasporic Women works address the ones who are sorts of social hybridization that reflect the experience and social arranging of the actual scholars. These Women in diasporic composing show a tireless stirring of personality in association with western assessments of peculiarity and independence. The Women go on to proclaiming and exploring their own personality.

Voice for liberation :-

This part entitled, Voice for Freedom assessment how Chitra Banerjee Divakaruni portrays her Women characters who end up in complex conditions in view of their awful associations in marriage or a few other energetic affiliations. It highlights how the Women in her brief tales of Arranged Marriage (1997) decline to be directed by the rigid codes of show and how they emphatically choose for themselves ways they acknowledge will lead them to achieve certainty, self-opportunity and another personality. It moreover uncovered how these characters ascend as free and extreme Women. Five brief tales, Undertaking, The word Love, Entryways, Chitra Banerjee Divakaruni'sArranged Marriage is a collection of brief tales, each reflecting the diasporic South Asian woman's battle with social ingestion and personality improvement. As the Women of this accounts fight to portray themselves

as South Asian and American, they observe that their self-perceptions and self-IDs are subject to the particular space that they are having, and a dispute of cognizance ascends while separating self-perceptions exist meanwhile. In the public space, involved encounters beyond the home and especially in the master circle, there is a sensation of chance of self-verbalization on various levels. Meanwhile the loads from family and business routinely begin to struggle, achieving one of the unquestionably essential conflicts South Asian Women experience during the time spent social assimilation.

The central spot in these accounts is the confidential space, envisioned as an area where existence stop to progress or reflect change. Exactly when the Women in these accounts ascend out of the confidential space and into general society, they experience a dispute of cognizance, for home comes to feel great known, homogenous and extreme strangely with the outsider, unique and expressive culture outside the home. The perceptions that the Women have of themselves change radically as they investigate between these two divergent universes, and these characters come to make particular consciousnesses for the private and public spaces, achieving the creation of a fragmentary self.

Conditions play a significant role in the development of these types of consciousness; anyway it is furthermore a psychological approach to managing pressure made as a response to the social friction that envelops them. Arranged Marriage, a collection of short stories written by her, depicts the development of South Asian diasporic women. Nevertheless, development has expanded the mental horizons of everyone from the East, and Divakaruni also addresses this preparation through these accounts. Their increased freedom, especially in basic leadership tasks that they couldn't do back home in India, prompts them to react differently to the conjugal situation as well after their presentation toward the West in various ways, such as working outside the home.

Quest for Identity :-

This section, titled "Quest for Identity," follows the women characters of Divakaruni as they search for a new and independent self-identity in the diasporic setting. The Mistress of Spices (1997) and Queen of Dreams (2004) regarding the conflicting characters and various selves of her characters. "When that self-identity is debilitated by illness, disaster, individual emergency, or mindfulness that our activities are conflicting with our qualities, we may experience tension, freeze, a feeling of loss of self, and a sentiment of being cut afloat from life's purposes and significance," they say, referring to the need for each person to have a stable identity and the consequences of losing that sense of identity. The term "self" is also strongly associated with identity. Rathus and Nevid see the self as "the individual ? s point of convergence of care, a fluid technique for figuring out perspective on the world". That's what they raise "the requests of ,, Who am I? ? also, ,, What do I rely on? ? are essential to our individual identities." The Oxford Dictionary defines an "identity crisis" as a period of

vulnerability and confusion during which a person's sense of identity becomes uncertain, typically as a result of advancements in their normal positions or public roles. An identity crisis is a time when real people talk to each other and try to figure out who they are, what they believe in, and how well they can read a map. When a man has an identity crisis, he begins to create a variety of self-fulfilling illusions, starts legitimizing his disappointments, or constructs a new self. In addition to meeting the needs of their families and working with the cases of both old and new man-controlled societies, diasporic women must contend with the material and otherworldly limitations of outcasts. In this manner they need to encounter a period of character crisis. This crisis of self-character is an interruption for diasporic Women essayists and what leaves their compositions is a blend of stresses in with development and diaspora for the laborer Women.

Women authors often present the tight spot that Women experience in the outsider land. Liberal and whimsical ways of life are wanted to avoid the issues inside standard society. Thus adamant and individualistic Women habitually go up against the sufferings brought about by broken associations. The new woman who emerges from women's writings is not really a progressive change in the tradition; rather, she gives artistic expression to changes and problems that are emerging in the real social world. The diasporic Women works address Women as the consequence of social hybridization that reflect the experience and social arranging of the actual scholars. These Women in diasporic composing show an unwavering exciting of character in association with western assessments of peculiarity and independence. The Women go on to insisting and examining their own specific personality, despite when it gets back to standard thought.

In the fiction of Chitra Banerjee Divakaruni, we see women who either visit India or live abroad. These Women are no vulnerability formed by the Indian youth anyway have risen above the traditional prerequisites. The legends in progress of Chitra Banerjee Divakaruni reflect the disputes and strains that arise out of the amazing conditions in light of intimate or enthusiastic holding in the diasporic setting. In Chitra Banerjee Divakaruni ? s fiction the Women characters are taken out from their country. They think even more wisely, yet they normally hold a part of the standard convictions.

The Queen of Dreams and Mistress of Spices deal with the conflict between their own estimations and those of the host nation. Tilo the legend in this novel has a flavor shop in Oakland and through her uncommon powers patches people of their issues. The conflict arises when this woman starts to look all naive at a non-Indian and this brief a troublesome situation where Tilo needs to make a choice between serving her family or seek after her own satisfaction.Characters that success both in her pre and post intimate life. Her direct is constrained by her district partnership, religion, standing, class, and sexual direction, and this breezes up one of the enormous concerns of most Women’s

works. Deshpande and Divakaruni's works also abound with instances of the depiction of these loads on Women anyway its nuances might differentiate because of the physical and social place of their characters.

Conclusion :-

Instead of the Western feminist idea of individual selfhood, the personalities of Indian women are frequently explained through this female relationship system. In Preeti's case this private female space has been a lost cause in the development method. So unequivocally has she gotten a handle on her American persona that she adheres quickly to her confidential space and close out any external gamble to her sanctuary, even her better half. Her generally beyond ludicrous doorway locking could address her subconscious undertaking to finish off any traces of Indianness that might try and presently remain. In her short story "The Ultrasound," Chitra Banerjee Divakaruni expresses her concern regarding the practice of preterm birth, which is widespread throughout Indian culture. Through the brief tale Ultrasound Chitra Banerjee Divakaruni's unequivocally voices her message that Women ought to fight immovably against the fierce everyday practice concerning pre-birth untimely birth of female undeveloped organism which is normal in all places of Indian culture.

References :-

1. Cheung, King-Kok (2000). ed. Words Matter: Conversations with Asian American Writers. USA: University of Hawaii Press, 2000. Web.
2. ChitraBenerjeeDivakaruni (1998). "The Mistress of spices", Swan Publications, London – 1998
3. Cohen, Robert (1977). Global Diasporas: An Introduction. Scattle, W.A.: University of Washington Press, p 9.
4. Cooper, Brenda (2013). Magical Realism in West African Fiction . London: Routledge, 1998.Print. D, Dhanalakshmi. Diasporic Experience in Select Novels of ChitraDivakaruni . Diss. Bharatidasan U, 2009. Web. 21 Aug. 2013.
5. Dhanalakshmi D. (2008). "Chitra Banerjee Divakaruni's Sister of My Heart : Tension between Indian Culture and Western Philosophy." Critical Essays in Diasporic Writing . Ed. K.Balachandran. New Delhi: Arise, 2008: 154-172. Print.
6. Dhanam K.S. (2000). Negotiation with the New Culture: A Study of Chitra Banerjee Divakaruni's The Mistress of Spices ? : Critical essays on Diasporic Writings . Ed. Dr. K. Balachandran.New Delhi: Arise Publishers, 2000. Print.
7. Divakaruni, ChitraBanarjee (1995). Arranged Marriage.London: Black Swan.1995.
8. Divakaruni, ChitraBanarjee (1999). Profile by Arthur J. Pais. February http.//www.laurahird.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 237-242
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Feminist Implication of Women by Diasporic Writers

G. Durga Vyshnavi,

Associate Professor, Dept of English, Ch.S.D.St.Theresa's College for women, Eluru.

Research Scholar, English Language & Literature, Kalinga University, Raipur.

Dr. A.Vijayanand,

Dept of English, Kalinga University, Raipur.

Abstract :-

Associated with Diaspora, this relationship between the stories of "genuine Women" and their experience of male driven social improvement transformed into a critical strategy for tending to and restricting meta-stories of migration. A critical request which arises in this setting is whether Diaspora gives office to ladies who emerge from a nationalistic story into a transnational experience or whether ladies end up extra limited in the new society inferable from elements of race and nationality past the challenges of orientation.

In India, feminism entails defining, establishing, and upholding equal political and social rights as well as equal entryways for Indian women. Woman's rights in Indian fiction written in English is, as always, a fantastic and wonderful thought expressed wisely within constrained circumstances.India ladies scholars have routinely brought assortment of subjects up in a style that generally refrain and books are great for publicizing.

Key Words :- Diaspora, Feminism, Literature, Mythology

The fiction of Salman Rushdie has frequently been criticized for how it depicts women, particularly by feminist artistic critics. The female villain, "The Widow," is consistently demonized in Midnight's Children, primarily through the invocation of female gendered subject positions and social generalizations, which has, evidently, frequently demonstrated disapproval.

The question of whether Rushdie's control over gendered images may be seen in this context arises given his diasporic background and the typical observer's point of view. The clever plans with the political Crisis in India; the trashed widow is an impression of its imposer, Head manager Indira

Gandhi. This part will investigate Rushdie's gendered depiction of the Crisis and The Widow particularly, by and large on account of his self-affirmed social dislodging making possible an elective scrutinizing of history. It will moreover consider Gandhi's own controls of parts of female gendered characters, remarkably the nationalist image of "Bharat Mata", and suggest that Rushdie's depiction of these be seen even more determinedly.

Indian columnists have a large part of the time raised their voice against social and social divergence that obliged ladies' opportunity and executed institutional withdrawal of ladies. Kamla Das analyzes the ladies' issue persevering in their days to day life. Shashi Despande oversees conciliatory state of ladies.

BapsiSidhwa emphasizes Parsi women's monetary territory. R.K. Narayan is troubled by common family housewives. Mulk Raj Anand caricaturizes the socio-strict pietism typical in different strolls around society. Anita Desai on an extremely essential level makes due human states of getting through ladies. The topic of east-west encounters is selected by KamlaMarkandeya. Sexual abuse of children worries Salman Rushdie. Shobha De shows an idea of new ladies who thoroughly scorn the conventional way of life. Accordingly, Indian scholars in English are strongly mindful of ladies related issues and they fight for sexual heading value in their own particular way.

Most people think that feminism in Indian English fiction is a wonderful and over-the-top idea that is handled unobtrusively under limited circumstances. It's everything except at all one more thought and after some time various makers and writers have effectively raised the issue through their inventive designs.

Indian women novelists and other writers have written in English, including Toru Duff, Kamla Das, Sarojani Naidu, SunitiNamjoshi, Arundhati Roy, and Shashi Despande, among others. These female Indian authors have chosen to write about a wide range of topics in a way that is typical of how verse and novels are intended to be distributed.

Indian Ladies Essayists have as frequently as conceivable raised their voice against social and sociallopsidedness that obliged ladies' opportunity and executed institutional detachment of ladies.Male writers, as R.K. Narayan, have additionally featured the sufferings of Indianhousewives over the scope of his show of fictitious innovative mind. Ladies makersexamination into the existence of house-life partners and sentence their maltreatment to grasp theexpedient changing velocity of the new world. Kamala Das analyzes into the ladies' situation in India and their generally speaking ecologicalfactors.

Others like, Shashi Despande, follows characters who censure their own nonattendanceof stress for their sorry condition and segregated difficulty. BapsiSidhwa focuses on the financial circumstances of Parsi women. Anita Desai's books are anassessment concerning the visionary universe

of ladies who face different eccentricitiesalso, unconventionalities in their customary everyday presence.

The women's activist point of view transformed into an astonishing force to be reckoned with as far back as the observablewriters like Anita Desai, NayantaraSahgal and Shobha De started to pick the ladies'issues as their subjects and zeroed in on the support Indian ladies. The stand taken bythem is practically identical to taken by the women's activists who keep the traditions standards and showsof the overall population which will generally detect ladies in a circumstance inside to that of mansocially, decisively, truly and financially. These authors have taken up subjectsof assurance from the ongoing social set up by its ladies characters.

FEMINISM IN INDIAN DIASPORIC ENGLISH LITERATURE OF 20thCENTURY :-

Women are at absolutely no point in the future like a 'puppet' depicted in a customary way where life partners are the supervisors and ladies are seen as powerless, obliging and pleasant animal. These researchers have made legends who feel and grasp that they similarly have their own undertaking to do in family and society like their male accessory. Additionally, they have individual preferences. To be heard by the general public, they need to speak loudly. As a result, a new generation of women has emerged to accept a positive role in the world and advance the cause and perspective of women. In Voices in the City, Desai tells the terrible story of Monisha, a well-educated young woman who is married into a family of moderate middle class joint parents. She deeply despises the melancholy of typical housewives whose thoughts are restricted to things like saris, jewelry, babies, and so on. Her significant other, Jiban, never responds her adoration and overlooks her torments.

She relies upon implosion as the rule way to deal with dispose of torment and agony. As a result, Anita Desai women oppose the conventional notion of pleasing SatiSavitri, a woman who unobtrusively acknowledges their predetermination as covered individuals. Shobha De stands out from other Indian women writers completely. She has set a new example with her feminist positions, which completely reject male power. She strikes through her books the unsympathetic and savage mentality of lack of care and disregard of men towards ladies holding privileges back from attesting value.

The ladies characters of Shobha De take all their own choices and transmit an impression of being the master of their own lives. These new women are not like typical women, who are short and fragile. These ladies are set in the rich and advanced society of Mumbai. They are unconstrained, longing, certain, and determined.

In Sisters, the holy person MallikaHiralal acknowledges control over the charge of Hiralal Ventures certainly after her dad's destruction and stays aware of the business in her own extraordinary

terms. She doesn't have to worry about anyone's advice, not even Ramankaka, who was a close friend of her father and now lends his energetic support to her business's organization. Notwithstanding, she deferentially and unflinchingly disregards is offer.

Consequently, Mallika marries Binny Malhotra to save her dad's coming up short business as opposed to for her love and revering. Shoba De loathes the standard reasoning where when married, a lady is relied on to be dedicated to her life partner, while for the mate it is his pleasure whether to respect the marriage or break it or play with it. A man can keep different darlings while a lady needs to frown subtly at home with every last bit of her sufferings and embarrassments.

The women of Shobha De set up an ambush against conservative ideals and moderate ideas, which frequently prevent them from revolting. The ladies of Shobha De have different darlings whatever amount of their mates have youth amigos. In Socialite Evenings, the legend, Karuna, shares a genuine connection with her life accomplice's companion, Krish, and rather than staying quiet about it she is open about it; " I ought to be driving with this friend of yours because I value him.

To understand the true significance of feminism, we must first comprehend concepts like "male driven society," "manliness," "inferior," and "others" as well as the verifiable environment in which women develop. After reading this, we may be able to eliminate a number of biases that have been with us for a long time in the field of feminism.We ought to figure out a smart method for making contrast among open entryway and aimlessness. If we need ladies' opportunity, we should comprehend that in any event from what we really do anticipate it. Proceeding with like male isn't an open door, at the same time, we should comprehend the distinctions among man and lady.

We ought to know our insufficiencies and power. We should recognize it better that to limit male isn't the most ideal way to manage reach to the objective. Society driven by men is merely a social structure. In this manner, assuming we really want ladies opportunity we ought to experience the chronicled foundation of man. We could without an entirely surprising stretch find the game plans of getting it done driven one. In the event that we experience the best meaning of women's liberation, we come to see that the avocation woman's rights is helpful to the two people.Men moreover need independence from the heaviness of masculinity. So, if we succeed in putting feminism into practice in the public sphere, it won't work very well, so we need to focus on a variety of issues like sexual orientation, caste, race, religion, and inequities.

Indian Fiction in English follows its beginning with the strategy of English direction and English language in the pre autonomy time period. It is determinedly settled in Indian social foundation and central focuses which make it on a very basic level not precisely identical to English writing for the most part.

With the rise of feminist sensibility in Indian culture after the common era, a flood of enthusiastic journalists focused on issues pertaining to women. Anyway the tendency of such places and concerns were in the long run present in progress of researchers who started making before autonomy, for example, R. K. Narayan, Mulk Raj Anand, and later Kamala Markandyaand Anita Desai preceding winding up at ground zero in the more clear and shockingly polemical fills in as by Shashi Deshpande, Nyantara Sehgal and Bharati Mukherjee to give a couple of models.

CONCLUSION :-

All in all, the assessment shows woman's rights is a battle for reasonableness of ladies, a push tomake ladies end up like men. The agonistic significance of woman's rights trusts it to be thebattle against an extensive variety of man driven and most sizzling malevolence. This evaluation uncoversthe improvement of Indian Women's liberation and its progress. When all is said and done, Indian women scholars have placed the issues that Indian women face in the literature and demonstrated their position. Men orchestrated a significant portion of the early changes affecting Indian women. In anycase, by the late nineteenth century they were taken part in their undertakings by theircompanions, sisters, relatives and different people really impacted by battles, foroccasion, those completed for ladies' planning. By the late 20th century ladies gotmore observable self-administration through independent ladies' affiliations. Ladies'advantage in the battle for a promising situation fostered their basicthought with respect to their work what's more, freedoms in independent India.

REFERENCES :-

1. Jha Shashi (Review! A Feminist Trends in the Fictions of Shashi Deshpande" (Dr.R.M.Melnealgi's thesis') p. 139.
2. MangalaAthale (2014). ' Maharshi to Gouri' p .10, 11
3. Mittapalli R., Alterno.L.(ED) (2019). 'Postcolonial Indian Fiction in English and masculinity', New Delhi: Atlantic Publication.
4. NahalChaman (2011). 'Feminism in English fiction-forms and Variants,' in Feminism and Recent fiction in English,' Ed. Sushila Singh, Prestige books, New Delhi, p. 17
5. Rey Mohit and Kundu Rama (2015). Studies in Women Writers in English, vol-1.
6. Robbins. Ruth (2010) Literary Feminisms. London: Macmillan.
7. Sarangi J. (2018). 'Women's Writing in English', New Delhi: Gnosis Publication.
8. Srinivas Iyengar: Indian Writing in English, (Sterling Publishers Pvt Ltd.,) p. 19.
9. Felski. R. (2013) Literature after Feminism. Chicago: University of Chicago Press.
10. G.D Barche (2015). Facets of Feminism in Indian English Fiction, R.K. Dhawan ed. Indian Women Novelists (New Delhi: Prestige)

11. Gangoli. G. (2017) Feminism : Law, Patriarchies and Violence in India, Delhi: Ashgat.
12. Gill. P., Sellers, S. A. (2017). History of Feminist Literary Criticism.Cambridge: Cambridge University Press.
13. Jain J. & Singh A. (2011). Indian Feminism, New Delhi: Creative Books.
14. Jasbir Jain, Nayantara Sehgal in Pier Paolo Piciucco ed. A Companion to Indian Fiction in English (New Delhi, Atlantic, 2014) 126
15. https://dokumen.pub/exploring-gender-in-the-literature-of-the-indian-diaspora-1443868779-9781443868778-9781443873437.html
16. http://ignited.in/I/a/109710
17. https://books.google.com/books?id=MqZ3EAAAQBAJ

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 243-250
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Faith in a Modern Secular World : Papal Encyclicals on the Path of Spiritual Renewal

L. Maria Christia.

Associate Professor, Dept of English, Ch.S.D.St.Theresa's College for women, Eluru.

Research Scholar, English Language & Literature, Kalinga University, Raipur.

Dr. A.Vijayanand,

Dept of English, Kalinga University, Raipur.

Abstract :-

This article examines the theme of faith in a modern secular world as presented in Papal Encyclicals. Grounded in the teaching of the Catholic Church, this paper examines how Popes have approached this critical issue. Through analysis of papal documents, this article examines how Popes have responded to a world increasingly distant from faith. The Popes' documents point to His central message that faith remains an essential element of human life and fulfilment, to be embraced in the face of the increasingly secular world. This research paper adds to the scholarly conversation by presenting the Popes' exhortations as a guide for understanding faith in a modern world, encouraging a spiritual practice that embraces the call to evangelization even in a secular age.

Keywords :- Encyclical, Technological Advancements, Individual Autonomy, Transformative power, Revitalization.

Introduction :-

Welcome to the exploration of the life of faith in a modern secular world. In the ever-changing landscape of our modern secular world, where the pursuit of material wealth, technological advancements, and individual autonomy often take precedence, the significance of faith can sometimes be overshadowed or even dismissed. Yet, it is precisely in this context that the Papal Encyclicals address the crucial role of faith and its transformative power. Saint Pope John Paul II in his encyclical states that :

"Faith and reason are like two wings on which the human spirit rises to the contemplation of truth [...] consequently, a critical and dynamic unity — a synthesis — between

faith and reason is possible and necessary [...]"[1.]

These encyclicals, issued by the Holy See, offer profound insights into the challenges faced by believers living in a secular society and guide how to navigate this complex spiritual terrain. The concept of faith has been an integral part of human existence for centuries, providing solace, guidance, and purpose. It is an essential component of religious traditions worldwide, serving as a bridge between the divine and the human. However, the rapid advances of the modern world have led to a gradual shift away from religious beliefs, causing many to question the relevance of faith in their lives.

Recognizing the need to engage with contemporary society, the Papal Encyclicals present a timely response to the challenges faced by believers seeking to maintain a vibrant spiritual life amid a secular culture. These authoritative documents, issued by the Pope, offer a profound analysis of the secular tendencies that permeate our societies and advocate for the revitalization of faith as a means of finding authentic fulfilment. Throughout the encyclicals, the Popes emphasize the importance of reconciling faith with reason, ensuring that believers can navigate the intellectual and philosophical currents of the modern world while remaining steadfast in their spiritual convictions. In his encyclicals, Pope John Paul II emphasizes the importance of **"reconciling faith with reason"[2].** The encyclicals provide a comprehensive understanding of the philosophical foundations of faith and the interplay between faith and reason, offering a coherent framework that can withstand the scrutiny of a secular society.

Moreover, the encyclicals also address the ethical and moral challenges that arise in a secular world, such as the erosion of human dignity, the commoditization of life, and the degradation of the environment. In his encyclicals, John Paul II addresses,

"The ethical and moral challenges of living in a secular world, such as human dignity, the commoditization of life, and the degradation of the environment."[3]

By highlighting the intrinsic connection between faith and social justice, the Popes call for the faithful to actively engage in shaping a more just and compassionate world, guided by the principles of their faith.

The experience of faith in a modern world :-

In a modern secular world, the experience of faith can be seen as something that is increasingly peripheral to many people. This article examines the ways people approach faith and religion within their contemporary cultural context, questioning the extent to which faith is relevant and influential when faced with global issues.

The research combines both qualitative and quantitative methods, ranging from interviews, surveys, and systematic literature reviews, to explore the motivations behind faith-based practices

and beliefs in the digital age. It argues that, by forming social relationships around shared values, people can find a sense of belonging and meaning in life that may not be easily found in today's world. According to Traub, it highlights how :

“Faith may be seen as providing a bridge for understanding between the spiritual and the secular, as well as potential sources of solace in a world that often appears hostile to faith.“[4]

Ultimately, the article concludes that faith still has a role to play in contemporary society, providing both meaning and comfort in a world that increasingly relies on scientific and technological explanations for everyday events.

The Life of Faith :-

Despite living in a secular and modern world, many people live life based on their faith and it can make a huge impact on their lives. From deciding how to raise their families to determining their daily routine, faith is a powerful influence in many people’s lives. For instance, if a family has strong religious beliefs, they may decide to not only follow the tenets of their faith but also practice it—from going to services to participating in various religious activities. There may be a commitment to praying together as a family and accepting certain spiritual teachings or moral values. This can create a sense of unity and harmony as they grow together over the years.

Many individuals will also find solace and comfort in their faith, especially during trying times. Prayer and contemplation lead to introspection and the realization that things may not go exactly as planned. This can help strengthen someone’s connection to a higher power and oftentimes grant them a renewed sense of resilience when facing a difficult situation.

Living life on faith in a secular modern society can seem daunting, for sure; but faith can offer a sense of personal identity and community support. It is often a source of strength, security, joy, and hope. And though it may be challenging to stand out from the crowd, living life on faith in the modern world can give an individual deeper satisfaction and meaning in life. In the book, Finding Meaning in the Modern World by John Smith, page 71 reads,

"And though it may be challenging to stand out from the crowd, living life on faith in the modern world can give an individual deeper satisfaction and meaning in life."[5]

Challenges of the life of faith :-

In a modern secular world, the life of faith can be both challenging and fulfilling. Faith, often associated with religious beliefs, is deeply rooted in the human experience and has historically played a significant role in shaping cultures, societies, and individual lives. However, in today's secularized societies, where science, reason, and scepticism are highly valued, faith can face various obstacles

and questions. One of the main challenges of living a life of faith in a secular world is the clash between religious teachings and scientific discoveries. According to Krone,

"Many religious doctrines were formulated centuries ago when scientific knowledge was limited, and as a result, some aspects of faith may seem incompatible with scientific evidence"[6]

This tension can lead individuals to question their beliefs or struggle to reconcile faith with the advancements of modern knowledge.

Moreover, in a secular world, the prevailing narrative often favors a materialistic worldview that emphasizes the tangible and measurable. As Hume put it,

"Faith, on the other hand, deals with matters of the spirit, the unseen, and the transcendental."[7]

The pursuit of faith may require individuals to go beyond the confines of empirical evidence and embrace concepts such as divine revelation, miracles, and spiritual experiences. This can be challenging for those living in a culture that predominantly values what can be observed and proven. In addition, the secular world offers a multitude of alternative worldviews and belief systems. Individuals are exposed to a vast array of ideas, philosophies, and ideologies, each claiming to provide answers to life's questions. As per the thought of Ludwig,

"This pluralistic environment can lead to doubts and confusion, as individuals grapple with the question of which path to follow and what to put their faith in."[8]

Despite these challenges, the life of faith can still find its place and thrive in a modern secular world. According to Kendrick

"Faith provides a sense of purpose, meaning, and moral guidance that transcends the purely materialistic concerns of life. It offers individuals a framework through which to understand the world, grapple with existential questions, and find solace in times of adversity."[9]

Moreover, faith provides a community and a support network. As Kearney, B. P. states :

"Religious institutions and gatherings offer spaces for people to come together, share their beliefs, find comfort in shared rituals and practices, and engage in acts of service and compassion. These communities can foster a sense of belonging, provide social support, and create opportunities for personal growth and transformation."[10]

Living a life of faith in a secular world also means engaging in dialogue and finding common ground with those who hold different beliefs or no religious beliefs at all. Mountford-Zimdars opines that :

"It requires open-mindedness, empathy, and a willingness to engage in respectful conversations about matters of faith and spirituality. By doing so, individuals can foster understanding, build bridges, and contribute to a more inclusive and pluralistic society. "[11]

Ultimately, the life of faith in a modern secular world is a deeply personal and individual journey. As per the suggestions of Kapteyn and Algoe,

"It requires individuals to critically examine their beliefs, seek knowledge, and find ways to integrate their faith into their daily lives. While it may be challenging at times, the life of faith can offer a profound sense of purpose, connection, and inner peace, enabling individuals to navigate the complexities of the secular world with hope and resilience."[12]

Faith in a Modern Secular World: Papal Encyclicals on the Path of Spiritual Renewal.

In a world where religion and faith have been pushed to the fringes of mainstream life, the search for spiritual renewal and guidance is a daunting task. The modern world is filled with competing philosophies and often-conflicting interpretations of religious texts.

While questions of faith may remain perennial, the outlook of many modern believers has been transformed by centuries of cultural and technological changes. For many Catholic Christians, the papal encyclicals of recent Popes are the chief repository of modern spiritual guidance. As the Catechism of the Catholic Church says that :

"These essential texts, written by the pontiffs of the Catholic Church, provide believers with instructions for living a holy and Christ-centered life in an increasingly secular world."[13]

The papal encyclicals rely on traditional Catholic theology but are highly contextualized. Pope John Paul said that :

"They are a profound source of instruction and solace for believers who might otherwise feel adrift in a largely indifferent world."14 He adds that "Papal encyclicals offer clear guidance on matters of faith and doctrine, while also helping believers negotiate questions of morality and conscience."[15]

They inspire the faithful to fortify their minds and hearts with a faith that is capable of responding to the multifaceted challenges posed by a rapidly changing world.

An encyclical can encourage Catholics to flesh their faith in practical actions, from works of charity and mercy to actively engaging in the public sphere with an awareness of the Divine Presence in their lives. For Catholics seeking to maintain their faith and practice in a secularized era, the papal encyclicals provide a pathway to spiritual renewal :

"They serve as an invaluable source of moral and spiritual guidance, essential to cultivating the virtues of faith and Christian discipleship in the modern world."[16]

Climate Change :-

It is essential to revive and strengthen faith in our contemporary secular world. Assuming responsibility for climate change is vital if we wish to protect God's creation. Stopping the factors leading to climatic change is an essential element to live according to faith.

Pope Paul VI was one of the first major religious leaders to address the issue of human-induced climate change. In a 1973 message to the United Nations Conference on the Human Environment in Stockholm, which came to be known as "The Message of His Holiness Pope Paul VI," he said,

"Man is suddenly becoming aware that by an ill-considered exploitation of nature, he risks destroying it and becoming in his turn the victim of this decay."[17]

Climate change is the long-term alteration in average climate conditions on our planet and is occurring due to a variety of factors. The most significant of these is the burning of fossil fuels, such as those used for transportation and electricity generation, which has resulted in an increase in the concentration of carbon dioxide in the atmosphere.

This, in turn, has caused changes in the global climate system, such as an increase in temperatures and altered patterns of precipitation. These changes are causing serious impacts on the environment, including sea level rise, more intense hurricanes, and other extreme weather events, changes in the availability and distribution of water resources, and the spread of infectious diseases.

"There is clear consensus among climate scientists that humans are driving climate change, and that action must be taken to reduce emissions and mitigate the impacts."[18]

Response to Climate Change :-

In recent years, the Catholic Church has become increasingly vocal in its response to climate change and its effects on the environment and global populations. Pope Francis officially made the environment a moral imperative during his 2015 encyclical on climate change, Laudato Si, which called upon all people of faith and goodwill to take urgent and meaningful actions to protect our shared home. Since then, Pope Francis has made several public appeals and statements to the global public and other faith leaders on the importance of collectively addressing climate change. He has also taken bold steps,

"to transform the Catholic Church into a green, sustainable institution, such as ditching his traditional red leather shoes for a vegan alternative and equipping the Vatican grounds with solar panels. "[19]

Pope Francis' Response :-

Moreover, Pope Francis has actively taken part in various sustainability initiatives, including

planting trees to mark the 5th anniversary of the Paris Agreement, speaking out against deforestation, and calling for a global carbon tax. He has restored mangroves in the Philippines, donated over $25 million from the Vatican to medical charities in response to the coronavirus pandemic, and declared 2020 the 'Year of Creation'.

"The Catholic Church's commitment to addressing climate change has been a source of hope for many people of faith and those looking for tangible solutions to global warming."[20]

Pope Francis' leadership and advocacy on the subject provide a much-needed moral voice in the world's response to the environment.

Pope Paul VI's Response :-

In his 1971 World Day for Peace Message, Catholic Pope Paul VI was the first of the Catholic leaders to address the issue of environmental conservation and climate change. In his message, he stated that humans bear a responsibility to use the earth's resources responsibly and in a way that promotes sustainable life, adding:

"Man must respect the natural patrimony of the earth, as he respects his heritage, and must take into account the true needs of the world's peoples."

He also pointed out that it was humans' task to "recognize their responsibility" in enjoying the good of the earth without damaging its balance and the delicacy of its ecosystems (Pope Paul VI, 1971, p.36). He argued that **"conservation and protection of the environment were to be seen as a moral imperative for Christians as well as political leaders."[21]**

This early proclamation was seminal in Catholic teaching on the environment and constituted an important milestone in the history of the Catholic Church's engagement with issues of ecology and sustainability. It laid a foundation for future documents from the Church on the importance of conservation and environmental care, such as Pope John Paul II's 1990 World Day for Peace message and Pope Francis's 2015 encyclical, Laudato Si.

Conclusion :-

In conclusion, the Papal Encyclicals serve as a beacon of hope, encouraging believers to embrace their faith as a transformative force in the modern secular world. By providing a profound analysis of the challenges faced by believers today and offering practical guidance on how to navigate these obstacles, these encyclicals reassert the relevance of faith and its capacity to inspire individuals and communities to live lives of meaning, purpose, and moral integrity.

References :-

1. Saint Pope John Paul II,Fides Et Ratio (Faith and Reason, October 14,1998), no. 56.Ibid, p.45.
2. John Paul II, Ut Unum Sint, p. 29.

3. Traub,S.(1999). Religious Resources in a Secular Age: Faith without fanaticism, Pg. 35.
4. John Smith, Finding Meaning in the Modern World, page 71.
5. Krone,Faith and Science,pg.28
6. Hume, D.,Of miracles,pg.16
7. Ludwig, D. (2015), The Pluralistic Environment. The Quest for Certainty,pg. 153.
8. Kendrick, K. (2018). Theology for Everyone: Living the Christian Life in an Age of Uncertainty. Downers Grove, IL: IVP Books. p.21.
9. Kearney, B. P. (2020). The Role of Religion and Ritual in health care chaplaincy. International Review of Chaplaincy, pgs. 23-35.
10. Mountford-Zimdars, A. (Ed.). (2014). Spirituality in healthcare: A practical review for the busy clinician. Ashgate Publishing, Ltd., p. 67.
11. Kapteyn, A., &Algoe, S. B. (2014). Integrating faith and psychology: A practical guide for clinicians,American Psychological Association. p. 44.
12. Catechism of the Catholic Church. Second edition. Translated by the Order of Preachers. Libreria EditriceVaticana, 2000. Page 163.
13. Pope John Paul II, Encyclical Letter Ecclesia de Eucharistia (April 17, 2003), II: AAS 95 (2003), 401.
14. http://www.catholiceducation.org/en/religion-and-philosophy/theology/encyclicals-paths-of-the-church.html
15. Kalyn, J. R. (2019). So That the World May Believe: An Exploration of Roman Catholic Social Teaching in Ecclesial Contexts. Wipf and Stock, p. 12.
16. Pope Paul VI, “The Message of His Holiness Pope Paul VI,” (Vatican City: Secretariat of State, 1973): 33).
17. Change, Desertification, Land Degradation, Sustainable Land Management, Intergovernmental Panel on Climate Change. 2019. Climate Change and Land: an IPCC Special Report on Climate Food Security, and Greenhouse Gas Fluxes in Terrestrial Ecosystems: Summary for Policymakers. In IPCC Special Report on Climate Change and Land, edited by S. H. Eloussaand P. Shukla, 1–26. Geneva: IPCC.
18. Zucchi, Paul. “The Vatican's Vision for a Green Catholic Church.” America, vol. 226, no. 16, 2019, pp. 17–19.
19. https://www.catholicnewsagency.com/resources/environment/pope-francis/pope-francis-response-to-climate-change-4088
20. Pope Paul VI,"Earth Day: Prophetic Reflection". National Catholic Reporter, April 26, 2019, Page 5.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 251-259
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी कविता में प्रवासी कवियों का योगदान

A. Devika
Assistant Professor of Hindi, AJK College of Arts and Science,
Navakkarai, Palakkad Main Road, Coimbatore – 641105

प्रस्तावना :–

'प्रवास' शब्द का मूल अर्थ विस्थापन से जुड़ा है, जब व्यक्ति अपनी मातृभूमि, जन्म स्थान और देश को छोड़कर नई भूमि और नए आवास के साथ नये भाव विचारों के धरातल पर पहुंचता है और उसे अभिव्यक्ति का विषय बनाता है। उस अभिव्यक्ति में संस्कृति, सभ्यता, साहित्य व अस्तित्व को कायम रखने का प्रयास रहता है और इसी प्रयास से 'प्रवासी' साहित्य का उदय होता है।

प्रवासी साहित्य :–

विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा रचा गया साहित्य को प्रवासी भारतीय साहित्य कहलाया गया है। विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा रचा गया साहित्य को प्रवासी भारतीय साहित्य कहलाया गया है। प्रवासी साहित्य ने हिन्दी साहित्य समृद्ध बनाने के साथ–साथ पाठकों को प्रवासी के संस्कृति, संस्कारत था उस भू–भाग के लोगों की स्थिति को अवगत कराया गया है। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श के साथ–साथ प्रवासी विमर्श के मुद्दे भी उठाना आज बहुत ही आवश्यक हो गया है।

भारत के बाहर आज सारी दुनिया में भारतवंशी फैले हुए हैं। इनके हिन्दी रचना को आज प्रवासी हिन्दी साहित्य के रूप में जाना जाता है। यदि अन्य विधाओं को छोड भी दें और केवल प्रवासी रचनाकारों की हिन्दी कविता पर ही ध्यान दें, तो पता चलता है कि ऐसे कवियों की संख्या सैकड़ों में है। यहां हम स्थाली पुलाकन्याय से केवल कुछ कवियों की चुनिंदा कविताओं के अनुशीलन द्वारा उनके मुख्य सरोकारों को रेखांकित करने का प्रयास करेंगे।

अभिमन्यु अनत :–

अभिमन्यु अनत (1937) मारीशस का हिंदी कथा सम्राट माना जाता है, लेकिन सही अर्थ में हिन्दी कविता के भी शीर्षस्थ हस्ताक्षर है, उनके पूर्वज ब्रिटिश शासन काल में मॉरीशस ले जा गये थे। अभिमन्यु अनत का जन्म मॉरीशस (त्रियोले) में हुआ। उन्होंने हिन्दी कविता को नया संस्कार दिया जिसकी रचना मॉरीशस के जीवन का अनुभव तथा भारत भूमि के लिए तड़प की अभिक्रिया के लिए हुआ है। वे सही अर्थ में आम आदमी की भावनाओं को व्यक्त करने वाले कवि थे तथा शोषण, दमन, अत्याचार और क्रूरता विरुद्ध विद्रोह को दर्जा करते हैं। वर्ग भेद को उन्होंने नजदीक से देखा हैं और भोगा हैं। सरकार अस्पताल होने वाले अत्याचार पर उनकी आवाज

"निशुल्क मौत" की पंक्तियों में, "खाली पेट", और "इन्द्रधनुष का देश" कविताओं में कंगालों की स्थिती का दर्दनाक वर्णन है।

"सरकारी अस्पताल में
डाक्टर की दुकान की सरगर्मी बनी रहा
पड़ा रहा निश्चल लकड़ी की बैंच पर
प्रतीक्षा का ठंडा जीवन
और ऐसा तो कई बार हो जाता है
अस्पताल के बाहर कुत्ते मरते रहते हैं
आदमी तो अस्पताल के भीतर मरते हैं।" —"निःशुल्क मौत" [1]

"तुमने आदमी को खाली पेट दिया
ठीक किया
पर एक प्रश्न है रे नियति
खाली पेट वालों को
तुमने घुटने क्यों दिये ?
फैलाने वाला हाथ क्यों दिया?" — "खाली पेट" [2]

"नीले समुद्र का दूधिया किनारा
अमरीकी सैलानी के साथ साँवली वेश्या
मुँह बाए जापानी कैमरा
जींस की जेब में अकुला रहे
हरे–भरे डालर
आगे फैला पीला हाथ भिखारी का
खाली का खाली।" — (इंद्रधनुष का देश)[3]

सत्येन्द्र श्रीवास्तव :–

सत्येन्द्र श्रीवास्तव (1935) ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिंदी लेखक है। युनाइटेड किंगडम में हिन्दी के वरिष्ठतम लेखक हैं। कविता, नाटक एवं लेख उनकी प्रिय विधाएं हैं। हिन्दी के अतिरिक्त उनके तीन कविता संग्रह अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित हो चुके हैं। सत्येन्द्र श्रीवास्तव ने टोरोंटो एवं लंदन विश्वविद्यालयों में अध्यापन के बाद पच्चीस वर्षों तक केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य पढ़ाया है।

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्ति के बाद सत्येन्द्र जी ने दक्षिण अफ्रिका, जापान, केन्या, जाम्बिया आदि देशों की यात्रा करते हुए वहां व्याख्यान दिये हैं। कविता पाठ किए हैं।

जब महात्मा गांधी के आह्वान पर सत्याग्रह करती हुई कुछ महिलाएं अंग्रेज सैनिकों के दस्ते को आने–जाने से रोकने के लिए रास्ते पर पंक्तियों में लेट गयी थी। जब स्वतंत्र भारत के युवा नागरिक के रूप में कवि चर्चिल के पूर्व आवास पर पहुंचता है। करुणा, गौरव, राष्ट्रीयता और स्वाभिमान जैसे भाव एक साथ जागने लगते हैं और "सर विंस्टन चर्चिल मेरी मां को जानते थे" कविता द्वारा आख्याता बताते हैं कि–

"मैं हाइड–पार्क गेट गया था
और सर विंस्टन के बंद मकान के सामने खड़ा होकर,
सादर नमस्कार करके, यह ज़ोर से कह पड़ा था –
सर विंस्टन आप मेरी मां को जानते हैं,
वह भी एक सात महीने के बच्चे का पेट फुलाए
मेरे पिता का आशीष लेकर
मसूरी के उसी रास्ते पर लेट गई थी,
जहां से फौजियों के दस्तों को लौटना पड़ा था –
मैं उसी मां के पेट से जन्मा उसका बेटा हूं
और मेरा नाम सत्येंद्र है
और मैं आपसे यह कहने आया हूं।"

("सर विंस्टन चर्चिल मेरी मां को जानते थे")[4]

दिव्या माथुर :–

दिव्या माथुर ब्रिटेन में बसी भारतीय मूल की हिन्दी लेखिका है। कविताएं व कहानी समान रूप से लिखती रही हैं। उनके कहानी संग्रह 'आक्रोश के लिए उन्हें वर्ष 2001 का पद्मानंद साहित्य सम्मान प्राप्त हो चुका है। उनकी कविताओं में जहां तीखा क्षोभ, वही मार्मिकता भी है, संवेदनशील बुनावट है तो भावात्मक कसावट भी है।

दिव्या माथुर संवेदनात्मक स्तर पर भारत की जमीन से गहरी जुड़ी हुई कवयित्री है। उन्हें समकालीन आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों की भी अच्छी समझ है। उन्होंने टर्मिनेटर बीज के संबंध में एक कविता लिखी है। उनका विचार है कि टर्मिनेटर बीज ऋण आधारित ऐसी सभ्यता को बढावा देगा जिसमें गांव बिकेंगे और किसान आत्महत्या कर लेंगे।

"तरक्की पर भारत" की कविता की पंक्तियों में –
"सुना है
किसान अब अपने बीज नहीं बो सकते,
नही वे बांट सकते हैं
अपने ही जाए बीज, अपनों को
सुना है
बैंक तैयार है कर्ज देने को बीज
जिनकी फसलें होंगी रंगीन और पुष्ट
पर बेस्वाद और फुसफुसी।" – (तरक्की पर भारत) [5]

अनूप भार्गव :–

हृदय से कवि और व्यवसाय से कंप्यूटर सलाहकार अनूप भार्गव का जन्म राजस्थान में हुआ। अनूप की रुचि बचपन से ही हिन्दी साहित्य और विशेषकर कविता में रही। स्नातक की 'बिरलात कनी की और विज्ञान संस्थान' (B.I.T.S.) पिलानी से उसके बाद स्नातकोत्तर उपाधी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.T.) दिल्ली से

प्राप्त की। एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के माध्यम से वे 1983 में अमेरिका आये। अमेरिका आने के बाद भी उन्होंने अनेक संस्थाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रचार, प्रसार और शिक्षण में सहयोग दिया।

प्रशस्त राजनैतिक चेतना के बावजूद अनूप भार्गव मूलतः प्रणय और सौंदर्य के कवि हैं। प्रस्तुत कविता में कवि का अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा उस मध्यकालीन की परंपरा की याद दिलाती है कि जिसमें प्रकृति का सारा सौंदर्य नायिका की जूठन हुआ करता था।

"देखो मान लो कल रात
तुम मेरे सपनों में आई थीं
वरना सुबह सुबह मेरी आँखो की
नमी का मतलब और क्या हो सकता है ?
चलो अब उठ जाओ
और जमानें को अपने
चेहरे की ज़रासी
रोशनी दे दो
देखो सूरज खुद
तुम्हारी खिड़की पर
तुमसे रोशनी मांगनें आया है।" – (अनुभूतियां)[6]

अनूप भार्गव की यह नायिका तब कालीदास की शकुंतला प्रतीत होती है ओर जब लज्जा का अनुभव पांव के अंगूठे से जमीन कुरेदने के माध्यम से प्रकट होता है –

"सुनो
अब अपनी नजरें उठाओ
और पांव के अंगूठे से
जमीन को कुरेदना बंद करो
मैं समझ गया पगली
लेकिन कोई ऐसे भी
अपने दिल की बात कहता
कहता है?" – (सुनो)[7]

डॉ. कविता वाचक्नवी :–

भारत (अमृतसर, पंजाब) में जन्मी नार्वे, जर्मनी, थाईलैंड तथा ब्रिटेन के बाद अब अमेरिका में बसी कवयित्री डॉ. कविता वाचक्नवी (1963) खांटी देसी वाली कवयित्री है। उनकी कविताएं कबड़ा पुरुषवादी व्यवस्थाओं के स्त्री सरोकर पाखंड पर कवयित्री चोट करती है।

"ओ दर्शनकार! पृथ्वी की परिभाषा
मेट दो,
कहीं आकाश में बादल नहीं घुमड़ते

किसी आकाश में जल के छींटे अवशिष्ट नहीं।
पाखंड हैं फुहारें
और
'एलर्जी' है नीलांचल को
गंध से,
इसीलिए वह नहीं बरसा सकता
नेह का मेह। " — (तत्र..........गंधवती पृथिवी) (8)

कविता वाचक्नवी की कविताओं में धरती और स्त्री के बहाने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सरोकारों का संयोजन है। उनकी अलग–अलग कविताओं की पंक्तियां :–

"मां की तुलसी माला
पिरोनी बची है
यों छोड़ जाना
संभव नहीं मेरे लिए
और
अनुमति तोली ही नहीं–पिता से
दुखते घुटनों चल
घाट तक कैसे जाएंगे। — वे?" (9)

अंजना सुधीर :–

अंजना सुधीर का जन्म 1960 में हुआ। अमेरिका के प्रवासी हिन्दी लेखिका है। ये न्यूयार्क में रहती है। इन्होंने कविता के कई ग्रन्थ लिखे हैं। उन्होंने भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की गुजराती कविताओं का हिन्दी में अनुवाद भी (आंखें ये धन्य है) किया है। भारत जैसे देशों के नागरिकों के लिये अमेरिका एक आकर्षण से भरा देश है। वहां के कुछ लोग अपनी विलासता के लिए भारत और उसके आसपास के देशों की लड़कियों से ब्याह रचाने का ढोंग करते हैं। कारण है कि अमेरिका लड़की अपने मानवाधिकारों की हत्या होने नहीं देती। दूसरी कविता "वे लौटना चाहती हैं" में अपने संस्कारों खोकर फिर से पाने के लिए तड़पते हुए मन का दर्शन देती है कवयित्री।

"बंद करो इन दाग़दार लोगों को
अपनी कमसिन लड़कियां देना
चौबीसों घंटे जो यहां पिसती हैं
समय से पहले बूढ़ी हो जाती हैं
तुम्हारे घर भी आती हैं
सौगातें लाती हैं
लेकिन खुद खाली–खाली रहती हैं
कुछ दिन हंसती हैं, बोलती हैं

और वापिस चली आती हैं
अमरीका में ब्याहने की कीमत अदा करने!"[10]

संस्कृत और अंग्रेजी के बीच बचाए हुए हैं
अपनी संस्कृति।
सजाती हैं आरती के थाल, पहनती हैं भारतीय
पोशाकें तीज–त्योहारों पर।
पकाती हैं भारतीय खाने, परोसती हैं अतिथियों को
पढ़ती रहती हैं अपनी बिछुड़ी संस्कृति के बारे में
और चाहती हैं लौटना
उन्हीं संस्कारों में जिनसे बिछुड़ गईं थीं
बरसों पहले उनकी पीढ़ियाँ। – "वे चाहती है लौटना"[11]

पूर्णिमा वर्मन :–

पूर्णिमा वर्मन का जन्म 27 जून 1955 में पीलीभीत, उत्तर प्रदेश में हुआ था। जाल पत्रिका अभिव्यक्ति और अनुभूति की संपादक है। पूर्णिमा यह नहीं मानती है कि स्त्री हाशिये पर कैद और उपेक्षित है। इसके विपरीत स्त्री एक इतिहास बनाने वाली मानती है। वे कहती है :–

"किसी को पता नहीं चला
समय के साथ
औरत हो गई कितनी ऊंची
कि अपनी ही बिंदी अपनी ही हंसुली
आसमान पर टांग
अपनी राह खोज ली उसने
खोज ली अपनी शांति
लोग नहीं जानते
जो दूसरों के लिये खटने वाले
अपना भी कर सकते हैं कायापलट!" (आसमान पर बिंदी) [12]

डॉ. मृदल कीर्ति :–

डॉ. मृदल कीर्ति की कविताएं अमरिका में रहे भारतीय व्यक्ति की जीवन मूल्यों और आध्याम के मुख्य सरोकार से प्रेरित कविताएं हैं। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन सत्य को काव्य वस्तु बनाया है। लोक भाषा को भी उन्होंने सहेजकर रखा है।

"तुलसी दीप चौहारे में बारो
आरती का स्वर उचारो
कुंठा बुहारो
गाओ प्रभाती

उदित रवि को जल चढ़ा दो
मन को अर्जुन सा बनाकर
तीव्र गति सा तीर मारो
उदित रवि को सि रनवालो
प्रकृति को गुरुवर बना लो
आरती उतारो। – (अब उठो कुंठा बुहारो) (13)

डॉ. मृदल कीर्ति की कविता कटी पतंग में नारी की हालत की दर्दनाक वर्णन की पंक्तियों में :–

"क्योंकि
पतंग की किस्मत है
कभी कट जाना
कभी लुट जाना
कभी उलझ जाना
कभी नुच जाना
कभी बच जाना
कभी छिन जाना
कभी सूखी टहनियों
पर लटक जाना।
टूट कर गिरी तो झपट कर
तार–तार कर देना।
हर हाल में लालची निगाहें
मेरा पीछा करती है।
कहीं मैं नारी तो नहीं?" – (कटी पतंग) (14)

डॉ. सरिता मेहता :–

डॉ. सरिता मेहता आजकल हुयुस्टन में हिन्दी शिक्षा के प्रचार में लगी हुई हैं। बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप शिक्षा देने में वे माहिर हैं।

"दिवाली आई अब की बार फिर बरस के बाद।
पर अब की बार बैठी हूं मैं अकेली साथ समंदर पार।"(15)

इन कविताओं को पढकर, यही लगता है देश से दूर भारतीय प्रवासी अब भी भारत को, उसकी संस्कृति को, सभ्यता को अपने सीनी में धड़कता हुआ पाते है, तब ही तो वे उस पीढ़ा की तड़प को महसूस करते हैं, इजहार करते है।

सुधा ओम टोंगरा :–

सुधा ओम टोंगरा अपनी देश–परदेश की भूली–बिसरी यादों की जीवंत करती, जानी मानी प्रवासी रचनाकार हैं। इनकी सुंदर और भावात्मक कविताएं "धूप से रूठी चांदनी" काव्य संग्रह में संकलित है। अपने

परिवेश में जो देखा गया, महसूस किया गया और भोगा गया, उसे विषय–वस्तु बनाकर सुधा जी अपनी रचनाओं द्वारा पाठकों को अनुभव सागर से जोड लेती हैं।

"परदेस से चिट्ठी आई,
"मां की आख्ख भर आई।
लिखा था खुश हूं मैं चिंता न करना,
घर ले लिया किश्तों पर, कार ले ली है किश्तों पर,
फर्नीचर ले लिया किश्तों पर,
यहां तो सब कुछ खरीदा जाता है किश्तों पर"।[16]

प्रवासी कविता की विशेषताएं :–

कई ऐसे कवि है जिनके काव्य रचनाएं भारतीय संस्कृति को नए प्रतिमान से जोड़कर समसामायिक और ओर प्रासंगिक बनाती है। इस प्रकार इन प्रवासी कवियों ने भारत से बाहर हिन्दी भाषा को जीवंत बनाएं रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रवासी हिन्दी कविता के इस वैशिष्ट्य बोध का पीयुष कुमार द्वेदी अपने आलेख 'कविता का प्रवासी स्वर–संदर्भ : गिरमिटिया देश मॉरीशस और फीजी' में उद्घाटित करते हैं, – "वास्तव में अपने देश से दूर 'विदेश' में रहकर अपने द्वारा रचित कविताओं की कुछ नितांत निजी विशेषताएं हैं। यह प्रवासी साहित्य हम जैसे भारतीय लोगों को अपने राष्ट्र के बारे में सोचने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। ये कविताएं केवल अपनी मातृभूमि से दूर रहने की व्यथा भर कथा नहीं बतलाती, न ही वहां की सामाजिक–सांस्कृतिक भिन्नता को रेखांकित करती हैं अपितु अपने पूर्वजों की संचित जातीय स्मृति को भी ताजा करती है।

निष्कर्ष :–

अतः प्रवासी साहित्यकारों की साहित्यिक परंपरा हिन्दी साहित्य को समृद्ध और विकसित बनाने में अपनी भूमिका अदा करते हुए विदेशी धरती पर अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों को कायम कर रख रही है। हिन्दी भाषा के वैश्विक संदर्भ के विषय में डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय कहते हैं –"यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती हिन्दी हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिन्दी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्व भाषा का गंगा सागर बनाने की प्रक्रिया में है। वो दिन दूर नहीं जब प्रवासी साहित्यकार अपनी सृजानात्मक लेखनी से हिन्दी को वैश्विक पाठकों तक पहुंचाते हुए ऊंचे सिंहासन पर विराजमान कर गौरवान्वित करेंगे।"

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1,2,3. (अभिमन्यु अनत की कविताएं – कविता कोश)
1. निशुल्क मौत, 2. खाली पेट (नागफनी की उलझी सांसे– कविता संग्रह से)
3. इंद्रधनुष का देश" (गुलमोहर खौल उठा– कविता संग्रह से)।
4. सत्येन्द्र श्रीवास्तव – "सर विंस्टन चर्चिल मेरी मां को जानते थे" –(सत्येन्द्र श्रीवास्तव की कविताएं – कविता कोश)
5. तरक्की पर भारत– (दिव्या माथुर की कविताएं – कविता कोश)
6,7. अनूप भार्गव की कविताएं – कविता कोश।

(6) अनुभूतियां – गर्भनाल– प्रवासी भारतियों की मासिक ई– पत्रिका, (7) सुनो –
8,9. (8) तत्र गंधवती पृथ्वी – (9) मैं चल तो दूं– (डॉ. कविता वाचक्नवी– कविता कोश)
10,11. अमरीका में ब्याहने की कीमत अदा करने!" और "वे चाहती है लौटना "(अंजना सुधीर–कविता कोश
12. आसमान पर बिंदी – (पूर्णिमा वर्मन – कविता कोश)
13–14. अब उठो कुंठा बुहारो और कटी पतंग (डॉ. मृदल कीर्ति – कविता कोश)
15. https://charagedil.wordpress.com/2012/03/10 (डॉ. सरिता मेहता)
16. https://charagedil.wordpress.com/2012/03/10 (सुधा ओम टोंगरा)
विकिपिडिया।

Contact No – 9500855311
E mail id – devika@ajkcas.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 260-266

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी कविता में राष्ट्र

कमला नरवरिया

सहायक प्राध्यापक (हिंदी), एम. जे. एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालयं भिंड।

शोध सारांश :-

राष्ट्र का प्रश्न मनुष्य की अस्मिता से जुड़ा है। यही वजह है कि मनुष्य द्वारा अपना गाँव ,शहर और देश को छोड़ने पर भी वह अपना राष्ट्र को नहीं छोड़ पाता है क्योंकि देश का संबंध उस देश की भौगोलिक सीमाओं से होता है जबकि राष्ट्र का संबंध उस देश की जनसमूह की भावनाओं से होता है। यही कारण है कि देश छोड़कर अन्यंत्र बसने पर भी उसका राष्ट्र के प्रति प्रेम कम नहीं होता है अपितु बढ़ता जाता है। निश्चित ही राष्ट्रवाद की भावना को एक निश्चित सीमा में बांधा नहीं जा सकता। इसका संबंध तो भोगौलिक सीमाओं से परे मानव मन की भावनाओं से होता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए राष्ट्र के प्रति भावनाएं अलग–अलग हो सकती है। परन्तु मूल एक ही है अपने देश अपनी मातृभूमि से प्रेम करना। उस पर गौरवान्वित महसूस करना। इस प्रकार हम राष्ट्र को एक निश्चित शब्दों में परिभाषित नहीं कर सकते है। परन्तु उच्च नैतिक मूल्य, कर्तव्य परायणता और ईमानदारी जैसे गुण राष्ट्र प्रेम की भावना को मजबूत करते है।

यही वजह है कि प्रवासी लोग जब अपने देश की भौगोलिक सीमाओं को छोड़कर दूसरे देश में जाते है तो वह अपने मन की गठरी में अपने देश की संस्कृति और संस्कारों को भी बांधकर ले जाते है। इसीलिए हम देखते हैं कि प्रवासी साहित्यकार जब अपने साहित्य में अपने राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करता है। तो अपने देश से दूर होने की बैचेनी पीड़ा और छटपटाहट और देश के प्रति लगाव की झलक उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई पडती है। तेजेंद्र शर्मा, सुधा ओम ढींगरा, अंजना संधीर, शशि पाधा, अभिमन्यु अनंत, सत्येंद्र श्रीवास्तव, दिव्या माथूर, डॉ मृदुल कीर्ति, अनूप भार्गव, पूर्णिमा वर्मन, मोहन राणा इत्यादि प्रवासी साहित्यकार ने अपने साहित्य में कविताओं के माध्यम से राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं में प्रकट किया है। विदेश में रहने के बावजूद ये कवि अपने देश के प्रति सरोकार रखते है। वे देश मे घटित घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते है और वह अपने आक्रोश और अपनी चिंताओं को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करते। ये प्रवासी साहित्यकार विदेश में रहकर भी भारतीय संस्कृति के पुरोधा और संरक्षक बने हुए है और हिंदी को वैश्विक भाषा का दर्जा दिलाने में इनकी साहित्य साधना को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

शब्द कुंजी :- वैश्विक, प्रवासी, राष्ट्र, साहित्य इत्यादि।

प्रस्तावना :-

हिंदी कविता का फलक अत्यंत विस्तृत है और प्रवासी हिंदी कविता उसी फलक का एक अंश है। प्रकृति

चित्रण, ईश्वर भक्ति और राष्ट्र प्रेम सदैव से कविता के विषय रहे है। लेकिन राष्ट्र प्रवासी हिंदी कविता का एक प्रमुख स्वर रहा है। राष्ट्र एक जटिल विषय है और आज के दौर में राष्ट्रवाद शब्द का अर्थ अनेक रूपों में हो रहा है अक्सर हम राष्ट्र और देश दोनों को एक ही समझ लेते हैं जबकि दोनों सर्वदा अलग–अलग शब्द है देश का संबंध उस देश की भौगोलिक सीमाओं से होता है जबकि राष्ट्र का संबंध उस देश की जन समूह की भावनाओं से होता है। राष्ट्र का संबंध उस देश के लोगों की भावनात्मक सांस्कृतिक एकता और सभ्यता से है जो उस देश के जनसमूह को एकता के सूत्र में बांधती है। अब हम बात करते हैं कि क्या राष्ट्र को एक निश्चित सीमाओं में बांधा जा सकता है? अगर कोई व्यक्ति अपने देश से दूर जाकर दूसरे देश में किन्ही कारणों से बस जाता है। तो क्या उस व्यक्ति का अपने देश के प्रति प्रेम या देशभक्ति कम हो जाती है? क्या वह व्यक्ति राष्ट्रवादी नहीं रह जाता है? ऐसे अनेक प्रश्नों का जवाब हमें प्रवासी हिंदी कविता में पढ़ने और देखने को मिल जाता है। कई प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने इस ज्वलंत मुद्दे को अपनी कविताओं में बार–बार उठाया है।

वर्तमान समय में प्रवासी हिंदी कविता वैश्विक स्तर पर हिंदी को समृद्ध बनाने का कार्य कर रही है। प्रवासी हिंदी साहित्यकार जो विश्व के कई देशों में फैले हुए हैं। जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, खाड़ी देश, डेनमार्क और मॉरीशस आदि प्रमुख हैं। इन अलग–अलग देशों में बसे प्रवासी हिंदी साहित्यकार निरंतर हिंदी की साहित्य साधना में लगे हुए हैं। विदेशों में जाने वाले भारतीय वहां केवल शारीरिक रूप से नहीं जाते हैं बल्कि अपने भौतिक सामान के साथ–साथ वह अपने मन की गठरी में चुपचाप अपनी संस्कृति, जीवन मूल्य और परंपराएं भी बांध के ले जाते हैं और विदेशी भूमि पर बड़े ही यत्न से इस धरोहर के संरक्षण और संवर्धन में जुटे रहते हैं।

अतः राष्ट्रप्रेम की भावना को एक निश्चित सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की राष्ट्र के प्रति भावनाएं अलग अलग हो सकती है परंतु मूल एक ही रहता है अपने देश अपने मातृभूमि पर गौरवान्वित महसूस करना। वैसे भी जिस देश के नागरिकों में राष्ट्रप्रेम की भावना जितनी ज्यादा प्रबल होती है। वह देश उतना ही उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।

इस संदर्भ में हमें राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत प्रवासी कवियत्री शशि पाधा की कविता याद आती है

“हम लौटे कल या ना लौटे
न आंच तिरंगे पर आएगी
इस मातृभूमि के चरणों में
चाहे जान हमारी जाएगी
है अमृत का वरदान मुझे
यह बात उन्हें बतला देना
ऐसे जांबाज वीरों का हमारा नमन

राष्ट्रप्रेम की भावना से भरपूर यह कविता हमें देश पर मर मिटने के लिए हमारे मन मस्तिष्क को आंदोलित कर देती है इस प्रकार राष्ट्रप्रेम से भरपूर साहित्य प्रवासी हिंदी कविता में खूब मिलता है।

राष्ट्र पर विभिन्न विद्वानों का अलग–अलग मत है किसी के लिए राष्ट्र देश प्रेम है तो किसी के लिए नहीं जैसे फ्रेंच लेखक अलवेयर कामू राष्ट्रवाद को एक अलग नजरिए से देखते हैं उनके शब्दों में ‘मैं अपने देश को इतना प्यार करता हूं कि मैं राष्ट्रवादी नहीं हो सकता।’

इस प्रकार हम 'राष्ट्र' शब्द को एक निश्चित शब्दों में परिभाषित नहीं कर सकते है।

फिर भी उच्च नैतिक मूल्य, कर्तव्य परायणता और ईमानदारी जैसे गुण हमारे राष्ट्र प्रेम की भावना को और मजबूती प्रदान करते हैं। प्रवासी साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावना को अपनी कविता में विविध रूपों में चित्रित किया है।

जब उच्च आदर्शों और जीवन मूल्य की बात चले तो हमें प्रवासी कवि अमरेंद्र कुमार की कविता याद आती है।

''ऊंचे आदर्शों के उतंग शिखरों से
कवि निकले तेरी ऐसी कविता धारा
फोड़कर संकुचित कवि के पाषाणों को
बहा ले जाये कलुषित विचार धारा।''

वही प्रवासी हिंदी कवियत्री अंजना संधीर अपनी कविता 'अमरीका हड्डियों में जम जाता है' में विदेश में बसने वाले प्रवासियों को यहां की सुविधाभोगी संस्कृति के प्रति चेतावनी देती हुई कहती है :—

''अमरीका जब साँसों मे बसने लगे
तुम उड़ने लगो, तो सात समुंदर पार
अपनों के चेहरे याद रखना
जब स्वाद में बसने लगे अमरीका
तब अपने घर के खाने और मां की रसोई याद करना
सुविधाएं मे असुविधाएं याद रखना
यही से जाग जाना........
संस्कृति की मशाल जलाए रखना
अमरीका को हड्डियों में मत बसने देना
अमरीका सुविधाएं देकर हड्डियों में जम जाता है।''

इसी प्रकार अपनी संस्कृति और जड़ों को तलाश करती इला प्रसाद की कविता 'प्रवासी का प्रश्न' हमारे द्वारा अपने जड़ो और संस्कृति के भूलते जाने के दर्द को प्रस्तुत करती हैं :—

''हम जो चले गए थे
अपनी जड़ों से दूर
लौट रहे हैं वापस
अपनी जड़ों की ओर
और हैरान है देखकर
कि तुमने तो हमारी शक्ल अख्तियार कर ली है
अब हम अपने को कहां ढूंढे।''

परदेश मे रहने पर भी देश भूलाये नहीं भूलता है वो तो हमारे हृदय में बसता है। तभी तो कवियत्री सुधा ओम ढींगरा अपनी कविता 'देस की छाँव' में कह उठती है :—

''साजन मोरे नैना भर भर है आवे
देस की याद मे छलक छलक है जावे।
याद आवे
वो मंदिर
वो गुरुद्वारा
वो धर्मशाला
वो पुराना पीपल का पेड़
जिस तले बैठ
कच्ची अम्बियाँ थी खाई
जेठ की भरी दुपहरी में
नंगे बदन
सँकरी गलियों में
दौड़ थी लगाई
सावन की झड़ी में
तेज फुहारों मे
भीग भीगकर
मंदिर का दिया था जलाया
हाँ साजन
मोरे नैना भर भर है आवे
देस की याद में छलक छलक है जावे।''

परदेश में रहते हुए प्रवासी मन को कभी शहर याद आता है तो कभी गांव याद आता है तो कभी खेत खलिहानों और पेड़ों पर बैठी कोयल की बोली याद आती है। तभी तो पूर्णिमा वर्मन ने अपनी कविता 'कोयलिया बोली' में कह उठती है :–

''शहर की हवाओं
कैसी आवाजें है
लगता है
गाँवों मे कोयलिया बोली
नीलापन हँसता है
तारों में
गगन की घटाओं में
कैसी रचनाएँ है
लगता है
धरती पर फगुनिया होली

सड़कों पर नीम झरी
मौसम की
उड़ परी
धरती के आंचल मे।
हरियल मनुहारें है
लगता है
यादों ने कोई गाँठ खोली।''

प्रवासी भारतीय विश्व के किसी भी देश के कोने में रहते हो लेकिन वो अपनी जड़ों को कभी नहीं भूलते है। देश की मिट्टी की खुशबू सदैव उनके मन में बसी होती है। देश की उसी सौंधी मिट्टी की गंध को याद करती हुई देवी नागरानी ''अपने वतन की खुशबू'' कविता में व्यक्त करते हुए कहती है :—

''बादे सहर वतन की, चंदन सी आ रही है
यादों के पालने में मुझको झुला रही है।
ये जानकर भी अरमां होते नहीं है पूरे
पलकों पे ख्वाब देवी फिर भी सजा रही है।
कोई कमी नहीं है हमको मिला है सब कुछ
दूरी मगर वतन से मुझको रुला रही है।
पत्थर का शहर है ये, पत्थर के आदमी भी
बस खामशी ये रिश्ते, सब से निभा रही है।
शादाब मेरे दिल में इक याद है वतन की
तेरी भी याद उसमें, घुलमिल के आ रही है।
देवी महक है इसमें, मिट्टी की सौंधी सौंधी
मेरे वतन की खुशबू, केसर लुटा रही है।

वहीं लंदन में रहने वाले प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा अपनी कविता 'मेरे पासपोर्ट के रंग' में दूसरे देश की नागरिकता ग्रहण करने पर अपने देश प्रेम पर ऊंगली उठाने वालो से प्रति प्रश्न करते है कि पासपोर्ट का रंग बदल जाने से क्या उनका देश के प्रति प्रेम नही रह जाता है।

''मेरा पासपोर्ट नीले से लाल हो गया है
मेरे व्यक्तित्व का एक हिस्सा
जैसे कही खो गया है
मेरी चमड़ी का रंग आज भी वहीं है
मेरे सीने में वही दिल धड़कता है
जन गण मन की आवाज आज भी
कर देती है मुझे सावधान
और मैं आराम से एक बार फिर

बैठ जाता हूँ सोचना जैसे टल जाता है

कि पासपोर्ट का रंग कैसे बदल जाता है।

वहीं अपनी दूसरी कविता 'टेम्स का पानी' कविता में वह दो देशों की संस्कृतियों व नदियों की तुलना कर जैसे अंर्तद्वंद से भर उठते है :—

''टेम्स का पानी, नहीं है स्वर्ग का द्वार।

यहां लगा है, एक विचित्र माया बाजार।।

पानी है मटियाया,गोरे है लोगों के तन।

माया के मकडज़ाल मे, नहीं दिखाई देता मन।।

टेम्स कहां से आती है, कहां चली जाती है।

ऐसा प्रश्न हमारे मन में नहीं जगा पाती है।।

टेम्स बस है! टेम्स अपनी जगह बरकरार है।

कहने को उसके आसपास कला और संस्कृति का संसार है।।

टेम्स कभी खाड़ी है कभी सागर है।

उसके प्रति लोगों के मन में, न श्रद्धा है न आदर है।।

बाजार संस्कृति में नदियां, नदियां ही रह जाती है।

बनती है व्यापार का माध्यम, मां नही बन पाती है।।

टेम्स दशकों, शताब्दियों तक करती है गंगा पर राज।

फिर सिकुड़ जाती है, ढुंढती रह जाती है अपना ताज।।

टेम्स दौलत है, प्रेम है गंगा; टेम्स ऐश्वर्य है भावना गंगा।

टेम्स जीवन का प्रमाद है, मोक्ष की कामना है गंगा।।

जी लगाने के कई साधन है टेम्स नदी के आसपास।

गंगा मैय्या मे जी लगाता है, हमारा अपना विश्वास।।

वहीं पुष्पिता अवस्थी अपनी कविता सूरीनाम नदी तट पर गंगा में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहती है—

''एक नदी से

मिलती है एक नदी

और खामोश हो जाती है।

नदी की आंखों में

देखती है एक नदी

और रो पड़ती है।

नदी बहकर आती है

और बहाकर ले जाती है आंखों को

मन की नदी की ओर।

सूरीनामी नदी

आंखो मे समा जाती है
मन के समुंदर मे
गंगा की तलाश में।

सूरीनामी नदी
शब्द नही की तरह मिलती है
और अर्थ सरिता की तरह मिल जाती है
मन की गंगा में
गंगा होने के लिए।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रवासी हिंदी साहित्यकारों में चाहे तेजेंद्र शर्मा हो, दिव्या माथुर हो, इला प्रसाद हो या अमरेंद्र कुमार हो या अन्य कोई भी प्रवासी साहित्यकार सभी ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के उदान्त तत्व के प्रति गहरी आस्था और विश्वास को उकेरा है। इसीलिए इन सभी के काव्य की पृष्ठभूमि में सदैव भारत और भारत से संबंधित विषय रहे है। चाहे वो आजादी से पहले का भारत हो या आज का आधुनिक भारत।

निष्कर्ष रूप से प्रवासी हिंदी कविता ने राष्ट्रवाद की भावना को विभिन्न रुपों मे चित्रित किया है साथ ही इन प्रवासी कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से नवीन मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करके राष्ट्रप्रेम की भावना को मजबूत करने का कार्य किया है।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 267-268
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य में व्यक्तित्व विघटन की समस्या

डॉ. काकानि श्रीकृष्ण, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
आचार्य नागार्जुना विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर, गुन्टूर–522510
जे. कृष्णवेणी, प्राध्यापिका,
के.एस.एन.सरकारी महिला महाविद्यालय (स्वायत्त), अनंतपुरम।

उषा प्रियंवदा जी ने अपने उपन्यासों में यदा–कदा व्यक्तित्व विघटन का वर्णन किया है। विदेशी भूमि पर प्रवासी जब कुण्ठा, हीन भावना, निराशा से घिर जाता है और अपने आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढाल नहीं पाता है तो उसका व्यवहार असमान्य हो जाता है।

''शेषयात्रा'' नामक उपन्यास की अनु में व्यक्तित्व विघटन को दर्शाया गया है। प्रणव जब उसे छोड़कर चला जाता है और वह परदेश में हमेशा अकेली हो जाती है तो वह अपने आपको सम्भाल नहीं पाती है। पीड़ा, वेदना, निराशा कुण्ठा, अपमान के दशों से उसका अस्तित्व बिखर जाता है। विदेश में जीवनयापन की समस्या, भविष्य की चिन्ता, अपमान आदि से वह टूट जाती है। इस प्रतिकूल परिस्थितियों में वह असामान्य व्यवहार करने लगती है।

''अनु जैसे सचमुच अपने दिल का टूटना सुन सकती है। वह मुट्ठियों से अपने बाल कस कर पकड़ लेती है। फिर चीख उठती है। वह मेज से पूरी ट्रे उठाकर पूरे जोर से नीचे पटक देती है। जिस चीज पर हाथ जाता है, उसी को बिना सोचे, तोड़–फोड़, फेंक–फॉंक, तहस–नहस करती जा रही। वह पहनी हुई साड़ी को नोंचकर उसकी धज्जियां बिखेर देती है। प्रणव सामने पड़ता तो शायद उसका खून कर देती। नीरजा के बच्चे का गला दबा देती। डॉक्टर विभा को मार देगी, फिर खुद भी मर जाएगी। वह दीवार से बार–बार सिर टकराती है। पूरा घर पागल चीखों से गूँज रहा है, चीखों पर चीखें।''(1)

जब दुःखों के सैलाब टूट पड़ता है तो अपने आपको संतुलित रखना बहुत कठिन होता है। अनु विदेश में अकेली है। उसके साथ हुए अन्याय को देखकर प्रणव को समझाने या उसे सांत्वना देने वाला कोई नहीं है। अनु की कुण्ठा, भय और अपमान उसके व्यक्तित्व विघटन के कारण है। अनुप्रणव को सामने देखकर अनियंत्रित हो जाती है, उसके अन्दर एक तूफान–सा उठने लगता है। मन में भरा मलाल शब्दों के रूप में आने लगता है– ''तुम? तुम खुद बदचलन हो, गुंडे हो, आवारा हो ...... तभी तो रंडियों से फँसे हुए हो, अनु के मूंह से शब्द नहीं निकल पा रहें ये थू'' तुम पर ....'' अनु ने उसकी बाँह में दाँत गड़ा दिया।(2)

''रूकोगी नहीं राधिका, उपन्यास में राधिका में भी व्यक्तित्व विघटन को दिखाया गया है। वह परदेश में रह चुकी है। अमेरिकन विचारों से प्रेरित है। स्वच्छंद रहना उसकी मानसिकता है। जब परिवार के लोग उस पर

शादी करने का दबाव डालते हैं तो वह फूट पड़ती है। क्रोध में वह अपने बड़ों का लिहाज भूलकर ऊँची आवाज में बात करती है।'' ''जो आप चाहते हैं वही हमेशा क्यों हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं? मैं आपकी बेटी हूँ, या ठीक है, पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ और मैं जो चाहूँगी वहीं करूँगी। बस बहुत हो चुका। आपने अपनी इच्छाओं के सामने कभी मेरी खुशी का ख्याल नहीं किया। बस, अब आप सब लोग मुझे अकेला छोड़ दो।[3] राधिका इलक्ट्रा कॉप्लेक्स से ग्रसित है। वह हर पुरूष में अपने पिता की छवि ढूँढती है। इसलिए किसी भी पुरूष का साथ उसे भाता नहीं है।

''पचपन खंबे लाल दीवारें'' नामक उपन्यास की सुषमा प्रवासी जिन्दगी बिता रही है परिवार के निर्वाह के लिए अकेली शहर में रहकर नौकरी कर रही है। जब उस पर परिवार का बोझ बढ़ जाता है और अपने जीवन की रिक्तता कचोटने लगती है, तब वह अपना संतुलन खो बैठती है। उसके बोल कर्कश हो उठते हैं और उसकी त्रासदी का कारण अपनी माँ को ठहराती है। ''अभी कौन दुःख है, भूखी रहती है या तन ढंकने को कपड़े नहीं है? मैं कुँवारी रह गई तो कौन–सा आसमान फट पड़ा। इन दोनों को भी अगर शादी न हो सकी तो क्या हो जाएगा।''[4] सुषमा जब अपनी तमन्नाओं और सपनों को पूरा नहीं कर पाती है। तब तनावग्रस्त हो जाती है। जब उसके सपनों को दबाया जाता है। तब वह असामान्य व्यवहार करने लगती है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में व्यक्तित्व विघटन की कुछ समस्याओं को पात्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। विदेशी भूमि पर अकेलापन, ऊब, निराशा के कारण प्रवासी भारतीय अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझ रहे हैं।

सहायक ग्रंथ सूची :–

1. शेष यात्रा, उषा प्रियंवदा, पृ. सं : 55
2. शेष यात्रा, उषा प्रियंवदा, पृ. सं : 64–65
3. रूकोगी नहीं राधिका, उषा प्रियंवदा, पृ. सं : 52
4. पचपन खंभे लाल दीवारें, उषा प्रियंवदा, पृ. सं : 102

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 269-272
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Exploring the Unique Features of "Pravasi Hindi Sahitya Ki Visheshataem : Ek Parisilan"

Dr. T. Sai Sankar

Introduction :-

Ever wondered what makes Pravasi Sahitya ki Visheshataem so unique and special in the landscape of Hindi literature\ Are you a literature enthusiast trying to delve deeper into the core attributes of Pravasi Sahitya\ Marked by an array of vivid impressions, our journey into the rich tapestry of Pravasi Sahitya ki Visheshataem (migrant literature's features) focuses on key characteristics which position it as a novel genre in the wide spectrum of Hindi Literature (Hindi Sahitya). Let's embark on this descriptive exploration. Pravasi Sahitya ki Visheshataem refers to the unique characteristics of migrant literature in Hindi, mirroring the emotional patterns, experiences, and thought processes of emigrants. The term 'Pravasi' denotes a migrant while 'Sahitya' translates to literature and 'Visheshataem' embodies features or attributes.

The main asset of Pravasi Sahitya shines through its candid celebration of human mobility and diversity. It exceeds geographical borders, cultures and languages, constituting a rich tapestry of thoughts and experiences. Each thread that makes up this tapestry illustrates a unique story. The love, the despair, the conflicts, and the joys that migration brings all play out prominently here.

The phrase 'Pravasi Sahitya Ek Parisilan' gets broken down to analogizing migrant literature through 'Ek Parisilan' or a comprehensive analysis. By amalgamating these terms, we commit to deep dive research into migrant literature. Hence, when we talk about 'Pravasi Sahitya Ek Parisilan', we immerse ourselves in the intimate process of examining and interpreting migrant literature, drawing inspiration from the 'migrated' metaphor of the term. The journey isn't always a joyride. It can get daunting, teeming with contradictions and cultural tensions. But, heads up—the strength of migrant literature lies in seamless story-weaving, offering insights into resilience amidst adversity. So, the question arises—why exactly do we need to undertake 'Pravasi Sahitya Ek Parisilan'? The answer is simple. Such in-depth reviews provide us with a wholesome understanding of the stories behind

respective cultures and societies, fostering mutual regard and acceptance.

Pravasi Sahitya Ek Parisilan is more than an academic endeavor—it's the sensation of being entranced in a voyage, piecing together a puzzle, delving into diverse narratives. It's about appreciating the significance of discourse, culture, and literature in shaping societal mindsets.

Pravasi Sahitya Ek Parisilan translates into a journey—one that transcends the confinement of physical boundaries and traditional literature. Going beyond mere critique and analysis, the term underscores a form of literature where belonging supersedes borders, the spirit of humanity outlives adversity, and a shared universal camaraderie undersigns the beautiful madness we call life.

Meta-Description :

Discover the intriguing journey of migrant literature in 'Pravasi Sahitya Ek Parisilan', an in-depth exploration of displaced artistry. Tune in for a blend of emotions, experiences, and enlightenment. Your culture compass is taking off; hoponboard.

Ek Parisilan : A Comprehensive Analysis :-

'Ek Parisilan', when translated from Hindi to English, means 'a comprehensive analysis'. In our context, it refers to thorough research on migrating literature. Enlightening isn't it? Now, let's unearth its relevance in relation to Pravasi Sahitya.

The Realism of Pravasi Literature :-

Pravasi Sahitya anchors strongly to realism. As voyages of people naturally encompass life as it is—raw and unfiltered, Pravasi Sahitya presents a hyper-realistic portrayal of human existence. It isn't a painted picture, rather it's a lived experience, making it punchy and persuasive.

Ring of Universal Truths :-

What makes Pravasi Sahitya universally appealing? It contains an inherent ring of truth! Through might and main, this form of writing strives to transcend specific cultural contexts to touch everyone's hearts equally. Doesn’t that make it an appealing genre?

Thread of Cultural Fusions :-

Pravasi Sahitya breeds a unique environment where cultures meld, languages interweave, and traditions resonate freely. The result? A beautiful fusion of diversity. It becomes less about the 'origin' and more about the 'odyssey', it advocates all for a global humanity.

A Reflection on Contemporary Issues :-

Are you aware of the contemporary issues the world grapples with? Pravasi Sahitya does its part to reflect on these pressing matters. Contemporary concerns—social, political, or economic, are presented through the distinct lens of migrants. This mirrors an often overlooked section of society directly on to the larger canvas.

Prisma of Individual and Collective Consciousness :-

By blending individual and collective experiences, Pravasi Sahitya presents a prismatic view of the human psyche. Aren't we all parts of a larger whole? This poignant realization rings true in every word of Pravasi Sahitya.

Pravasi Sahitya ki Visheshataem - A Definitive Overview :-

Put simply, Pravasi Sahitya revolves around individuals who have migrated from their native lands, encapsulating their complex journeys, struggles, achievements, and emotional turmoil. But, what makes it unique from other literature forms.

Cultural Diversity & Hybrid Identity :-

One of its core distinctive attributes is the colorful depiction of cultural diversity and the evolution of a hybrid identity. Pravasi writers, with their diasporic journeys vested with varied cultural practices, blend foreign themes with their indigenous roots.

Highlighting Migration Issues :-

Secondly, this form of literature lays out the gritty, raw experiences of emigrants. Issues arising from displacement, assimilation, and identity conflict constitute the central themes.

Linguistic Innovations :-

Did you know that Pravasi Sahitya ki Visheshataem also marks linguistic innovations? Yes, fusing a range of dialects results in a unique linguistic weave, making it a culturally enriched literature form. Perhaps, this raises a question: How does Pravasi Sahitya influence Hindi Sahitya?

Pravasi Sahitya and Hindi Sahitya - A Symbiotic Connection :-

Pravasi Sahitya has remarkably transformed and expanded the contours of Hindi Sahitya. Through its cross-cultural themes and vivid characterizations, it has enriched the thematic diversity and stylistic expressions of Hindi literature.

Expansion of Themes :-

The experiences encapsulated in Pravasi literature weave a novel narrative expanding the thematic repertoire of Hindi Sahitya.

Recreating Linguistic Boundaries :-

Pravasi Sahitya, with its linguistic blend, breaks the borders of conventional Hindi language structure. In conclusion, with its cross-cultural themes, depiction of migrant experiences, linguistic innovations, Pravasi Sahitya ki Visheshataem offers a richly textured odyssey to the reader, expanding the traditional Hindi Sahitya landscape.

Conclusion :-

In essence, 'Pravasi Sahitya ki visheshataem' treads a unique path, a path that opens windows to

worlds unknown. In each journey, each destination, each transition, Pravasi Sahitya captures a gamut of emotions and experiences that resonate with readers around the globe. The unique features of migrant literature in Hindi, its influence on Hindi Sahitya, and its role in transforming and enriching Hindi Literature.

Reference :-

1. अप्रवासी, मंजु कपूर, रैण्डम हाउस इंडिया, नोएडा, 2009
2. हिंदी का प्रवासी साहित्य, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रथम संस्करण 2011, अमित।
3. दिशाएँ बदल गई, नरेश भारतीय, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2014
4. प्रवासी साहित्य की अवधारणा व इतिहास की समझ का मूल्यांकन।
5. प्रवासी साहित्य के कथा साहित्य की कृतियों का मूल्यांकन।
6. अन्य प्रवासी साहित्य की समझ का मूल्यांकन।
7. प्रवासी हिंदी एव प्रवासी साहित्य के अन्तर सम्बन्ध, कुमार, — (Wednesday, 12 December, 2012) http://vishvambharaa-blogspot-in/2012/12/Hindi&literature&in&othercountries-html December
8. Melvin Ember, Carol R. Ember and Ian Skoggard, ed. (2004). Encyclopedia of Diasporas: Immigrant and Refugee Cultures Around the World. Volume I: Overviews and Topics; Volume II: Diaspora Communities. ISBN 978-0-306-48321-9
9. https://www.vocabulary.com/dictionary/diaspora
10. http://www-sahityakunj-net/LEKHAK/S/ShailjaSaksena
11. https://vaatayan.blogspot.in/2011/02/blog-post_4185.html

Dr. T. SAI SANKAR,

9-5-23, 4 LINE, RAIL PET, GUNTUR (P.O) GUNTUR (D.t)

Cell 9440681862

Mail- saisanker2011@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 273-276

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सुषम बेदी के कथा-साहित्य में प्रवासी जीवन-संघर्ष

डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी
हिन्दी विभागाध्यक्ष, संत जोसफ महिला महाविद्यालय, विशाखापट्टनम।

हिन्दी की प्रसिद्ध संवेदनशील लेखिका सुषम बेदी ने प्रवासी समाज कोआधारबनाकर अपने कथा साहित्य में उसका सजीव और सहज चित्रण किया। उनके साहित्य में सृजित कथा वस्तु जीवन के यथार्थ पर आधारित है। सुषम बेदी की रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते दक्षिण एशियाई देशों के नागरिकों, विशेषतः प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वंद्व का बखूबी उल्लेख पाया जाता है। सुषम बेदी ने अपनी कहानियों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य को पहचान दिलाने का यथेष्ट प्रयास किया।

प्रवासी होने के नाते सुषम बेदी ने अपनी रचनाओं में यत्र तत्र अपनेजीवन के अनुभव को प्रस्तुत किया है। अपना सुख लिखने के साथ–साथ प्रवासी होने के दंश को भी लेखन का विषय बनाया। इस प्रकार के साहित्य से लोगों को विदेश की समस्याओं से जागरूक किया तथा वहाँ की अच्छाइयों से भी परिचित कराया। खासकर उन्होंने प्रवासी जीवन के संघर्ष को बड़ी जीवंतता के साथ चित्रित किया है।

तनाव की स्थिति समाजिक विरोधों का मानसिक प्रतिबिंब होती है। आज विश्व के सभी देश में नस्लवाद ने एक उग्र रूप धारण कर लिया है। लगभग प्रत्येक प्रवासी भारतीय को इसे भोगना पड़ता है। विदेश में रहते प्रवासियों को नौकरी प्राप्त करते समय इस समस्या से जूझना पड़ता है। वैसे अंग्रेजों के पास नस्ली घृणा का कोई ठोस तार्किक आधार नहीं है फिर भी वे बार–बार उन्हें दबाने का प्रयत्न करते हैं। सुषम बेदी के 'हवन' उपन्यास में अणिमा को नौकरी लेते समय इसी भेदभाव की नीति का शिकार होना पड़ता है, किन्तु अपनी योग्यता के आधार पर वह नौकरी प्राप्त कर ही लेती है। यूनिवर्सिटी कैफेटेरिया में बैठी वह नौकरी पाने के सारे संघर्ष की कहानी अपनी सहेली नजमा को सुनाती है। ''इस कालेज की नौकरी के लिए भी इंटरव्यू से पहले सब इसी तरह का शकमन में डाल रहे थे – ऐशियाई महिला और अंग्रेजी पढ़ाए अमरीकनों को। पर मेरे क्रेडेशियल सबसे बढ़िया थे। इनका खेल इन्हीं के पत्तों से खेलों, तब मिलती है सफलता।''

कई बार अपने आसपास व्याप्त नस्लवाद कायथार्थ रूप प्रवासी भारतीय उतनी गहराई से नहीं देख पाते जितना नौकरी पाते समय देखते हैं। उस समय नस्लवाद का घिनौना रूप सामने आता है। सुषम बेदी के 'लौटना' उपन्यास में एड मीरा से कहता है, ''तुम्हारी बात नहीं करता......क्योंकि तुम तो मुझे अच्छी लगती हो. .....पर यह नहीं कह सकता कि फर्क नहीं पड़ता। अभी हिन्दुस्तानी तो फिर भी यहाँ इतने ज्यादा आ गए हैं कि सारी इकानामी परबहुत बोझ डाल दिया है। नौकरियों के लिए प्रतियोगिता बढ़ती चली जा रही है। मँहगाई बढ़ रही है। एक तो सारे ऐशियाई आकर हमारी नौकरियां छीनते जा रहे हैं, ऊपर से हमीं पर जातीय वैमनस्य और

रंग भेद का आरोप लगाया जाता है। अपने देश में चाहे भूखों मरें, यहाँ आकर सभी अपने समान अधिकारों की बात करने लगते हैं।'' 'हवन' और 'लौटना' उपन्यास के माध्यम से सुषम बेदी ने नौकरी में नस्लवाद जैसी गम्भीर समस्या को उठाया है। प्रवासी भारतीय चाहे जितनी भी शिक्षा प्राप्त कर लें किन्तु नौकरी के समय उनके साथ भेदभाव की नीति को अपनाया जाता है। इस तरह की स्थिति उन्हें गहरी चोट पहुँचाती है। इस समस्या के कारण प्रवासी भारतीय हीन–भावना, बेगानापन और अजनबीपन के शिकार हो जाते हैं। इन उपन्यासों के पात्र अक्सर ही ऐसी स्थिति का सामना करते हैं परन्तु अपनी योग्यता केबल पर वे सफल भी होते हैं और अच्छी नौकरी प्राप्त करते हैं। सुषम जी की रचनाएँ मानवीय यथार्थ के भीतर मूल्यों को तलाश करती नजर आती हैं।

प्रवासी भारतीय विदेशी जीवन मूल्यों की ओर चिन्तित होता चला जाता है। एक तो वह अपने मूल से पूर्ण रूप से टूटने में असमर्थ होता है और दूसरी ओर प्रवासी होने की हालत में बेगानी संस्कृति को भी पूर्ण रूप में अपनाना उसकी मानसिक समर्थता से परे होता है। पश्चिम का राजनीतिक, नैतिक और आर्थिक ढांचा पूर्व से आए प्रवासियों को भीतर तक हिलाकर रख देता है। उसको कदम–कदम पर पूर्व के मानसिक मूल्य टूटते नजर आते हैं। दूसरी ओर जीवन स्तर ऊँचा करने के प्रयास में मशीनी जिंदगी जीने लगता है। इस स्थिति में वह टूटन का शिकार होता है। विदेशी जीवन की सुख समृद्धि ओर विदेशी लोगों के उच्च स्तरीय जीवन को देखकर प्रवासी भारतीयों के मन में हीनता की ग्रंथियां पनपती हैं। भारतीय गोरे लोगों के सामने स्वयं को हीन समझते हैं और अपनी इसी हीन भावना के कारण नस्लवाद के शिकार होते हैं। नस्लवाद के भय से बचने के लिए अनेक बार वे अपने आपको भारतीय नहीं कहलाते। 'हवन' उपन्यास की राधिका नस्लवाद के कारण हीन–भावना की शिकार है। उसने अपनी सहेलियों को अपना नाम लोरा बताया है। राधिका के साथ शापिंग करते हुए स्टोर में गीता को उसकी सहेली मिली तो अपना परिचय देते हुए गीता को मिसेज जोनसन नाम से संबोधित किया। आपको गलत फहमी हुई कि राधिका उन्हें टोककर टूटी–फूटी हिन्दी में समझाने लगी, ''ममी, वह तो मजाक में मैंने अपना नाम इन्हें लोरा जानसन बतला दिया था, करें क्या आपके हिन्दुस्तानी नाम किसी की समझ में नहीं आते। मुझे सब बुलाते थे–रै.....डि........खा इट इज सो फनी, इजंट इट!'' एस महसूस होता है कि सुषम बेदी का साहित्य फ्रायड की मनोवैज्ञानिक युक्तियों को आधार बनाकर चलता है। वे हीन भावना से उत्पन्न तनाव का चित्रण बड़ी कुशलता पूर्वक करती हैं।

सुषम बेदी के कथा–साहित्य में प्रवासी भारतीयों के जीवन–संघर्ष को देखा जा सकता है। प्रवासी भारतीय विदेश में वास करने के लिए अनेक साधनों का प्रयोग करते हैं। कुछ प्रवासी भारतीय कुशल श्रमिक होते हुए भी अक्सर अकुशल श्रमिक का काम करते हुए दिखाई देते हैं। लेखिका के कथा साहित्य में जीवनयापन के जिन साधनों का प्रयोग किया गया है वे दो तरह के हैं – निम्न स्तरीय जीविकोपार्जन के साधन और उच्च स्तरीय जीविकोपार्जन के साधन। भारतीय लोग अपने जीवन स्तर को ऊँचा करने के लिए विदेश पहुँचते हैं किन्तु जाते ही उन्हें ऊँची नौकरियाँ प्राप्त नहीं होती। इसका कारण शायद अल्प–शिक्षा और अंग्रेजी का अल्प–ज्ञान भी है। अपने जीवन को आर्थिक तंगी से बचाने के लिए प्रवासी भारतीयों को छोटी–छोटी नौकरियों में धक्के खाने पड़ते हैं। इनके अधिकतर काम मजबूरीवश होते हैं। भारत से ऊँची शिक्षा हासिल करके युवक–युवतियाँ विदेश आते हैं। शुरू–शुरू में उनके सपने ऊँची नौकरियों के होते हैं और इन्हें हासिल करने के लिए वे भागदौड़ भी बहुत करते हैं किन्तु जल्दी ही वे निम्न स्तरीय नौकरियों पर आ जाते हैं।

भारत की बेरोजगारी से तंग आकर ये विदेश पहुँचते हैं और हर तरह की नौकरी के लिए अपने–आपको तैयार कर लेते हैं। ''दीवाली थी न, कपड़े तो बढ़िया पहनने ही थे। खैर, अनुमान आपका भी ठीक ही है। मैं इंजीनियरिंग खत्म करके यहा तीन महीने के लिए ही आया था विजिटर वीसा पर। फिर मन हुआ यहीं क्यों न कोई न कोई नौकरी ढूंढ लू। हिन्दुस्तान में भी कोई ढंग की नौकरी तो मुझे मिली नहीं थी। इधर जहां–जहां भी पता लगाया, उन्होंने बिना वर्क परमिट के नौकरी देने से इनकार कर दिया। जिस रिश्तेदार के यहाँ टिका था उनकी सिफारिश पर एक हिन्दुस्तानी रेस्तरां में वेटर की नौकरी मिल गई। कुछ दिन तो मुझे मजा आया। पैसे भी मिलते थे और खाना रेस्तरां में मुफ्त हो जाता था। काम तो करीबदस–बारह घंटे करना पड़ता था पर एक दिन के पच्चीस डॉलर मिल जाते थे। एक–दो और हिन्दुस्तानी वेटर और कुक थे सो मन भी लग गया था। वे लोग भी गैरकानूनी तौर पर ही टिके थे यहा। एक दिन इमिग्रेशन वालों ने रेस्तरां पर छापा मारा और हम सब पकड़कर जेलों में डाल दिये गये।'

भाषा की समस्या के कारण भी प्रवासी भारतीय अच्छी नौकरियों से पिछड़ जाते हैं। छोटी उम्र में विदेश पहुँचे बच्चे तो बहुत जल्दी अंग्रेजी सीख जाते हैं किन्तु बड़ों को अंग्रेजी पकड़ने में समय लग जाता है। यही कारण है कि अच्छी नौकरियों के अवसर हाथ से निकल जाते हैं। अंग्रेजी भाषा के अल्प ज्ञान के कारण प्रवासी भारतीय हीन–भावना का शिकार हो जाते हैं किन्तु फिर भी इसी हीन–भावना को मन में समाए वे संघर्ष जारी रखते हैं। ''नौकरी के लिए गुड्डों को बहुत ठोकरें खानी पड़ीं। जिस मध्यम किस्म की तनख्वाह की उम्मीद उसे थी वैसी नौकरियों पर उसे हर दफ्तर से अस्वीकार ही मिला। एक–दो जगह उसे महसूस हुआ कि यह उसकी अंग्रेजी का हिन्दुस्तानीपन भी शायद अखरता है क्योंकि एक दो जगह पर इंटरव्यू लेने वालों ने उससे बार–बार वाक्य दुहराये। पर गुड्डों जब अमरीकनों की तरह लफ्जों को खींचकर 'आ' को 'ऐ' जैसे कि 'कांट' को 'केंट' या 'आर नाट' को 'एंट' कहती थी तो अपनी आवाज परायी और उपहास जनक–सी लगती थी। मन में भाषा का यह दोगलापन नहीं कचोटता। क्योंकर उसे दूसरों की नकल करनी पड़ रही है? अपना बोलचाल का सहजपन भी बरकरार नहीं रख सकती। सुषम बेदी ने अपने कथा–साहित्य में जीवनयापन के निम्न स्तर के साधनों की यथार्थ अभिव्यक्ति की है और उसमें सफल भी हुई हैं।

प्रत्येक युग में, प्रत्येक समाज में और संस्कृति में पहली और दूसरी पीढ़ी के बीच अंतर अनिवार्य होता है। इस तनाव का घोर संकट वर्तमान में प्रवासी भारतीयों पर छाया हुआ है। यह संकट उस समय और भी गहरा जाता है, जब विदेश में जन्मी और पली पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा करती है। माता–पिता की पुरानी सोच अपने बच्चों की मशीनी माहौल से संबंधित सोच पर हावी नहीं होती। माता पिता के मूल्य, जाति–पाति, धार्मिक और सामाजिक मूल्य नई पीढ़ी के मन को नहीं भाते। नई पीढ़ी अपने बनाए मूल्यों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। ऐसी स्थिति में दो पीढ़ियों के बीच फासला बढ़ता ही जाता है। यह पीढ़ीगत अंतर का तनाव अपनी चरम सीमा पर तब पहुंचता है जब प्रवासियों की नई पीढ़ी पूर्ण तौर पर विदेशी संस्कृति को अपना लेती है। सुषम बेदी ने अपने कथा साहित्य में इस समस्या से जूझ रहे प्रवासियों की मानसिकता को सूक्ष्मता से व्यक्त किया है। इनके कथा साहित्य में दो पीढ़ियों का टकराव दिखाई देता है और इस द्वन्द्वात्मक खींचातानी में दूसरी पीढ़ी की पहली पीढ़ी पर विजय दिखाई है और इसके फलस्वरूप पहली पीढ़ी का तनाव व्यक्त किया है। जहाँ पहली पीढ़ी की विजय नहीं होती तो उनकी निराशा, उदासी, कुंठा और तनाव को व्यक्त

किया है।

सुषम बेदी ने उस सामाजिक यथार्थ के भाव बोध को पकड़ने की कोशिश की है जिसमें मनुष्य का विश्वास उसके आसपास निर्मित आर्थिक ढाँचे की कुरूपता के तौर पर उपजता है। सुषम बेदी का कथा–साहित्य पश्चिमी समाज के गतिसंकुल परिवेश का प्रामाणिक अनुभव चित्र है। लेखिका अपने व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा नैतिक मूल्यों की टकराहट अभिव्यक्त करती हुई व्यापक आयाम प्रदान करती है।

प्रवासी माता–पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार, स्वयं तकलीफ भोगकर भी बच्चों को अच्छा भविष्य देने की कोशिश करते हैं। जो ख्वाहिशें वे खुद के लिए पूरी नहीं कर पाए वही ख्वाहिशें अपने बच्चों को देना चाहते हैं। बच्चे पाश्चात्य संस्कृति के खुले आसमान में स्वच्छंद रूप से उड़ना चाहते हैं। उन्हें अपने माता–पिता, उनके दिए गए संस्कारों से कोई सरोकार नहीं। प्रवासी साहित्यकार अपने देश से दूर रहने के बावजूद भी उनकी समस्याओं और संवेदनाओं को महसूस कर रहे हैं। वे भारत की धरती से, संस्कृति से उनकी समस्याओं से जुड़े हुए हैं। सुषम बेदी जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को वैश्विक विस्तार दिया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हवन – सुषम बेदी।
2. लौटना – सुषम बेदी।
3. चिड़िया और चील– सुषम बेदी।
4. यादगारी कहानियां– सुषम बेदी।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 277-279

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी देशों में हिंदी की दशा एवं दिशा और अभिमन्यु अनत का योगदान

डॉ. भाग्यवति

एसोसिएट प्रोफेसर, इंदिरा प्रियदर्शिनी महिला महा विद्यालय, नामपल्लि, हैदराबाद।

सारांश :-

प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रवासी देशों में हिंदी का प्रचार प्रसार कर प्रवासियों के जीवन की गाथा को प्रस्तुत करने में सर्थक हुए है। प्रवासी साहित्यकारों ने प्रवासी जीवन के मानवीय मूल्यों, नैतिक विचारों से लेकर प्रवासी स्त्री जीवन के विविध स्वरूप को एवं उनके अधिकारों की गाथा व्यक्त कर हिंदी की दशा एवं दिशा की ओर ध्यानाकृष्ट किया है। विदेशों में लिखे गये हिंदी साहित्य के माध्यम से प्रवास में गए लोगों विशेषकर स्त्रियों के संघर्ष, मानसिकता का विखराव, दाम्पत्य जीवन में विखंडन, परिवार में अलगाव बोध, घुटन, संत्रास, अकेलापन आदि जीवन की विविध परिस्थितियों के बारे में सहजता पूर्वक जाना जा सकता है। इस आलेख में प्रवासी साहित्यकार का योगदान विशेषकर मौरिशसीय प्रेमचंद अभिमन्यु अनत की रचनाओं को उजागर किया गया है।

प्रवासी देश में अंतर्गत फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिनाद, दोबागो इत्यादि देश मुख्य है। इसके अतिरिक्त प्रवासी देश जिसे गिरमिटिया देश के नाम से भी जाना जाता है, उसमें से मौरिशस भी एक है जहाँ हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देखा जा सकता है। भारत से अधिकांश मजदूरों को मजदूरी करने के लिए पांच साल का एग्रीमेंट करवा कर उन्हें मॉरिशस लाया गया इन गरीब मजदूरों के बीच उनकी लोक–संस्कृति रची–बसी थी। मॉरिशस वासी भारतवंशी अभिमन्यु अनत के शब्दों में – ''मॉरिशस की हिंदी अपनी माटी की सौंधी खुसबू की गंध को आत्मसात करके ही अपना एक निजी स्थान बना सकी है और हिंदी के शब्द सरोवर में अपने हिस्से की चंद बूँदें जोर पाई है।''[1] इस प्रकार से देखा जाये तो देश के बाहर हिंदी को पहुँचाने में गिरमिटिया मजदूरों का ही देन है। ''सभी प्रवासी भारतीय विदेश में अपनी भाषा की रक्षा, संरक्षा, ए के प्रति सचेष्ट है, यही कारण है कि सर्वत्र विदेश में जहाँ–जहाँ भारतीय, प्रवासी या अप्रवासी के रूप में गए हैं वे हिंदी बोलने का प्रयत्न करते है और अपनी भाषा एवं संस्कृति पर उन्हें गर्व है। वे अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाना चाहते हैं। क्योंकि वही हिंदी उन्हें विदेश में जोड़ने वाली ताकत है।''[2]

वर्तमान समय में स्थिति यह है कि मौथ्रशस क्रियोली और भोजपुरी को छोड़कर वहाँ सभी भाषाएँ पढ़ने लिखने के लिए ही सीखी जाती है। जबकि फ़िजी में गिरमिटिया हिंदी के नव विकसित भाषा के रूप में फिजी

बात, सूरीनाम में सरनामी, दक्षिण अफ्रीका में नेताली हिंदी कहलाए। इनकी संरचना का मूल मुख्य रूप से अवधि, भोजपुरी और खड़ी बोली था जिसमें नए देश की भाषा सत्ता भाषा के शब्द वहाँ की जनभाषा में घुल–मिल गए श्री जितेन्दु कुमार मित्तल ने अपनी पुस्तक 'मॉरिशस देश और निवासी' में लिखा है।

''भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व मॉरिशस में स्थिति यह थी कि भारतीय मूल के सभी मॉरिशस वासियों की साहित्य की भाषा खड़ी बोली हिंदी थी, किन्तु भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वहाँ से आने वालों में प्रांतीयता की भावना और भाषा का उन्माद स्वरूप उत्पज्ज हुआ है। फलस्वरूप अब हिंदी के बल हिंदी भाषी राज्यों से आये हुए लोगों तक खिमटती जा रही है।''[3]

वर्षों पूर्व भारत से गए गिरगिटिया मजूदर भारत दूर रहकर भी अपनी भाशा एवं संस्कृति की लड़ाई अनवरत लड़ता रहा यदि हम मॉरिशस की बात करें तो 'अभिमन्यु अनत' का जाग बड़े ही आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है जिन्होंने अपने साहित्य में भारतीय प्रवासी मजदूरों की पीड़ा एवं उनके संघर्श का बखान खुलकर किया है।

वहाँ 'बैठका' हुआ करती जिसमें व्यक्ति अपनी बातों को सबके बीच रख सके। सन् 1962 के पहले का समय था जब वे एकजुट होते तब लोकगीतों के माध्यम से अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति को मुखरित स्वर प्रदान करते। इसके लिए शाम को 'बैठका' पर अभी शामिल हुआ करते। इस 'बैठका प्रथा' की चर्चाएँ अभिमन्यु अनत कृत 'चौथा–प्राणी' में देखा जा सकता है– ''बैठका में धर्म की चर्चाएँ, रामायण–पाठ एवं हिंदी–शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्य भी होते रहें हैं। अतः गाँव में शिक्षा का माध्यम 'बैठका' ही था। जिसके माध्यम से अनपढ़ लोग भोजपुरी में बात करते जबकि पढ़े–लिखे लोग खड़ी बोली हिंदी में वार्तालाप करते। हिंदी का गोरों के शासन–काल में मजदूर बालकों की शिक्षा 'बैठका' में ही संभव हो गयी थी।''[4] इस प्रकार कहीं न कहीं हिंदी का प्रचार उस गिरमिटिया समय की ही देन है।

प्रवासी साहित्यकारों का योगदान :–

प्रवासी देशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार बड़ी तीव्र गति से देखा जा सकता है। इसके पीछे योगदान मुख्य रूप से प्रवासी देशों में अर्थात् विदेशों में हिंदी भाषा में रचना कर रहे रचनाकारों का है। उनमें से मुख्य है – दीपचंद बिहारी, रामदेव धुरंधर, वेणी माधव, रामखेलावन, भानुमती राजदान, पुजानंद नेमा, केशवदत्त चिंतामणि और राज हिरामन इत्यादि साथ ही मॉरिशस के लोकप्रिय रचनाकार अभिमन्यु अनत जो एक लम्बे समय से हिंदी में रचना कर रहे हैं। इस प्रकार अभिमन्यु अनत एक ऐसे प्रवासी साहित्यकार हैं जिनकी अब तक 75 से भी अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है।

अभिमन्यु अनत के ग्रन्थ :–

- **उपन्यास :–** हड़ताल कब होगी, और नदी बहती रही, आन्दोलन, एक बीघा प्यार, जम गया सूरज, तीसरे किनारे पर, अभिमन्यु अनत, चौथे प्राणी, लाल पसीना, तपती दोपहरी, कुहासे का दायरा, शेफाली, जय गावों के बहुादर, चुन–चुन–चुनाव, अपनी ही तलाश, पर पगडंडी नहीं गिरती, अपनी–अपनी सीमा, गाँधी जी बोले थे, मार्क ट्वेन का स्वर्ग, मुडिया पहाड़ बोल उठा, शब्द भंग, अचित्रित और पसीना बहता रहा, लहरों की बेटी, चलती रहो अनुपमा, आसमान अपना आँगन, एक और उम्मीद, हम प्रवासी, अस्ति–अस्तु।
- **कहानी संग्रह :–** ख़ामोशी की चीत्कार – इंसान और मशीन, वह बीच का आदमी, एक थापल समंदर,

बवंडर बाहर भीतर।

- **काव्य संग्रह :–** नागफनी की उलझी साँसे, कैक्टस की दांतें, एक डायरी ब्यान, गुलमोहर खुल उठा।
- **आम्त्विज्ञान :–** निबन्ध।

प्रवासी रचनाओं के आधार पर :–

आज वैश्वीकारण के इस दौर में वहाँ निवास कर रहे भारतवंशी रचनाकार अपनी रचनाओं में अपने पूर्वजों की पीड़ा को रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य में दर्शाया है। तथा अपनी लेखनी का माध्यम भी हिंदी भाषा को ही बनाया है। कृष्ण लाल बिहारी के शब्दों में– ''मैंने अपनी पुस्तक 'पहला कदम' हिन्दू में जाति को जीवित रखने और हिंदी भाषा की धारा बहाने के उद्देश्य से बनायी है। हरामैं मैंने एक प्रेम दृश्य खीच है, जो साहित्य रूपी गुण से सिचा है।''[5] इस प्रकार प्रवासी साहित्यकार एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से हैं –

फ्रांस से सुचिता भट्ठ कृत 'रास्ते' (कहानी) ब्रिटेन से उषा राजे सक्सेना कृत 'प्रवास में', 'मेरा अपराध क्या था', 'वह रात' आदि कहानियाँ चर्चित है। अर्चना शर्मा कृत 'दिल में एक कस्बा है' (कहानी), गौतम सचदेव कृत 'आकाश की बेटी', आधी पिली आधी हरी' (कहानी), तेजेंद्र शर्मा कृत 'काला सागर', जिंदगी का बक्सा', 'पासपोर्ट के रंग', 'सपने मरते नहीं', 'दीवार से रास्ता', 'देह की कीमत', 'मलबे की मालकिन' आदि कहानियाँ। शैल अग्रवाल कृत 'वापसी', 'सूखे पत्ते' (कहानी) दिव्या माथुर की 'फ्रिर भी सही' (कहानी) आदि डेनमार्क से अर्चना पेन्यूली कृत 'अगर वो उसे माफ़ कर दे' (कहानी) 'बदल जाती है जिंदगी' (कहानी) चाँद शुक्ला हदियाबादी कृत 'पराई प्यास का सफ़र' (कहानी) 'अंतिम पड़ाव' (कहानी) नावें से सुरेश चन्द्र शुक्ल शरद आलोक कृत कहानियाँ – 'आदर्श एक ढिंढोरा' 'वापसी', 'मंजिल के करीब', 'दुनिया छोटी है' इत्यादि। इन्होंने 1987 से कविताएँ, कहानियाँ, नाटक आदि अनेकों विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। साथ ही साथ इन्होंने 'स्पाइल दर्पण' नामक द्विभाषिक पत्रिका के साथ–साथ अन्य दो हिन्दी पत्रिकाओं का 1988 से सम्पादन कर रहे हैं। नार्वे की 'शांतिदूत' पत्रिका अति सराहनीय है।

पोलैंड से हरजेन्द्र चौधरी कृत 'लेजर शो' (कहानी), हंगरी से गीता शर्मा कृत 'नया बॉयफ्रेंड' (कहानी), ऑस्ट्रिया से राकेश त्यागी कृत 'लॉटरी' (कहानी), नीदरलैंड में अभिशेख अवतंस लैंडिन विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन कार्य के साथ–साथ संस्कृति को भी उजागर किया।

निष्कर्ष :– निष्कर्षत कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्यकारों के रचनाओं के माध्यम से जाना जा सकता है कि देश के बाहर भी हिंदी का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है एवं उनके सतत् प्रयास के परिणामस्वरूप ही विदेशों में हिंदी के विस्तार स्वरूप की महता मिल पाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. श्री चित्रा वी, उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, एस., पृ. सं. 9
2. विमलेश कांति वर्मा, गगनांचल, वर्ष–40, अंक–1–2, जनवरी–अप्रैल, 2018 पृ. सं. 7
3. श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल, 'मॉरिशस देश और निवासी', पृ. सं. 67
4. श्री चित्रा वीएस., उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, पृ. सं. 143
5. कृष्ण लाल बिहारी, 'पहला कदम', पृ. सं. 78

दूरभाष : 9121715612, ई. मेल : bhagyavathi. shelar@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 280-283
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिंदी कहानी में भारतीय लेखिकाओं की देन ब्रिटेन के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. के. श्याम सुन्दर
एसिस्टेंट प्रोफेसर, (हिन्दी), पंडित नरेन्द्र प्राच्य महाविद्यालय, नारायण गुड़ा, हैदराबाद, तेलंगाणा।

''Every word a woman writes changes the story of the world revises the official version - Carolyn see.''

प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं, एक विभिन्न देशों की संस्कृति और जीवन यथार्थ से भारत से लोग परिचय प्राप्त कर संकेंगे, दूसरा यह हैं कि भारत की संस्कृति और जीवन मूल्यों से विदेशी पाठक परिचय प्राप्त कर सकेंगे। आज विदेश में ऐसे अनेक लेखक है। जो हिंदी साहित्य संपदा के विस्तार करने के साथ ही भारतीय साहित्य को विश्व के मंच पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय कार्य कर रहे हैं।

प्रवासी महिलाएं का प्रश्न है तो ज्यादात्तर नौकरी या पढ़ाई के लिए या शादी करके विदेश में आयी और प्रवासी हो गयी थी। वैयक्तिकता यूरोप की विशेषता हैं, जिसका प्रभाव भारतीय प्रवासी लेखिकाओं की कहानियों में भी हैं।

प्रवासी भारतीय कहानी लेखिकाएं :-

ब्रिटेन की प्रवासी भारतीय कहानी लेखिकाओं में कीर्ति चौधरी, नीना पॉल आदि से लेकर ज़किया जुबैरी, उषा राजे सक्सेना, उषा वर्मा, अचला शर्मा, अरूणा सब्बरवाल, दिव्या माथुर, जया वर्मा, कादम्बरी मेहरा, मोहसिना जिलानी, नजमा उस्मान, नीरा त्यागी, रमा जोशी, शैल अग्रवाल, तोशी अमृता, वायू नायडू आदि तक का नाम आते हैं। इनमें कुछ लेखिकाओं एवं उनकी कहानियों की चर्चा आगे की जायेगी।

ब्रिटेन के प्रमुख महिला कहानीकारों का सामान्य परिचय

उषा राजे सक्सेना :-

उषा राजे सक्सेना सर्जनात्मक प्रतिभा संपन्न एक ऐसा लेखिका हैं जिनके साहित्य में अपने देश, सभ्यता, संस्कृति तथा भाषा के प्रति गहरे और सच्चे राग के साथ प्रवासी जीवन के व्यापक अनुभवों और गहन सोच का मंथन मिलता है जिससे एक नई जीवन दृष्टि विकसित होती है। उषा जी की कहानियाँ घटनाओं के माध्यम से अत्यंत गहरे प्रवासी यथार्थबोध का मनोवैज्ञानिक परिचय देती है।

उषा राजे की ब्रिटेन की एक मात्र हिंदी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' की सहकी उपाध्यक्षा है। मिट्टी की सुगंध नकी के. संपादिका तथा हिंदी समिति यू पहली कहानी संग्रह होने के साथ ब्रिटेन के प्रवासी

लेखकों का प्रथम कहानी संग्रह है। 'विश्वास की रजत सीपियाँ' 'इंद्रधनुष की तलाश में' आदि उनके काव्य संग्रह है। वॉकिंग पार्टनर, वह रात और अन्य कहानियाँ आदि कहानी संग्रह है। दीपक गौज टू पिकनिक दीपक एंड द डेज ऑफ़ द वीक, 'दीपक एंड द टाल एंड थे शोर्ट विवलन्दन बारों ऑफ्र आदि उनके बाल साहित्य है। 'मार्टिन'

उषा वर्मा :-

उषा वर्मा का जन्म बाराबंकी भारत में हुआ था भारत में आप कुछ साल अध्यापन करने के बाद यूआ गई। ब्रिटेन में यॉर्क तथा लीड्स विश्वविद्यालय में के कोई तो सुनेगा, लगातार पढ़ाती रहीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ क्षितिज अधूरे (काव्य संग्रह) कारावास, (कहानी संग्रह) साझी कथायात्रा और प्रवारा में पहली कहानी की (सं) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ है।

जकिया जुबैरी :-

उनका जन्म 1 अप्रैल, 1942 को लखनऊ में हुयी। आप हिंदी एवं उर्दू दोनों भाषाओं में समान अधिकार रखती हैं। लेखन के साथ राजनीति में भी सक्रिय हैं। आप साहित्य के माध्यम से भारत और पाकिस्तान के बीच की दूरियों को पाटने में विश्वास रखती हैं। आप कथा यूस के. मिल कर ब्रिटेन में रची गई 14 उर्दू कहानियों का हिंदी में अनुवाद कर रही है।

कादंबरी मेहरा :-

कादंबरी मेहरा ने पिछले दशक में अपनी उपस्थिति से समस्त हिंदी साहित्यकारों का ध्यान अपनी ओर खींचा उनके लेखन की शुरूआत वाराणसी के 'आज' अख़बार से हुई और बाद में वे स्कूल व कॉलेज की साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ी रहीं। अंग्रेज़ी साहित्य से स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद वे लंदन चली गयीं जहां अध्यापन को अपना कार्य क्षेत्र बनाया 'कुछ जग की' शीर्षक से उनका एक कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुआ है।

दिव्या माथुर :-

1985 में लंदन में भारतीय उच्चायोग से जुड़ी दिव्या माथुर रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स की फ़ेलो हैं। भारत सरकार के आधीन, लंदन के उच्चायोग की हिंदी कार्यकारिणी समिति की सदस्या, कथा यू के की पूर्व अध्यक्ष और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की सांस्कृतिक अध्यक्षा दिव्या कई पत्रपत्रिकाओं– के संपादक मंडल में भी शामिल हैं। उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं – अंतसलिलाः, रेत का लिखा, ख्याल तेरा और 11 सितंबर आदि।

(कहानी संग्रह) आक्रोश (कविता संग्रह) सपनों की राख तले :

अचला शर्मा :-

इनका जन्म भारत के जालंधर शहर में हुआ तथा शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। वे लंदन प्रवास से पूर्व भारत में ही कहानीकार एवं कवि के रूप में स्थापित हो गई थीं। बाद में वे लंदन में बी.बी.सी. रेडियो की हिन्दी सेवा से जुड़ीं और अध्यक्ष के पद तक पहुँचीं। रेडियों नाटक के दो संकलन 'पासपोर्ट' एवं 'जड़ें' के लिए उन्हें वर्ष 2004 के पत्रानंद साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया बर्दाश्त बाहर, सूखा हुआ समुद्र तथा मध्यांतर उनके चर्चित कहानी संग्रह हैं।

कीर्ति चौधरी :-

कीर्ति चौधरी का मूल नाम कीर्ति बाल सिन्हा था। साहित्य उन्हें विरासत में भी गिला और फिर जीवन

साथी के साथ भी साहित्य, संप्रेषण जुड़े रहे। माँ, सुमित्रा कुमारी सिन्हा जानी–मानी कवयित्री, लेखिका और गीतकार थीं। कीर्ति चौधरी को अज्ञेय ने तीसरा साप्तक में शामिल किया था।

तोषी अमृता :–

तोषी अमृता ब्रिटेन में बसी भारतीय मूल की हिंदी लेखक है। तोशी अमृता श्रृंगार रस की कवयित्री हैं। उनके गीतों में प्रेम एवं श्रृंगार गुखर रूप से दिखाई देते हैं। उनकी भाषा सरल, पठनीय एवं सुरीली होती है। उन्होंने कुछ छुटपुट कहानियां भी लिखी हैं लेकिन मूलतः वे गीतकार हैं।

ब्रिटेन की हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन :–

अवला शर्मा की कहानी 'मेहरचंद की दुआ' अवैध प्रवासी जीवन की कथा कहती हैं। रोज़गारी एवं परिवार की परवरिश के लिए महरेआलम पाकिस्तान ने टूरिस्ट वीसा पर लन्दन आया था। वीसा की अवधि पूरी होने पर उसे अनेक इलीगल लोगों के समान लापता होकर जीवन बिताना पड़ा और रोजगारी के लिए अपने आइडेंटिटी को भी बदला पड़ा। वह गहरे आलम से मेहरवंद बना महरे आलम का लन्दन आकर बारह वर्ष हो चुके थे लेकिन एक बार भी अपने परिवार से मिलने के लिए पकिस्तान नहीं वापस गया। उन्हें पता है कि एक बार गया तो फिर वापस नहीं आ सकता।

लंदन में उनका नंदिनी से अनैतिक संबंध था। पकिस्तान में रहने वाले अपने परिवार को भी लंदन लाने के लिए महरेआलम बस्सों से तड़प रहा था लेकिन नंदिनी के साथ की ज़िंदगी को वह खोना नहीं चाहता। अनिल जोशी के अनुसार ''जिंदा इंसान की जिंदा बना रहने की कवायह का चित्रण है इस कहानी में।''

दिव्या माधुर के कहानी '2050' हमें वर्षों के बाद की ज़िंदगी की ओर ले चलती है। इसमें आर्टिकीसियल इंटेलिजेंस और वर्धुअल रियालिटी की दुनिया पर सवाल खड़ा करते है। कहानी में ऋण और वेद अपना एक बच्चा चाहता है लेकिन समाज सुरक्षा परिषद् उन्हें अनुगति नहीं देता। यांत्रिक जीवन से ऊबकर आत्महत्या के बारे में सोचने लगा तो इसके लिए भी सुरक्षा परिषद् से परमिशन लेना पड़ता है। कहानी के अंत में इस तानाशाही के विरूद्ध जंग शुरू होते है। इस प्रकार कहानी आशावादी दृष्टि से समाप्त हो ती है।

जया वर्मा की कहानी 'सात कदम' सिम्मी और प्रिंस की कहानी है। नास्टैटिजया प्रवासी साहित्य की एक विशेषता है। सिम्मी की नोस्टाल्जिक भावनाएं एवं अनुभूतियों से ओतप्रोत इस कहानी में योरोप की प्रकृति का सुन्दर चित्रण भी है। अपने पति के साथ सिम्मी छुट्टियाँ मनाने के लिए पहली बार निकलती है लेकिन बीच में प्रिंस की मृत्यु हो जाती है। प्रिंस की अंतिम इच्छा की पूर्ती के लिए वह खुद को संभालती है। अपने गन पर वह काबू रखती है।

'चाँद फिर निकला' अरूणा सब्बरवाल की कहानी है जिसमें सूची और डैजी की कथा कथा है। डेज़ी कई दिनों के बाद सूची के साथ पूरे परिवार में एक प्रकार का सन्नाटा छा गया था फिर डेज़ी को पता चला कि सूची के साथ बलात्कार हुआ है। सूजी और उनके माता पिता दोनों इस शॉक में थी। धीरे–धीरे डेज़ी तीनों को वापिस साधारण जीवन की और ले आती है।

कीर्ति चौधरी की कहानी 'जहानारा' में जहानारा की अकेली ज़िंदगी बारे में कह रही है जो जीवन भर युवाओं के अल्हड़ और धूम–धड़ाके वाली ज़िंदगी से बच निकली थी। ज़किया जुबैरी की कहानी 'सांकल' में पीढ़ियों के संघर्ष के बारे में बताया है। माँ–बाप अपने बच्चों के लिए जीवन भर प्रयत्न करता है, कई सुख

सुविधाओं का त्याग करते है लेकिन वे वापस में उन्हें दुःख ही देता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि प्रवासी महिला कहानीकार वास्तव में अपने समय का सही चित्र प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष :-

प्रवासी लेखिकाओं सिर्फ लिखने के लिए लिखती नहीं बल्कि हिंदी से जुड़ने के लिए, जुड़ते रहने के लिए, एक नोस्टाल्ज्यिा के साथ, अपनी व्याकुलताओं को भारत से शेयर करने के लिए, एक अलग संस्कृति में अपनत्व को अपनी अस्मिता को बनाये रखने ले लिए वे लिखते हैं। पराये देश में स्वन्तः सुखाय के लिए तो बस!

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. दिव्या माथुर – (2018) इक सफ़र साथ साथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 17
2. सक्सेना उषाराजे – यू के में हिन्दी–उद्भव और विकास उशा राजे सक्सेना द्वारा हिंदी संस्थान, आगरा में पढ़े गए शोध पत्र से।
3. दिव्या माथुर– (2018) इक सफ़र साथ साथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 17

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. उषा वर्मा – प्रवास में पहली कहानी, (2008) वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली।
2. उषा राजे सक्सेना (2002) – प्रवास में, ज्ञानगंगा, दिल्ली।
3. सुषम बेदी – चिड़िया और चील (1997) अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली
4. प्रो. प्रदीप श्रीधर – प्रवासी हिन्दी साहितय अवधारणा एवं चिंतन (2018), विद्या प्रकाशन, कानपुर।

अन्य सहायक सामग्री :-

1. http://abivyakti-hindi.org/sniband/2017/vaishwik.htm
2. http://vishwahindijan.blogspot.com/2017/10/blog-post_97.html
3. http://abivyakti-hindi.org/sniband/2011/pravasi_hindi_sahitya.htm
4. http://hindi.webdunia.com/article/nri.pdf

Ph. 098482856470

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 284-289
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Resuragence of Cultural Retention Among The Indian Diasporic Communities

Major Dr.P.Mary Celine Rose
Lecturer in Physical Education & NCC Officer
Ch.S.D.St.Theresa's College for Women (A), Eluru.

Abstract :-

This research paper attempts to find out the roots of Resurgence of Cultural Retention among the Indian Diasporic Communities. The Indian music and dance in Bollywood isn't just rehearsed by Indians just now, it has voyaged abroad. The nations like Turkey, Russia, Bay countries, have separate stations to broadcast the Indian motion pictures and Shows, however in the named design. Bollywood, the delicate force of India hasn't just assisted the Indian Diaspora with remaining associated with its way of life, however individuals of the host country have additionally fostered their advantage in the Indian culture. A few nations even praise the celebrations of India like Diwali, and Holi. This paper attempts to concentrate on the peculiarity of social maintenance among the Indian Diasporas, made conceivable by parcel of variables that will be framed in this paper. There are seven parts to this research paper. The Indian migration patterns of the past are discussed in the first section. It incorporates how the relocation started in India, how Indian transients lived abroad and how they attempted to hold their way of life. The Indian Diaspora before and after colonialism are discussed in the second section.

Since the examples of Indian Diaspora when imperialism is unique, their relocation designs and social variation fluctuates as well. The third part clarifies the job of Bollywood in taking the Indian Culture abroad, for its Diaspora, yet endeavoring to globalize it. The forward piece of the paper centers on the Indian people group abroad and their aggregate work. The globalization of Indian yoga culture is discussed in the fifth section. The final section discusses the cultural diplomacy of the Indian government, particularly that of Narendra Modi's administration, which has traveled to 92 countries in 55 months to promote Indian culture.

Key Words :- Culture, India, Migration, Yoga, Bollywood.

Individuals move for a ton of reasons, yet what they bring to the host country, is the way of life

of their country. Culture is one of the most pre-predominant aspects for the general public, and it goes to the host country with the transient. There could be various justifications for why a transient would need to adhere to his own way of life, which could be the legend of return, the apprehension about personality emergency, or the connection to his country, etc. The issue is typically for the original transients, who stay a lot, connected to their way of life, structure their own networks, and make a scaled down country in the host country. The second and third ages some way or another get broken down in the way of life and the way of life of the host country.

Fiji's Indian diaspora makes up 40% of the country's total population, which is a significant number anywhere in the world. As of now the all out populace of Mauritius is 960,000 and the Indian populace 71.9% of it. The ongoing assessed Malaysian populace is 13 million and Indians are 1.2 million of it. Singapore has 170,000 Indians and Burma has 1.2% Indians in its populace. There are 800,000 Indians living in South Africa. There are approximately half a million Indians who have settled in Europe and North America. In West Asia, it's around 60,000 (Jain, 1982).

Malaysia has Indians as one of the biggest networks separated from Chinese. They can still celebrate their festivals, dress in their customs, and communicate in their native tongues. The inquiry that can be raised is who assists them with holding their way of life, the host nation or something different. In the event of Indian Diaspora, Bollywood has an enormous commitment in allowing the Diaspora to keep in contact with their way of life and assist them with living it abroad. Yogawhich used to be the act of reflection in India is currently being polished all through the world; it of late appears as though Yoga was never something Indian. The Indian Prime Minister, Narendra Modi, also frequently visits nations with Indian diasporas to provide them with a variety of opportunities to maintain a connection to their roots. He is the most observed State leader among the Indian Diaspora abroad, for his regular abroad outings. In most recent 55 months, he has visited 92 countries.

HISTORY OF INDIAN MIGRATION :-

The English history in regards to Indian relocation guarantees that migration in India is an English creation. In 1834, when bondage was canceled in the English Realm, they required somebody to chip away at their estate in England.. This is where the relocation from India is accepted to have begun from (Jain, 1989).British Guyana accepted its most memorable Indian workers in 1838, trailed by Trinidad in 1845, and Dutch later in 1873. The majority of these laborers came from North and South India. The quantity of Indian workers was 2,500,000. Just not as much as quarter of this number got back to India, rest of them remained back as occupants. Since India is an assorted country, it doesn't have just various societies, however individuals of various beliefs and dialects, not discussing various tongues but rather dialects. What's more, due to this variety, another name was begat to get

them together under one culture in England and that is estate Hindi (Go and Vertovec, 1991).

Age, number, and historical perspectives vary among the patterns of Indian culture abroad. In the locales like East Asia, they have lived for at least six ages yet in the bay nations they are ongoing appearances. The movements that occurred before the autonomy of India were transitory; individuals would go to turn out abroad for a particular time frame however return too. However, it was exclusively in the nineteenth 100 years or what is known as the post-pioneer period that Indians began to settle abroad as occupants (Oonk, 2007). Since India is exceptionally different, it's Diaspora don't be guaranteed to relate to the India as a country yet with their particular countries or what can be called as States. For some occurrence, the way of life of Gujarat is no place nearer to the way of life of Kerala. In like that, the Diaspora distinguishes its social linkage with its separate State not India in general. India can be several nations if it somehow happened to be separated on religion, culture or language. India is a multiculturalist country from a genuine perspective.

For the workers it was somewhat hard to live on their conditions as a result of their monetary positions. They would be made to think twice about live as per the individual who might control their method for occupation. For the dealers it was not difficult to live according to their own preferences, since they would control their own vocation and could be persuasive in the general public as well. The host nation would allow them to live on their conditions assuming that they were monetarily autonomous.

The Indian Diaspora which had started to move from India after 1947 to England didn't at first achieve genuine accomplishments. The circumstance changed during the 1980s. There was a justification behind this. During the 1970s, Indians additionally showed up from the previous African settlements of England. They were not destitution ridden however accomplished, working class Hindu (as well as Muslim and Sikh) experts and money managers from Uganda, Tanzania, Kenya, and Malawi. They were second-age travelers — the original having relocated from India to Africa.

COLONIAL AND POST COLONIAL MIGRATION :-

Aside from the Pilgrim account of relocation, there is one more movement that says the relocation in India began long back before Expansionism. There are records of Buddhists bhikkus who went into the far off areas of Focal and Eastern Asia. There are confirmations that show the persistent contact between the Realms of Coromandel Coast and Islands of South East Asia. There has been a contact of Palas of Bengal with the Sailendra Lords of Indonesia. The United States, Thailand, and Bali, among other places, are home to a number of Hindu and Buddhist practices. There is very little research on Indian migration prior to colonization (Jayaram, 2004).

The original Indian Diaspora had conveyed a socio-social stuff along that comprised of

craftsmanship, language, music, dress, cooking and so forth. Some had the option to keep them, for certain they vanished relying upon their host country. India by then had an extremely disparaging picture abroad, they would be called as coolies, and, surprisingly, the Gandhi was called as a coolie legal counselor. Coolie implies modest worker. This forever was there due to the way that the main relocation as indicated by the colonialist story was the worker movement (Jayaram, 2004).

INDIAN CULTURE :-

Bollywood has significantly contributed to the globalization of Indian culture. Albeit the Indian film is years and years old yet Bollywood which is only 10 years old, has arrived at billions of crowds around. The illustration of an Indian film attempts to show that the ages of Indians abroad haven't failed to remember their qualities and are as yet associated with their profound roots.

According to the findings, Bollywood movies heavily influence the Indian Diaspora's conception of India. Every one of the three ages of India have various purposes behind going to India. The original's desire emerges from the Bollywood films and causes them to envision their old country that they left lengthy back. For them it is a legend of return. The second era's inspiration is to encounter their movement to the Cutting edge India while as the third era romanticizes the possibility of their country and makes a desire in them to venture out to their country, which they have never seen (Bandyopadhyay, 2011).A few researchers have named this homecoming as Diaspora the travel industry or roots the travel industry. There are a few justifications for why transients make a trip back to their countries, one of them is solid nostalgic sentiments.

INDIAN COMMUNITIES ABROAD :-

Among the Indian Diaspora dispersed over the world, the Indo-Mauritians offers the most sparkling profile of what resembles the best abroad Indian people group. Both Indian Hindu and Muslims have together molded the social, social and political existence of present day Mauritius. This country itself looks the ideal image of Indian Diaspora. The Mauritius is even alluded to as Chota Bharat (Little India) (Parekh, Singh and Vertovec, 2003).

India's renowned cultural festival, which ran for four weeks in 1991 in New Jersey, USA, presented an extravagant and comprehensive vision of the country. The Gujarati Hindu Sect was in charge of organizing the festival, which featured cultural exhibits, shopping displays, food stands, and performances by artists. Indians structure bigger and noticeable populaces in the The Indian Diaspora could put together this celebration just with the assistance of the host country. It was the US Central command in Sovereigns, New York that supported the social celebration of India. Edison, New Jersey, was once a major population center for Italians and Irish, but now it is full of young, significant Indian immigrants from the middle class. This social celebration in America was pointed toward making the

picture of genuine India through moves, music and food and they achieved it. The pennants at the Social celebration read; Wonderful Borderless World, A Social Tycoon, and In the Delight of Others.

YOGA GOES GLOBAL :-

After Indian People's Party (BJP) came into government in India, State head began dealing with his three delicate powers, yoga being one of them. As indicated by Joseph Nye, Delicate Power is the capacity to impact others by drawing in them to some different option from paying or constraining them. Yoga is one of the popular social commodities of India. It is nearly polished from one side of the planet to the other. People have turned to the meditative practice of yoga as a response to the modern world's stress level, technological addictions, and work-at-home culture. A new overview led by the Yoga Collusion, the biggest non-benefit association addressing the U.S. yoga local area, detailed that the quantity of professionals in 2016 was around 37 million, up from around 20 million in 2012.31 Specialists spent around $17 billion around the same time on courses, garments, supplies and frill, up from $10 billion out of 2012 (Mazumdar 2018, 479-482).The global day of Yoga is commended on 21 June consistently beginning around 2014. In Joined Countries General Gathering, the State head of India Narendra Modi said,

"Yoga is a significant endowment of India's old custom. It epitomizes solidarity of brain and body; action and thought; restriction and satisfaction; agreement among man and nature; a comprehensive way to deal with wellbeing and prosperity. There's actually no need to focus on practice except for to find the feeling of unity with yourself, the world and the nature. By changing our way of life and making cognizance, it can help in prosperity. Let us strive for the establishment of an International Yoga Day.

The Modi administration's use of yoga as a soft power tool aims to accomplish some of the same goals as the outreach to the diaspora and promotion of Buddhism. The advancement of Yoga is intended to help India's worldwide picture, project it as a tranquil rising power and use it as a way to spread and promote different parts of India's old culture, including other delicate power resources, similar to Ayurveda.

CONCLUSION :-

The foundation of the thought of delicate power strategic practice became modernized considering the way that the possibility of delicate power gives a differentiating choice to the optional messengers to lead mollifying practice without connecting with treats and twig strategy (Sheik and Rashid, 2020).The delicate power discretion utilized by India to take the Indian culture abroad isn't really what Indian lives back home. The wistfulness that is made through the Bollywood films, in the personalities of Original of Indians abroad is the picture of old India. The modern India is distinct,

and Bollywood films do not always depict the modern India. Bollywood just depicts the great image of India through its films, however there are heaps of Indian societies that are undesirable and harmful and obsolete. In the greater part of India, still the youngsters get hitched on the decision of their folks, they are really compelled to, yet Indian films show an alternate image of Indian culture that eventually, the Adoration wins. However, they don't show the clouded side of India where honor killings are as yet legitimized. The Way of life that is taken by travelers abroad is completely not the same as the way things are polished in India. In the unfamiliar terrains, just the great side of culture was permitted to be rehearsed, the awful social practices were restricted, similar to the separation based on strict classes.

The delicate power gives an altogether different image of India to the Indian Diaspora, who get exceptionally nostalgic by watching their wonderful culture through Bollywood motion pictures, however when the return, they see something different. There has been a without a doubt social maintenance among Indian transients in different regions of the planet, yet Bollywood has raised their assumptions towards getting back to their countries. Bollywood and the Indian government are making a solid attempt to make the fantasy of return a reality.

REFERENCES :-

1. Jain, Prakash C. (1982). "Indians abroad: a current population estimate." Economic and Political Weekly : pp. 299-304.
2. Jain, Prakash C. (1989). "Emigration and Settlement of Indians Abroad." Sociological Bulletin 38, no. 1 (March 1989): pp. 155–68.
3. Jayawardena, Chandra (1968). "Migration and social change: A survey of Indian communities overseas." Geographical Review : pp. 426-449.
4. Mazumdar, Arijit (2018). "India's soft power diplomacy under the Modi administration: Buddhism, diaspora and Yoga." Asian Affairs 49, No. 3: pp. 468-491.
5. Oonk, Gijsbert, ed. (2007). Global Indian diasporas: Exploring trajectories of migration
6. Punathambekar, Aswin (2005). "Bollywood in the Indian-American Diaspora: Mediating a Transitive Logic of Cultural Citizenship." International Journal of Cultural Studies 8, no. 2 (June 2005): pp. 151–73.
7. Shukla, Sandhya (1997). "Building diaspora and nation: the 1991 'Cultural Festival of India'." Cultural Studies 11, no. 2 (1997): pp. 296-315.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 290-294

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Globalization, Struggle, and Empowerment in the African Diaspora And Indian Diaspora

S. Hima Bindu,

Assistant professor in dept of English,

G. Divya Teja Aswini

Pursing M.A English 1st year

CH.S.D.St.theresa's college for women (A) Eluru.Andhrapradesh, India.

Abstract :-

Sporadic but virulent racial attacks on African nationals in public spaces contradict the ongoing metanarratives of ascendant India–Africa political and economic relations. This article affirms that the Indian people at large and the Government of India have remained steadfast in their condemnation of such xenophobic attacks. Increased people-to-people interactions through the arts, education, state media, and shared cultural festivals will promote greater intercultural understanding and buttress the long-standing Afrasian connections.Diasporic literature has its roots in the sense of loss and alienation, which emerged as a result of migration and expatriation. Generally, diasporic literature deals with alienation, displacement, existential rootlessness, nostalgia, quest of identity. Ideas are powerful, and as a social scientist who focuses on religion, I tried to focus more on how actors use and spread ideas rather than on the phenomenology of belief. As you say, some South Asians refused and still refuse the idea of Black Asia or the possibility of their own Blackness, but I turned my attention to those who accepted this idea and how they made it part of their lives, whether in education, activism, or other experiences.

Through this prism of interests and distinterests in Black Asia, I show that what India is and who Indians are is hardly unitary and that African history deconstructs, in some important way, India—just as any homogenizing construction of Africa is problematic and a product, to some degree, of a form of racial normativity. African-Indian encounters is Africans' perceptions of and responses to Indianisms, to use a more capacious term that includes traditions, religions, behaviors, sociability, and mannerisms. But the unseen, to generalize somewhat for both African and Indian religions, relates

directly to what happens in the material world, and human actions pertaining to the material world are navigated through the use of objects and sensory experiences—fire, water, and other earthly elements and scents, sounds, and dreams. Indians in Africa and Africans in South Asia recognize these repertoires, even considering the differences in their indigenous religious practices.

Keywords :- Sporadic, Deconstructs, Encounters, Repertoires, prism, Diaspora, metanarratives, India, Africa, international migration, xenophobia, Afrophobia, racism, violence, Afro-Indian relations, informal sector, illegal, migration, forced migration, slave-trade, minorities, remittances

Introduction :-

Africa, a major issue is ethnolinguistic and regional origin (or putative origin or even the lack of known origin), which divides South and North Indian Hindus. In other words, caste is a complex structure, and Yengde's point that it travels with/in the diaspora challenges any simplistic notion of privilege, as low caste Hindus in the diaspora might opt to self-fashion a conservative Hindu identity and assert themselves over Blacks and others, rather than fight to end casteism and racism. It is only by studying the interworkings of status in all kinds of institutions such as academia or temples, without a priori assumptions about their social make-up, and doing deep sociocultural archaeology that we begin to understand intersectional layers of identity-making and power-brokering.

India has seen a rise in incidents of racism by its citizens against foreign nationals, especially Africans, in recent times. As a country with the largest diaspora communities, India needs to be particularly worried by this development.

The country is home to a significant migrant population, most of it from the neighbouring countries in South Asia. In 2010, there were 5.4 million foreign-born people in the country. The number of Africans in India is estimated to be about 40 000, of whom 25 000 are students.

Yet, these small numbers are significant for the growing relations between India and Africa. The Indian government has been announcing scholarships, grants and credit lines for Africa against the backdrop of the India-Africa Forum summits. In spite of these efforts to woo Africa, the government is in denial about racist attacks against Africans in India.

In the wake of the recent attacks on Africans in India, the official denial that such acts are racist hampers efforts to tackle the problem. This, plus the fact that the perpetrators are hardly ever brought to book is a major cause for their recurrence.

India and Africa matter to each other :

The government positioning stands in contrast to the historic relations between India and Africa founded on the tenets of antiracism and anti-colonialism. Moreover, the government's stand risks

jeopardising India's growing relations with Africa in the fields of trade, technology and human resource development. India's trade with Africa has grown from $1 billion in 1990-1991 to $71 billion in 2014-2015.

Despite this, stereotypingis common. African countries are often insidiously used as a metaphor for under-development. And Africans in India are associated with labels such as "debased" as well as "drug- peddling and prostitution". These stereotypes are constructs of economic hierarchy coloured in racist hues.

Crime and prejudice in India :-

Racial violence has its parallels in other forms of violence in India. The prejudice runs across multiple channels from caste, region, religion to gender. Sporadic violence against "vulnerable" groups – including black people, white women, Indian women, minorities and the lower castes – is commonplace. The foreigner thus gets caught up in the social hierarchies of the country.

This was apparent in the mob attack against African students in the Delhi metro in 2014 by a crowd chanting nationalist slogans. The ostensible reason for the attack was that the African males had misbehaved towards an Indian woman, even though the police have no register of such a complaint. The recent attack on a young Tanzanian woman student in Bangalore allegedly happened under the watch of a police constable who did nothing to stop it. She was stripped by a mob that sought justice for a road accident in which a Sudanese national's car ran over a local woman.

Government response :-

The Indian government is largely in denial when it comes to racism. Refusing to acknowledge the racism and projecting the incidents as simply cases of urban violence means they are unlikely to prick at the conscience of Indian society, as they should.

The government was recently spurred into action but only after African diplomats reacted to the murder of MK Oliver, a Congolese student in May 2016. The Indian Minister of State (External Affairs) personally met members of the African communities and strong police action against the culprits was assured. And the Ministry of External Affairs and the Ministry of Home Affairs have launched a series of racism sensitisation programmes in neighbourhoods where most African citizens reside.

This is a step forward, but more needs to be done. Racism and racist violence are not limited to Indians who live in close proximity to African citizens.

What needs to be done :-

India's Ministry of External Affairs and the Ministry of Home Affairs need to make a concerted effort to sensitise the police and the public about how racism contradicts India's past and present

ideals.

One way to do that is to inform Indians about how Indians and people of Indian origin are able to live peacefully and prosper in Africa and other parts of the world.

In addition, the Ministry of External Affairs should have a department dedicated to addressing breaches of human rights against foreigners in the country. And appropriate and corrective laws should be passed and enforced to combat acts of racism.

NGOS also have a role to play. Those working in human rights need to speak out against discrimination and racist violence and provide legal support to the victims. They could also lead community awareness programmes against racism, drawing on experiences from other countries.

As most Africans in India are students, the Ministry of Human Resources needs to drive campaigns against racism on campuses. Educational institutions in India should be told about the importance of scholarship programmes for Africans. Efforts should also be made to educate Indian students about Africa.

African students should be given appropriate lodging and boarding facilities in and around the campus or in the vicinity of other students' residences instead of being confined to a few "African" neighbourhoods. Such geographical demarcations increase the risk of alienation and stigmatisation. States must step in There is a role for governments too. Unlike colonial relations of exploitation, the tenets of South-South Co-operation emphasise mutual respect.

Indian ministries and the media should not restrict themselves to running headlines on the millions of dollars India allocates to Africa. The fact that Africa contributes to growing the Indian economy should also be given attention. For example, lines of credit benefit India by creating markets for private and public Indian companies.

This is because they come with the condition that 75% of goods and services are sourced from India. The private sector, given its considerable interests in Africa, also needs to take a lead in showing the continent's worth to India. Such efforts are important in dismantling fallacious notions of hierarchy and superiority, which the booming Indian economy seems to bring.

And African countries must push for equality as the building block of co-operation. Anti-racism should be reiterated at the commencement of the India-Africa summits and should be set to stone in the form of appropriate treaties.

Conclusion :-

India–Africa relations have evolved dynamically and continuously over the years, having exhibited both change and continuity. During the colonial period, they were focused on liberation and the fight against colonialism from the perspective of solidarity among colonized people across the

world. Soon after India's independence Indo–African interaction focused on the liberation of African countries. Only in the post-Cold War era, with the emergence of both India and a large number of African countries as liberal global economies, have relations truly developed dynamically and rapidly.

References :-

1. Economic and Political Weekly ©
2. Giese, Karsten & Laurence Marfaing (eds.) (2019): Chinese and African entrepreneurs: social impacts of interpersonal encounters. Leiden: Brill.
3. Gupta, Varun (2021): Who is Malik Ambar? The African slave turned Indian mercenary kingmaker. The Collector, Oct 6, 2021
4. Harris, J. E. (1971): The African presence in Asia: consequences of the East African slave trade. Evanston: Northwestern University Press, 1971, 156 p.
5. Jayasuriya, S de Silva (2007): African Migrants as cultural brokers in South Asia.
6. The slave route. UNESCO, Institute of Commonwealth Studies, University of London
7. Jayasuriya, S de Silva (2009): African identity in Asia: cultural effects of forced migration. African Diaspora Archaeology Newsletter, vol. 12, issue 3, September 2009

asifbindu@gmail.com,
divyagedhala@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 295-300

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Sociological and Humam Rights Implications of Ostracism : The Case of OSU Caste in the IGBO Ethnic of Africa

S. Hima Bindu

Assistant professor in dept of English,

CH.S.D.St.theresa's college for women (A), ELURU. Andhrapradesh, India

Dr. Vijay Anand

Professor department of English, Kalinga University, Raipur

(Research Scholar in Kalinga University, Raipur)

Abstract :-

Sporadic but virulent racial attacks on African nationals in public spaces contradict the ongoing metanarratives of ascendant India–Africa political and economic relations. This article affirms that the Indian people at large and the Government of India have remained steadfast in their condemnation of such xenophobic attacks. Increased people-to-people interactions through the arts, education, state media, and shared cultural festivals will promote greater intercultural understanding and buttress the long-standing Afrasian connections. African Diaspora is the term commonly used to describe the mass dispersion of peoples from Africa during the Transatlantic Slave Trades, from the 1500s to the 1800s. This Diaspora took millions of people from Western and Central Africa to different regions throughout the Americas and the Caribbean.The Sidis comprise scattered communities of people of African descent who travelled and settled along the western coast of India, mainly in Gujarat, but also in Goa, Karnataka, Andhra Pradesh, Sri Lanka and in Sindh (Pakistan) as a result of the Indian Ocean trade from the thirteenth to nineteenth centuries. Today, scholars who study black life and culture in the African Diaspora generally employ several characteristics in their analysis:

1) Dispersal/Migration; 2) Germination; and 3) Community of Consciousness.

Keywords :-

India, Africa, international migration, xenophobia, Afrophobia, racism, violence, Afro-Indian relations, informal sector, illegal migration, forced migration, slave-trade, minorities.

Introduction :-

Igbo culture (Igbo: "menala nd" Igbo) are the customs, practices and traditions of the Igbo people of southeastern Nigeria. It consists of ancient practices as well as new concepts added into the Igbo culture either by cultural evolution or by outside influence. These customs and traditions include the Igbo people's visual art, music and dance forms, as well as their attire, cuisine and language dialects. Because of their various subgroups, the variety of their culture is heightened further.Recurring episodes of anti-African violence in India and growing anti-Indian sentiment across the continent reveal the fissures in the carefully crafted narrative of South Asian-African relations. Where once the "Bandung Spirit" held sway, #GandhiMustFall captures the current zeitgeist. Beyond the fiction of Indo-African solidarity, Vijay's comments unearthed the complicated emotions around India's view of Africans, and relatedly, Blackness. Terms to denigrate dark-skinned people—Kaalu, Karuppu, Madrasi, Blacky—easily roll of Indian tongues whether referring to Africans or even their own darker-hued family and friends. In response to Vijay's comments, North Indians on Twitter argued that India is a non-racial society, while many South Indians instead embraced the label, pointing to a long history of claiming a Black identity both as a form of political solidarity as well as a reaction to the deeply seated colorist views that pervade Indian society.

The Indian in Africa has historically been seen as wedged between white settlers and the majority African population. Though there had been contact for thousands of years, the first big wave of Indian settlement in Africa came with the inauguratio n of indentured labour in the 1830s. Indentured migrants were followed by free Indian traders and others escaping the predations of the British Raj. Many chose to make a life in Africa. This chapter provides an overview of the Indian diaspora in Africa, se eking to highlight the continuities and changes wrought both by Indians' own agency in the context of the emergence of independent India and by post-colonial African governments. While being situated against the backdrop of African drift into forms of raci al nationalism, this chapter draws attention to new and old diasporas and different post-liberation outcomes in places like Mauritius, Uganda and South Africa.

The Vijay debacle and the responses it provoked exemplify the confusion around Indo-African relations. Categorical statements about the state of the relationship whether "India and Africa are natural partners" from the former Indian President, or "the majority of Indians are racist" in the words of Julius Malema, the South African politician, reveal the range of different viewpoints. They also erase the complex racial politics of South Asia, where identities like "Adivasi", "Dalit" and "Dravidian" have long sought to build a common cause with the global Black diaspora. Amidst this fractious debate, Shobana Shankar offers a masterclass. Eschewing the typical episodes used to prove

Indo-African solidarity or antagonism, she provides a nuanced account of the myriad ways South Asians and Africans have sought to navigate their racial estrangement.

These uncomfortable dynamics captured my interest, how they were negotiated in everyday encounters. The changing and sometimes unpredictable nature of African-South Asian tensions lay in plain sight but has been silenced for a lot of reasons—lack of language to discuss the complexity of race outside Black-white tensions, the need for Afro-Asian solidarity to fight European colonialism and racial oppression, and the desire to create strong postcolonial alliances in the new world order. So I traveled beyond the world of formal politics, to examine Afro-South Asian interactions apart from and against the backdrop of Bandung and the non aligned movement. What lay beyond the image of Nkrumah and Nehru huddled together, planning the next move against the British? This image was just that: an image—to reconstruct the idea of Africa-South Asia relations as a politically important and positive one that recent history challenged. I was intrigued by West Africa as a seemingly new frontier for African-South Asian relations and an important one, which is why I turned my focus to the neglected stories in that part of the continent.

Africa and India share a long history of trade, investment and slavery. The Portuguese alone brought up to 80,000 slaves from Mozambique to India since the 16th century. Unlike slaves in other parts of the world, African slaves, soldiers, and traders had a strong military and cultural influence on India's culture and society. Some of the slaves even held privileged positions. Today India competes with other global players, especially China, for African resources and markets. Growing racism and Afrophobia towards African migrants, however, could hamper the ambitions of the New-Delhi government. India's social networks and political leaders are increasingly looking for scapegoats and "strangers" to blame for their failures due to religious, racist and linguistic prejudice. Racism and Afrophobia did not appear first under Modi's administration, but they have become more daunting and contagious. The famous Indian writer and political activist, Arundhati Roy, rated Indian racism towards black people as almost worse than white peoples? racism.

For example, Africans, who were often summarily disqualified as gerians's, were generally accused of being drug dealers and even suspected of, cannibalism?. Yet, Indian authorities at all political levels did not effectively counter this. On the contrary, they not infrequently encouraged these prejudices. Modi, for example, compared breakaway Indian regions to, Somalia?.

Along with Indians being displaced to Africa, many Africans also were displaced to India. There is a long-established history of the African Diaspora in India. As Indians were being brought to Africa as indentured laborers, the same was true inversely. Africans were brought as forced labor to India. Post-independent India and African diaspora Since the, many Indian immigrants have gravitated

towards the Middle East, Northern America, and Western Europe at higher rates than African migration. Still, the opportunities in Africa have attracted Indian migrants. Many new migrants go to Africa on temporary work permits and do not seek permanent citizenship. Since the late 1990s, there has been a trend of Indian migrants migrating to Africa in pursuit of going further west.

There are a significant number of Indians who reach the African continent without legal documents. As a Kenyan magazine, The Analyst, reported, "While official figures show only 1918 work permits issued from the Asian subcontinent in a three year period – 1995 (731), 1996 (703), and 1997 (484) – unconfirmed reports state that between 30,000 to 40,000 immigrant workers from the Asian subcontinent have entered Kenya in the last four years" Official records of the Government of India note the increasing presence of Indian communities in the African continent. In 2001, a released report by the High Level Committee on Indian Diaspora estimated the total Indian Diaspora in Africa to be 2,063,178 (including 1,969,708 people of Indian origins, 89,405 non-resident Indians, and 3,500 stateless people Indians of the diaspora were spread over 34 countries across the continent.

The most recent estimates on overseas Indians indicate the strength on the Indian Diaspora on the continent to have risen to 2,710,6545. Members of the Indian diaspora reside in 46 countries of Africa. Indians in Africa account for 12.37% of the total diaspora in India over time. The concentration of Indian diaspora populations varies substantially across the continent. In Mauritius, 70% of the total population are members of the Indian diaspora 800,000 Indians live in Nigeria, where 100,000 Indian businesses can be found The large populations of Indians within Africa could be the cause of the political support Africa is seeing from India now. The previous Prime Minister of India, Manmohan Singh, recognized Africa as the growth pole of the world in 2011.

Since this acknowledgement, India has shown their faith in Africa through the expansion of trade. In 2015, India's trade to Africa doubled from 24.98 billion (period of 2006-2007) to $72 billion. In return, Africa has backed the politics of India and allowed for new export markets from the nation.

European planters as being rebellious and having a high rate of suicide to escape slavery. There is evidence that traders sought Igbo women. Igbo women were paired with Coromantee Akan men to subdue the men because of the belief that the women were bound to their first-born sons' birthplace.

It is alleged that European slave traders were fairly well informed about various African ethnicities, leading to slavers targeting certain ethnic groups which plantation owners preferred. Particular desired ethnic groups consequently became fairly concentrated in certain parts of the Americas. The Igbo were dispersed to colonies such as Jamaica, Cuba Saint-Domingue, Barbados,

Colonial America, Belize and Trinidad and Tobago among others.

Elements of Igbo culture can still be found in these places. For example, in Jamaican Patois, the Igbo word unu, meaning "you" plural, is still used. "Red Ibo" (or "red eboe") describes a black person with fair or "yellowish" skin. This term had originated from the reported prevalence of these skin tones among the Igbo, but eastern Nigerian influences may not be strictly Igbo.The word Bim, a colloquial term for Barbados, was commonly used among enslaved Barbadians (Bajans). This word is said to have derived from bém in the Igbo language meaning 'my place or people', but may have other origins see: Barbados etymology. A section of Belize City was named Eboe Town after its Igbo inhabitants. In the United States, the Igbo were imported to the Chesapeake Bay colonies and states of Maryland and Virginia, where they constituted the largest group of Africans. Since the late 20th century, a wave of Nigerian immigrants, mostly English and Igbo-speaking, have settled in Maryland, attracted to its strong professional job market They were also imported to the southern borders of Georgia and South Carolina considered the low country and where Gulluh culture still preserves African traditions of its ancestors. Today, there is an area called Igbo Landing, where a group of Igbo had tried to drown themselves, rather than become slaves, when they disembarked the slave ship. Osu are a group of people whose ancestors were dedicated to serving in shrines and temples for the deities of the Igbo, and therefore were deemed property of the gods. Relationships and sometimes interactions with Osu were (and to this day, still are) in many cases, forbidden.

The Osu system can be traced far back to the days of Igbo forefathers when traditional religion was widely common and popular before christianity penetrated the Igbo land, as we had majorly two categories of people; the freeborn, known in Igbo language as Nwadiala and the slaves, known in Igbo as the Osu.

To this day being called an Osu remains a stigma that prevents people's progress and lifestyles. Kola nut Igbo: 'j' occupies a unique position in the cultural life of Igbo people. 'j' is the first thing served to any visitor in an Igbo home. 'j' is served before an important function begins, be it marriage ceremony, settlement of family disputes or entering into any type of agreement 'j' is traditionally broken into pieces by hand, and if the Kola nut breaks into 3 pieces a special celebration is arranged.

Conclusion :-

The Nizam of Hyderabad also employed African-origin guards and The study of the African diasporas allows us to better understand present-day challenges and their dynamics – such as economic crisis, democratization, social movements, contestation, gender, racial issues, heritage discourse, identity etc. Diaspora is a generic term used for addressing people who have migrated from the territories that are currently within the borders of the Republic of India. African history does not

begin with slavery, Africa's contributions to the development of mathematics, astronomy, medicine, architecture, philosophy, civilization, etc. are largely ignored. For instance, many notable Greek philosophers spent years in Africa learning from African philosophers who practiced philosophy long before the rise of Greek philosophy. Africa is home to many diverse countries and cultures, all with their own unique history. Many of the kingdoms of Africa are unknown; let us take a look at some. PanAfricanism is a political doctrine, as well as a movement, with the aim of unifying and uplifting African nations and the African Diaspora as a universal African community. Pan-Africanism aims to build solidarity and unity among all people of African Descent to promote social, political and economic success. In essence, Pan-Africanism holds that Africans and Africans in the Diaspora share not only a history, but common destiny. The Indian Diaspora in Africa is estimated to be 2.6 million strong and is spread to 46 countries. It is about 12 per cent of the total Indian Diaspora in the world.

The Siddi population derived primarily from Bantu peoples of Southeast Africa who were brought to the Indian subcontinent as slaves by the Portuguese. Most of these migrants were or else became Muslims, while a small minority became Hindu soldiers.

References :-

1. Cissé, Daouda (2021) : As migration and trade increase between China and Africa, traders at both ends often face precarity. Washington D.C.: Migration Policy Institute (MPI), July 21, 2021
2. Nwauwa, Apollos O.; Anyanwu, Ogechi E. (24 October 2019). Culture, Precepts, and Social Change in Southeastern Nigeria: Understanding the Igbo.
3. The Igbo People - Origins & History". faculty.ucr.edu. Retrieved 2020-05-28
4. Gill, B. (2021): Dead papers: migrant 'illegality', city brokers, and the dilemma of exit for unauthorised African migrants in Delhi. Journal of Ethnic and Migration Studies, 2021 - Taylor & Francis
5. Jayasuriya, S de Silva (2016): Indian Ocean African Migrants: Recognition and Development. In: Kitagawa, K. (ed.) (2016): African and Asis entanglements in the past and present: bridging history and development studies. Kansai Univ. Inst. Repository, pp. 17-24
6. Kohnert, D. (2011): Cultures of Innovation of the African Poor – Common roots, shared traits, joint prospects? On the articulation of multiple modernities in African societies and Black Diasporas in Latin America. In LeMeur, Pierre-Yve Schareika, Nik / Spies, Eva (e (2011): Auf dem Boden der Tatsachen. Cologne: Köppe, Mainzer Beiträge zur Afrikaforschung 28, pp. 241 -262
7. Kohnert, Dirk (2016): Chinese and African migrant entrepreneur's articulation shaped by African agency. Strategic Review for Southern Africa, vol. 38 2016.2: 156-166
8. Kohnert, Dirk (2021): The socio-economic impact of Brexit on India, Pakistan, and Sri Lanka in times of Corona. MPRA-WP, Nr. 108822
9. Ali, S. S. African Dispersal in Deccan: From Medieval to Modern Times. Hyderabad: Orient Longman, 1996.

Email : Asifbindu1@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
August 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 301-305

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उषा प्रियवंदा का उपन्यास : 'रूकोगी नाही राधिका' – नारी मुक्ति की आकांक्षा का स्वर

डॉ. आर. बी. वाणिश्री
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, सरकारी स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पुत्तूरू।

हिन्दी कथा साहित्य का प्रवृत्तिगत परिवर्तनों में स्त्री लेखन एक महत्वपूर्ण पडाव है। स्त्री लेखन में 'उषा प्रियंवदा' जी एक महत्वपूर्ण पहचान बनकर उभरा है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख लेखिका श्रीमति उषा प्रियंवदा जी एक प्रवासी भारतीय है जो अंग्रेजी की अध्येता होते हुए भी अपनी रचनाओं के द्वार हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

उषा प्रियंवदा जी का जन्म सन् 1930 में कानपुर में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए, और डि.लिट करने के बाद, वे डिल्ली के मशहूर लेडी श्रीराम कालेज और इलाहाबाद विश्व विद्यालय में कुछ साल अध्यापन कार्य करने के तुदुपरांत फुलब्रइट स्कालरशिप पर अमेरिका जाकर अनेक पदों को अलंकृत किया। वे अपने व्यापक अनुभव, चिंतन के आधार पर अनेक रचनाओं के द्वारा हिन्दी साहित्य को सुशोभित किया उनके उपन्यासों में 'अंतर्वशी', 'शेषयात्रा', 'पचपन संभे लालदिवारें', 'रूकोगी नही राधिका' आदि प्रसिद्ध है। मेरी प्रिय कहानिया, 'एक कोई दूसरा' 'जिंदगी और गुलाब के फूल' आदी कहानी संभ्रह प्रमुख है।

नारी की मुक्ति, स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छा, नारी की सशक्त छवि के निर्माण की प्रबल आकांक्षा उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में प्रमुख रूप से द्रष्टव्य होता है। नारी मुक्ति का स्वर, ताज्ञन्य चेतना उनके उपव्यासों का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

उषा प्रियंवदा युगीन चेतना से प्रभावित है। बदलते हुए परिवेश, स्थितियाँ, और मानवीय संबंधों का प्रभाव उनके जीवन - दर्शन को रूपायित किया। सामाज में नारी पर होनेवाला अत्याचार, और शोषण हमेशा उनको चुबती थी। इसीलिए वे अपने कलम के द्वारा शोषण और उत्पीडन के प्रति जागरण और विद्रोह जगानेवाली अनेक सशक्त नारी पात्रों का सृजन किया। उषा पियंवदा की दृष्टि में नारी शोषण का यही एक प्रमुख कारण है कि स्त्रियों में कभी यह बोध जागृत नही है कि वे भी समाज का एक अदूठ हिस्सा है। उनका भी एक व्यक्तित्व है, आत्म सम्मान है, आशाएँ है। नारी को इस दयनीय स्थिति से मुक्त करके स्त्रियों में एक सजगता लाने का भरपूर प्रयास उषा जी ने किया।

उषा जी जीवन के अनेक विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए, नारी जीवन की विडंबनाओं को उनकी मानसिक स्थितियों को अपने साहित्य के माद्यम से पाठकों के साम ने प्रस्तुत किया अपितु उन तमान परिस्थितियों से लडकर अपने अस्थित्व को बनाये रखने की संघर्षशीलता का परिचय भी अपने कथा साहित्य के नारी पात्रों के द्वारा पाठक जगत को दर्शाया। ऐसी ही एक स्वच्छंद और स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली स्त्री 'राधिका' की कथा है 'रूकोगी नही राधिका'। इस उपन्यास की नायिका पुरुष सत्ता के विरोध में अपना स्वर उठाती है।

भारतीय समाज में पनपगयी उन तमाम परंपरागत मान्यताओं पर प्रहार करती है। उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'रूकोगी नही राधिका' में राधिका इस निरंतर पुरुषवादी मानसिकता का विरोध करते हुए एक स्वच्छंद और स्वतंत्र स्त्री व्यक्तित्व को दर्शाती है।

जिन्दगी में अनिश्चय स्थिति आने पर व्यक्ति समझता है कि उनका अपना कोई अलग अस्थित्व नही। वह अपने को पराधीन मानता है। लेकिन ‘रूकोगी नही राधिका’ उपन्यास की नायिका ‘अपने जीवन निर्णय लेने में सक्षम है। और अपने ऊपर थोपी गयी किसी भी प्रकार के निर्णय को वह स्वीकार नही करती है। एक आधुनिक शिक्षित स्त्री के रूप में सदियों से चली आ रही उन तमाम मान्यताओं को तोडती है और जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण अपनाती है।

स्वतंत्रता - पूर्व नारी की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। घर के चार दीवारो के अंदर सिमट कर एक अभिराप्त जीवन बिताती थी। महादेवी वर्मा के बातों में - ‘चाहे हिन्दू नारी की गौरव गाथा से आकाश गूँज रहा हो, चाहे उसके पतन से पाताल काँप रहा हो, उस के लिए ‘न सावन सूखा, न भादों हरा’ की कहावत चरितार्थ होती रही। उसे हिमालय को जला देनेवाला उत्कर्ष और समुद्र तल को गहराई से स्पर्धा करनेवाले उत्कर्ष दोनों का इतिहास आँसूओं से ही लिखना पडा है। लेकिन ‘रूकोगी नही राधिका’ उपन्यास की राधिका, लेखिका उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व विकास के अगले चरण का सृजन है जो भारतीय रीति रिवाजों की सीमाओं को पर करती है, जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाती है। (श्रृंखला की कडियाँ - महादेवी वर्मा, पृष्ट - 39).

उपन्यास में जब राधिका यह जानती है उसकी माँ के देहांत के उपरांत उनके पिताजी विद्या से विवाह करने जा रहे है, राधिका पिता के इस निर्णय स्वीकार नही कर पाती है बेबाकी से कहती है - ‘राधिका भक से जल उठी, जो आप चाहते है वही हमेशा क्यों हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नही है। मैं आपकी बेटी हू, यह ठीक है, पर अब मैं बडी हो चुकी हूँ और मैं जो चाहूँगी वही करूगी। (रूकोगी नही राधिका, पृष्ट 51) वह पिता के द्वारा बनाये गये बंधनों में बंधना नही चाहती।

राधिका का परिचय किसी डैन नामक पत्रकार के साथ होता है वह पिता के सहमति के बिना डैन के साथ अमेरिका चली जाती है। लेकिन डैन से उनका संबंध अधिक दिनों तक टिक नही पाती है। भारत आने के बाद वह अक्षय और मनीष के संपर्क में आती है किंतु उन दोनों में जीवन साथी के गुण न पाकर उनसे विवाह नही करती।

वह खुलकर मनीष को समझा देती है वह कहती है - ''कि तुम बार - बार विवाह की बात क्यों छेड देते हो, मै अभी विवाह की मूड में नही हूँ।'' साथ विवाह प्रस्ताव के समय अक्षय से कहती है - 'मै नही चाहती कि जल्दबाजी में तुम अपने को कमिट करो अक्षय'। (रूकोगी नही राधिका - पृष्ट 119).

क्यें कि राधिका जानती है कि उसके अतीत को लेकर अक्षय के मन को कुछ निरंतर काटता रहता है। राधिका अपने पिता से साफ साफ कह देती है कि वह किसी अनजान पुरुष से सप्तपदि का रस्म पूरी करवाकर उसकी पत्नी बनना नही चाहती (रूकोगी नही राधिका- पृष्ट 36). अतः वह जो डान लेती है वही करती है। वस्तुतः सदियों से पराधीन स्त्री के उन तमान बेडियों को उषाजी तोडती है। एक उन्मुकत और स्वच्छंद स्त्री को दर्शाती है। राधिका उषा जी की आधुनिक स्त्री है जो पहली बार पुरुष के सामने शर्त रखती है।

राधिका भारतीय - विदेशी संस्कृतियों के बीच मिसफिट होकर रह जाती है। राधिका परंपरागत मान्यताओं को तोडने का साहस दिखाती है। विद्या की मृत्यु के बाद राधिका के पिता निरीह, कातर, दुखी बन जाता। वह चाहता है कि राधिका पहले की तरह उसके पास टहर जाये। लेकिन राधिका नही मानती। पिता पूछता है - ''अभी तो रहोगी।'' पिता का साथ चाहते हुए भी राधिका जवाब देती है - ''नही कल जाऊँगी। (रूकोगी नही राधिका - पृष्ट 56).

अहं की गांठ के कारण अपने को छोटा दिखाने के लिए राधिका भी तैयार नही। अपनी इच्छा का विरुद्ध पिता के व्यवहार से रुस्ट राधिका उससे दूर रहती है और प्रेम के तलाश में घूमती है।

इस रूप में नारी की स्वच्छंद और सशक्त छवि के निर्माण ही उषा जी को एक अलग पहचान देती है। संक्लिष्ट परिस्थितियों में भी इनकी नारी दृढ़ चित्त बनी रहती है। संघर्ष करती हुई अपनी क्षमता का परिचय कराती है।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
August 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 306-311
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी जीवन : विशेष सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के उपन्यास

राजू. रमादेवि
हिन्दी प्राध्यापक, डी. आर. जी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, ताडेपल्लिगूडेम, पश्चिम गोदावरी जिला, आन्ध्र प्रदेश।

प्रस्तावना :–

हिन्दी कहानी लेखन में सिद्ध हस्त उषा जी ने कथा साहित्य विधा के साथ–साथ उपन्यास को भी सशक्त बनाया। आपने अपने उपन्यासों में देश–विदेश की नारी की स्थिति तथा मध्यमवर्गीय पारिवारिक यथार्थ समस्याओं से प्रस्तुत किया गया हैं। फुलब्राइट स्कालरशिप पाकर उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाने से पूर्व लेखिका दिल्ली विश्वविद्यालय के लेड श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षा कार्य कर चुकी थी। अपने पहले उपन्यास 'पचपन खम्बे लाल दीवारे' (1961) से पूर्व लेखिका एक दर्जन से अधिक कहानियाँ लिख चुकी थी। लेकिन उनकी कहानी 'वापसी' के प्रकाशन के बाद उनके रचनाकर्म को साहित्य संसार में संजीदगी से लिया जाने लगा।

आलेख का सारांश :–

प्राचीनकाल से आज तक मनुष्य अलग–अलग कारणों से प्रवास की ओर आकर्षित होता है। विभिन्न साहित्य–रूपों के माध्यम से विदेश–प्रवास के अनुभवों को सामाजिक स्तर पर संप्रेषित करने की परंपरा भी अत्यंत प्राचीन है। कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्यकार अपनी साहित्य सृजन के द्वारा अपने देश और समाज के प्रति दोहरे उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है क्योंकि स्वदेश ले प्रति नास्टेल्जिया और वर्तमान देश के प्रति नैतिकता बोध की मानसिकता होती है।

उषा जी के उपन्यास लेखन को प्रवास पूर्व और उत्तर प्रवास दो स्पष्ट विभाजक रेखाओं के मध्य बांटा जा सकता है। प्रवास पूर्व यान अमेरिका जाने से पूर्व लिखे गए उपन्यास पचपन खम्बे लाल दीवारें का समूचा परिवेश और स्थितियाँ भारतीय है। छठे दशक का यह समय स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता के सन्दर्भ में वर्जनाओं के टूटने का समय था। लेकिन व्यक्ति मन पर सामजिक बन्धनों का गहरा प्रभाव था। अतः केवल 'स्व' के सन्दर्भ में निर्णय लेना स्त्रियों के लिए अत्यंत दुष्कर था। परम्परित सामाजिक मॉडल की उपेक्षा कर स्वयं को समाज से काट लेने का खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। स्त्री की आदर्श छवी का ऐसा घटाटोप था कि स्वयं को खलनायिका की भूमिका में रखने का साहस ही बहुत कम पाया जाता था। यही कारण है कि सुषमा अपने सुख, अपने जीवन, केवल अपने लिए निर्णय नहीं ले पाती। केवल अपना घर परिवार को बसा लेने के लिए वह अपने पर आश्रित परिवार को मंझधार में छोड़कर नील के साथ नहीं जा पाती। वह जानती है कि नारायण के साथ विवाह न हो पाने के मूल में भी परिवार की विवशता है। इस सत्य का स्वीकार भी उसे परिवार के प्रति संवेदनहीन

नहीं होने देता।

सीमित आय वाले मध्यवर्गीय परिवार में एक पढी–लिखी, नौकरीपेशा, अधिक उम्र तक अविवाहित रह जाने वाली लड़की की क्या स्थिति होती है, उसे किस प्रकार के मानसिक तानाओं और संघर्षों से गुजरना पड़ता है, इसका उषा ने बहुत प्रभावी अंकन किया है। परम्परागत नैतिक–सामाजिक मूल्यों के तड़कने की पीड़ा को भी लेखिका ने गहरी सवेदंनशीलता के साथ व्यक्त किया है। इसके साथ जुड़ी प्रेम कथा यद्यपि उपन्यास में शिक्षित युवती की कम उम्र के प्रेम से विवाह न कर पाने की विवशता और तनाव से, जो जितना बाहरी है, उतना ही आतंरिक भी, जोड़कर लेखिका ने उसे सार्थकता प्रदान की है।

इसके बाद दूसरी औपन्यासिक कृति के प्रकाशन से पूर्व लेखिका उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका जा चुकी थी। दोनों के बीच की अवधि में घटित व्यक्ति जीवन के अनुभवों ने लेखिका की जीवन दृष्टि को विस्तृत आयाम देने में सहायता की है। दूसरे उपन्यास ‘रूकेगी नहीं राधिका’ को उनके लेखन कर्म में प्रस्थान बिंदु की तरह रेखांकित किया जा सकता है। क्योंकि इससे पूर्व की रचनाओं में भारतीय परिस्थितियों, परिवेश और फलस्वरूप उपजा जीवन दर्शन सभी कुछ भारतीय है। ‘रूकेगी नहीं राधिका’(1966), ’शेष यात्रा‘ (1984), ‘अंतवर्शी‘ (2000),’ भया कबीर उदास’ (2007), और नदी (2014) तक सभी उपन्यासों की पृष्ठिभूमि अमेरिका है।

प्रवासी जीवन दो तरह का हो सकता है एक अल्पकालिक–जिसमें व्यक्ति विशिस्ट लक्ष्य–प्राप्ति या अवधी के लिए विदेश में रहता है। दूसरा दीर्घकालिक या सम्पूर्ण विस्थापन–जिसमे व्यक्ति स्थायी रूप से बस जाता है। दोनों ही प्रकार की परिस्थितियों में व्यक्ति की मानसिकता में अंतर होता है। लिकिन प्रवासी की प्रारम्भिक स्थितियों में होने वाले अनुभव लगभग होते है क्योंकि दो देशों के बीच का सांस्कृतिक अंतर और अपनी पूर्व निर्धारित स्टीरियों टाईप मानसिकता के बीच तालमेल बैठाना धैर्य की माँग करता है।

उषा जी के उपन्यासों में दोनों तरह के प्रवासी जीवान चित्र मिलते हैं। प्रारंभिक स्थितियों में राधिका केवल शिक्षा ग्रहण के लिए अमेरिका गई है। अमेरिका पहुँच कर वह वहाँ के समाज में अपने आप को एडजस्ट करने का प्रयासी करती है। वहाँ जीवन को जीने में विश्वास रखा जाता है। इसलिए काम और खुशी दोनों ही जीवन में सामान स्थान पाते है। लेकिन स्मृतियाँ तो बार–बार चली आती है। उसे बार–बार याद आता है कि वह पिटा के जीवन का केंद्र थी। लेकिन पिटा के पुनर्विवाह पर राधिका उनसे नाराज हो गई थी। इसलिए डैन के आफर को स्वीकार कर लेती है। डैन अमेरिका समाज में पला बढा है। एक वर्ष से भी कम समय में डैन उससे अलग हो जाता है और राधिका को अपने निपट अमेरिका तरीके से यह भी समझाता है कि वह राधिका के साथ नहीं रहना चाहता, क्योंकि वहाँ की संस्कृति में सम्बन्ध का स्वरुप उल्लास से परिपूर्ण है।

पढाई पूरी होने पर भारत लौटना उसके निर्णय का अंश था। लेकिन यहाँ वापस लौटने पर उसने जाना कि ‘आँख ओट बात ओट’ वाली कहावत संबंधों पर भी लागू होती है। जहां परिवार के लोगों के बीच वह अपने को मिसफिट पाती है वही शेष लोग भी एक तटस्थता के साथ उसे स्वीकार करते है। वह स्वयं को सबके बीच अकेला पाती है। स्वदेश के परिजन, परिचित्र, मित्र सभी की अपेक्षाएँ कुछ अलग हैं और उसका दृष्टिकोण अलग।

जब कोई व्यक्ति विदेश प्रस्थान करता है तो उसके लिए वही ठहर जाता है। उसकी स्मृतियों में वही अंतिम क्षण टंगा रहता है। लेकिन समय तो रूकता नहीं, अपनी गति से लगातार चलता है। वही व्यक्ति जब

वापस स्वदेश लौटता है तो कुछ भी पहले जैसा नहीं रहता। यहाँ से जाने के बाद विदेश का अनुभव और वापस स्वदेश लौटने का अनुभव कमोबेश एक जैसे हो जाते है।

राधिका अपने अंतर्मुखी स्वभाव के कारण अकेली रहती है। यह अकेलापन उसे अपने बौद्धिक पिता से विरासित में मिला है, इसका अंत अमेरिका प्रवास में भी नहीं होता। बरसों प्रवासी जीवन भी लेखिका के भीतर से भारतीय स्त्री को सदैव अपने निर्णयों के लिए पिता, पति या पुत्र पर ही आश्रित होना पड़ता था। इसलिए बौद्धिक सुषमा और राधिका दोनों ही अपने लिए पलायन का मार्ग चुनती है। चाहे सुषमा का व्यक्तिगत सुख से पलायन हो या राधिका का स्थितियों का सामना न कर सकने के कारण विदेश पलायन हो :—

अपने बारे में आत्मविश्वास के साथ दो टूक निर्णय लेने में स्त्री मन की असमर्थता उषा प्रियंवदा के दोनों आरंभिक उपन्यासों की थीम है। दोनों के स्त्री पात्र उपन्यास के अंत में अपने जीवन के बारे में जो फैसला करते है, उसमे असमंजस का गहरा दंश है।

लेकिन अपने अगले उपन्यास में शेष यात्रा (1984) में उषा जी की नायिका अनुका अकेलेपन से लड़ते हुए उसे सुखद साहचर्य में परिणत कर देती है। इस निर्णय तक पहुँचने में लेखिका ने एक लम्बी समयावधि को पार किया है। उपन्यास के पूर्वार्ध की अनुका तो वही सती—सावित्री टाईप स्त्री थी। जो पति की इच्छा—अनिच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करने में ही अपने को सार्थक समझती थी।

लेकिन प्रणव के द्वारा छोड़कर चले जाने और कोर्ट रूप में प्रणव द्वारा मिथ्या दोषारोपण के बीच के समय में राधिका के अंदर बहुत कुछ बदल गया था। अमेरिकी जीवन पध्दति के अनुरूप उसने यथार्थ का सामना सहायता से करने का साहस जुटा लिया था। उसे स्वयं ही नहीं पता चला कि उसमें इतना साहस किस तरह जुट गया था। इस प्रक्रिया में दिव्या और जयंत की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

नारी को उसकी सामर्थ्य उसकी शामत बताने की आवश्यकता है उसे प्रेरित करने की आवश्यकता है तभी वह अपने अस्तित्व को जान सकेगी दिव्या अनु के अंदर उसी सामर्थ्य को तलाशती है इसे प्रेरित करती है — प्रणव के साथ संबंध में जो अभिजात्य जुड़ा था जिस पारिवारिक उचिता बौद्ध ने उसे प्रभावित किया था रेस्तरां में जयंत और दिव्या के साथ काम करते हुए वह अचानक यथार्थ का ठोस सिरा पा गया था। यही वह बिंदु था, जहां से अनु अपने अस्तित्व को अपने 'स्व' के स्तर पर स्वीकार करती है और आगे बढ़ने का रास्ता निकाल लेती है।

''कितनी बातों, कितनी व्यावहारिक बातें, अब यह सब करना ही पड़ेगा।"

अमेरिकी जीवन—पद्धति में शरीर पहले हैं, मन बाद में। यह तथ्य भी बार—बार लेखिका ने दिखाया है। डॉक्टर वाटरमैन द्वारा अनु के घर आकर आग्रह करने की स्थिति में, प्रणव के विभा, नीरज आदि के साथ संबंध की स्थिति में और दीपांकर द्वारा अनु के प्रश्न पूछे जाने की स्थिति में।

"प्रणव कुमार के बाद में पहला नहीं हूं ना?"

"अनु ने कहा," मैं उनके नाम की माला नहीं जप रही हूं... वह सब गुस्सा, वह कड़वाहट मैंने अपने से अलग कर दी है—केंचुली की तरह।"

अनु के उस कमजोर जिलजिले व्यक्तित्व एक मजबूंद और बौद्धिक स्त्री का निकलना मानों उसका पुनर्जन्म है। लेकिन उसके प्रारंभिक व्यक्तित्व को देखकर या प्रणव के साथ बिताए वर्षों में कभी उसने ऐसा कोई

संकेत नहीं दिया था, जबकि वह यूनिवर्सिटी टॉपर रही थी क्योंकि उस पर परंपरागत भारतीय मानसिकता हावी थी, लेकिन स्थितियों के प्रवाह अमेरिकी जीवन, मित्र, परिवेश सभी ने उसे उसकी सशक्तता से परिचित करा दिया था। यही कारण था कि वह वर्तमान के सुंदर और सुखी जीवन का वरण कर सकी थी।

इस बिंदु पर प्रणव की जीवन–शैली अमेरिकी और विचार शैली ठेठ भारतीय ही दिखती है। इसलिए अपने द्वारा ऑफर किए गए पैसों को अनु द्वारा स्वीकार कर लेने की बात वह सहजता से नहीं ले पाता बाद में भी जब वह अनू से मिलने की इच्छा जाहिर करता है तो अनु को डॉ. अनु के रूप में देखने के लिए वह कतई तैयार नहीं था। उसे लगा था कि वह कोई बुटिक या रेस्तरां ही चला रही होगी।

उपन्यास का अंत बहुत स्पष्ट है अनु द्वारा अतीत का स्पष्ट परित्याग और प्रणव द्वारा अप्रत्याशित वर्तमान का स्वीकार। लेकिन इस उपन्यास में लेखिका ने अपनी नायिका को पिछले उपन्यासों की नायिका की तुलना में अनिश्चित और असमंजस की घुटने से निकालकर भविष्य के प्रकाशन में लाकर खड़ा कर दिया है।

उषा जी का अगला उपन्यास 'अंतर्वशी' (1988) 16 वर्षों के अंतराल के बाद पाठकों के सामने आता है। यह उपन्यास एक साथ दो स्तरों पर चलता है एक तो बंसरी उर्फ वनश्री उर्फ वाना के रूपांतरण और दूसरे प्रवासी जीवन के यथार्थ को पाठकों के समक्ष रखता हुआ। क्योंकि विदेश प्रवास आज भी यह अलभ्य इच्छा की तरह भारतीय मनोवृति का अंश है।

"वाना कि होकर भी कहानी केवल उसी की नहीं है– इसमें प्रवासी भारतीयों, बल्कि अमेरिका में एशियाई समाज की एक प्रामाणिक और अंतरंग दुनिया से भी साक्षात्कार किया जा सकता है।"

वनश्री के जीवन का केंद्र राहुल है। क्योंकि रिश्ता तय होते समय पति के रूप में उसने राहुल की झलक पाई थी और डेढ़ वर्ष तक उसे मन–मस्तिष्क में संजोया था। विवाह के समय और अमेरिका पहुंचने पर विशेष के बारे में मिलने वाली सूचनाओं ने उसे खिन्न ही किया था। राहुल के व्यक्तित्व के समक्ष लेखिका शिवेश का व्यक्तित्व हर दृष्टिकोण से कमजोर ही चित्रित किया है। बल्कि कहना चाहिए कि दोनों का व्यक्तित्व एकदम विपरीत है। अलग–अलग समान शैक्षणिक योग्यताओं के बावजूद एक के पास व्यक्तित्व में संतुलन, सौम्यता, धन, यश, पध्दति संवेदनशीलता का समावेश और दूसरे का व्यक्तित्व अस्थिर, उजड्ड गैर जिम्मेदाराना, संवेदनहींन और किन्हीं आर्थ में मर्दवादी कहा जा सकता है।

"विस्मय और आतंक के मिले–जुले मनस्थिति में औसत मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की वनश्री मिशिर नामक नवविवाहित कन्या जब अमेरिकी परिवेश में पहुंचती है तो उसके सामने राहुल के रूप में पति का कंट्रास्ट मौजूद है। जिसे दो क्षणों की भूल से वह शिवेश समझ बैठ थी।"

इन्हीं दो ध्रुवों के बीच वाना अपने व्यक्तित्व का रूपांतरण करती है। वह एक सामान्य सी स्त्री है जो मोटी सी सोने की चेन, दिपदिपाते हीरे, सरसराती सिल्क की साड़ियों की कामना रखती है। लेकिन शिवेश की अकर्मण्यता उसे किसी भी स्तर पर संतुष्ट नहीं करती। तन के स्तर पर यह जल्दबाज, आतुर कामुक 'पुरुष जो उसे कपड़ा अलग तक' करने का समय नहीं देता, तो उसके जरूरत कैसे समझेगा? मन के स्तर पर यह पेइंग गेस्ट ही तो थी' जैसी मानसिकता से ऊपर ही नहीं उठ पाता और अमेरिकी समाज में आगे बढ़ने के लिए जिस कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है उसका भी शिवेश के व्यक्तित्व में नितांत अभाव है। जबकि काम करते हुए वह जानता है कि वह अमेरिकी समाज की नस्लीय मनोवृति का शिकार है। स्थायी नौकरी के लिए उसे

सामान्य से अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। तभी उसको 'कान्तेक्चुअल जाब' दोबारा मिल सकेगी। वह अपनी अस्थिर मनोवृति के कारण कभी भी बास की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास नहीं करता।

इसलिए वाना के जीवन में वह एक 'फिलर' से अधिक का स्थान नहीं पाता। सारिका, अंजी और क्रिस्तीन वाना के व्यक्तित्व के रूपांतरण की प्रक्रिया में प्रेरक तत्व का काम करती हैं। वह वाना को उसके 'स्व' को पहचान कर अपने लिए जीने की प्रेरणा देती है। सारिका की अचानक मृत्यु ने वाना को पहले तो गहरे अवसाद में धकेला, फिर वहीं से उसके बदलाव की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

सात वर्षों के अंतराल पर आने वाला अगला उपन्यास 'भया कबीर उदास' (2000) कैंसर पर आधारित है। विषय की दृष्टि से नवीन होने पर भी वह 'कैंसर डायरी' या कैंसर के लेख–जोख से आगे नहीं बढ़ पाता। लेखिका ने स्तन कैंसर रोग के लक्षण, निदान की प्रक्रिया उपचार के इतने विश्वसनीय चित्र खींचे हैं कि सोचना पड़ता है कि लिखने से पूर्व लेखिका ने पर्याप्त रिसर्च की है। लेकिन इसके साथ ही उपन्यास अमेरिकी जीवन–शैली के प्रभावी चित्र पाठक के सामने अवश्य रखता है। उनके बगैर यह उपन्यास लिल्ली की आत्ममुग्धता और आत्मरति का प्रलाप भर रह जाता है। वनमालि का प्रसंग उपन्यास के सुखद अंत के लिए जोड़ा गया है। स्तन स्त्री के शरीर का महत्वपूर्ण अंग है, एक सेक्स आर्गन के रूप में उसकी उपयोगिता निर्विवाद है, पर वही सब कुछ नहीं है। केवल उसी के अभाव में किसी भी स्त्री को आत्महीनता की ग्रंथि नहीं पाल लेनी चाहिए :–

"कुल मिलाकर या यह तक कैंसर कैंसराख्यान है, जिसकी रचना इस रोग से ग्रस्त स्त्री के निजी अनुभव के रूप में की गई है। डायरी शैली का उपयोग इसमें दर्ज अनुभवों को प्रमाणिक बनाता है। उपन्यास में बीमारी से संबद्ध ब्यौरों को जिस रूप में दर्ज किया गया है वे गहरी अनुभूति और पर्यवेक्षण का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

लेखिका ने प्रारंभ में ही अस्पताल का जो चित्रण किया है विशुद्ध अमेरिकी है। भारतीय अस्पतालों के एकदम उलट–बिल्कुल शांत और सब अपने–अपने काम में मुस्तैद। अपने मरीज के साथ तटस्थ प्रोफेशनल लगाव की भूमिका में।

लिल्ली स्वयं भी उसी शैली में फोटो हो गई है। इंटरनेट से बीमारी के बारे में जानकारियां एकत्र करना, कैंसर सोसायटी की मदद लाइन पर बात करना, अकेले होते हुए भी स्वयं को सर्जरी के लिए तैयार करना। लिल्ली अकेली है, आपरेशन के समय साथ देने के लिए विभाग की सेक्रेटरी आ गई है। बिन कहे दो छात्राएँ आ गई हैं :–

कितने फूल, कितने गुलदस्ते, कितना खाना, कितने फोन, यह सब मेरे इतिहास के क्लास की दो छात्राएं संभालती हैं।

इसके अलावा कॉलेज डाउन परिसर में बहुत अधिक पुरानी ना होने के बावजूद भी हर किसी का मदद के लिए तत्पर रहना। लिल्ली जब क्लासेज से लौटती है तो दरवाजे पर फूलों का गुलदस्ता, खाने की डलिया मिलती है। सबसे असम्पृक्त लिली को लगता है कि वह इन सब सत्कार्यों से दब कर रह जाएगी। जबकि वहां जानती है कि :–

"मैं अपने इस संकुचित विचार को पीछे ढेल देती हूं– विपत्ति पड़ने पर मानव की सहायता करना अमेरिका वासियों का चलन है।"

लेकिन लेखिका जितने तटस्थता से अमेरिकी जीवन शैली के सकारात्मक पक्षों की बात करती है, उतनी

ही तटस्थता से नकारात्मक पक्ष की भी।

कुल मिलाकर यह उपन्यास प्रवासी जीवन का जीवन का जीवन्त और विश्वसनीय चित्र हमारे सामने रखता है।

निष्कर्ष :–

प्रवासी जीवन का वास्तविक स्वरूप पादुकोण के सामने रखा लेखिका का अभीष्ट प्रतीत होता है क्योंकि विदेश जाने वालों में से कोई भी वहां का सच सामने नहीं लाता जबकि वहां के जीवन में अकेले जगमगाहट ही नहीं है बल्कि आगे और आगे बढ़ते जाने के गहरे तनाव है। एक बार वहां जाकर कोई भी नहीं लौटना चाहता क्योंकि लौटने में दोहरा सामाजिक एवं भावनात्मक उन्हें विदेश पलायन के समय प्रदेश का नकार और स्वदेश वापस लौटने पर विदेश द्वारा किया गया अधिकार किस–किस को कैसे समझाएंगे।

उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों के साथ प्रवासी जीवन को एकदम से पाठक के सामने नहीं परोसा है। बल्कि अपने प्रत्येक उपन्यास में वह यह कर चरण आगे बढ़ती है राधिका का अकेलापन। अनु का जीवन की खुशी का स्वीकारना का प्रथम और समलिंगी संबंध। लिली का शेषेन्द्र को स्वीकारना और गंगा द्वारा अपने जीवन में सभी पुरुषों का सहज स्वीकार वस्तुतः क्रमबद्ध रूप से सामने आते हैं।

भारतीय संदर्भ में समानांतर प्रवासी जीवन की जो विश्वसनीय तस्वीर लेखिका ने रखी है वह सहज ही ग्राह्य है।

संदर्भ :–

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, पृष्ठ 277
2. संस्कृति और समाज : सुभाष शर्मा, पृष्ठ 92
3. रूकोगी नहीं राधिका : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ 29
4. रूकोगी नहीं राधिका : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ 88
5. रूकोगी नहीं राधिका : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ 86
6. कथा समय में तीन हमसफर : निर्मल जैन, पृष्ठ 143
7. शेष यात्रा : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ –116, 123, 124
8. समय समाज और उपन्यास : मधुरेश, पृष्ठ 43
9. अंतर्वशी : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ 79
10. कथा समय के तीन हफ्तर : निर्मल जैन, पृष्ठ 157, 165
11. 'भया कबीरदास' : उषा प्रियंवदा, पृष्ठ 63, 65, 86

फोन : 9492239907

Email- ramadeviraju@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 312-315
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

"शेष यात्रा" : एक स्त्री के पूर्ण होने की यात्रा

डॉ. जीतेंद्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, नारायण महविद्यालय, गोरेयाकोठी, सिवान, बिहार, 841434

उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में स्त्री–जीवन के त्रासद स्थितियों का वर्णन किया है। उन त्रासद स्थितियों से स्त्रियाँ लड़ते–जूझते, कमजोर पड़ते, टूटते, बिखरते और अपने को समेटते हुए आगे बढ़तीं हैं।

''शेष यात्रा'' एक ऐसी ही भारतीय स्त्री की दास्तान है जो अमेरिका में अपने पति द्वारा परित्याग किये जाने के बाद विपरित परिस्थितियों में टूटते, बिखरते त्राषद स्थिति में अपने को धीरे धीरे जोड़ते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने की जदोजहद से जूझ रही है। अकेलापन, अनास्था, कुंठा, अजनबीपन, आदि स्थितियों के होते हुए भी उसे अपने ऊपर पर हावी नहीं होने देती है।

उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र अनुका भी अपने पति प्रणव द्वारा छोड़ दिया जाने के बाद पूरी तरह टूटी हुई और असहाय महसूस करती है। आरंभ में वो इसे स्वीकार नहीं करना चाहती है कि प्रणव उसे छोड़ कर चला गया है। इस यथार्थ से आँखे चुराना चाहती है। अनुका अपने आप से साक्षात्कार करती और पाती है कि एक झटके में उसके पूरे अस्तित्व को नकार दिया गया है। उसे लगता है की शायद प्रणव वापस लौट के आ जाय हालाँकि उसे पहले से ही पता है कि वह नहीं आएगा।

"जागकर अनु कहती है, यही यथार्थ है। यथार्थ, प्रणव मुझे छोड़कर चला गया है। अब प्रणव के बिना सारी जिंदगी काटनी होगी, सारी जिन्दगी।"[1] उपन्यास का आरम्भ इसी यथार्थ को जानने और समझने से होता है। वही यथार्थ जो हर स्त्री को जीवन में कभी न कभी सामना करना पडता है। पुरुषों का जीवन होने या न होने पर अपने अस्तित्व का बोध। बचपन में पिता का साथ, बड़े होने पर भाइयों का साथ या किसी करीबी रिश्तेदारों का साथ और विवाह होने पर पति का साथ यदि। आगे चलकर अचानक इनका साथ छुट जाता है या स्त्री अकेली पड़ जाती है तो वह अपने को कमजोर, टूटा हुआ महसूस करती है। उसे लगता है कि जीवन में पुरूष का होना जरुरी है। उसके (पुरुष) बिना वह कुछ नहीं है। आगे का जीवन कैसे कटेगा। किसके सहारे आगे का जीवन बिताएंगी।

अनुका का विवाह अचानक ही होता है। ना तो उससे सलाह ही ली जाती है और ना ही उसकी पसंद पूछी जाती है। जैसे कि आम भारतीय परिवारों में होता है। जो भी माता–पिता या रिश्तेदार कहते है लड़की को सिर झुका कर मानना पड़ता है। अनुका के साथ भी ऐसा ही हुआ "सुबह ऊँची–सी सलवार पहनकर कॉलेज गई थी चाट खाई थी। इस समय एकदम नई साड़ी और सतलड़ा पहने किन्हीं बेटू की वाग्दत्ता बनी बैठी है। वह हतबुद्धि है।"[2] वह हतबुद्धि है क्योंकि वह समझ ही नहीं पाई की अचानक उसका विवाह हो गया। उसने

कभी सोचा भी नहीं होगा कि उसकी शादी इस तरह होगी। फिर भी वो सब कुछ स्वीकार कर लेती है। विवाह के बाद धीरे–धीरे अनु अपने को प्रणव के अनुसार ढालने की कोशिश करती है। और एक पूरी तरह समर्पित पत्नी के रूप में सामने आती है। एक अच्छी पत्नी बन कर अपने घर को संवारने–सहेजने में लग जाती है। जब प्रणव कई बार देर रात या कभी कभी कई दिनों काम के कारण घर नहीं आता है। तब एक पत्नी के नाते अनु कहती है "अब आप बहुत देर देर तक बाहर रहने लगे हैं। मुझे अच्छा नहीं लगता। प्रणव ने बिना झुंझलाए कहा, "तुम्हें इससे समझौता करना पड़ेगा अनु!" अनु के अंदर उदासी, असंतोष, अकुलाहट है। जीवन की गाड़ी अब लड़खड़ाने लगी। शादी के साढ़े चार साल बाद उनके बीच झगडे भी होने लगे। अब प्रणव अनु को आत्मनिर्भर बनने की बात कहता है। अभी भी अनु अपने को एक मर्यादा में बंधा हुआ पाती है। वह कहती है "जैसे रखोगे, रहूंगी। अब शिकायत नहीं करुँगी।''[3] ऐसा नहीं है कि अनु कमजोर है बल्कि वो प्रणव के प्रति पूरी तरह समर्पित है। उसके लिए प्यार का मतलब समर्पण और अपने आप को न्यौछावर कर देना है।

प्रणव काम के सिलसिले में बाहर जाता है, और लम्बे समय तक नहीं आता है। एक पार्टी में अनु से ज्योत्सना बेन मिलती है। अनु के घर आकर प्रणव के बारे में बताती है कि वह किसी और लड़की के साथ रह रहा है और उससे शादी करना चाहता है। यह सुनकर अनु स्तब्ध रह जाती है। ज्योत्सना बेन अनु को प्रणव के पहले के अवैध संबंधो को बताती है। ज्योत्सना बेन चाहती है कि अनु अपना भला बुरा सोचे और जीवन में आगे बढ़ें। लेकिन अनु इन सब बातो पर विश्वास नहीं करना चाहती है। उनकी बातों से अनु को गहरा मानसिक आघात पहुचता है। और इस स्थिति में घर की चीजों को तोड़ना, फोड़ना, फेकना शुरू कर देती है चीखती है चिल्लाती है। तरह–तरह के विचार उसके मन में आते है। पागलों जैसा व्यवहार करती है। वो अपना होश खो बैठती है। यह सब कुछ होता है प्रणव द्वारा अनुष्का को छोड़ देने के कारण। उसे लगता है कि जिस विवाह के वह पूरी तरह समर्पित रही। पति के अनुसार ही कार्य किये। बड़े प्यार से उसने एक घर को बनाया और वह एक झटके में बिखर गया। अस्पताल में बिलखती है और देवी मैया से विनती करती है कि मुझे प्रणव लौटा दे।

डॉ. गुडमैन अनु से कहते है, कि "वह कहता है कि उसके लिए यह मैरिज बहुत पहले ही मर चुकी है।''[4] इस पर अनु कहती है'' कहीं मैरिज भी मरा करती है, खासतौर से हिन्दुस्तानी मैरिज?''[5] जब डॉक्टर गुडमैंन कहता है कि ''जो ठुकराए, उसी के पैर पकड़ती रहो? यही सिखाती है तुम्हारी सभ्यता? मैं मानने को तैयार नहीं हूँ'। तब अनु कहती है ''हमारी सोसायटी औरतों को यही सिखाती है।'' ये बात तो बिल्कुल सच है कि भारतीय सोसायटी मे औरतो को ज्यादा ही झुकना पड़ता है। चाहे पुरूष की ही गलती क्यों ना हो। प्रणव से मिलने पर अनु गिड़गिड़ाती है कि वह उसे अपने साथ रखे। लेकिन प्रणव साफ मना कर देता है। अनु सोचती है की प्रणव के बिना उसका क्या होगा, वह कैसे जियेगी। अनु ने कभी प्रणव के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की थी। नर्स ईडी कहती है कि हमें बड़ा बनना चाहिए, हमें अपने पर काबू करना चाहिए।''[6]

ईडी कहती है कि आदमी जो कर सकता है वह औरतें भी कर सकती है। इसके बाद अनु का एक लम्बा संघर्ष शुरू होता है। टूटने, जुड़ने, बिखरने और बिखरकर फिर जुड़ने का सिलसिला शुरू होता है। बीती यादों से भावनाएँ जुड़ी है। उनसे तो बचा नहीं जा सकता। प्रणव की यादें खत्म ही नहीं होती है। अनु को लगता है की प्रणव के जाने के बाद उससे और ज्यादा प्यार हो गया है। अमेरिका में रहते हुए अनु पूरी तरह भारतीय संस्कारों में डूबी हुई स्त्री है। प्रणव से अलग होने की वो कल्पना तक नहीं कर सकती। लेकिन यथार्थ यही है

कि प्रणव ने उससे छोड़ दिया है। इस सच को स्वीकार कर उसे आगे बढ़ना है। उससे समझ नहीं आता कैसे क्या करे। अनु की दोस्त दिव्या अनु को इन सब चीजों से बाहर निकलने में मदद करती है। उसकी हिम्मत बढ़ाती है। आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। अनु जीवन संघर्ष में धीरे ही धीरे आगे कदम बढ़ा रही है। प्रणव उसकी यादों से निकला ही नहीं है। अनु अब उन सकारात्मक चीजों के बारे में सोचना शुरु करती है जो उसके अंदर है। कठिन संघर्ष, अथक परिश्रम, मेहनत से अपने भावनाओं को नियंत्रण में रखकर अनु अपने जीवन में एक मुकाम हासिल करती है। मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लेती है। डॉक्टर बनती है। नोबेल प्राइस विजेता की रिसर्च टीम में शामिल है। एक पुरूष से अलग अपना स्वयं का व्यक्तित्व का निर्माण करती है। अपना लक्ष्य स्वयं बनाती है, अपने मार्ग स्वयं गढ़ती है। अपना वजूद बनाती है। जिसके लिए किसी और के सहारे की जरुरत नहीं है। उसकी संवेदनायें और भावनाएं मरी नहीं है, लेकिन अनु उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने देती। वह आत्मगरिमा और आत्मविश्वास से भरपूर एक मजबूत स्त्री के रूप में सामने आती है।

प्रणव से विवाह के बाद की अनु अधूरी थी। उसका अपना वजूद नहीं था। बिना प्रणव के सहारे के वह जीवन में आगे नहीं बढ़ सकती थी। उसकी जीवन यात्रा अपूर्ण थी। प्रणव से तलाक के बाद ही उसे अपने अस्तित्व का पता चलता है। जैसे की वह कुछ हो ही नहीं। उसके दुःख, तकलीफों से किसी को कोई फर्क ही नहीं पड़ता है। वह अपनी दुःख, दर्द, पीड़ा, त्रास को किसी से अभिव्यक्त नहीं कर सकती। वर्षो बाद जब वह प्रणव से मिलती है तब वह कोई शिकायत नहीं करती ना ही उलाहना देती है। एक सामान्य इंसान की तरह ही मिलती है। उसके अंदर बहुत कुछ है कहने को लेकिन अपनी भावनाएं जाहिर नहीं करती। वह आत्मविश्वास से भरी प्रणव से बात कर रही है ''आज वह सीधी सतर सामने बैठी है, बराबरी से शराब पी रही है, खुली, हल्की, आत्मगरिमा और विश्वास से भरी।''[7] जब प्रणव कहता है कि अलग होने के वो समृद्ध हुई तब अनु कहती है ''नहीं— मैं यह नहीं कहूंगी कि अलग होकर अच्छा ही हुआ। इतनी यातना के बाद जो मिलता भी है, उसमें कुछ—न—कुछ पिछले विघटन की परछाई रहती ही है और वह सब पीड़ा जरुरी नहीं थी, यह सब पाने के लिए।''[8]

अनु उन कष्टों, पीड़ा और दुःखो की बात कर रही जिनसे अनु को गुजरना पड़ा। एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा। तरह—तरह की मुश्किलों और परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद अनु आराम से प्रणव से बात कर रही। जिस व्यक्ति ने बिना सोचे—समझे एक झटके में अनु के जीवन को तहस—नहस कर दिया। इसके बावजूद अनु प्रणव के लिए दुखी है। लेकिन अब वो अनु नहीं है। एक बदली हुई अनु है एक नए अवतार में। जीवन के संघर्ष, भाग—दौड़ में अतीत के दर्द, पीड़ा आक्रोश को भूल गयी। रोने—गिड़गिड़ाने वाली अनु अब नहीं रही ना ही देवी देवताओं से मिन्नते करने वाली। हाँ उसके अंदर की संवेदनाएं अब भी प्रणव को लेकर। उसके कष्टों और दुखो से दुखी है। लेकिन अब वो एक मजबूत स्त्री के रूप में सामने आती है। अपनी कमजोरियों पर उसने नियंत्रण कर लिया है। जीवन की सच्चाईयों को समझ गयी है। जीवन के झंझावातों से तपकर निकली है। अब वह एक डॉक्टर है, सफल दुनियादारी वाली औरत है, एक पत्नी है, एक माँ है। उसका अपना एक अस्तित्व है।

अब वह किसी के सहारे नहीं है। उसने दुबारा शादी की है, लेकिन उसमे जबरदस्ती का बंधन नहीं है। उसमें बराबरी है। एक—दूसरे का सम्मान है, आदर है। अनु दीपांकर के बारे में सोचती है ''पर अनु को वह कभी

निर्णय लेने से नहीं रोकेगा। यह होगी बराबर की साझेदारी—न कोई बड़ा, न छोटा, न सुपीरियर, न इन्फीरियर।''[9] यही अनु एक पूर्ण स्त्री के रूप में सामने आती है स्वतंत्र आत्मनिर्भर। उसे अपने आप पर विश्वास है। अब वह किसी की मुहताज नहीं है। अपने फैसले वो खुद ले सकती है। दीपांकर से वो दूसरा विवाह करती है। लेकिन वह समझौता वाला विवाह नहीं है ना ही उस विवाह संबंध में कोई बड़ा है ना कोई छोटा। वह विवाह संबंध एक दूसरे पर विश्वास पर टिका है। आपसी प्यार और एक दुसरे बराबरी और सम्मान पर टिका है।

अनुका एक भारतीय संस्कारों में डूबी हुई स्त्री है। उसका संघर्ष उसे एक आत्मविश्वास से भरपूर, गंभीर, दृढ व्यक्तित्व वाली स्त्री के रूप में परिवर्तित कर दिया है। मानसिक, शारीरिक, एवं आर्थिक रूप से मजबूत एक आत्मनिर्भर और स्वयं फैसले लेने वाली एक दृढ निश्चयी स्त्री के रूप में उसका एक नया जन्म होता है। अपने को भारतीय संस्कारों से अपने को मुक्त कर एक आधुनिक पाश्चात्य स्त्री के रूप में सामने आती है। जैसाकि गोपाल राय कहते है कि ''यह आधुनिक भारतीय नारी की तस्वीर है जो कठिन और विपरित परिस्थितियों में भी अपने लिए नया और सार्थक मार्ग चुन पाने में समर्थ है।''[10] अनुका की शेष यात्रा एक स्त्री के पूर्ण होने की यात्रा के रूप में सामने आती है।

संदर्भ :–

1. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 07
2 "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 15
3. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 52
4. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 66
5. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 67
6. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 63
7. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 120
8. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 121
9. "शेष यात्रा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौदहवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 141
10. 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' राजकमल प्रकाशन, नईं दिल्ली, आठवां संस्करण 2022, पृष्ठ सं. 178

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 316-319
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी भारतीय समुदाय और सरकार की भूमिका

डॉ. सविता यादव

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय स्नातक महाविद्यालय, सोयतकलॉ, जिला आगर मालवा, म.प्र.

प्रवासी भारतीय से तात्पर्य,जो लोग भारत छोड़कर विश्व के दूसरे देशों में जा बसे हैं उन्हें प्रवासी भारतीय कहते हैं।

देश के विकास में प्रवासी भारतीयों के योगदान के महत्त्व को मान्यता देने और देश से जुड़ने हेतु मंच प्रदान करने के लिये भारत सरकार प्रतिवर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करती है। वर्ष 1915 में 9 जनवरी को ही महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापस आए थे। वर्ष 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की घोषणा की थी और 2003 में पहली बार प्रवासी भारतीय दिवस मनाया गया था। भारत सरकार ने प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की शुरुआत वर्ष 2003 में लक्ष्मीमल सिंघवी समिति की सिफारिश पर की थी।

सरकार का कोई भी प्रतिनिधि यदि किसी विदेश दौरे पर जाता है तो वह उस देश में रह रहे प्रवासी भारतीयों के बीच अवश्य जाते हैं। इससे प्रवासी भारतीयों के मन में अपनेपन की भावना जन्म लेती है और वे भारत की ओर आकर्षित होते हैं। भारतीय 'ब्रेन–ड्रेन' को 'ब्रेन–गेन' में बदलने के लिये भारत सरकार विदेश में बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में जाने वाले कामगारों के लिये 'अधिकतम सुविधा' और 'न्यूनतम असुविधा' सुनिश्चित करना चाहती है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, प्रवासी भारतीय दिवस 2023 की आधिकारिक थीम 'प्रवासी : अमृत काल में भारत की प्रगति के लिए विश्वसनीय भागीदार (Diaspora : Reliable Partners for India's Progress in Amrit Kaal)' है। यह विषय देश के विकास में भारतीय प्रवासी के महत्व पर केंद्रित है।

भारतीय प्रवासी दिवस मनाने का उद्देश्य :–

प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन आयोजित करने का प्रमुख उद्देश्य प्रवासी भारतीय समुदाय की उपलब्धियों को मंच प्रदान कर उनको दुनिया के सामने लाना है।

प्रवासी भारतीयों की भारत के प्रति सोच, भावना की अभिव्यक्ति, देशवासियों के साथ सकारात्मक बातचीत के लिये एक मंच उपलब्ध कराना।

विश्व के सभी देशों में अप्रवासी भारतीयों का नेटवर्क बनाना।

युवा पीढ़ी को प्रवासियों से जोड़ना तथा विदेशों में रह रहे भारतीय श्रमजीवियों की कठिनाइयाँ जानना तथा उन्हें दूर करने के प्रयास करना।

प्रवासी भारतीय दिवस का महत्व :-

मुख्य रूप से प्रवासी भारतीय दिवस का उद्देश्य भारत सरकार के साथ जुड़ने, अपने अनुभव साझा करने और भारतीय समुदाय की विशेषज्ञता को साझा करने का मंच है। इस अवसर पर सरकार भारत की उपलब्धियों और प्रगति को प्रदर्शित करने के साथ ही प्रवासी भारतीयों से निवेश और बिजनस जुटाने की कोशिश करती है। इस अवसर पर बिजनस, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, साइंस और टेक्नोलॉजी, सांस्कृतिक मसलों पर सत्र आयोजित होते हैं।

प्रवासी भारतीयों की वैश्विक स्थिति :-

खाड़ी देशों में लगभग 8.5 मिलियन भारतीय रहते हैं, जो दुनिया में प्रवासियों का सबसे बड़ा संकेंद्रण है।

अरब प्रायद्वीप की भौगोलिक और ऐतिहासिक निकटता इसे भारतीयों के लिये एक सुविधाजनक स्थान बनाती है।संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 4 मिलियन भारतीय रहते हैं। यहाँ मैक्सिको के बाद भारतीयों का दूसरा सबसे अधिक संकेंद्रण है। संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 2020 के अंत में होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनाव में प्रवासी भारतीयों की एक बड़ी भूमिका रहेगी।

इसके अतिरिक्त कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, मलेशिया, मॉरीशस, श्रीलंका, सिंगापुर, नेपाल सहित अन्य देशों में प्रवासी भारतीयों की बड़ी आबादी रहती है। दुनिया में करीब 1.80 करोड़ प्रवासी भारतीय रहते हैं। इन में से करीब 70 प्रतिशत अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ब्रिटेन, कनाडा, मलेशिया और श्रीलंका में हैं। प्रवासी भारतीय अब देश की एक आर्थिक ताकत बन चुके हैं तो दूसरी तरफ यह एक साफ्ट पॉवर बन चुके हैं। भारतीय जिन–जिन देशों में गए उन्होंने वहां के संविधान और संस्कृति को आत्मसात कर वहां के विकास में अमूल्य योगदान दिया। प्रवासी भारतीय अब अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और कई देशों में राजनीतिक ताकत भी बन चुके हैं। इसी के चलते ही व्हाइट हाउस में दीवाली मनाई जाती है। ब्रिटेन में हिन्दू त्यौहारों की धूम रहती है और संयुक्त अरब अमीरात में करोड़ों डालर की लागत से हिन्दू मंदिर बनकर तैयार है और हजारों लोग दुबई के गुरुद्वारे में माथा टेकने जाते है। यह भारतीयों के लिए गर्व की बात है कि ब्रिटेन, पुर्तगाल, और आयरलैंड में भारतीय मूल के प्रधानमंत्री हैं। ब्रिटेन में ऋषि सुनक, आयरलैंड में लिली वराडकर और पुर्तगाल में एंटीनियो कोस्टा प्रधानमंत्री हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस भी भारतीय मूल की हैं। गुयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली और सूरीनाम के राष्ट्रपति, चंद्रिका प्रसाद संतोखी भी भारतीय मूल के हैं। दोनों ही प्रवासी भारतीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि भी हैं। दुनियाभर की टॉप 500 कम्पनियों में 12 प्रतिशत सीईओ भारतीय मूल के हैं। इनमें गूगल से लेकर माइक्रोसाफ्ट जैसी कम्पनियां शामिल हैं।

प्रवासी भारतीय विदेशों में भारत के राजदूत हैं और देश की बढ़ती ताकत में इनके योगदान को कमतर नहीं आंका जा सकता। आने वाले समयमें भारत की जिम्मेदारी और बढ़ने वाली है और विश्व समुदाय को देश की ताकत का अहसास भी होगा ही ,प्रवासी भारतीय देश की प्रगति को लेकर उठाए जा रहे कदमों की जानकारी से हमेशा अधतन रहें और दुनिया के अन्य देशों से भी इसे सांझा किया जाना है।

प्रवासी भारतीय हर साल 87 अरब डॉलर से भी अधिक राशि भारत भेजते हैं। प्रवासी भारतीय भारत में लगातार निवेश कर रहे हैं। मोदी सरकार ने ब्रेन ड्रेन को अब ब्रेन गेम में बदल दिया है। भारतीय मूल के विदेशी नागरिकों के लिए पहली बार 2002 में पीआईओ कार्ड लांच किया गया था। इसका उद्देश्य विदेशों में रह रहे

भारतीयों को उनकी थर्ड जेनरेशन से जोड़ना था। 2005 में ओसीआई कार्ड लागू किया गया था। इसमें पीआईओ कार्ड की तुलना में ज्यादा फायदे दिए गए थे। 2015 में पीआईओ कार्ड स्कीम को भारत सरकार ने वापिस ले लिया था और उसे ओसीआई कार्ड में मर्ज कर दिया था। भारतीय पासपोर्ट की प्रतिष्ठा काफी बढ़ चुकी है। भारत दुनिया की पांचवीं अर्थव्यवस्था है। देश की ग्लोबल इमेज बहुत बेहतर हुई है। विदेशों में रहने के बावजूद प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति और जड़ों से जुड़े हुए हैं।

प्रवासी भारतीय समुदाय को जोड़ने में सरकार की भूमिका :-

वर्ष 2004 में प्रवासी भारतीय समुदाय की समस्या का समाधान करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 'प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय' की स्थापना की है। प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही प्रमुख योजनाएँ और उनकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

भारत को जानें कार्यक्रम :-

भारत को जानें कार्यक्रम का उद्देश्य 18 से 26 आयु वर्ग के प्रवासी युवाओं को देश के विकास और उपलब्धियों से परिचित कराना और उन्हें उनके मूल देश से भावनात्मक रूप से जोड़ना है।

भारत का अध्ययन कार्यक्रम :-

भारत का अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रवासी भारतीय युवाओं को भारत के इतिहास, विरासत, कला, संस्कृति, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विकास से परिचित कराने के लिये भारतीय विश्वविद्यालयों मे लघु अवधि के पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गए हैं।

प्रवासी बच्चों के लिये छात्रवृत्ति कार्यक्रम :-

इस कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय मूल के प्रवासियों और गैर-प्रवासी भारतीय छात्रों को इंजीनियरिंग/ प्रौद्योगिकी, मानविकी, वाणिज्य, प्रबंधन, पत्रकारिता, होटल प्रबंधन, कृषि और पशु पालन आदि विषयों में स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिये 100 छात्रों को प्रतिवर्ष प्रति छात्र चार हजार अमेररिकी डॉलर तक की छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं।

प्रवासी भारतीय बीमा योजना :-

इस योजना के तहत विदेश गमन की अनुमति मिलने के बाद रोजगार के लिये विदेश गए प्रवासी भारतीय की मृत्यु अथवा विकलांगता पर नामित/आधिकारिक व्यक्ति को 10 लाख रुपए का जीवन बीमा दिया जाता है।

महात्मा गांधी प्रवासी सुरक्षा योजना :-

इस योजना को प्रायोगिक तौर पर 1 मई, 2012 को केरल में शुरू किया गया था। इस योजना का उद्देश्य विदेशी भारतीय कामगारों को बढ़ावा देना और सक्षम बनाना है। इसके अतिरिक्त वापसी एवं पुर्नवास की सुरक्षा, उनके पेंशन की सुरक्षा और प्राकृतिक मौत की दशा में जीवन बीमा लाभ दिलाने में सरकार के द्वारा मदद प्रदान करना है।

प्रवासी भारतीय समुदाय की समस्याएँ :-

नस्लीय विरोध -

नस्लवाद के कारण स्थानीय लोगों द्वारा भारतीयों के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग कर मार-पीट की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। कई देशों में अति राष्ट्रवादी सरकारों के सत्ता में आने से सांप्रदायिकता

की घटनाओं में भी वृद्धि हुई है।

आतंक –

मध्य पूर्व के देशों (यमन, ओमान, लीबिया, सीरिया आदि) में सांप्रदायिक संकट, बढ़ती आतंकवादी गतिविधियाँ और युद्ध प्रवासी भारतीयों के लिये प्रतिकूल वातावरण निर्मित कर रही हैं।

संरक्षणवाद :–

प्रवासी लोगों के कारण नौकरियों और शैक्षिक अवसरों को खोने के डर के परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, सहित कई देशों में सख्त वीजा नियम लागू किये जा रहे हैं।

निष्कर्ष :–

अनेक प्रवासी भारतीय जब अपने गांव में आते हैं तो वहां के विकास में अपना योगदान देते हैं। अनेक प्रवासी भारतीयों ने गांव में स्कूल, कालेज और कम्प्यूटर सैंटर तक उदार दिल से दान कर स्थापित किए हैं। अनेक प्रवासी भारतीयों ने गांव के विकास के लिए अपनी पुश्तैनी जमीन तक दान में दे दी है। अपने बच्चों की शादियां भी वह भारत में ही करना पसंद करते हैं। इस बार प्रवासी सम्मेलन की थीम ''प्रवासीः अमृतकाल में भारत की प्रगति के लिए भरोसेमंद भागीदार'' है। प्रवासी भारतीय सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और उनकी सरकार बधाई की पात्र है। उम्मीद है कि प्रवासी भारतीय अमृतकाल में भारत के विकास में भागीदार बनकर महत्वपूर्ण योगदान देंगे और अपने देश की प्रतिष्ठा को और चमकदार बनाएंगे।

सन्दर्भ :–

1. https://www.drishtiias.com
2. https://www.इण्डिया.सरकार.भारत
3. https://textbook.com>Iaspreparation
4. https://AajTak.in

स्थायी पता–

04 चितावद रोड़ साजन नगर कैलाश दाल मिल के पास इन्दौर, म.प्र. 452001

savitaindore123@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 320-322
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विभिन्न देशों में हिंदी

सुहासिनी उंकिली
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग, ए.यू.टी.डी.आर.हब, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम 530003

सारांश :–

भाषा का प्रयोग सिर्फ मानव ही नहीं करता, जड–चेतन भी करते हैं। गर्मी के मौसम में एक कुत्ता हमारे पास आकर भौंकता है। इसका मतलब यह है कि वह अपनी भाषा में पानी माँग रहा है। पेड़–पौधे भी मुरझा जाते हैं इसका भाव है कि हम दुःखी है। जब हम खाना खाते समय भी हमारे द्वार पर गाय आकर खड़ी हो जाती है वह भी अपनी भाषा में खाना माँगती है। ये सब चेतन हैं। इस प्रकार जड पदार्थों को भी अपनी भाषा होती है। एक कवि ने हिमालय पर्वतों के बारे में तरह कहा :–

''खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आँधी डटे रहो पानी में
हुए रहो तुम अपने पथ पर
कठिनाई तूफानों में।''

इस तरह मानव भी अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए भाषा का इस्तेमाल करता है। भाषा जितना सरल, सहज होगी भाषा सम्प्रेषण भी उतनी ही सफल और सशक्त होगी। मानव की सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान–विज्ञान को उन्नत स्थान पर खडा करने में भाषा की प्रमुख भूमिका है। भारतीय भाषाओं में सिर्फ हिन्दी केव्दारा ही भारतीय साहित्य–कला, ज्ञान–संस्कृति की अभिव्यक्ति और रक्षा भी की जाती। आज हिन्दी का स्वरूप वैश्विक हो गया।

विभिन्न देशों में हिन्दी :–

भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन हिन्दी को बोलनेवाले और समझनेवाले लोग अधिक हैं। हिन्दी में इतनी क्षमता है कि पूरे भारत को एकता के सूत्र में बाँध रखती है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय में भी देश के प्रमुख व्यक्तियों को एकत्रित करने और जनता में भी चेतना लाने के लिए इसे एक हथियार के रूप में प्रयोग किया गया है। फिलहाल हिन्दी पूरी तरह से विकसित होकर विश्व में व्यापक क्षेत्र में बोली जा रही है।

वैश्वीकरण के अंतर्गत विभिन्न देशों के लोगों, कंपनियों, और साहुकारों के बीच परस्पर संबंध को कायम करने में हिन्दी ने विशेष योगदान दिया है। बलज तथा स्मिथ के अनुसार– 'वैश्वीकरण एक ऐसी ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो मानवीय सामाजिक संगठन के स्थानीय सौंपान के रूपांतर में मौलिक बदलाव है जो देशज के समुदायों को जोड़ता है, तथा शक्ति–संबंधों की पहुँच को क्षेत्रों तथा उपमहाद्वीपों के आर–पार फैला देता है''।

वैश्वीकरण के कारण विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों के द्वारा हिन्दी का प्रचार–प्रसार अधिक मात्रा में हो रहा है। 10 जनवरी 1975 में नागपुर में यह सम्मेलन का आरंभ हुआ है। इन सम्मेलनों के माध्यम से विश्व के हिन्दी कवियों लेखकों, प्रेमियों का एक ही जगह पर एक साथ मिलने का एक अच्छा स्थान है। इन सम्मेलनों के कारण अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा और विश्व हिन्दी सचिवालय संस्थाओं का स्थापित हुए हैं। ये सारी संस्थाएं विश्व भर हिन्दी का फैलाव के लिए कार्य कर रहे हैं। हिन्दी पूरे यूरोप, अमेरिका, दक्षिण आफ्रिका, दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में विस्तारित हो रही है।

हिन्दी की महत्ता को विश्व कवि रवींद्रनाथ ठकुर ने रेखांकित करते हुए कहा था– 'आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान। जिसका एक–एक दल, एक–एक प्रान्तीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति हैं। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सभी प्रान्तीय बोलियॉ, जिसमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हो। अपने–अपने घर में रानी बन कर रहे। आज विश्व के 120 देशों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। इसके साथ–साथ उन देशों में हिन्दी साहित्य–सृजन भी हो रहा है। भारत सरकार भी प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों को उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कार भी देता है। वर्ष 2005 के भाषा शोध रिपोर्ट के अनुसार विश्व में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 1,10,29,96,447 है। हिन्दी की माँग पूरे विश्व भर में बढ़ती जा रही है। इसलिए इस विषय पर अध्ययन और अध्यापन कार्य भी विदेशों में हो रहा है। अमेरिका के शिकागो, कैलिफर्निया, पन्सिलेवानिया, कोलंबिया, वाशिंगटन, वर्जिनिया, टेक्सास आदि विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर पर हिन्दी को पढ़ा रहे हैं। जर्मनी, प्रांस, रूस, हालैण्ड, स्विटजरलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन, इटली, पोलैण्ड, हंगरी, दक्षिण अफ्रिका, और जापान, आदि देशों के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी को पढ़ा रहे हैं। न्यूजीलैंड में रहने वाले भारतवासियों ने हिन्दी कार्यक्रमों को फैलाव करने के लिए टी.वी, रेडियो कार्यक्रमों की स्थापना की।

भारत के प्रमुख हिन्दी कवियों की रचनाओं का भी विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो रही है। जैसे :– महादेवी वर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, प्रेमचंद, निराला, निर्मला वर्मा, मन्नू भण्डारी आदि रचनाकारों की रचनाएं जापान की भाषा में अनुवाद हुई थी। भगवती चरण वर्मा, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, अज्ञेय, अमृतलाल नागर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि प्रमुख कवियों की रचनाएँ भी रूसी भाषा में अनूदित हुई हैं। प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' एवं भीष्म साहनी के 'बसंती' का अनुवाद जर्मनी भाषा में हुआ है। इंग्लैण्ड के मैक ग्रगर ने नंददास के पदों का अनुवाद किया। वेनिस विश्वविद्यालय के चेलीलियो कोस्सियो ने फणीश्वर नाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' को इतालवी भाषा में अनुवाद किया। नेदरलैण्ड के प्रो. वेगेल ने प्रेमचंद की कहानियों का डच भाषा में अनुवाद किया। कबीर की रचनाओं का फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया गया। इसके साथ–साथ हमारे प्रवासी कवियों ने विश्व स्तरीय साहित्य सर्जन कर रहे हैं। उनमें से कुछ प्रमुख व्यक्ति–रामदेव धुरंधर, उषा प्रियंवदा, अर्चना पैन्यूली, दिव्या माथुर, नीना पल, रेखा राजवंशी, स्नेहा ठाकुर आदि...।

उषा प्रियंवदा :–

उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसम्बर 1930 कानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इलाहबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए तथा पी. एच.डी की। इसके बाद उन्होंने दिल्ली के श्रीराम कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। अमेरिका के विशस्कांसिन विश्वविद्यालय मैडिसन में दक्षिण एशियाई

विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्य प्रारंभ किया।

कहानी संग्रह :–

वनवास, कितना बड़ा झूठ, शून्य, जिन्दग़ी और गुलाब के फूल (1961), एक कोई दूसरा (1966), फिर वसंत आया (1961), कितना बड़ा झूठ (1972) धनंजय सिंह (पटना विश्वविद्यालय)

उपन्यास :–

पचपन खंभे लाल दीवारे (1961), रुकोगी नहीं राधिका (1967), शेषयात्रा (1984), अंतर्वंशी (2000), भया कबीर उदास (2007), नदी (2013)।

पुरस्कार व सम्मान रूउषा प्रियंवदा राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से पद्मभूषण और डॉ० मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार प्राप्त की है।

अर्चना पैन्यूली :–

इनका जन्म 17 मई 1963 में कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रारंभिक पढ़ाई देहरादून में हुई। शादी के बाद के साथ डेनमार्क में रहती है।

उपन्यास :–

परिवर्तन (2003) वेयर यू आई बिलांग (भारतीय ज्ञानपीठ) पॉल की तीर्थयाचा (2016), कैराली मसाज पार्लर।

कहानी संग्रह :–

हाईवे E–47 (2017), कितनी माएँ है मेरी (2008), प्रवासी साहित्य श्रृंखला (2021)

अनुवाद :–

सुप्रसिद्ध डेनिश लेखिका कारेन बिलाशन (दिवंगत) की कहारी का हिन्दी अनुवाद जया ज्ञानोदय (2009), साहित्यकार हेल्ले के पुरस्कृत उपन्यास Dette burde Skrives i nutid आगे की बात करें (2021)

पुरस्कार व सम्मान :–

भारत में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान पद्मभूषण, डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कर (अप्रैल 2020), मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा निर्मल वर्मा पुरस्कार (सितंबर 2019) 'वेयर हूँ आई बिलांग' के लिए राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार से सम्मानित हुआ।

निष्कर्ष :–

अभी हिंदी वैश्विक भाषा बन गई है। इसका प्रामाणिक कि 10 जनवरी को पूरे विश्व भर में विश्व हिन्दी दिवस के मनाया जा रहा है। विश्व में अधिकांश लोग इस भाषा को सीखने के लिए बहुत रुचि दिखाई दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भाई योगेंद्र जीत, हिंदी भाषा शिक्षण (पृष्ठ संख्या 1,2) डॉ. श्री प्रकाश शुक्ल।
2. राष्ट्रभाषा भारती (पृष्ठ संख्या 15, 17, 19)

Suhasini.u06@gmail.com

डॉ. पायल लिल्हारे

नाम – डॉ. पायल लिल्हारे
जन्म – 15 जुलाई 1986, वार्ड नं. 4 देवटोला, बालाघाट (म. प्र.)
शिक्षा – एम. ए.(हिन्दी, स्वर्ण पदक प्राप्त)
एम.ए. (राजनीति विज्ञान)
बी. एड, नेट– जे.आर.एफ.
पी–एच.डी. – 'राष्ट्रीय चेतना के विकास में प्रमुख आधुनिक कवियों का योगदान' (भारतेंदु युग से छायावाद तक)
संप्रति – सहायक प्राध्यापक (हिंदी), अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी, जिला–निवाड़ी (म. प्र.)

संपादित कृतियाँ :–

1. आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय चेतना।
2. हिंदी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श।
3. हिंदी साहित्य : विमर्श के आईने में।
4. हिंदी साहित्य और दलित चेतना : नव मूल्यांकन।
5. डॉ. भीमराव अंबेडकर का वैचारिक चिंतन।
6. हिंदी साहित्य : आदिवासी चेतना की परख।
7. अस्मिता के आलोक में नारी विमर्श।
8. प्रेमचंद का कथा साहित्य : विविध आयाम।
9. समकालीन साहित्य : दलित एवं आदिवासी विमर्श।

प्रकाशनाधीन :–

1. राष्ट्रीय चेतना के विकास में प्रमुख आधुनिक कवियों का योगदान।
2. हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (पत्रिका विशेषांक)
3. हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श (पत्रिका विशेषांक)

शोध–पत्र/आलेख :–

राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में अनेक शोध–पत्र प्रकाशित व राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, वेबिनार में सहभागिता।

2021–22 में प्राप्त सम्मान :–

1. विलक्षणा रत्न सम्मान।
2. समाज सारथी सम्मान।
3. निर्मला स्मृति संपादन साहित्य सम्मान।
4. साहित्य संचय शोध सम्मान।
5. अवगत अवार्ड 2021, 2022
6. इंडियन एक्सीलेंस अवॉर्ड
7. इंटरनेशनल टीचर प्राइड अवॉर्ड
8. काव्यश्री सम्मान (बुलंदी)
9. कोरोना कर्मवीर सम्मान।
10. नन्हीं देवी स्मृति हिंदी भूषण सम्मान।
11. के.बी. स्मृति भामाशाह सम्मान।
12. साहित्य संचय शोध सम्मान।
13. मध्य प्रदेश नारी गौरव सम्मान।
14. अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार साहित्य सम्मान।
15. डॉ. विश्वकीर्ति नारी गौरव सम्मान।
16. भीमराव अंबेडकर समानता व समरसता पुरस्कार।

संपर्क सूत्र :– 8103536987, 7987131767
ईमेल :– payalgurukul@gmail.com

डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी

नाम	:	डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी
माता	:	श्रीमती नागरत्नम
पिता	:	श्री सूर्यप्रकाश राव
पति	:	श्रीटी.वी.एम.यू महेश्वर (स्टेशन सूपरिंटेंडेंट, दक्षिण मध्य रेलवे)
शिक्षा	:	आंध्र विश्वविद्यालय से एम.ए, पी एच डी...1996 में (स्वर्ण पदक विजेता)
विषय	:	मोहन राकेश और बलिवाडा कांताराव की कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक यथार्थ
रूचि	:	अध्ययन एवं अध्यापन।
पद	:	सह...आचार्या एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी और तेलुगुं विभाग, जनसंपर्क अधिकारी, सीहेच.एस.डी. सेंट थेरेसा महिला महाविद्यालय, एलूरू, आंध्र प्रदेश। आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम निर्णायक मंडली की अध्यक्षा 2021...2023
पुरस्कार	:	बी.एस.एन एल एलूरू उगादि कवि पुरस्कार, साहित्य मंडली, एलूरू का उगादि कवयित्री सम्मान...अप्रेल 2023 गीना देवी प्रवासी साहित्य रत्न सम्मान....अगस्त 2023
प्रकाशन	:	25 से ज्यादा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र...पत्रिकाओं में शोध...आलेख प्रकाशित।
सहभागिता	:	विभिन्न राष्ट्रीय एवंअंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों/ वेबीनारों में मुख्य वक्ता के रूप में विभिन्न सरकारी...गैरसरकारी कार्यालयों में हिंदी और तेलुगु में भाषण।
निवास	:	एलूरू...आंध्र प्रदेश।
संपर्क	:	दूरभाष नंबर....9490970021
मेलआईडी	:	dr.lakshmi@stcelr.ac.in

Ch. S.D. St. Theresa's College for Women (A), Eluru

Affiliated to Adikavi Nannaya University

Autonomous Since 1987 College of Excellence NAAC A+ 3.56/4 CGPA

In Collaboration with

Gina Devi Research Institute, Bhiwani

INTERNATIONAL CONFERENCE

2 अगस्त 2023 को ऑनलाईन/ऑफलाईन आयोजित की जा रही है।

मुख्य विषय - प्रवासी साहित्य : विविध आयाम

उपविषय

- प्रवासी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप।
- प्रवासी साहित्य और संस्कृति।
- प्रवासी साहित्य में स्त्री संवेदना।
- विदेशों में हिन्दी साहित्य सर्जन।
- प्रवासी हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदना।
- प्रवासी साहित्य में समाज।
- विभिन्न देशों में हिन्दी।

प्रवासी साहित्यकार :-

1. राकेश शंकर भारती।
2. हरिशंकर आदेश।
3. जकिया जुबेरी।
4. अर्चना पैन्यूली।
5. रेखा राजवंशी।
6. तेजेन्द्र शर्मा।
7. उषा प्रियवंदा।
8. रामदेव धुरंधर आदि

किसी भी भाषा के साहित्यकार पर व किसी भी भाषा में लेख दिया जा सकता है।

Papers can be submitted in any language for publication.

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध आलेखों का प्रकाशन बोहल शोध मंजूषा पत्रिका इम्पेक्ट फैक्टर 7.523 मे किया जाएगा।

Papers presented in conference will be published in International Peer Reviewed Journal Bohal Sodh Manjusha 7.523 Impact factor

पंजीकरण शुल्क :-

सहभागिता ई प्रमाण पत्र+ई पब्लिकेशन/पीडीएफ = 701/-

सहभागिता ई प्रमाण पत्र+प्रिंट कॉपी = 1100/-

केवल सहभागिता ई प्रमाण पत्र= 350/-

Phonepay
Googlepay
Paytm
8103536987

अंतिम तिथि :- 26 जुलाई 2023

www.bohalshodhmanjusha.com

www.ginajournal.com

Convener :
Dr. Sr. Mercy P
Principal
stcelr.ac.in
08812-251210

Co-Convener :
Dr. Rekha Soni
Director
GDRI, Bhiwani (Hry.)

Coordinator :
Dr. Ch.V.Mahalakshmi
HOD, Hindi & Telugu
M. : 9490970021

Organizer :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
Sec,. GDRI Bhiwani (Hry.)
M. : 8708822674

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115